श्रीभक्तिशिरोमणि

[illegible] बन्धन प्रथम

जिसमें

सम्पूर्ण रामायणकी कथा बहुत रोचक छन्दों में वर्णित है ॥

जिसको

श्री अयोध्या निवासि परमभक्त महात्मा वैष्णव दासजी के शिष्य व बारहबंकी प्रदेशान्तर्गत न-रौली ग्रामनिवासि नम्बरदार अयोध्यासिंह [illegible] पुत्र भगवन्तसिंहने बनाया ॥

प्रथम बार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपा
सन् १८९९ ई० ॥

हक़ तसनीफ़ महफ़ूज़ है बहक़ इस छापेख़ाने के ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भक्तिशिरोमणि का सूचीपत्र ॥

बालकाण्ड ।

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
१	गणेशादि सर्व्वदेव व गुरु आदि बन्दन पश्चात् संक्षेप से सर्व्व रामायण वर्णन	१	१२
१	सुरों की स्तुति से नभबाणी व मनुसपलोक बर प्राप्त पश्चात् रामादि चारों भ्रातों का जन्मोत्सव वर्णन	१२	१७
२	श्रीरामचन्द्र जीकी बाललीला वर्णन	१८	२६
३	श्रीरामचन्द्र जी की बालक्रीड़ा व बिद्याध्ययन वर्णन ...	२६	३६
४	श्रीरामचन्द्र जीकी कैशोरलीला वर्णन	३६	४६
५	श्रीजानकी जीका जन्मोत्सव वर्णन	४६	५५
६	श्री बिश्वामित्रजी का अवधागमन व रामलषण यात्रा ताड़का सुबाहादि बध अहल्या उद्धार जनकपुर आगमन श्री जनक बिश्वामित्र समागम वर्णन	५५	६६
७	श्री रामचन्द्रजी का पुष्पबाटिकावलोकन वर्णन ..	६६	७७
८	श्री रामचन्द्र रङ्गभूमि आगमन वर्णन ..	७७	८५
९	श्री रामचन्द्र धनुभङ्गकरण सीता जयमाल मेलन वर्णन	८५	९३
१०	श्री रामचन्द्र परशुराम सम्बादे बिबिध बिलास वर्णन	९४	१०४
११	श्री जनकदूत अयोध्या आगमन श्रीदशरथ महाराज प्रति दूत वार्त्ता श्री रामचन्द्र ब्याह हेत नृप बरात साजि गमन वर्णन	१०४	११६
१२	श्रीराम जानकी व भरतादि ब्याह वर्णन ..	११६	१३२
१३	श्री रामचन्द्र कलेवाकरण वर्णन ..	१३२	१४७
१४	श्री रामचन्द्र बरात अयोध्या प्राप्त वर्णन ..	१४७	१५८
१५	श्री रामचन्द्रादि सुख शयन वर्णन ..	१५८	१६३

इति बालकाण्ड समाप्त ॥

अयोध्या काण्ड ।

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
१	भरत शत्रुघ्न नन्योरेगमन नारद आगमन विधि संदेश श्री रामचन्द्र प्रति कथन वर्णन	१६४	१६६

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
२	श्री रामचन्द्र राजतिलक हेतु पुर मंगल सजन कैकेई प्रति मन्थरा छल कथन वर्णन	१६६	१७६
३	कोपभवन कैकेयि बरदान दशरथ करुणा वर्णन ..	१७६	१८६
४	श्री दशरथ महाराज बिषाद जानकी रघुनन्दन कौशल्या प्रति बिदा मांगन, सुमित्रा लषण सम्बाद, सीता लक्ष्मण सहित प्रभु नृप पास आगमन वर्णन	१८६	१९७
५	श्री रामचन्द्र बनयात्रा शृंगबेरपुर आगमन सचिव सम्बाद वर्णन	१९८	२०५
६	श्री रामचन्द्र प्रति निषाद बार्त्ता, पंथ चरित्र, प्रभु सीता लषण सहित बाल्मीकि मुनि आश्रम प्राप्ति वर्णन ..	२०६	२१९
७	श्री रामचन्द्र चित्रकूट विलास वर्णन ..	२१९	२२३
८	सुमन्त अयोध्यागमन नृप तनुत्याग भरत चित्रकूट गमनवर्णन	२२३	२३९
९	श्री भरतजी को समाज सहित चित्रकूट निकट आगमनवर्णन	२३९	२४८
१०	श्री भरतजी को चित्रकूट आगमन श्री रामचन्द्र मिलाप वर्णन	२४८	२५७
११	चित्रकूट जनकदूत आगमन वर्णन	२५७	२६७
१२	श्री जनक सुनैना सम्बादे भरत गुण वर्णन ..	२६७	२७४
१३	श्री भरत पुरगमन हेतु प्रभु आज्ञा वर्णन ..	२७४	२८१
१४	श्री भरतजी को मुनि वेष नन्दिग्राम बास वर्णन ..	२८१	२८६

इति अयोध्याकाण्ड समाप्त॥

आरण्य काण्ड॥

१	जयंतनेत्रभंग प्रभु अत्रिमुनि समागम, अनसूया पतिव्रतधर्म व०	२८७	२९२
२	विराधबध, शरभंग कथा, अगस्त्य समागम, प्रभु पंचवटी बास वर्णन	२९२	२९७
३	लक्ष्मणप्रति प्रभु ज्ञान, वैराग्य, भक्ति वर्णन	२९७	३०१
४	लक्ष्मण को शूर्पणखा के काननाक काटना और श्रीरामचन्द्र करके खरदूषण त्रिशिरादि बध बर्णन	३०१	३०५
५	श्रीराम करके मायामृग बध व रावण करके मायारूपी सीता हरण वर्णन	३०५	३११
६	जटायु उद्धरण तथा शबरी कथा वर्णन ...	३१२	३१६
७	पंपातट श्रीरामचन्द्र नारद समागम वर्णन ...	३१६	३१९

आरण्यकाण्ड समाप्त॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

किष्किन्धा कारड॥

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
१	श्री रामचन्द्र सुग्रीव मित्रता, बालिवध वर्णन	३२०	३२६
२	सुग्रीव राजप्राप्ति व रामकरके वर्षा शरदऋतु लक्ष्मणप्रति ब०	३२६	३३०
३	सुग्रीव करके पठाई हुई बानर ऋक्षों की सेनाओं को चतुर्दिशि सीताको खोजना संपाति अंगदादि समागम तथा हनुमान् को समुद्र उल्लंघन विचार वर्णन	३३०	३३५

इति किष्किन्धाकाराडसमाप्त॥

सुन्दर कारड॥

१	श्री जानकीजी समीप हनुमान् प्राप्त वर्णन	३३६	३३८
२	श्री हनुमान् जानकी संवाद वर्णन	३३९	३४५
३	श्री हनुमान्जी करके बाग उजारन निश्चर मारन लङ्का जारन वर्णन	३४५	३५३
४	श्रीरामचन्द्र को ससैन्य समुद्र तीर प्राप्त वर्णन	३५३	३५७
५	श्रीरामचन्द्र करके पीड़ित समुद्र को बिप्ररूपधर श्रीरामचन्द्रजी से सेतुबन्ध उपाय कथन	३५७	३६४

इति सुन्दरकाराडसमाप्त॥

लङ्का कारड॥

१	श्रीरामचन्द्रजी को सेतुबन्धन व रामेश्वर स्थापन पश्चात् सुबेल शैलागमन वर्णन	३६५	३६९
२	अंगद व रावण का संवाद वर्णन	३६९	३८२
३	प्रथम युद्धमें कपिदल जयप्राप्त वर्णन	३८२	३८६
४	श्रीलक्ष्मणहित रामबिरह व हनुमान्जी को सजीवनी गृहीतागमन वर्णन	३८६	३९३
५	श्रीरामचन्द्रजी करके कुम्भकरण बध वर्णन ...	३९३	३९५
६	श्रीलक्ष्मणजी करके मेघनाद बध वर्णन	३९५	३९८
७	श्रीराम रावण के समर में जाम्बवान् को पदप्रहार रावण पर करना पश्चात् रावण मूर्च्छा वर्णन	३९८	४०६

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
८	रामकरके रावण बध वर्णन	४०६	४०६
९	विभीषण राज्य प्राप्त व पुष्पकारूढ़ रामको ससीता व ससैन्य भरद्वाज आश्रम आगमन और रामकरके पठाये हनुमान् का अवधागमन वर्णन	४०६	४१५

इतिलङ्काकाण्डसमाप्त॥

उत्तर काण्ड॥

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
१	श्रीरामचन्द्र को अयोध्यागमन भरतादि मिलाप व निज मंदिर गमन वर्णन	४१६	४१६
२	श्रीसीता रामचन्द्रराज्याभिषेक व सुरमुनि आदिस्तुति वर्णन	४२०	४२७
३	श्रीरामचन्द्र को वशिष्ठ प्रति कपिसमाज की प्रशंसा व सुग्रीवादि निज भवन गमन वर्णन	४२७	४३०
४	श्रीरामचन्द्र राज्योत्सव वर्णन	४३०	४३४
५	श्रीरामचन्द्रजो की सभामें द्विज, श्वान, गृद्ध, उलूक, काकको फिरियादी होके जाना और अपना २ पूर्वजन्म के वृत्तान्त को कहके शा।पोद्धार वर्णन	४३४	४३७

इतिउत्तरकाण्डसमाप्त॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भक्तिशिरोमणि बालकाण्ड

सोरठा ॥

बिघ्न हरण गणराय बाहन मूषक बदन गज ।
चरण कमल शिर नाय बंदौं श्रीगिरिजा सुवन ॥
गणपति होहुसहाय देहु बुद्धि करि स्वच्छ मति ।
करहु कृपा अब आय जोरि पाणि अस्तुति करौं ॥

क० ॥ एक द्विज आनन द्विरद पंचआनन सुवन बिघ्न भानन बदत वेद गाथही । सिद्धि शिवसार गुण रूप के अगार मोद मंजुल उदार अब्धि पूर्ण ज्ञान पाथही ॥ दानि ऋद्धि सिद्धि बुद्धि बिस्तृत सुयश चारु बंदनीय लोक सब अग्र देव माथही । भाग्यवंत जोरि हाथ अवनि नवाय माथ करत प्रणाम बारबार गण नाथही ॥ सो० ॥ बंदौं शारद माय मातु अनुग्रह कीजिये । बैठहु रसना आय जाते बल बाणी लहौं ॥ दो० ॥ बंदौं हर गिरिजा चरण बारबार शिर नाय । जासु कृपा बारिधि अगम बिनु प्रयास तरिजाय ॥ छप्पै ॥ भाल चंद्र शिर गंग अंग शुभ भस्म बिराजै । कुंद इंदु दर गौर मौर शिर ब्यालन राजै ॥ अम्बकाब्ज त्रयमंजु कंठ बिष परम सुहावै । रंजित छाल कुरंग माल मुंडन छबि छावै ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रूपा जन जानिकै॥ भुजंगप्रयात छन्द॥ नमो अञ्जनी गर्भसंभूत कीशं। नमो ज्ञान वैराग्य अम्बोधिईशं॥ नमो हेम वर्णांग कैशोर रूपं। नमो कोटि कामाभिरामं अनूपं॥ नमो वीर बाणैत बिख्यात लोकं। नमो भक्त आनंददं हारशोकं॥ नमोकेलि बालार्क ही ग्रास कर्त्ता। नमो लोक त्रैशोक संताप हर्त्ता॥ नमो धीर गंभीर श्रीराम दूतं। नमो दुष्ट दर्पापहं बायुपूतं॥ नमो बुद्धि विद्याकरं तेजराशी। नमो ऋद्धि सिद्ध्यादि दाता विनाशी॥ नमो मर्कटाधीश सुग्रीव मित्रं। नमो शील संतोष धामं पवित्रं॥ नमो भूरि वैदेहि शोका-पहारी। नमो कौतुकै बाग बिध्वंसकारी॥ नमो अक्षहाकीश वीरो अशंका। नमो दाहनं हेम लंकेशलंका॥ नमो बज्रगातारि माना-पहर्त्ता। नमो लंक उत्पात प्रारम्भकर्त्ता॥ नमो बद्धवारीश द्रोणा-द्रिधर्त्ता। नमो कालनेमारि संहारकर्त्ता॥ नमो प्राणसौमित्रदा-नंदकारी। नमो राघवेन्द्रार्ति शोचापहारी॥ नमो कुम्भकर्णाम्बुदं नादत्राशं। नमो कारणं रावणादी विनाशं॥ नमो यातुधानारि भूभारहर्त्ता। नमो विप्र गो साधु आनंदकर्त्ता॥ नमो नन्य श्रीराम भक्ताख्य लोकं।नमो देव बृन्दापहं त्रासशोकं॥नमो वंद्य त्रैलोक्य आनंदरासी। नमो मंगलागारदाता सुपासी॥कबित्त॥ ज्ञान गुण वंतधीर साहसी सबलवंत बीर यशवंत कारअंत प्रेत भूत के। शील सम तोष वंत बांकुरोति तेजवंत बुद्धिवंत चातुर अनन्त राशि बूत के॥ वेदहू पुराण सन्त शारद अनन्त यश गावनालहंत ऐसे अंत राम दूतके। भाग्यवंत आपतंत प्रबल प्रतापवंत नौमि नौमि नौमि पद पद्म वायुपूतके॥ वेदविद ज्ञान खानि साहेब सुजान दिव्य जा-नत जहान गुणदेव बन्दिछोर के। काम क्रोध लोभ मान मोहमद द्रोह सिंधु शोषक अगस्त्य ग्रासकार रवि भोरके॥ पालन तवानि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दानि कानि दास भाविन्नास देत शुभ साजि काज तासु सब वोर के। भाग्यवंत रामदूत साहसी कृपाल धीर नौमि नौमि नौमिपद केशरीकिशोर के॥ सवैया॥ जै हनुमान सुजानबली प्रणतारति मोचननाम तिहारो। आगम वेद पुकार यशै निज दासनके बहु काज सुधारो॥ राघवदूत प्रताप महापद सेवत संकट शोच निवारो। पायँन माथ धरै भगवंत द्रवो जन जानि समीरकुमारो॥

दो० बंदौं श्री गुरुदेव पद हरण अखिल भवभार।
विधि हरि हर सेवत जिन्हैं सकल सुमंगलसार॥

बंदौं गुरु पद पंकज धूरी। जासु कृपा नाशै दुख भूरी॥
बचन भानु नभ हृदय प्रकाशा। होत मोह तम सघन विनाशा॥
बंदौं सन्त सभा सुखदाई। जोरि पानि पायँन शिरनाई॥
राम नाम जहँ पोत सुहावा। ज्यहि चढ़ि पतितपार भवपावा॥
सुमिरतजिनहिं सकलदुखनाशै। शमनकुमति उरसुमति प्रकाशै॥
जे बिनु कारण पर उपकारी। कृपासिन्धु सेवक दुखहारी॥
बन्दौं बिप्र चरण जलजाता। नमतजाहि हरि शंभु बिधाता॥
द्विज पद सकल सुमंगल मूला। हरणकठिनकलिकलुषसमूला॥

दो० बन्दौं सुर मुनि नागनर शीश नाय कर जोरि।
जानि दास निज आस उर पूरण कीजे मोरि॥

बन्दौं विधि पद पंकज धूरी। जासु प्रभाव प्रगट जग भूरी॥
बन्दौं सादर वेद पुराना। जेनित करहिं राम गुणगाना॥
बालमीकि आदिक कवि नाना। जिनरघुपतियशविशदबखाना॥
करउँ प्रणाम चरण शिरनाई। करहु कृपा सब होहु सहाई॥
प्रणवौं खल जन मन क्रमबानी। परसुख दुख सुख बड़ परहानी॥
बारहिं बार बिनय सुनि मोरी। हरियश करत करब जनिखोरी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बन्दौं अवधपुरी सुखरासी। संतत जहँ सियराम निवासी॥
सरयू सरि बन्दौं सुखदाई। ज्यहिदरशन अघजातनशाई॥
दो० बन्दौं श्रीदशरत्थ पद कौशलादि सब रानि।
जिन पाये सुत रामसम दुलराये सुख मानि॥
बन्दौं सकल अवधपुर बासी। जड़ चेतन खग मृग सुखरासी॥
बन्दौं जनक नगर सुपुनीता। आदिशक्ति जनमी जहँसीता॥
बन्दौं जनक सुनैना रानी। जिन जामात लहे धनुपानी॥
बन्दौं जनक नगर नर नारी। जिन सादर प्रभुरूप निहारी॥
पुनि बन्दौं सुरसरि वरधारा। पावन करणि हरणि अघभारा॥
चित्रकूट बन्दौं सुख रूपा। कीन निवास जहां सुरभूपा॥
बन्दौं सकल भालु अरु कीशा। जिनहिंप्राणसमप्रियजगदीशा॥
सब सन बिनय करौं कर जोरे। पूरण करहु मनोरथ मोरे॥
दो० बन्दौं तुलसीदास पद गहे कृपाको पन्थ।
सुलभ जीव उद्धारहित रचि दीन्हे बहुग्रन्थ॥
गीतावलि कबितावली छंदावलि सुखदात।
मानस बरवै छप्प अरु कुंडलिका शुभसात॥
शतसैया बाहुक बिनै रामाज्ञा प्रश्नैन।
अरु विराग संदीपिनी सिय मंगल सुखदैन॥
इत्यादिक औरौ बहुत रचे ग्रन्थ सुखधाम।
पढ़तसुनतजिनकेसुजन लहतसुबांछितकाम॥
धन्य धन्य तुलसी जगत कृपावन्त बिनु हेतु।
भवसागर के तरणको रचि दीन्हे दृढ़ सेतु॥
बार बार करजोरिकै पुनि पुनि शीशा नवाय।
तुलसिदास पदपद्म युग बंदौं मन बचक़ाय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विद्या बुधि बलहीन मैं दीन तुम्हारो दास।
हरियश चाहत गावनो करिये पूरण आस॥
बंदौं श्रीरामायणहिं सकल जगत सुखदानि।
जीवन धन संतन सुजन राम सुयश बरखानि॥
आगम वेदपुराण पै मथित्यहि तुलसीदास।
काढ़ि सुमानसघृतअमलकीन्हे जगतप्रकास॥

अवधपुरी जग विदित अनूपा। राम घाट पावन सुखरूपा॥
त्यहि समीप सोहत शुभधामा। पूरुब मुखहि द्वार अभिरामा॥
तहँ गुरु वैष्णव दास निवासा। जिनके दरश किहे अघनासा॥
ज्ञान बिराग सकल गुणधामा। राम नाम सुमिरहिं वसुयामा॥
शांतरूप अति मृदुल सुभाऊ। समचित हृदय क्रोध नहिंकाऊ॥
कहँलगिकहौं अमित गुणभानी। हरि अवतरे मनहुँ निजआनी॥
देश देश के संत अपारा। आवत हैं तिनके नितद्वारा॥
तिनके हेत छावनी छाई। देत तहाँ सब संत टिकाई॥

दो० अशन सुधा सम संतनन्ह करवावहिं बहुभांति।
परमानँद छायो तहाँ रहत सदा दिनराति॥

यह कीरति व्यापी सब ठाँई। जहँ तहँ मिलि संतन सबगाई॥
कह्यों स्वगुरु अस्थान बखानी। अब निज कहौं जन्ममाहि भानी॥
अवध पश्चिमै योजन साता। बाराबंकि जिला बिख्याता॥
तीनकोस त्यहि पूरब जानौ। ग्राम नरौली नाम बखानौ॥

दो० ग्रामाधिप ताके भये क्षत्रवंश राठूर।
नाम भवानीसिंह ते रहे धर्म रणशूर॥

हरिपद छंद॥ कौशिक गोत्र शिषाहै दक्षिण औरहु दक्षिण पाँयो। कात्यायनहै सूत्र सुशाखा माध्यंदिनी सुहायो॥ यजुर्वेद

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उपवेद अहै धनु अरु शिव देव बखानौ । पाराशर वशिष्ठ अरु सांकृत त्रय परवर यह जानौ ॥

दो० भये भवानीसिंह के सुवन भिखारी सिंह।
प्रगटभये तिनके बहुरि सुवन अयोध्यासिंह ॥
तिनके सुत जन्मेउभै नीतिपाल भगवंत।
नीतिपाल मोसन अधिक देत सबै म्वहितंत ॥
वनइससै सत्ताइसै सम्बत शुक्र सुवार।
श्रावण नौमी असितको भयो सुजन्म हमार ॥
काव्यकला में निपुण नहिं पूरण हृदै न भक्ति।
बिनयकरौं ताते सबहि निजनिज दीजे शक्ति ॥
श्रीगिरिजाप्रति शंभु जो कही कथा समुझाय।
तुलसीकृत मानस सुमत कहिहौं मैं स्वइगाय ॥
एकबार कैलास शिव राजत शिवा समेत।
जानि समय करजोरिकै बोली शिवा सचेत ॥
नाथ कृपाकरि हरि कथा कहौ मोहिं समुझाय।
जो सुनि प्राणी पावई भवनिधि पार सुभाय ॥
प्रथम कहौं श्रीरामको जन्म चरित सुखदानि।
बालकेलि वरणौं बहुरि सकल सुमंगल खानि ॥

गीतिकाछंद ॥ मुनि संगगे जिमि रामलच्मण असुरगण जिमि मारयऊ । मखराखि मुनिगण अभय करि जिमि नारि गौतम तारयऊ ॥ ज्यहि भाँति कीन्हो भंगधनु मुख नृपन कारिख लायऊ। जिमि मेटि संशय जनक परशाधरहि गर्व छड़ायऊ ॥ जिमि ब्याहि चारौं बन्धु सानँद अवधपुर आवत भये। ज्यहिं भाँति रघुपति राजहित भय सजतपुर मंगल नये ॥ जिमि बचन पितु रघु-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बीर सानुज सहित सियबनको गये। जिमिराम केवट भेटि उरभरि तरत जिमि सुरसरि भये ॥ जिमि कीन वास प्रयाग प्रभु जिमि बाल्मीकि मिलापभो। किय चित्रकूट निवासपै जिमि शमनसबकर तापभो ॥ जिमि अवध आय सुमंत दशरथ प्राण जिमि त्यागन किये। जिमि भरतकरि नृप क्रिया सादर संग सब पुरजन लिये ॥ जिमि राम जहँ तहँ जाय सब अवलोकि प्रभु सुखपायकै। प्रभु सीख धरिशिर पादुका लै अवध निवसे आयकै ॥ पुनि राम सानुज सहित सिय ज्यहि भाँति वन आगे चले। करि स्वच्छ कानन मारि बहुखल वृन्द मुनिगन दुखदले ॥ जिमि पंचबटि कै थानलखनहि ज्ञान उपदेशत भये। ज्यहि भाँति शूर्पणखाइ तहँ जिमि काननासा त्यहि हये ॥ जिमि शमनभे खरदूषणादिक हाल जिमि रावण सुन्यो। मारीच सन जिमि जाय बरण्यों सुनत जो त्यहि मनगुन्यो ॥ करि कपट ज्यों मायाहि सिय दशकण्ठ खल हरि लैगयो। जिमि राम कीन्ही क्रिया निजकर गीधकी जग यश बयो ॥ पुनि मारि ज्योंहि कवंध शवरिहि सुगति प्रभु दीन्ही सही। ज्यहि भाँति पंपासरहि आये भई नारद बतकही ॥ जिमि पवनसुत मिलि रामको सुग्रीव पहँ जिमि आन्यऊ। श्रीराम ज्यों बधि बालि सकशर तिलक सुगरहि ठान्यऊ ॥ कपिनाथ ज्योंहित खोज सीतहि बिपुलकीश पठायऊ। जिमि बिवर पैठेकीश मिलि संपाति हाल बतायऊ ॥ जिमि नांघि सागर पवनसुत बैदेहि को धीरज दियो। बिध्वंसि कानन जारिपुर जिमि गवन पुनि प्रभुपहँ कियो ॥ कुशलात कहि सिय राम सों जिमि राम सँग सेना लिये। जिमि नीरनिधि के तीर सह सबभीर प्रभु डेरा किये ॥ ज्यहि भाँति आयो तहँ बिभीषण तिलक जिमि सार्यो प्रभू। जिमि बाँधि सेतु समुद्र उतरे रामसँग

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कपिदल सभू ॥ ज्यहि भाँति अंगद लंक गय दशकंठ बल ज्यों दलमल्यो। जिमि राम शाशन भालु कपिदल जाय गढ़ लंका हल्यो ॥ भय युद्ध बहुबिधि दोउ दिशि घटकर्ण आदिक ज्योंमरे। घननाद भो पुनि बद्ध ज्यों दशकंठ रघुपति रणभिरे ॥ ज्यहि भाँति मार्‌यो राम रावण राज दै त्यहि भायको। सिय सहित राजे एक थल कृत विनय मुनि सुरनायको ॥ चढ़ि यान पुष्पक राम सिय सह बंधु कपि सेना लिये। करि अभय सुरमुनि साधु सज्जन गवन जिमि अवधहि किये ॥

दो० अवधआय मिलि भरत जिमि कोशलराजकुमार।
राज बैठि दीन्हे सबहिं सुख सम्पदा अपार ॥
सो सब चरित पुनीत अति कहिये मोहिं कृपाल।
सुनि गिरिजाको प्रश्न तब बरणत भे शशिभाल ॥

सो० स्वइ यह चरित पुनीत तुलसिदास मानस रच्यो।
हरण सकल भवभीत रामभक्ति दायक अमल ॥
स्वइ हरियश सुखदाय गिरा सुपावन करनहित।
कहब कछुक मैंगाय निजमति सम मानस सुमत ॥

दो० मानस मत ते जो कछू उद्धरै चारित कोय।
करियन संशय सो कहूँ ग्रंथनही में होय ॥
राम चरित दायक अमल रामभक्ति सुखदानि।
सोई चरित पुनीत मैं धरे सुयामें आनि ॥
ताते मैं यहि ग्रंथको भक्ति शिरोमणि नाम।
धर्‌यों सुजन जन बूझिकै दानि भक्ति अभिराम ॥
वनइससे वश्वास शुभ सम्बत माधवमास।
कृष्ण बृहस्पति दुइजको कीन्ही कथा प्रकास ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० सीतापति पदपद्मयुग बन्दौं बारहिबार।
जिनको सुयश प्रताप गुण पावत निगम न पार॥

कबित्त॥ हार दुष्कृताके व्रात औनि देवताके पाल साधुवृन्दताके दातृ भुक्तिमुक्तिताके है। दुष्टकाष्ठताके दाहताके कारताग्नि चंडदास नै स्वशोकताके नाशकारताके है॥ भाग्यवंत ताके लोक सिंधुतार ताके पोतरक्षक सुधर्मताके पुष्ठ वर्मताके है। ज्ञानही प्रकाश ताके मोहतम नाशताके कारतांघ्रि जनकसुताके भरताके है॥ दानि बुद्धिताके बल तेज विद्यताके कार वृद्धि भाग्यताके शक्ति भक्ति विज्ञताके है। कार अर्चताके फलदातृ वाँछिताके टार अन्ध अज्ञताके भानुहार मन्दताके है॥ भाग्यवन्त ताके कार जीवशुद्धताके दास मीन अम्बुताके दानि ऋद्धिसिद्धिताके है। काम क्रोध लोभ ताके द्वन्द मद मोहताके हारतांघ्रि जनकसुताके भरताके है॥ ध्यान करताके हर पापताप ताके सुखश्य सर्वताके जागज्योति ज्ञानताके है। शील समताके तोष धीर क्षमताके दिव्य वीतरागताके ही प्रकाश कृत्यताके है॥ हार पीरताके धुरधार धीरताके धर्म वर्म संसृताके पोत पुष्ट मैसुताके है। भाग्यवन्त सत्यताके शान्ति नय सौख्यताके दातृतांघ्रि जनकसुताके भरताके है॥ पापतूलताके जार तेज गोत्रताके नाश मोहनकताके तेज चण्ड सविताके है। कोश मृदुताके सींव शुभ्र मंजुताके लोक तीनि हेरि ताके समनानता सुताके है॥ भाग्यवन्त ताके मैसु पुण्यके पताके कन्द तीनि तापताके पाल द्वन्द वाटताके है। दानि फल अर्थ ताके धर्म काम मोक्षताके स्वच्छतांघ्रि जनकसुताके भरताके है॥ सेव्य करताके भरताके हरताके औ सुरेशहू गणेश ताके आस नित्यताके है। कारुणीक ताके भूरि दिव्य यशताके वोर चारिहू पताके लोक तीनि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

व्यापताके है॥भाग्यवन्त श्रोणताके चीकने चमकताके चोखे चटकीलताके खानि मंजुताके है।दीनजन पालताके दुष्टगन शालताके कारतांघ्रि जनकसुताके भरताके है॥

इतिश्रीमन् अयोध्यासिंहवर्मात्मज भगवन्तसिंहविरचितायां भक्तिशिरोमणि ग्रन्थबन्दनावर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

दो॰ श्रीगुरुचरण प्रणामकरि सिय रघुबर हियआनि।
रामचरित भगवन्त कछु मतिसम कहत बखानि॥

सवैया॥ दशकंठकियो तपपुंजदियो वर आननचारि तबै त्यहिका। बरपाइ जिते नरनाग सुरासुर कालहु त्रासकरै यहिका॥ मनभावत राजअखण्डकरै नितनावत माथ सबै ज्यहिका। लहि वैभव नीच अनीति रच्यो जगमें न खल्यो खल सो क्यहिका॥ धर्म दिये करि लोपसबै जगब्यापि अधर्म अनन्तरहाहै। पातक भार अपारभयो बसुधासन सो नहिं जातसहाहै॥ कम्पित भूसुर साधु सबै प्रभुसों करजोरि पुकारि कहाहै। नाथ अनाथननाथ हरौ दुख नाथ निशाचर देत महाहै॥

दो॰ सुनत बिनय बानी गगन भई सकल सुखखानि।
नरतनुधरि कोशलपुरी हरिहौं तव दुखदानि॥
सो सुनि सानँद सकलसुर आये निज निज धाम।
अब बरणौं श्रीरामको जन्मचरित अभिराम॥
अवधपुरी जगमें विदित पावन परमअनूप।
करत राज सानंद तहँ सहित नारि मनुभूप॥

सवैया॥ बहुकाल कियो नृपराज तहां यकबार विचारतभो मनमा। बयबीतिगई बिषहीम सबै बनजाइ भजी हरि या पन मा॥ सुतकोदय राज सनारिगयो चलि आपु सुतीरथ नैमिषमा। मन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कायगिरा भगवन्तलग्यो चित दम्पतिको हरिपायँनमा ॥ देखि महातप दम्पतिको प्रगटे प्रभुशक्ति सहानँदकारी। मांगहु जो बर-भाव मनै करजोरि गिरा तब भूप उचारी ॥ आपु समान चहौं सुत नाथ पतोहलहौं इनकी अनुहारी । जानि यही रुचि रानिकह्यो भगवन्त पुजी मनआशा तुम्हारी ॥

दो० सुनि हरिबाणी मुदित मन भय बर बांछित पाय।
कछु दिनपर तनुत्यागि द्वौ बसे अमरपुरजाय ॥
कौशल्या दशरथ स्वई भये अवध नृपआय।
तिनको सुयश प्रताप गुण कहौं कौनविधि गाय ॥

छप्पय ॥ एकबार मनमाहिं भूप यह कीन विचारा। दिह्यो पुत्र विधि नाहिं भयो पन चौथहमारा ॥ गुरुहि सुनायो जाइ तुरत आ-पन दुखभारी। कह बशिष्ठ धरुधीर भूप ह्वैहैं सुतचारी ॥ मुनि तुरत बोलि शृङ्गीऋषै सुतहित कीन्हो जाग तब । भइ सिद्धि यज्ञ हवि पाय नृप किये उभै त्यहि भागसब ॥ सादर तब भूपाल बोलि प्रिय रानिन लीन्हा। कौशल्यहि दिय अर्ध अर्ध के द्वैदल कीन्हा ॥ कैं-केइहिदिये एक शेषके युगुलबनाये। कौशल्या कैकई हाथ महि-पाल गहाये॥ तिन मुदित सुमित्रहि भाग द्वउ दीन परम सुखपाय कै। इमि कछुककाल सुखयुतगयो जन्मसमयभयो आयकै ॥

दो० जन्मसमय श्रीरामको जानि मुदित तिहुँलोक।
सचराचर आनँद जगत भयो गयो तनशोक॥
अवधपुरी राजत परम बाजत गगन निशान।
बरषि सुमन जयजयकरत शोभित विबुधविमान॥

सवैया॥ मासभयो शुभयोग नक्षत्र सुबार विराजतहै सुखदाई। मध्यसमय तिथि नौमिघरी शुभ ताछिन में प्रगटे रघुराई ॥ आनँद

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मंगलचार तिहूँपुर देव सबैझरि फूलनलाई। नाचत नाकनटी बहु किन्नर हैं भगवन्त रहे गुणगाई॥ जलदाभ कलेवर श्यामलसै छवि कोटिनकामकि लाजतहै। सरसीरुह श्रोण विलोचनचारु मयंकमुखामित राजतहै॥ श्रुति कुण्डल नाक बुलाकझुलै तिलकाति सुभालम छाजतहै। शिरसोहत कीट त्रिखण्ड प्रभाकर जालनकी द्युति भ्राजतहै॥ कामकमानबनी भृकुटी झलकैं अलकैं शुभकम्बु गलापै। हासविलास हरे मनको छबिभूलत सो नहिं एकपलापै॥ सोहत मोतिनमाल हिये द्युतिजात कही नहिं सोचपलापै। कोटिनकाम सवामकरैं लखि वारन मातु स्वरूप ललापै॥ बाहु विशाल विभूषण सुन्दर आयुधपाणि सबै निजधारी। अंग अलंकृत हैं सबही अति पीतपटांगलसै छविकारी॥ पंकजपायँ सचिह्न मनोहर धारतध्यान जिन्हैं त्रिपुरारी। देखि अलौकिक रूप नखाशिष यों करजोरि कह्यो महतारी॥

दो० त्रिभुवनपति सब जगत जो कृत संभव थितिनास।
स्वइ मम जठर निवास किय यह बड़ि है उपहास॥
तौ प्रभु पूरब जन्म की कही कथा सब गाय।
पुनि बालक ह्वैकै लगे रोदन आगे माय॥

रोदन सुनत परम सुखमानी। आईं तुरत तहां सब रानी॥
नखशिख सुतछबिधाम निहारी। कहि न जाय उर आँनँदभारी॥
भूपति पुत्र जन्म सुनि पावा। परमानन्द प्रेम उर छावा॥
तुरत बजनिहन बोलि पठाये। सहित सुमंत आपु गृह आये॥
शिशुमुख सुखद देखि सुखपावा। गुरु वशिष्ठकहँ वेगि बुलावा॥
नंदीमुखहि श्राद्ध तब कीन्हा। विविधदान महिदेवन दीन्हा॥
गो गज हेम तुरँग बहु याना। दीन्हे पट भूखण विधि नाना॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

याचक सकल बोलि पुनि लीन्हा। जो जेहि भाव भूप स्वइ दीन्हा॥

दो० जन्मसमय श्रीरामके दान जु दिय महिपाल।
सो न सकैं कहि सहसमुख याचक भये भुवाल॥

नगर नारि नर परम सुखारी। करहिं आरती तन मन वारी॥
निरखि रूप सादर अनुरागे। सब निज भाग सराहन लागे॥
देवन नभ दुंदुभी बजाई। बरषि सुमन कहि जय रघुराई॥
गावहिं गीत मुदित गंधर्वा। जैजै करत व्योम सुर सर्वा॥
अवधपुरी शोभा अति छाई। घर घर बाजत अनँद बधाई॥
बंदनवार पताक सजाये। द्वार द्वार प्रति कलश धराये॥
सरयूसरित कोलाहल भारी। सोहत निर्मल धवल सुवारी॥

दो० पुरशोभा अद्भुत अमित क्यहि विधि कहौं बखानि।
परब्रह्म श्रीरामजी भये प्रकट जहँ आनि॥

छप्पै॥ विधिहरि शंकर शेष जासु चरणन्ह शिर नावत। नेति नेति श्रुति शास्त्र ध्यान योगीजन लावत॥ लोमश शुक सनकादि जासु लखि मर्म न पावत। नारद सहित गणेश विमल कीरति कलगावत॥ स्वइ रामचन्द्र भगवंतहित सुलभ जीवजग उद्धरण। नर देहधारि भो नृपसुवन चरण कमल ताके शरण॥ रोलाछंद॥ जन्मभूमिके पास बीसधनु उत्तरधामा। दशमी दिवस अनूप जयो केकइ सुततामा॥ भवन सुमित्रा धनुप तीस दक्षिण दिशिगायो। हरि दिन पावन पुत्र उभै तहँवां तिन जायो॥ तीनि यवांगुल होत मुष्टिका अंगुलचारी। षट् मुष्टिकको हस्त हस्त चौधनुष बिचारी॥ द्वै सहस्र धनुकोश कोश चौयोजन जानौ। योजन शतको देश देश शतमंडल मानौ॥ शतमंडलको खंड खंडनौ बसुधागाई। राम जन्म उत्साह ठाँव सबही रह्यो छाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

॥ दो० भूप सदन आनँद परम बाजत विविध निशान।
पुर नरनारि प्रसन्न अति करहिं विमल गुणगान॥
भूपति भवन भीर भइ भारी। गावहिं गीत मनोहर नारी॥
कंचन थार आरती वारी। रोचन दधि दूर्वाक्षत धारी॥
करहिं आरती बारहि बारा। कहि न जाइ उर हर्ष अपारा॥
निउछावरि पट भूषण करहीं। बारबार शिशु पायँन परहीं॥
रहे बाजि बाजन बहु भाँती। ठांव ठांव आनँद सरसाती॥
नृपमनमुदित बोलि सबयाचक। तिनहिं दानदेकीन्हअयाचक॥
पुर शोभा अद्भुत अतिछाई। देखत बनै बरणि नहिं जाई॥
सकल भुवनपति राम गुसांई। आपुइ प्रगट भये जहँ आई॥
दो० त्यहिपुर की शोभा कहत सकुचत गणप अनन्त।
क्यहि विधि सो बरणन करै बदन एक भगवन्त॥
धूप धूम नभ मण्डल छायो। सावन घन घमंडि जनुआयो॥
रव निशान गरजत करि शोरा। गावहिं गुण बंदी जनु मोरा॥
वेद ध्वनि भूपति गृह होई। दादुर शोर करत जनु सोई॥
सोहहिं कलश अनेकन द्वारा। दमकहिं जनु दामिनीअपारा॥
देव सुमन झरि बरषा लाई। अर्क जवास दुष्ट दुखदाई॥
आनँद पाथ सिमिटि पुर आवा। पूरण याचक भये तलावा॥
सुर महि साधु सुखी ससिभयऊ। खलनसमाज धूरि मिटिगयऊ॥
यह सुख समय परै तब जानी। जब हियबसहिं राम धनुपानी॥
दो० राम जन्म उत्सव परम रह्यो सकलपुर छाय।
शेषमहेश गणेश विधि सोसुख सकत न गाय॥
अथ श्रीरामजन्म बधाई पद॥ बाजै अवध नृप द्वार बधैया।
तिथि नौमी मधुमास पुनर्वसु जायो सुवन कौशला मैया॥ बरषत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुमन देव नभ संकुल मागध भाट सूत गुण गैया। घर घर मंगल-
चार अवधपुर हाट बाट चौहट छबि छैया॥ गृह गृहते ललना बहु
बनि बनि लैकर मंगल द्रव्य सुहैया। दल फल फूल दूब दधि रोचन
गावत राग परम सुखदैया॥ सानँद भवन भूप चलि आवहिं नि-
रखि निहाल होहिं चहुँ भैया। आरति करहिं मुदित छबि देखत
पुनि पुनि परत ललन गहि पैंया॥ जोसुख चहत सदाशिवशंकर
ब्रह्मादिक सुर सकल सिहैया। स्वइ भगवन्त सुलभ पुरवासिन
निरखि रूप सानुज रघुरैया॥ रेर आजु अवधपुर आनँद छायो।
कौशल्या केकई सुमित्रा सुवन अनूपघरी शुभ जायो॥ अवधपुरी
नर नारि अनंदित बाजत बिपुल बधायो। मंगल गान निशान
नगर नभ विबुध बिमानन छायो॥ भूसुर वेद बंदि विरदावलि गा-
वत सुयश सोहायो। बंदनवार पताक कलश ध्वज चौकैचारु पु-
रायो॥ ब्रह्मादिक शंकर ज्यहि ध्यावत निगम नेति करिगायो।
भक्तहेतु स्वइ स्वामि प्रगटि भू दशरथ सुवन कहायो॥ धन्य भाग्य
पितु मातु गोद भरि सादर जिनहिं खेलायो। पावन जन्म हेतु
भगवंतहु चरित चारु कछु गायो॥ कबित्त॥ छायो धूम धाम
लोक लोकने अपार देव साजिके बिमानब्योम दुन्दुभी बजाये हैं।
मंगलांग चारिदश चौदहौ भुवन होत वेद औ पुराण देव दिब्य
यश गाये हैं॥ साधुजन भूमि धेनु सानँद स्वच्छन्द बास पाप ताप
दोष दुःखत्रास नाश पाये हैं। रूपके अगार भक्ति मुक्तिके भँडार
चारु चारिहू कुमार ये अगार भूप जाये हैं॥

इतिश्रीमन्अयोध्याधिहवमांत्मजभगवन्तसिंहविरचितायांभक्तिशिरोमणि
ग्रन्थश्रीरामजन्मोत्सववर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० गुरु पद पद्म प्रणाम करि रामसिया शिरनाय।
बाल चरित श्री रामको कहौं सकल सुखदाय॥
चैत्र शुक्ल चौदशि रवि बारा। लिपवाये अजिरादि अगारा॥
मणिमय चारु चौक पुरवाये। कलश थापि घृत दीप धराये॥
सादर मुनिवर चरण पखारे। श्रुतिविधि गौरि गणेशपधारे॥
पूजा कीन्ह अनेक प्रकारा। धूप दीप नैवेद्य अपारा॥
शुभ स्वरूप रचि भीति बहोरी। पुनि हरदी पीठा लैघोरी॥
चित्रित सदन किये बहुभांती। सुखमाअमित न सोकहिजाती॥
सजि पट भूषण सुवन सुमाई। लै उछंग बैठीं छबिछाई॥
पुनि पूजे षट कलश सोहाये। तंदुल सेंदुर हरदि चढ़ाये॥
धूप दीप कीन्ही सुखदाई। घी गुर सानि अशन करवाई॥
करि पुट पानि रानि शिरनायो। जाति बंधु तब भूप बुलायो॥
विविध भांति भोजन करवाये। विप्रन्ह सकल दक्षिणा पाये॥
देत अशीष चले निज धामा। यहिविधिकीन्हछठीअभिरामा॥
दो० गो गयन्द बाजी पुरट मणि मुक्ता समुदाय।
विप्रन्ह दिये नरेश बहु सोनहिं कहे सिराय॥
माधव कृष्ण बाण भृगुबारा। गुरुबशिष्ठ कहँ बोलि सुवारा॥
कीन्ह बारहौ वेद विधाना। जाइ न सो सुख एक बखाना॥
ध्वज पताक तोरण रचवाये। बहु विधि वंदनवार बनाये॥
गोमय अजिर लिपाय बहोरी। चारि चौकतहँ मणिमय पूरी॥
मुनिवर पितर देव पुजवाये। रानिन सुवन समेत बोलाये॥
लै सुत बैठीं चौक मँझारा। विप्रन्ह वेद गिरा उच्चारा॥
गावहिं गीत सकल पुरनारी। मनअति मुदित देखिसुतचारी॥
मुनिवर सघृत होम करि ताही। नाम लिख्यो पीपरदल मांही॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० पूजन करि त्रैबार ख्वइ शिशु श्रुति दीन्ह सुनाय।
हिरण्य गर्भ कहि राशिको नाम सकल सुखदाय॥
रमत रमावत जो सबहि सर्वोपरि गुणधाम।
तासु राम अस नाम कहि सकल लोक अभिराम॥
जन्म पुष्य भा द्विपदको बर्ण ह ईश्वर जानि।
नाम हेमनिधि राशिको मुनिवर कह्यो बखानि॥
बिश्व भरत पोषत ज्वई सर्वोत्तम गुणधाम।
भव भंजन यश जासु कहि तासु भरत असनाम॥
अश्लेषा पद प्रथम को जन्म अहै अभिराम।
बर्ण डकार इकार स्वर डील तेज निधि नाम॥
जाके सुमिरण मात्रते होइ शत्रु क्षय आसु।
पुत्र सुमित्रा केर लघु नाम शत्रुहन तासु॥
अश्लेषा चरणादिकर जन्म ड अक्षर जानि।
स्वर इकारहै नाम शुभ डील धराधर मानि॥
सब लक्षण युत भूमिधर रामभक्त गुणधाम।
तनय सुमित्रा जेष्ठ त्यहि कहि लक्ष्मण शुभनाम॥

स० भाग्यबड़ी तिन जीवनकी इनसों निशिबासर जे रतिलैहैं। लोक सदा सुखदा तिनको यश तीनिहुं लोकनमें न समै हैं॥ हो- इहि पार बिना श्रमसो भव किंकरहू यमकेन सतै हैं। रामकृपा भ- गवंत नितै परलोकहु लोक महा सुखपैहैं॥

दो० यहिबिधि मुनिवर नामधरि पुनि पुनि दीन्ह अशीश।
परमानँद भगवंत सुनि रानिन्ह सहित महीश॥

स० चारिहुरूप अगार अनूपम देखत मातु सबै सुखपावैं। बा- रहिबार लगाय हियें मुख चूमि मयंक प्रमोद बढ़ावैं॥ संतत ध्यावत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शम्भु जिन्हैं जन योगि निरन्तर ध्यान लगावैं। ताहिभरे भगवंत उछंग अनंदित सो जननी पय प्यावैं ॥ जाहि अखेद अभेद अछेद अजन्म अनंत सदा श्रुति गावैं। शङ्कर शेष सुरेश जलेश दिनेशहु जाहि निरन्तर ध्यावैं ॥ नारद शारद व्यास गणेश थके कहि जा यश अन्तन पावैं। ताहिभरे भगवंत उछंग अनंदित सो जननी पय प्यावैं ॥ जा पदपङ्कज ध्यान किहे अघ जन्म अनेकन को जरिजावै। नाम लिहे भव सिंधु अपार बिना श्रम गोपद सो तरिजावै ॥ संतत लोक अनंदकरै परिणाम सुभाय परम्पद पावै। ताहिभरे भगवंत उछंग अनंदित सो जननी पय प्यावै ॥ जननी सुत सुन्दर गोद लिहे मुख शोभित षोड़श पूर्ण कला। अरबिंद शुभाक्ष सजै भृकुटी मनमोहत भाल डिठौन भला ॥ चिबुकाधर चारु कपोल बने छबिदेत अनंत सुकंबुगला। बसुयाम बसौ भगवंत हिये यह रूप अनूपम रामलला ॥ अति पंकज पाणि सजे पहुँची नख ज्योति अपार जगै अमला। उर बाल बिभूषण नाभि भली त्रिवली शुभदायक चारिफला ॥ कटि चारु नितम्ब उरू शुचि जंघ बिलोकत जो अघ पुंजदला। यह रूप बसौ भगवंत हिये रघुवंश बिभूषण रामलला ॥ बनजारुण कोमल पायँ भले अरतालिस चिह्न बने अमला। अँगुरीन दिपै नख ज्योति मनो नग लाल जड़े कल कंजदला ॥ छबि देखत मातु निहाल सबै करि मानत जीवन को सफला। शिव मानस पंकज भृंग बसौ भगवंत हिये छबि रामलला ॥

दो० स्वस्ति कोण बसु पद्म श्री हलमूशल अहिबान।
ऊर्ध्व रेख ध्वज बज्र नभ अंकुश पादपपान ॥
मुकुट चक्र यव दंड नर सिंहासन शुभमाल।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छत्र चमर चौबिंश पद दक्षिण चिह्न बिशाल ॥
गो पद पृथ्वी कुम्भ दर अर्धचन्द्र षटकोण।
जम्बूफल जिव चंद्रिका शक्ति बिंदु त्रै कोण॥
अमी कुंड सरजू गदा मीन पताक मराल।
त्रिबली धनु तूणीर विधु वीणा बंशि बिशाल॥
चतुर्बिंश शुभ चिह्न ये बायें पद अभिराम।
महारमायण में अमित कह्यो महातम बाम॥
यह छबि नखशिख लालकी देखि देखि पितु मात।
महामोद पावत मनहि दिवस न जानहिं जात॥
यकदिन सुत अनरस लख्यो कह्यो कौशलामाय।
काहुहि दुष्टै नारिजनु दीन्हेसि नजरि लगाय॥

क० भोरहीते आजु मेरो लालन उदास माई पीवत न दूधनेकु रोवै बार बारहै। बैठेहू न ठाढ़ेरहै सोवत न पालने में कौन मैं उपाय करौं शोचही अपारहै॥ बोलिलै बशिष्ठ बेगि आय माथ हाथधारि पढ़िकै नृसिंह मंत्र मेट्यो फेर फारहै। जासु नामलेत कोटि संकट शमन होत ताहि मातु कौशला करावै फूँकझारहै॥

नृसिंह मंत्र तंत्र शास्त्रे॥

ॐ नमोनृसिंहाय हिरण्यकश्यपवक्षस्थलविदारणाय त्रिभुवन व्यापकाय भूतप्रेत पिशाच शाकिनी डाकिनीकीलोन्मूलनाय स्तंम्भोद्भव समस्त दोषान् हनहन शरशर चलचल कम्प कम्प मथ मथ हुंफट् हुंफट् ठंठः महारुद्र जापियत्त स्वाहा॥

एकबार शिव सहज सुभाये। पावन भस्म सकल तनलाये॥
करशृंगी डमरू लै लीन्हा। कोशलपुरी पयाना कीन्हा॥
घर घर आगम कहत सिधाये। अवधनाथ द्वारे चलि आये॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुनि कौशल्या लीन्ह बुलाई। आसन दीन परम सुखदाई॥
करि आदर बहुबिधि महतारी। मेले चारु चरण सुतचारी॥
पुनि पुनि दीन्ह अशीश पुरारी। भये छकित छबिसिंधु निहारी॥
गोद मोद निधि बालक लयऊ। तनअतिपुलकमुदितमनभयऊ॥
तब कर कमल जोरि करि माता। बोली बचन परम सुखदाता॥

दो० स्वामी गुण आछे सकल कहिये यामें जौन।
जो कछु माँगिहौ आपु सो देब सत्य हम तौन॥
सुनि बोल्यो योगी बचन सुनहु कौशला माय।
बड़े भाग्यको पुत्र तव गुण नहिं कहे सिराय॥

तोटक छन्द॥ अति सुन्दर बालक मातु अहै। गुणसागरको कहि पार लहै॥ कृत दर्शन शूल हरी सबही। यहिते सुख पुञ्ज मिली तुमही॥ कछु हैहहि काल ब्यतीत जबै। मुनि माँगन ऐहहि एक तबै॥ तिनके सँग देहहु जाय इन्हैं। हति निश्चर देइहिं सुःख तिन्हैं॥ मिथिलापुरको पुनि जावहिंगे। धनुखंडन कै यश पावहिंगे॥ दय पत्र बुलाय बरात तबै। अति होइहि ब्याह उछाह सबै॥ चहुँ बन्धु बिवाहि पुरावहिंगे। यश निर्जर पावन गावहिंगे॥ शुभगीत छन्द॥ यह करी अद्भुत कर्म सबही दुष्टगण संहारिहै। सुर साधु महि द्विज पालि तीनिहुँ लोक यश बिस्तारिहै॥ सुख भूरि सम्पति पूरि तुम्हरे भवन कबहु न खांगिहै। यह सत्य सब हम कहत माई झूंठनाहिं वसु लागिहै॥

सो० पुनि बोल्यो स्वइ बैन सुनहु केकई मातु तुव।
पुत्र सकल गुण ऐन लक्षण कहौं बिचारि सब॥

शुभगीत छन्द॥ यह भक्त मन क्रम बचन रघुपति चरण रति अति लाइहै। वसु याम रामहि ध्यान रसना नामरस शुचिपाइहै॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुर जनक होइहि व्याह पावन सुयश तिहुँपुर छाइहै। इमि कहउँ आगम सत्य माई व्यर्थ नहिं कछु जाइहै॥

सो० सुनहु सुमित्रा माय सकल सुलक्षण पुत्र तव।
आगम कहौं सुनाय सत्यहि सो नहिं झूठ कछु॥

शुभगीत छन्द॥ अति वीर दउ रणधीर बाँके शत्रु जाके डर डरै। श्रीराम पद पाथोज रति मन काय बच संतत करै॥ मिथिलेश पुर सँग राम इनहूं व्याहि पुनि सब जाइहैं। भगवन्त जग यश गाइ पावन पार भवनिधि पाइहैं॥

सो० सुनि शिवके शुचि बैन भई मगन रानी परम।
मुक्तामणि बहु देन लागीं सुवन छुवाय सब॥

छन्द॥ धरि माथ इनके हाथ दीजे नाथ आशिर्वादही। कल्याण जाते होइ संतत डीठि मूठि बिनाशही॥ नहिं निकट आवै रोग कबहूं बाल रोदन ना करै। इमि कहत जोरे हाथ जननी बारबारहि पांपरै॥

सो० सुनि योगी सुख पाय बोल्यो सुनु माता बचन।
डरिहौं अबहिं नशाय डीठि मूठि बाधा सकल॥

छन्द॥ कबहुं न रोई बाल पलना गोदमें सुख सोइहै। सब ठाँव रहिहै नेक तनमें रोग एक न होइहै॥ यहि भाँति कहियोगीश पुनिकरि नादशृंगी चलिदियो। भगवन्त चारिउ बन्धु सुन्दर रूप धरि लीन्ह्यों हियो॥

सो० सुनि शिवके वर बैन भई मुदित माता सकल।
सुन्दर शिशु सुख दैन बार बार लावहिं हिये॥

दो० नख शिख सजि भूषण बसन बर पलना पौढ़ाय।
मातु झुलावहिं लालनहिं हर्ष न हिये समाय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

क० श्यामतन पीतभीन भांगुली अनूप साजि लालनै सु-आनि मध्य पालनै लिटावई। देखि रामचन्द्र रूप माधुरी सुमोद कन्द प्रेमसों उमंगि चारु बालकेलि गावई॥ शम्भु सनकादि शुक नारदादि योगिवृन्द कोटिनै उपायकृत्य ध्यान जोन आवई। भा-ग्यवन्त स्वामिसो प्रगट्ट आनि भूपभौन ताहि मातु कौशला सु-मोदसों झुलावई॥ लघु लघु लाल लाल कोमल चरण जंघ जानु औ नितम्ब कटि सिंहही लजैरही। सुन्दर गँभीरनाभि मंजुल उदर बाहु पांहुची बिशाल शोभ कंजपानि दैरही॥ चारु चिबुकाधर कपोल दन्त नासिकाक्ष पूरण मयंक आस्य पुंज भास ह्वै रही। भा-ग्यवंत रामशिशु रूप ना बखानि जात अंग अंग प्रत्य कामकोटि छबि छैरही॥

दो० भाद्र कृष्ण रवित्रैदशी पुष्य नक्षत्र अनूप।
भूम्युपवेशन रामको कीन्ह मुदित मनभूप॥

बिप्र वृन्द गुरु बोलि पठाये। विबिध भांति मंगल सजवाये॥
तनि बितान आंगन लिपवाई। पूजि बराहस भूमि सुहाई॥
पुनि अन्हवाय बाल सुखदाता। भूषण पट सजि बहुबिधि माता॥
अस्त्र शस्त्र बहु बस्तु धराई। बैठावत महि सुत सुखदाई॥
गावहिं मंगल सादर नारी। करहिं वेदध्वनि भूसुर भारी॥
बहु बिधि दान याचकन पाये। देहिं अशीश मोद मन छाये॥
कोशल पुरी मुदित नर नारी। निरखहिं छबि तनमन धनवारी॥
त्यहि अवसर कर हर्ष अपारा। को अस कहि जो पावहि पारा॥

दो० भूपति रानी मुदित अति पुनिपुनि सुवन निहारि।
बिप्रन दीन्हे दानबहु मणि भूषण धनवारि॥
जासुनाम जपि सकलसुख त्रिनुश्रम आवत धाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ताके सुखहित मातु पितु करत अनेक उपाय॥
यहिसुख सहित दिवस कछु गयऊ। पुनि अनप्राशन आवत भयऊ॥
द्वितिया मार्ग शुक्ल शशि पूषा। मिथुन लग्न शुभ परम अदूषा॥
भूपति मुदित बोलि मुनिराजू। अनप्राशनकर सज्यो समाजू॥
विविध भांति भोजन बनवाये। षटरस चारि भांति जो गाये॥
जाति बन्धु नृप न्योति पठाये। सुनत सकल सादर चलिआये॥
तब सुत सकल उबटि अन्हवाई। सुन्दर पट भूषण पहिराई॥
लै नृप गोद सुवन सुखदाई। सप्तबार मुख ग्रास छुवाई॥
पुनि अँचवाय पोंछि मुखलीन्हा। दान मान बहुभाँतिन कीन्हा॥
पुत्रन मातु निकट पहुँचाये। पुनि सबहिन भोजन करवाये॥
अँचै पान दीन्हे सब काहू। कहि न जाय जस भयोउछाहू॥

सवैया॥ कहिजात न सो सुख एक महा मुदछाय रह्यो नृपके सदनै। गुण गावत मागध सूतभलो यशपावन बंदि कदम्बभनै॥ भगवन्त विलोकत मातु पिता सुत जीवनको निज धन्यगनै। मुनि योगिन दुर्लभ स्वामि स्वई बश प्रेमभयो दशयान तनै॥

कुण्डलिया॥ रामै जननी एकदिन पलना मध्य सुताय। इष्टदेव श्रीरङ्ग हित पाकबनायो जाय॥ पाकबनायो जाय मुदित पुनि भोग लगायो। सुतहि विलोक्यो खात पलन सोवत स्वइ पायो॥ पायो भ्रम मनमाहिं निरखि पुत्रहि द्वैठामै। रहीठगीसी मातु विलोकत पावत रामै॥ मातै बिकल विलोकि कै राम दियो मुसक्याय। अद्भुतरूप अखंड निज तब दीन्ह्यो देखराय॥ तब दीन्ह्यो देखराय रोम रोमन प्रतिजाके। कोटि कोटि ब्रह्मांड अमित सूरज शशि ताके॥ ताके सरि सर सिन्धु भूमि हरि शम्भु विधातै। देखि चरित बहु भाँति बिनै कीन्हीं तब मातै॥ सवैया॥ करता जगके

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तुमहीं प्रभुहौ तुमहीं सब जीवनके भरता। भरता सब दासनके तुमहीं तुमहीं परिणाम अहौ हरता॥ हर तामरसोद्भव विष्णु रचौ तुमहीं पुनि भार क्षमा धरता। धरता अवतार दशौ तुमहीं तुमहीं शमनासुर के करता॥

दो० सुनि बोले यह चरित मम कतहुं न जानै कोय।
जननिउ कह कबहुँन हमें तव माया प्रभु होय॥
एवमस्तु कहिरूप शिशु भये बहुरि श्रीराम।
नाना विधि लागे करन पुनि चरित्र अभिराम॥
चैत्र शुक्ल नौमी परम पावन अति सुख रूप।
वर्ष गांठि श्रीरामकी कीन्ह मुदित मन भूप॥

सवैया॥ आनँद मंगल आजु अहै पुर वर्ष कि गाँठि सु रामललाकी। बाजत बीन रवाब मृदंग सुसोहत ताल भली तबलाकी॥ पाय सुदान अशीसत याचक पूरण आशभई सकलाकी। गावतहै भगवन्त सदा कलकीरति दायक चारि फलाकी॥

दो० चारि सुवन चारौ सुभग चारौ फल दातार।
चारु अजिर खेलैं नृपति लखि सुख लहै अपार॥

सवैया॥ नृप आँगन खेलत चारितनै छबिजात कही नहिं सो सकला। मुख पूरणचंद्र बिलोचन चारु बिलोकत जो अघओघ दला॥ तन श्याम विभूषण बाल सजै झलकै द्युति पीत झँगा अमला। छबि सागर नागर बासकरौ भगवंत हिये नित रामलला॥ कचकुंचित चिक्कन शीश भले अति उन्नत भाल सुभाग्य थला। दरग्रीव महाछबि सीव मनोहर मंजु अतीवसजै कठुला॥ झँगुली तन श्याम सुपीत लसै घन मध्य मनो चमकै चपला। भगवंत उरांतर नित्त बसौ प्रभु भव भय भंजन रामलला॥ पग नूपुर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

किंकिणि लंक सजै सुनि शब्द मुनीशन ध्यान चला। शुचि नाभि गँभीर भली त्रिवली उर आयत दाम लसै अमला॥ पहुँची युग पाणि अनूपबनी मुख सुन्दर पंकज मान दला। नितबासकरो भगवंत हिये करुणा सुखसागर रामलला॥ बिहरैं नृप आँगन बाल चहूँ छवि देखत मातु सुखी सकला। चलिबैंयन बैंयन दूरिकछू पुनि लागत लोटन भूमितला॥ कहुँ छाहँ बिलोकि धरै झपटैं किलकैंयन कै मुख चंदकला। छविसिंधु बसौ भगवंत हिये नित बंशविभूषण रामलला॥ हित खेलन माँगत चंद्रकबौ करि रोदन ठानत हैं मचला। कबहूँ लखि कागधरैं त्यहिको चलु बैंयन बैंयन भूमि थला॥ कहुँ मैयनओरझकैयन दै तुतराय सु बोलत बोल भला। गुण सागर आगर रूपबसौ भगवंत हिये नित रामलला॥ विहसैं लखि भूरि खिलौननको दमकैं दँतियां द्युति ज्यों चपला। तुतराय पुकारतमातनको सुनि आनँदभूरि लहैं सकला॥ दुलराय उठाय लगाय हिये छबिदेखत अंबककै अपला। करिये प्रभुबास हिये भगवन्त सदा जनरंजन रामलला॥ मातुगहे कर लालनको सिखवै शुभचालन आँगनमाहीं। पावँ उठाय धरावत भूपर नूपुरशब्दसुने किलकाहीं॥ छोड़त हैं अँगुरी जननी न गिरैं डर पायँनमें लपटाहीं। कौनप्रकार कहौं छबिसो मनभावतहै मुखआवत नाहीं॥ दीनरसे बैठाय महीपर आपहु बैठिगई तहँ माई। बस्तु अनेक दिखावति है ढिग राखत बातनमें भरमाई॥ पायसुबीच चले भजि बैंयन दीन खिलौनन डारि तहाँई। मातुगहै जब धावति है तब ठानत आँगनमें मचलाई॥ देहरि द्वारपरे किढ़िलैं तब मातु उठाय नघावत पारे। धूरिगई भरि अंगसबै निज आँचरसों जननी गहिझारे॥ लागत रोवन लालतबै लै गोदलगाय हिये चुचुकारे। आँसुनपोंछि पि-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

याय सु क्षीरहि वारणके धन प्राणदुलारे॥ सुन्दरसेज सवाँरि लला लै पौढ़त मातु महासुखपावै। खन्तमनैयनके कहि भैयन बारहि बार हिये लपटावै॥ कोमल पाणिगहे मुखचूमत प्रेमअतीव न हीय समावै। सो सुखमा भगवन्तकहे किमि भावतही मुखमें नहिं आवै॥

दो॰ जाके गुणगण अगम अति पावत निगम न पार।
सो प्रभु अपने भक्तहित करत चरित्र अपार॥
काकभुशुण्डी दिवस यक आयो भूपति भौन।
त्यहिसन जो चारितकियो कहौं कछुक अवतौन॥
जानुपानि धाये धरण ताहि देखि रघुनाथ।
भाज्यो सो जहँ जहँ गयो पाछेहि देख्यो हाथ॥

कवित्त॥ फिरत भ्रमित मन त्रसित न थिरहोत बिकल बिलोकि राम दीन्ह्यो मुसक्यायहै। हँसतहिजाय मुख दीख जो चरित्रहीय अमित अनूप मोपै जातसो न गायहै॥ लोक लोकपाल यमकाल त्रिदेवजाल भूमि सर सरित पयोधि बनवायहै। देव मुनि सिद्धि योगि नाग नर भूत प्रेत विविधप्रकार दीख सृष्टिसमुदाय है॥

दो॰ देखत सो चकित भयो बिहसे तब रघुराय।
बिहसतही पुनि कागस्वइ बाहर निकस्यो आय॥
योंही नित नवचरित बहु करत कृपा सुखकन्द।
जो सुनि सादर जीवकर छूटिजात भवफन्द॥

छप्पै॥ सतचित आनँदरूप कृपापूरण गुणरासी। सर्वोपरि परधाम सदा सबके उरबासी॥ बन्दत पद विधि शम्भु जाहि सनकादिक ध्यावैं। आगम निगम पुराण शेष ज्यहि नेति बतावैं॥ स्वइ स्वामिभक्तहित भूप्रगटि कृतचरित्र भवभय हरण। मनबचन काय भगवन्तगहु चरणकमल ताके शरण॥ कवित्त॥ धन्यहै अवध

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जामें लीन अवतार राम धन्य आँगनाई जामें खेलको खेलतहैं। धन्य तात मातु सब देखहीं समोद जौन चारित अनूप रामचन्द्रजू करतहैं॥ धन्य धाम धन्य बाम धन्य लोग धन्य भाग धन्यधन्य नैन जौन रामको लखतहैं। धन्य अन्न धन्य वस्त्र धन्य क्षीर नीर धन्य धन्य धन्य सर्व हेत राम जो लगतहैं ॥

इतिश्रीमन्नृअयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितायांभक्तिशिरोमणिग्रन्थ
श्रीरामचन्द्रबाललीलावर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

दो० बन्दौं श्री अवधेशसुत चारिउ परमउदार।
कृपा दृष्टि करि देहु बर पूजै आश हमार॥
मातु सकल आनँद भरी देखत श्यामलगात।
यथा रंक गथ पाय बहु हर्ष न हिये समात॥

रागबसन्त॥ नृप अजिर खेल खेलैं कुमार। कहि जात नहीं सुखमा अपार॥ पदपद्म चारु शुभलाललाल। कृत शब्द मधुर नूपुर सुजाल॥ दलकमल पदज अतिशय बिराज। नखज्योति मनो उडुगण समाज॥ मणि जटित पुरट किंकिणि बिशाल। बर लंक शोरसो करत जाल॥ नाभी अनूप शुभरोमराज। उर बिप्रपाद श्री बत्सभ्राज॥ पहुंची अनूप करकंज सोह। लखि कंठ मंजु छबि कंबु मोह॥ कठुला बिचित्र नख बाघ माल। बरबदन बिंदु मसि लसत भाल॥ कुलही अनूप शिर सुभग अंग। भँगुली सुपीत द्युति पटल भंग॥ छबिधाम राम आनंदकंद बसौ भाग्यवन्त उर व्योम चन्द॥

दो० रामरूप शोभा अमित क्यहि बिधिकहौं बखानि।
शेष महेश गणेश बुधि जाको कहत सकानि॥
ब्रह्मा शिव सनकादि ज्यहि पावत ध्यानहु नाहिं।
सो प्रभु नाना बिधि चरित करत भूपगृह माहिं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जिनके इन पद प्रेम नहिं नहिं चरित्र आधार।
मातु जठर जन्मे बृथा केवल पुहुमी भार॥
माता यकदिन अजिर लिय हती ठाढ़ि रघुनन्द।
कह्यो तात देखहु विशद उयो ब्योममें चन्द॥
सो सुनि यकटक रामजी लागे चितवन ताहि।
बारबार करकंज सों निकट बुलावत वाहि॥
तुतुरे तुतुर कहत हैं मातु लेब हम याहि।
भूख लागि खावै यहै और कछू हम नाहि॥
अस कहि पुनि लागे तबहिं रोदन भूमि मँझार।
मानतहै नाहीं करत जननी यत्न अपार॥
तस्करके बल राति है दुर्बलबल भूपाल।
मूरुखके बल मौनहै केवल रोदन बाल॥

स० मातुकरै तब शोच हिये हम नाहक चन्द्र इन्है दिखरावा। कौन उपाय करौं नहिं मानत मांगत है मनको निजभावा॥ और चहौ ज्वइ खाउ लला तुम जातकहूं शशि नाहिंन खावा। भाँति अनेक कह्यो जननी पर लालन के मन एक न आवा॥ आवत गोद न रोवतहै कहि चंदहिलेब अबै हममाई। शोचत मातुखड़ी मन में कयहिभाँति भलाहम चन्द्रहिपाई। जो लयदेउँ ललाकरमें लखि जाहिरहै यहि काल चुपाई। जानतहै न अबूझकछू हम काकहिकै इनको समुझाई॥ तौ यक भाजनमें भरिकै जललै कर ऊपर दीन उठाई॥ आवहु चन्द्रबुलावतहैं हित खेलनके तुमको रघुराई। फेरि धर्यो धरणी महँ सो कहि लेहु लला गहि चन्दहि लाई॥ ताहि विलोकि हँसे रघुनायक धारणको करकंज चलाई। भाजनमें कर डारिधरै पुनि बाहर आवत सो शशिनाहीं॥ झांकतहैं पुनि पात्र

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तरे तहँ देखिपरै नाहिं तापरछाहीं। तौ पुनि रोइकहै जननी हम लेब शशी निजहाथनमाहीं॥ वारिबिषे यह झलकतहै पर हाथन में गहि नेकु न जाहीं॥

दो० अतिसमीप वह चन्दहै कहौतो लावों धाय।
सुनि लालनके वचनवर कह्यो मातु मुसक्याय॥
तव मुखलखि सकुचै शशी जावै दूरि पाताल।
ताते आवै हाथनहिं कारण याही लाल॥
सुनि बिहसे प्रभु मातुतब लीन्ह्यो गोद उठाय।
दूधप्याय दुलराय पुनि दीन्ह्यो ताहि झुलाय॥
रामचन्द्र विधुतन्तलखि मातुलहत मनतन्त।
देहु नाथ निज तन्तवर गावत यश भगवन्त॥

यहिविधि कृपासिंधु रघुराई। करत चरित भक्तन सुखदाई॥
देखि मातु पितु अति सुखपावैं। महामोद मनमाहिं बढ़ावैं॥
कछुक दिवस बीते पितुमाता। चूड़ाकर्म कीन्ह सुखदाता॥
तीसरवर्ष शुक्ल सितआयो। भृगुदिनातिथिदशमीशुभपायो॥
कन्यालग्न जानि सुखदाई। पठये बोलि भूप मुनिराई॥
सुनिमुनि मुदित भूपगृहआये। विधिवत चूड़ाकर्म कराये॥
गान निशान बेदधुनि होई। याचकजन पावत मनजोई॥
नृप सबजाति बन्धु बुलवाई। सादर सबकहँ अशनकराई॥
विप्रन दानदीन बहुभाँती। देहिं अशीष न मुदकहिजाती॥
अधिकउछाह अवधपुर छाये। घरघर बाजहिं मोदबधाये॥
सब नर नारि मुदित मनमाहीं। सुखसंयुत निशिवासर जाहीं॥
रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारी। जननि जनक पावहिंसुखभारी॥

दो० सुखमा सुखवहअमितअति कहिकविसककोताहि।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

षट्मुख शरमुख वेदमुख अगमनिगम गमनाहि॥
खेलहिं आंगन चारिउ भाई। करहिं अनूप चरित सुखदाई॥
अति सुंदर चारिउ सुकुमारा। पावहिं लखि मुद मातु अपारा॥
राम श्याम तन अमित सुहायो। पीत झँगुलि भूषण छबिछायो॥
ठुमुकि ठुमुकि आँगन बिचधावें। एकहि एक लपटि पुनिजावें॥
लरखराय गिरि फिरि उठि लपटें। भाजत निरखि छुवन यकझपटें॥
मणि खम्भन झाँकहिं निजछाँही। लागत नाचन देखत ताही॥
चलहिं भाजि पुनि हँसिहँसिगाई। पाछे लागि जात तिन्हमाई॥
मातहि लखि करिकै मुखरूखा। कहहिं लागि हमरे अति भूखा॥
जासुरूप सचराचर माहीं। व्यापित लखि कउ पावत नाहीं॥
जासु रोम प्रति भुवन अपारा। जो प्रभु पालत सब संसारा॥
रोवत स्वइ जननी के पासा। नैन नलिन आये चुइ आँसा॥
प्रेम उमगि जननी उरलाये। आँशु पोंछि पयपान कराये॥
दो॰ पुनि सुन्दर लैकै अशन सबहिन दियो खवाय।
बारिप्याय मुख पोंछि करि लीन्हेउ गोद उठाय॥
यहिप्रकार शिशु चरित सुहाये। करहिं अनेक जाहिं नहिंगाये॥
मुनिजन जाहि ध्यान नितलावें। निगमागम ज्यहि नेति बतावें॥
सो निजभक्त हेतु तनुधारी। करत चरित संसृत दुखहारी॥
इमि सुखयुत कछु कालबितायो। पाँचौ बर्ष मार्ग शुभआयो॥
दशमीधन रेवति उडुराजा। कर्णबेध कर साजि समाजा॥
नृप गुरु बिप्र बोलि सब लीन्हे। जाति कुटुम्ब निमंत्रण कीन्हे॥
मंगल साज सकल गृहसाजे। भाँति भाँति बाजन बहुबाजे॥
बिमल वेदिका अजिर बनाई। अति बिचित्र तहँ चौक पुराई॥
हेम कलश दीपक धरितापै। रचना अमित जाइ कहि कापै॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शिशुन सवाँरि मातु लै गोदा। बैठीं चौक मध्य सह मोदा॥
पुत्रनकर धरि विविध मिठाई। कछुक बोरि दधि दीन खवाई॥
सींक बोरि रोचन श्रुति लाये। स्वर्णकार तब निकट बुलाये॥

दो॰ परमानँद ते झटितअति लीन बेधि शिशुकान।
भई निछावरि विविध बिधि करहिं नारि बहुगान॥

रोलाछन्द॥ लीन्हे तब भूपाल बोलि सब याचक वृन्दा। धन मणि भूषण चीर भूरिदै कीन्ह अनन्दा॥ करवाये पुनि अशन सबहि सादर सुखमानी। बिप्रन दीन्हेदान अमित अस्तुति नृपभानी॥ मुदिताशिष सब देहिं चिरञ्जीवैं सुतचारी। दिन दिन इनते नाथ हमहिं होई सुखभारी॥ गावहिं गुण नभ देव सुमन संकुल झरि लाये। कर्णबेध उत्साह जाहिं मुख एक न गाये॥

दो॰ जिनके नाम प्रतापते जन्म मरण दुख जाय।
भूप भवनसो प्रेमबश रह्यो कान छेदवाय॥

परम प्रसन्न भूप सब रानी। देखत सुत चारौ छबि खानी॥
कोशलपुर नित नवल उछाहू। चहुँदिशि उमगत मोद प्रवाहू॥
मंगल मोद नव्यनित ताके। मंगल मय सुन्दर सुत जाके॥
छबि समुद्र नहिं बरणि सिराई। लखि शतकोटि मदन बलिजाई॥
अब्जअरुणपद कोमल लाला। जगतनखनद्युतिबिशदसुजाला॥
रुनु झुनु धुनि पैंजनियां करहीं। सुनि रव ध्यान मुनिनके टरहीं॥
कहिनजायकटि किंकिणिशोभा। उर मणिमाल देखि मनलोभा॥
बाहु विशाल बिभूषण भूरी। करमृदु करज सनख द्युतिरूरी॥

दो॰ पूरण शशि सुखमा बदन चिबुकाधर द्विजमंजु।
नासा शुचि सीपज लसत ललित अक्ष नवकंजु॥

लघु लघु कुंडल करण विराजैं। गोल कपोलन पै छबि छाजैं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मन्मथ धनुसम भृकुटि बिशाला। तिलक अनूप सोह बरभाला॥
शीश चौतनी सुभग सुहाई। पीतबसन भूषण छबिछाई॥
नखशिख सुत सुंदर सुखदाता। निरखिनिहालहोहिं पितुमाता॥
सानुज सखन सहित रघुराई। खेलहिं खेल महीपन जाई॥
भोजन हित नृप बोलि पठावें। सखनसमाजछांड़ि नहिंआवें॥
कौशल्या तब आपुइ जाई। चलहिंभाजितकि आवतमाई॥
कहहिजननिचलि सुतकछुखाहू। बोलत तुमहिं बैठि नरनाहू॥

दो० सुनि जननीके बचन प्रभु आये चलि तब साथ।
बिहसि भूप रज झारि ढिग बैठाये गहि हाथ॥

किरीट छन्द॥ जेंवत पै थिरचित्तनहीं लखि औसर भाजिचले किलकावत। आवत फेरि समीप नहीं बहु भाँतिन सो महिपाल बुलावत॥ संगति जाय सखान मिले रचिखेल अपारन दुंदि मचावत। जा सुखको तरसैं बिधि शंकर ताहि सुभाय क्षमापति पावत॥ ग्रामबधू छबि देखि छकें घरजाय सखीन सुबैन सुनावहिं। धन्य सखी जिन वासपरोस बिलोकत जे निशि द्योस रहावहिं॥ हौं जबते लखि रूप सखी उन मोहिं नहीं तबते कछु भावहि। चाहतहै मन मोर यहीलिय गोदकरौं बसुयाम खिलावहि॥ खेलतद्वार बिलोकि कबौ पुरलोग उठाय उछंग मँझारहिं। चूमि निशेश मुखामल कोकर सुंदर मिष्ट सुमेवहि धारहिं॥ भाँति अनेकन प्यार करैं रुखताकि पठावत वेगि अगारहिं। कोशलनाथ कि भाग्यबड़ी भगवन्त लहै कहि शेषन पारहिं॥

दो० कबहुँ प्रात मिलिकरि सखा द्वार पुकारत आय।
खेलन हित सुनि तुरत तब जाय जगावत माय॥

सुंदर छंद॥ निशि बीतिगई सुत प्रातभयो उठियेसुर सन्तनके

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हितकारी। द्युति क्षीणभई नभ तारनकी चकवाक लह्यो सुख पेखि तमारी॥ निज संगसखा सब खेलनको बहुबार गये नृपद्वार पुकारी। अब सोवनकी नहिं बेरखड़ी भगवन्त जगावति हैं महतारी॥ सुनि सुंदर बैनउठे रघुनन्द कृपा सुखकन्द स्वछन्द अघारी। बदनाम्बुज सो कुम्हिलाय रह्यो बशआलस नैन सकैं न उघारी॥ श्रुति कुंडल लोल कपोलनपै अलकैं घुँघुवारि लसैं अतिकारी। जनु चंदहि घेरि घटा भगवन्त छटापट पीत किहै उजियारी॥ सुखधाम बिराजत राम महाछबि कोटि मनोज लजावनि हारी। जननीयुग नैन चकोर सशांक समास्यरही पल रोकि निहारी॥ पुतरी जिमि दारु बिलोकिरही बशप्रेम दशा तनकेरि बिसारी। छबिपान सुधासमकै भगवन्त मुखाम्बुज धोवत लै शुचिवारी॥

दो० बदन धोइ करवाइ कछु रुचिर कलेऊ माय।
भूषण बसन सवाँरि तन दीन्ह्यो द्वार पठाय॥

कवित्त॥ शोभ मुखपानकी अधर अरुणानकी मधुर मुसकानकी चिबुक दँतियानकी। नासा छबिमानकी कुण्डल द्युतिकानकी कमान भौंहतानकी कमल अँखियानकी॥ कुंचितालकानकी झलक टोपियानकी सुपीत बसनानकी लसनि बपुषानकी। भूपके ललानकी समान सूखमानकी न आन ऊपमानकी बखानै सोन मानकी॥ सानुज सखान राम खेलैं चाउगान मोदपुंज ऊमगान जो बखानि पावनाहीमें। चंगको उड़ावें आसमान लौं चढ़ावैं एकएकसों लड़ावें पेच लावें भूरि ताही में॥ भांवरा नचावें भूमि मन्नको मचावें एक कोडरा खचाय बैठि जावें आपु वाहीमें। लूकि पुनि जावें एक ढूंढ़ने सिधावैं देखि चावही बढ़ावें कौन भांति सो सराही मैं॥ श्यामश्याम अंगमें सुपट्ट पीत रंगमें कि बिज्जु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कंद संग में सुसूखमा अभंगमें । खेलकी उमंग में प्रमोदकी तरंग में सु सारयू धरंग में सखान बन्धु संगमें ॥ कांकना जोरानमें सुभाँवरे भरानमें कि गिन्नके बँधानमें उताल पौन भंगमें । बारके निदान में सचावमान सानमें सुबन्धु लै मकान में चलेसो जोर जंग में ॥ बामछन्द ॥ महीपति बालक चारुचहूं गुण सागर नागर रूप बिशाला । निशापति आनन कानन कुण्डल मण्डित जागि रही द्युति जाला ॥ घटा नव अंगम पीत पटा छबिकेन भयो लखि सोहि निहाला । करौ भगवन्तहि धाम सदा प्रिय बाम सकोशलपाल कृपाला ॥

दो॰ बाल केलि यहि विधिअमितकरहिं सुचारि उभाय ।
पुरजन परिजन मातु पितु पावहिं सुख समुदाय ॥
एकबार नृप द्वार पै आयो मर्कट एक ।
ताहि देखि रघुनाथ तब ठानत भे यह टेक ॥
हमहुँक यक बच्चाप्लवग दीजे तात मँगाय ।
सुनि नृप दिये मँगाय बहु लिये न सो रघुराय ॥
कह बशिष्ठ नृप जासु हित रोइ रहे श्रीराम ।
कीश केशरी पुत्र स्वइ हनूमान त्यहि नाम ॥
भानु तनय सुग्रीव ढिग रहत अहै स्वइ कीश ।
दूत पठै मँगवाइ त्यहि लेइअवेगि महीश ॥
सुनि नृप पठये तुरत चर लैआये त्यहि जाय ।
हरषित भे रघुबीर तब भावत मन कपिपाय ॥
जहँ जहँ खेलत खेल प्रभु तहँ तहँ राखत संग ।
कहेउ कथा संक्षेप यह बरणौं अपर प्रसंग ॥

छप्पै ॥ एकबार नृप द्वार बधिक पक्षी यक लायो । देखतही

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रघुनाथ हाथ लै ताहि उड़ायो॥ कह्यो बधिक स्वइ बिहँग भूप मम देहु मँगाई। सुनत राम त्यहि पक्ष गाड़ि महि बृक्ष जमाई ॥ फल फरत फुटत निकसत बिहँग निरखि चरित चक्रित बधिक। धन अमित दीन त्यहि भूप तब सबके मन सुखभा अधिक ॥

सो० ज्यहि प्रभु इच्छा माँहि प्रगट होत क्षणमें जगत।
अधिक नहीं कछु ताहि महिमा यह बरणन किये॥

स० एकदिना यक बानिकलै नग बेचन को नृपद्वार परायो। देखनके मिस हाथम लै रघुनायक सो दर कूप चलायो॥ मांगनसो जब लाग वहै तब चाहमते तरु एक जमायो। फूलि फरैं नग भूरि झरैं महि कौतुक यों दिनसप्त रहायो॥ पुरलोग अपारन भारनलै नग जाय अगारन माहिं धरयो। इमि लूटि भई बहु भांतिन सो पुनि बृक्ष स्वई तकि नाहिं परयो॥ यह देखि सुबानिक साह चके अति मानस मध्य उछाह भरयो। भगवन्त चरित्र अनूप बिचित्र यथामति सादर गानकरयो॥

उमाराम नित नवल चरित्रा। करहिं एकते एक बिचित्रा॥
इमि कछु दिवस गये चहुँभाई। भये कुमार सकल सुखदाई॥
गेरहें वर्ष शुक्ल गुरुबारा। माधवतिथि दशमी सुखसारा॥
भूप बोलि सादर ऋषिराजा। कीन जनेउ साजि सबसाजा॥
गये पढ़न पुनि चारिहु भाई। गुरुप्रसाद बिद्या सब पाई॥
चारिवेद षटशास्त्र पुराना। और कला चौंसठिहू जाना॥
ब्रह्मज्ञान ज्योतिष ब्याकर्णा। धनु बिद्या पिंगल जलतर्णा॥
शालिहोत्र अरु नृत्य रसायन। काब्यादिकचातुरिस्वरगायन॥
कोकसार सामुद्रिक जानौ। और बेदबिद्या पहिचानौ॥
यइ चौदह बिद्या अभिरामा। बरणौं अब बेदन के नामा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ऋग यजु साम अथर्वण चारी। बेदनके यह नाम बिचारी॥
मीमांसा बैशेषिक न्याया। सांख्य योग बेदान्त गनाया॥
ये षटशास्त्र हिये अनुमानौ। नाम पुराणन के अब भानौ॥
मीन भविष्य बिष्णु शिव बावन। लिंग नारदी अग्नि सुहावन॥
ब्रह्म गरुड़ कूरुम भागवता। पद्म स्कन्द ब्रह्मबैवर्ता॥
अरु बाराह मारकण्डेई। कहि ब्रह्माण्ड अष्टदश येई॥

दो० कहेउ पुराणन नाम ये अष्टादश मैं गाय।
सुनौ कलनके नाम अब पढ़े जौन रघुराय॥

हरिपद छन्द॥ नाटक बाद्य नृत्य गावन सुर लेखन बेधन हीरा। कुसुम बिकार फूल मय शय्या राग दशन अँग चीरा॥ मणिमहि चित्र रङ्गसाजी जल ताड़न ग्रन्थन माला। शयन रचन शृङ्गार साज रचि मुकुट चन्द्रिका बाला॥ गन्धयुक्ति जलबाद्य करण के पत्रभङ्ग बहुरूपा। भूषण योजन इन्द्रजाल कर लाघवकारक सूपा॥ क्रीड़ासूत्र आसवादिकरस सूची बाणहि घाला। बीनाबाद्य पहेली बूझन छलबिद्या प्रतिमाला॥ पुस्तक बांचि नाटिकाख्यायिक काव्य समस्या पूरै। बिद्याबाण कर्म्म तच्छनपर उक्ति तर्कसोतूरै॥ बेत निवार खाटादिक बीनन पारिख रत्नसो नारी। माली युक्तिमोल मणि जानन खग मृग युद्ध सँभारी॥ शुकशारिका प्रलापोत्सादन केश सुमार्जन ठानै। म्लेक्ष बिकल्प देश सब भाषा मूकप्रश्न को जानै॥ फूल रथादि दारु योषित बिधि मनथिर बचन प्रबीना। पिंगलकोश बिकल्प क्रियाविधि काव्य मानसी कीना॥ छलितक योग बस्त्र गोपन विधि द्यूत खेलको ज्ञानै॥ क्रीड़ाकर्ष बालक्रीड़ा सब सभा चातुरी जानै॥ दायक विजय पुराण कहन में अति चातुरी बढ़ाये। इति बशिष्ठ रघुनन्दनजीको चौंसठि कलापढ़ाये॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० अचिरकाल बिद्या सकल पढ़े सुचारिउ भाय।
दै दक्षिणा प्रणाम करि आये गृह हरषाय॥

इतिश्रीमन्अयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितायांभक्तिशिरोमणिग्रन्थश्री
रामचन्द्रबालक्रीड़ाकरनविद्यापढ़नबर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३॥

सवैया॥ पालन साधु महीसुर सज्जन भंजन भवभय शोक-दलाके। बुद्धि प्रकाशन शायक अज्ञ बढ़ायक भक्तिलता नवलाके॥ पोत भवार्णव रक्षक धर्मन वर्म सुदायक चारि फलाके। बंदत है भगवन्त सदा पदपंकज श्री अवधेश ललाके॥

दो० यक दिन अति आनन्द युत राम कृपा सुखकन्द।
मज्जनकृत सरयू सरित सहित सखानुज वृन्द॥
असुर एक आयो तहां पठयो रावण ताहि।
मगररूप ह्वैके प्रभुहि लियो मेलि मुख माँहि॥

सवैया॥ फारि उरांतर ते निकसे प्रभु देखि सुखी भय बालक सारे। खायलिये जिनके खलडिंभ लिये सबकाढ़ि मनो निजधारे॥ सो सुनि मातु पिता पुरलोग भये मनमाहिं अतीव सुखारे। अद्भुत यों नितनव्य चरित्र करैं भगवन्त सु औधदुलारे॥

दो० कोशलपुर ज्यहि मग जहां जाहिं निकरि चहुँभाय।
होहिं मुदित नर नारि सब देखत छबि समुदाय॥

चौपैया छंद॥ कबहुँक निज साथालय रघुनाथा बंधु सखन युत जाहीं। सरयू सरिता मैं चढ़ि नवकामैं केलि अनेक कराहीं॥ कबहुँक लयगेंदा सकल समोदाख्यलहिं जाय इकठौरे। कबहुँक बरबाजी निज निजसाजी चढ़ि ठानै घ्वड़दौरे॥ इमि चरित अनंता कृत भगवंता परम सुखद भवहारी। मुनि जन मनरंजन कलुष विभंजन पुरजन आनँदकारी॥ सानुज रघुराई सरयु नहाई करि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पूजन यक संगा। भोजन सुखकारी रुचि अनुहारी पावहिं सहित उमंगा॥ ताम्बूलन खाई पुनि सब भाई आये सभा महीपा। भय सकल सुखारी रूप निहारी रघुकुल अमल सुदीपा॥ करि नृपहि प्रणामा सानुज रामा गये बैठि पितुपाही। त्यहि औसर शोभा कवि असक्षोभा बरणि सकै जो ताही॥

दो॰ भाग्य बिभव अवधेशकर को कहि पावै पार।
जिनके गृह साकेतपति राम लीन अवतार॥

एक दिवस यक बिप्र कि गाई। डारिसि मारि एक मृगराई॥
सो अति दुखित भूपके पासा। आइसकल निज हालप्रकासा॥
सुनि रघुनाथ प्रणत दुखहारी। करतल चाप रुचिर शरधारी॥
तुरत जाइ प्रभु ताहि प्रचारा। आवत निकट ताकि शरमारा॥
पर्‍यो धरणि ह्वै गन्ध्रब रूपा। बिनय करत जयजय सुरभूपा॥
जय प्रभु प्रणतपाल भव मोचन। कृपा बारिधर पङ्कज लोचन॥
जय रघुबंश बिभूषण रामा। हरण कोटि सङ्कट तव नामा॥
बड़ अपराध नाथ मैं कीन्हा। दीनदयाल मेटि सब दीन्हा॥

दो॰ मैंहौं पूरबजन्मकर गन्ध्रब अति छबिवान।
शक्रसभा महँ नाथ नित करत रहौं बरगान॥

त्यहि समाज नारद यकबारा। किये गान प्रभु चरित उदारा॥
तब ठठाइ मैं हँस्यो कृपाला। सुनि मुनि दीन्हींशाप कराला॥
सिंह सरिस तैं शब्द मचाई। हो खल सद्य सिंह बन जाई॥
मरिहैं निजकर जब रघुराई। तब उद्धार तोर ह्वै जाई॥
नाथ समय स्वइ आयो आजू। कीन्हकृपाल सकल ममकाजू॥
यहितन मैं दारुण दुख पायों। प्रभुप्रसादअब सकल नशायों॥
कहिअस चरणकमल शिरनावा। राम कृपा निजलोक सिधावा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुनि रघुपति भूपति पहँ गयऊ। तहँ स्त्रइ विप्र कहत अस भयऊ॥

दो० कह्यो विप्र स्वइ धेनु मम दीजे भूप मँगाय।
सुनि नृप कहलीजे अपर चाहौ जेती गाय॥

कुण्डलिया॥ आवै समय न फेरि सो जो कछु जावै बीति। झरि तरु दल लागै नहीं सन्तत याहीरीति॥ सन्तत याहीरीति समिध जरि बहुरि न होई। भई बिगत बयजौन ताहि पुनि पाव न कोई॥ कोई अवसर चूकि बृथा पाछे पछितावै। ताते धरु द्विज धीर धेनु गइ बहुरि न आवै॥

दो० लेहु अपर द्विज धेनु बहु पुनिपुनि कह नरनाह।
मानत नहिं चाहत लखन प्रभुप्रभुता अवगाह॥

तब लक्ष्मणहि कह्यो रघुराई। लावहु जाय ढूंढ़ि द्विजगाई॥
सहित विप्र तिन यमपुर जाई। कह्यो इहां आई द्विज गाई॥
कह यमराज जोरि युग हाथा। आई ममपुर सुरभि न साथा॥
तब चलि सप्त पतालन देखा। विप्र गाय कतहूं नहिं पेखा॥
सप्त स्वर्ग पुनि ढूंढ़त भयऊ। मिली न तब बैकुंठहि गयऊ॥
तहौं सुरभि कर खोज न पाये। तब लक्ष्मण गोलोकहि आये॥
करत जहाँ गोपाल निवासा। जाइ सकल निज हालप्रकासा॥
तुम्हरे लोक विप्रकी गाई। आई होइ देहु मँगवाई॥

दो० सुनि निज सुरभिन ते तबै दीन्ह्यो धेनु मँगाय।
भयो मुदित मन माहिं अति सोहन द्विज गोपाय॥

पुनि चलि जाय दीख साकेता। कहि न जाय विभु प्रापति जेता॥
तहँ देख्यो पुनि सीतहि जाई। सुखमा अति अद्भुत प्रभुताई॥
देखि अमित शोभा सुख पावा। लक्ष्मणसहित विप्रशिरनावा॥
दीन अशीश निकट बैठाई। पूछी निजपति कथा सुहाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तब प्रभु चरित लषण सबगावा। सुनितन पुलक मोद मनछावा॥
तब करजोरि कह्यो द्विजबाता। को पति कहाँ गयो तवमाता॥
अवध नृपति दशरथ अँगनाई। तहँ अवतार लीन तिन्हजाई॥
कछु दिन गये जनकपुरमाहीं। हमहुँ आइ प्रकटब पुनि ताहीं॥

दो० सुनि सीताके वचन द्विज शुचि सुन्दर सुखदैन।
सकल लोकपति राम कहँ जानि हिये अतिचैन॥
सिय इच्छा बिनुश्रम अवध गये आइ ततकाल।
कह प्रभु द्विजपाये सुरभि नायो तब पदभाल॥

कवित्त॥ जैति जैति राम तौ प्रभावहै अपार नाथ अज्ञताके वश्य मंदबुद्धि मैं न जानी है। आपुके समान ईश दूसरो न ईश और लोक है न आन ज्यो सु आपु सूखदानी है॥ कीरति कलाप लोक लोकनै प्रसिद्ध आपु भाग्यवंत दीख मैं बियोन स्वामि सानी है। फेरि पंकजाक्ष कोर ओर दासहेरि नाथ कीजिये क्षमासो जौन ढीठताितठानी है॥

दो० सुनत बचन सनमानि बहु बिदा किये द्विजसोइ।
गयो भवन अतिमुदितमन प्रभुप्रभाव जिय जोइ॥

सवैया॥ रामचरित्र विचित्र महा कहि कोकवि कोविद पारहि पावै। नेति वदै ज्यहि वेद सदा चतुराननहूक अगम्य लखावै॥ शेष थकै कहि पारनहीं अरु शारदकी वर बुद्धि लजावै। पावन हेत गिरा भगवन्त कछूक यथामति सादर गावै॥

सुनहु शिवा संतन सुखदाई। बहुबिधि चरित करहिं रघुराई॥
कबहुँ प्रात उठिकै भगवाना। सानुज करि सरयू अस्नाना॥
करि भोजन ताम्बूलन खाई। सहित मोद मन चारिउ भाई॥
लीन्ह सकल निज सखा हँकारी। बन मृगया हित कीन्ह तयारी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० विविध भाँति भूषण वसन अँग अँग सजे बनाय।
वरणिसकै नहिं सहसमुख सो सुखमा समुदाय॥

कवित्त॥ सोहै शीश चौतनी सुभग घुँघुवारी लटै कुण्डल अनूप गोल गालनपै झलकै। पङ्कज बदन चारु सुखमा सदन देखि लाजत मदनमाल मुक्तकंठ हलकै॥ जरीजरबफ्त ऊन रेशमी पोशाक साजि छोरन दुशाल गुच्छ मोतिभा सुछलकै। पानि चाप बानधारि खैंचिकै निषंग लंक रूपता विलोकि सो अपल होत पलकै॥ साहनी बोलाय दीन शासनै तेजाय बेगि जाति जाति अश्वनै लयायकै तयारहै। ताजी तूरकानी मूलतानी फीरगानी देश अरब इरानी रूम काबुली खँधारहै॥ काशमीरि गूजराति काठियाहुवार कच्छि मागधी दरयाई मरहट्ट माड़वारहै। औरहू अनेक देश देशके तुरंग साजि आनि जो बखानि जात नाहिं बेशुमारहै॥ संदली कपूरि जर्द तेलिया बलख चीनि नोकरा कुमैत सब्ज धानिया सुरंगमैं। कुल्लाकार सूरखा सोनाहुला समुद श्याम करन बदामि जाल सोहै हर्द रंगमैं॥ किस्मिसी अँगूरि लाखि दूधिया सु ईलमासि फूलवारि गर्रासेत गूलदार अंगमैं। तामड़ा मुसुक्कि नूरि सीरगा सँजाफि और भाग्यवन्त बाजिहैं अनन्त रङ्ग रङ्गमैं॥ सुंदर अनूप नव्य जातरूप हीर आदि रचित सुजीन चारु पूजी जेरबन्दनै। भाग्यवन्त गूंधि आल चोटिनै लगाय पान कञ्चन रकाब मञ्जु खींचि पुष्ट तंगनै॥ दूमची लगाम हेम बागे दिव्य रेशम कि हैकल हमेलहै अमोल पेशबन्दनै। कामदार ज्योतिवान डारिकै सुजीनपोश कायजासमेत लाय वाजि शोभकन्दनै॥

सवैया॥ सानँदराम सबंधु सखा सब कूदि सवार भये वरबाजी। औरहु राजकुमार अनेक विभूषण चीर सुअंगन साजी॥ शीश

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धरे कइ कीट मनोहर काहुकि टोपिनकी छबि छाजी। बांधि कई पगरी अगरी छबिजात कही नहिं सोति बिराजी॥ कइ पट्टन भारि दुपट्टन बांधि सुछोरहि पृष्ठि उलट्टतहै। उरमाल अनूप लिये करमें कइ लंकजरी सु लपट्टत है॥ अनमोल वड़े सुदुशालकई लखिभास्कर भा ज्यहि हट्टतहै। वरनौ किमि रंगदुशालन के यक एकनते वर ठट्टतहै॥ कवित्त॥ कासनी सुरंगसेत काहिली बदामि नील संदली गुलाबि जर्द बैंजनी अँगूरिया। नारँगी सहाबि ऊदि जौजई गुलालि सब्ज धानिया बिलाखिलाल किस्मिसी अबीरिया॥ कोचकी सजाफरानि मूंगियाहु आसमानि शर्बती चुनौटियारु पिरतई कपूरिया। सुर्मई जँगालि मंजु कंजई सुभाग्यवन्त कोकई स्वनाहुला सिंगर्फि औ मँजीठिया॥ अङ्गन अनूप दिव्य भूषण विराजमान हेमहीर माणिक सुजाल ज्योति जागती। कुंडल सकान शुभ्र नासिका बुलाक सोह मंजुल सुमाल मुक्त कम्बु कण्ठ हालती॥ रूपके अगार बै किशोर भेसवार बाजि भाग्यवंत तासमै कि गाउमें सु क्यागती। साधि बाग आसनै लगाय ढंग वाजिनै सुचालनै चलाव जो बखानि मोन आवती॥ सवैया॥ राजकुमार नचावत वाजि चलावत हैं बहु सुंदरचाली। पर्रन बांधि सुढर्रन धावत कोइ चलावत पोइरुहाली॥ कोइ कुदावत भूमिखड़े सुजमावत कोइ फँदावत नाली। कौनप्रकार कहै भगवन्त सुएकन सो गति एक निराली॥ देवन व्योम अनन्दभरे लखि फूलन की भरि भूपरलाई। पावन कीरति राघवकी भगवन्त रहे सब सादर गाई॥ जातचले मृगयार्थ वनै प्रभु भाषत सो न बनै प्रभुताई। नांघत शैलनदी नदनार अटे सु अरण्य गँभीरन जाई॥ देखिपरे मृगया उतरे सुतरे निज वाजिनते मुदभारे। जानि पुनीत कुरंग

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कृपाकर लै धनुबाण तिन्हैं तकिमारे ॥ रामवधे निजबाण जिते मृग ते तुरतै हरिधाम सिधारे। पेखि प्रभाव कहैं सुरजै प्रभु जैप्रभु जैप्रभु औधदुलारे ॥ कवित्त ॥ खेलिकै शिकार भानु अस्तकाल जानि फांदि वाजि ह्वै सवार वेगि भौनही सिधाये हैं। वेगता विलोकि तौन हारती है मन गति पावही न पार पौन गौनहू लजाये हैं ॥ हंस वंश भूषण कृपाल रामचन्द कन्द आनँद स्वछन्द मध्य औध सद्य आये हैं। भाग्यवंत पावन सुयश शोक दावन सुताप त्रै नशावन कलाप बंदि गाये हैं ॥ शुभगीत छंद ॥ जै राम पूषण वंश भूषण अमल पंकज लोचनं। सुखसिन्धु पूरणकाम शोभाधाम भौभय मोचनं ॥ कृत चरित संसृत तरण कलिमल हरण सुर मुनि रंजनं। आनन्द कन्द स्वछन्द व्यापक विश्व खल दल गंजनं ॥ इमि सुयश गावत बंदि पावन राम घर आवत भये। शिरनाय भूपति पांय आशिष पाय पुनि भीतर गये ॥ लखि मातु सानँद धाय लीन्ह्यो लायउर चारौ तनै। कहि सकन शारद शेष सुख सोजौनभा जननी मनै ॥ पोशाक सकल उतारि पुनि मुख धोइ मन आनँद लह्यो। चलि तात भोजन करहु सुन्दर जाय बलि जननी कह्यो ॥ सुनि मातुके वरबैन करुणा ऐन सानुज आयकै। भगवन्त कीन्ह्यो अशन सादर मातु परस्यो चायकै ॥

दो० जूठनिको गरजी करै अरजी जन भगवन्त।
दीजे करि मरजी सपदि हरजीवन निजतन्त ॥

सुभग सेज पुनि चारौ भाई। कीन शयन सुखमा अधिकाई ॥
प्रात जागि सानुज रघुराई। गुरु पितु मातु चरण शिरनाई ॥
शासन लहि कारज पुर करहीं। लखिलखि भूप मोद मनभरहीं ॥
पुरजन देखि चरित सुखपावहिं। जहँतहँ बिमल रामगुण गावहिं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कथा अनेक कहहिं मुनि ज्ञानी । सादर सुनहिं सकलसुखमानी ॥
कबहुं आपु प्रभु कहहिं बुझाई । सुनहिं सप्रेम मुदित सब भाई ॥
नारदादि मुनिवर नित आवैं । सादर प्रभुपावन यश गावैं ॥
यहि विधि अवधपुरी रघुबीरा । करहिं चरित भंजन भव भीरा ॥

छप्पै ॥ जो प्रभु अगम लखात शेष शारद शिव वेदै । नारद शुक सनकादि लहत ब्रह्महु नहिं भेदै ॥ जासुनाम बल सृजत लोक विधि नाशत ईशा । पालत विष्णु प्रभाव जासु आज्ञा सब शीशा ॥ स्वइनाथ सकल साकेतपति करुणाकर जन दुखहरण । धरि मनुज देह अवधेश गृह करत चरित संसृत तरण ॥ स्वइ सुकृती शुचि साधु स्वई पंडित स्वइ ज्ञानी । स्वइ दाता धनवान चतुर सोई गुणखानी ॥ स्वइ पावन मन वचन कर्म सोई नयनागर । जप तप तीरथ सफल तासु सोई सुख सागर ॥ तजि कपट सकल ध्रुव प्रीति करि रामदास जो ह्वैरहै । भगवंत प्रशंसत संत त्यहि जीवन फल जग स्वै लहै ॥

इतिश्रीरामचन्द्रकैशोरलीलावर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

दो० रघुपति जन्म चरित्र शुचि मैं कछु कह्यों बखानि ।
सीय जन्मकर चरित अब कहौं सकल सुखदानि ॥
सीतासम पावन करण सीतायश सुख कन्द ।
सीता जन मन दुख हरण गावत सीता वृन्द ॥
विप्र चन्द्रशर्मा रह्यो एक परम हरिभक्त ।
नारि चंद्रभागा सु त्यहि दोऊ विषय विरक्त ॥
हरिसनेह सम्भारि हिय नैमिष वन चलिजाय ।
युगलमंत्र जपि तपअमित कीन्हे दोउ सतिभाय ॥

सवैया ॥ साधन सिद्ध भयो दिन पूर्ण सशक्ति प्रभू तव दर्श

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दिखायो। ह्वै सुप्रसन्न कह्यो वर माँगहु जो मनमें अभिलाष रहा-
यो ॥ कै पुटपानि प्रणाम कियो अति प्रेमभरे द्विजबैन सुनायो।
शक्ति सुता करि नाथ लहौं सुजमात्र चहौं तुम सो मनभायो ॥
सिद्ध मनोरथ भे तुम्हरे सब योंकहि फेरि कह्यो प्रभु बैना। ह्वै जन-
कापु जबै मिथिलापति होव तहां यह रानि सुनैना ॥ अंशन संयुत
ह्वैतनया मम शक्ति तबै प्रकटी तव ऐना। हौंमिलिहौं जिमि आनि
तुम्हैं तहँ सो सु प्रसंग सुनौ सुखदैना ॥

मनु शतरूपा तप बहु कीन्हा। तिन्ह कहँ मैं प्रथमें वर दीन्हा ॥
अवध नृपति ते ह्वैहहिं जाई। तिनके तनय होब हम आई ॥
तहँ जामात्र होब अस भाषा। करिहौं तव पूरण अभिलाषा ॥
भये बहुरि प्रभु अंतरधाना। द्विजमनमाहिं परमसुखमाना ॥
कछु दिन गये त्यागि तनु दयऊ। मिथिलापुर प्रकटतदोउभयऊ ॥
भूप जनक अरु रानि सुनैना। सब गुणखानि सुकृतसुखऐना ॥
राज करत बीते बहुकाला। एक समय तहँ परेउ दुकाला ॥
भूप बुधन तब कह्यो हँकारी। करिय युक्ति वरषै ज्यहि वारी ॥

दो० तब तिन कह नृप इन्द्रमख जो कीजे यहि काल।
तौ पुनि वरषै वारि बहु जग सब होइ सुकाल ॥

कीन्ह तुरत स्वइ भूप उपाई। चामीकर कर हल बनवाई ॥
शतानंद अरु भूपति रानी। जोतन लगे परम सुखमानी ॥
जब षटवार घूमि हल आयो। सप्तमभू यक विवर लखायो ॥
तहँ पुनि प्रकट्यो एक विमाना। अति सुन्दर नहिं जाय बखाना ॥
अमित प्रकाश अमित छविछाजै। आदिशक्तित्यहिमाहिं विराजै ॥
मध्य भूमिजा बैस किशोरी। राजत सकल सखी चहुँओरी ॥
रूपराशि बरणौं किमि शोभा। लखि रतिकाम कोटिमनलोभा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बरषि सुमन सुर नृपसन कहेऊ। पूरण शक्ति सुता तव भयऊ॥
दो० याते यश पैहौ अमित ह्वैहै सब मनकाम।
परब्रह्म यहि हेतु नृप आवहिंगे तव धाम॥

मोदकछंद॥ मानि सुताकर भाव महीपति। सेवहुलै घरजाय इन्हैं अति॥ भूप बिनै बहुभाँति किये जब। तौ सिय पूर्व चरित्र कहे सब॥ फेरि बिदेह बिनै करि यों कह। ह्वै शिशु देहु सु आनँद मो कहँ॥ लीन तबै शिशुरूप सियाधरि। अन्तरधान बिमान दियाकरि॥ सानँद आनि सुता तब घर्महिं। श्राद्धकिये अरु जात सुकर्महिं॥ माधव नौमि सुमंगल दिन्महिं। शुक्ल सु पुष्य लिये सिय जन्महिं॥ विप्रन दान दिये बहुराजन। बाजहिं भाँति अनेकन बाजन॥ आनँद मंगल छाय रह्योपुर। भूपति मोद अपार लह्यो उर॥

लावनीछन्द॥ आजु मिथिलेश घरमाई। सुतागुणरूपमें जाई॥ सुमन्नभदेव झरिलाये। नगर्नरनारि सुनिधाये॥ लिये कर हेमकी थारी। चलीं सब आरती बारी॥ दो०॥ भूप सदनभे भीर अति परमानँद रह्यो छाय। बंदी मागध सूतगण गावत गुण समुदाय॥ शब्द तिहुँलोक में छाई १ सखी सब मंगलै गाई। जनकपुरधूम है छाई॥ लिये नृप बोलि याचकहैं। किये तिनको अयाचकहैं॥ दो०॥ दान पाथ नृप हाथ सरि आनँद बरषापाय। उमँगिचल्यो है जनकपुर याचक सिंधु अघाय॥ फेरि पर द्वार ना जाई २ हरष नरनाग सुरलोकै। दुवन दुखरैनि जिमि कोकै॥ बधाई द्वार पै बाजै। मनो घन व्योम में गाजै॥ दो०॥ कउ नाचत गावत कऊ सस्स्वर दै दै ताल। मची कीच मगबीच रँग परमानँद पुरबाल॥ रङ्क पारस जनुपाई ३ जनक सम पुण्य काकी है। सुता शक्त्यादि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जाकी है ॥ नहीं ज्यहि ध्यानमुनि पाये। स्वई भरिअङ्कनृपलाये॥
दो० ॥ जन्म समय भो सीयके उत्सव आनँद जौन। कहि न सकैं भगवंत सो शेष शारदा तौन ॥ निगमहू नेति करिगाई ॥ ४ ॥
दिनप्रति अधिक मोदपुर छायो। शुक्ल चतुर्दशि रविदिन आयो॥
कीन्ह छठी भूपति युतप्रीती। जस कछु लोक वेद शुभरीती॥
तृतिया ज्येष्ठकृष्ण गुरुवारा। कीन्ह बारहौं मुदित भुवारा॥
लोक वेद विधि करि अनुरागे। गनि गुरु नाम धरन तब लागे॥
भूमि भयेते भुजा कहाई। सीता वेद प्रबन्ध अहाई॥
पितु यश हेत जानकी नामा। अरु मैथिलि सम्बन्धिक धामा॥
नामकरण यहिविधि गुरु कीन्हा। पुनि आशीश भांति बहुदीन्हा॥
सुनि नृपरानि परम सुखमाना। द्विजन बोलि दीन्ह्यों बहुदाना॥

दो० दिनदिन कन्या बढ़तइमि शुक्लपक्ष ज्यों चन्द।
देखि देखि पितु मातुमन लहत परमआनन्द॥

नारद मुनि आये यकबारा। करि प्रणाम लै भवन भुवारा॥
तुरत सुतानृप आनि देखाई। देखि रूप हरषे मुनिराई॥
बोले मुनि सुनु भूपति बैना। तव कन्यका सकल गुणऐना॥
जन रंजन भंजन भवभारा। आदिशक्ति लीन्हेउ अवतारा॥
परब्रह्म त्रिभुवन पति रामा। यहि कहँ बर मिलिहैं सुखधामा॥
औरहु लक्षण अमित अनूपा। कहिपुनि गमनकीन्ह मुनिभूपा॥
सुनि मुनि के बर बचन पुनीता। धरिलीन्ही उर अन्तर सीता॥
कछुदिन गये सुनैना रानी। जन्मी अपरसुता सुखदानी॥

दो० नामउर्मिला तासुकर अति सुंदरि गुणधाम।
बहुरि उभय जन्मत भई सुता कुशध्वजबाम॥
नाममांडवी जेठि जो श्रुतिकीरति लघुजानि।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रूप शील गुणधामचहुँ प्रकटीं नृपगृह आनि॥

हरिपदछन्द॥ और अमित दासी तिनकेरी आनि जन्म तहँ लीन्ही। मन बच कर्म्म बालपनही ते चितसेवन महँ दीन्ही॥ ऋधि सिधि आदि बधूदेवनकी निमि बंशिन घरआई। धरिधरि सुन्दररूप जनकपुर भई प्रकट समुदाई॥ खेलहिं एकसंग सादर सब करहिं चरित सुखदाई। बोलनि हँसनि देखि सुनि सानँद मातु पिता बलिजाई॥ जासुचरण सेवत निशिबासर उमा रमा ब्रह्मानी। आदिशक्ति छबिधाम जनकपुर भई प्रकट स्वइआनी॥ जनकराज महराज भाग्यबड़ि को कहि पारहिपायो। अण्ड अनेक अमल जाको यश रह्यो छाइ सबठायो॥ यहिप्रकार सियजन्मि भूपगृह करत चरित भौसेतू। अब सुनिये चितलाय कहौं शुभ सीयस्वयम्बर हेतू॥ सवैया॥ एकसमय शिवशंकरको मिथिलाधिप कीन तपोब्रत भारी। आयकह्यो शिव माँगहु सो बर जो मनमें अभिलाष तुम्हारी॥ कै सुप्रणाम कह्यो नृप मोकहँ देहु यहै बर एक पुरारी। सन्ततआपु धरें ज्यहि ध्यान स्वई प्रभु हौं भरिनैन निहारी॥ तौ निज दीनशरासन शम्भु कह्यो नृपसों यहिपूजहु जाई। याहियते ममनाथ मिली भगवन्त तुम्हें दिनमें कछुआई॥ मानि नरेश महेश कि बानि लगे धनु पूजन नेह लगाई। आठहु याम यहै मनकाम कबैप्रभु देखिय नैन अघाई॥ कुण्डलिया॥ आई यकदिन आपुनहिं धनुथल लीपनरानि। बोलिपठाई जानकिहि तुरत तहाँ तिनआनि॥ तुरत तहाँ तिनआनि बामकर धनुलय लीन्ह्यों। दक्षिण कर मलझारि रुचिर चौकादै दीन्ह्यों॥ धरि त्यहिठाम धनुषपुनि भवन सिधाई। पूजन हित नृपजाय दीख चिंता मनआई॥

दो॰ भवनआइ पुनि हालसब रानिहि पूछेउ राउ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुनि रहिगे चुपसाधिकै गुनिमन सुता प्रभाउ ॥

शोच विवश पौढ़े नृपजाई। स्वप्ने शिव असदीन बताई ॥
धनुप्रण गहो सुताबर हेता। उठिप्रभात नृप हरष समेता ॥
कीन्ह प्रतिज्ञा शिवधनु जोई। खण्डनकरी बरी सिय सोई ॥
रंगअवनि रचि धनुष धराई। देश देश नृप निवति बुलाई ॥
बाणासुर रावण बलराशी। बीर सुधन्वा भूपति काशी ॥
इनसम अमित भूप बलवाना। रङ्गभूमि बैठे करि माना ॥
तबहिं भूप बंदीजन बोली। कहेउकहहु सबसन प्रणखोली ॥
ते उठाइ द्वउभुजा बिशाला। बोले सुनहु सकल महिपाला ॥

सवैया॥ शङ्करचाप कठोर गरूअति जानतको जगमेंनहिंजाको॥ राजसमाजम शूर शिरोमणि जो करि हैं कइ भंजनयाको ॥ होय चहै स्वइ रङ्क कि राउ बिचार बिना बरि है सिय ताको। कान लगाय सुनौ सब भूपति सत्य कहौं प्रणदै करि हाँको ॥

दो॰ बंदीजनके बचन सुनि नृप सब सहित हुलास।
उठि उठि आसनते तबहिं आये शिव धनुपास ॥
रावण बाणासुर सुभट जानत सब संसार।
करन लगे बकबाद तब दोऊ आप मँझार ॥

(रावण) स॰॥ देहु हमें इत शङ्करचाप कितै वह राजकुमारि बतावो। जाहि उठाइ गये नृपहारि सुकै द्वय तीनिक टूक बहावों॥ हौं निज बीस भुजानबलै यहि राजसमाजहि आजु देखावों। कारिखदै मुख राजनके लै राजकुमारिहि लङ्क सिधावों ॥

(बाण) स॰॥ रेदशकन्ध महामतिमन्द बिसौ दृगअन्ध निलज्ज सदायो। जानतहै न प्रभाव शिवै जिन पानकियो बिष कीरति छायो ॥ नाश कियो त्रिपुरासुर जो दृग तीसर खोलिकै

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मैन जरायो। तासु शरासन तोरनको खरको अस लै मुख तू खल आयो॥ तजि वाद बिबादहि बादि सबै हठछांड़ि पराक्रम आनि करै। अब आजु सुराज समाजनमें जनि कादरता निज चित्तधरै॥ शिवचाप सुमेरहुते गरुहै परसै जब पाणि तु जानिपरै। दश मुरडन ताहि विखरडनकै सुख पाय सुलै यश जायघरै॥

(रा०) दो० रे बन्दीजन कुटिलतैं सुने न बात हमारि॥
राजसभामें क्यों नहीं लावत राजकुमारि॥

(बाण) दो० हे रावण जो बल तुम्हैं तौ किन तोरौ चाप।
बिनु तोरे किमि पाइहौ राजपुत्रि को आप॥

(रावण) स०॥ जे भुजदरड प्रचरडन सों बरिबरडन शत्रु अखंड दहाहै। खरिड अखरिडत पाश जलेश सुरेश दल्यो पबि पुष्ट महा है॥ मूलक सो शिवशैल उखारि जुख्यालहि काल कराल गहा है। सोइ बने मम बीस भुजा यह तुच्छ पिनाक पुरानकहाहै॥

(बाण) स०॥ काह प्रशंसत आपहितैं मुख भूरि दिये करि जाहि बिधातैं। ताहि नहीं कछु बात अहै जु बनाय कहै बहुभांतिनबातैं॥ बातनते नहिं काजसरै यह नाहक मूढ़ लड़ावत घातैं। होइजु बीसभुजान बलै कस आय शरासन तोरत नातैं॥

(रा०) दो० अहो बाण बादत कहा तेरे भुज हतसार।
ह्वैन सकत इनते कछू लीन्हें केवल भार॥

(बाण) दो० हे रावण मम भुजनको जानसि तैंन प्रभाव।
थोरो सो कछु कहतहौं नहिं करि बहुतबढ़ाव॥

कवित्त॥ हौं निज पिताके पद पूजन को जात जब पावन सुभाय पाप पुञ्जन प्रनाशिया। देखि तव रावण फिरत फेरि भावनै सु सातहू रसातलौके जावतै बिलासिया॥ लैकै भुजदरडन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अखण्डन पै आपने सुकरौं क्षिति मण्डल को छत्रक प्रभासिया। भाग्यवन्त जानै कौन केतिकधौं बार शेश शीशन पै दीन जाय भुजन उसासिया॥

(रावण) सवैया॥ बाण बखानत काह बृथामुख बाहुनके बल पुञ्ज प्रतापहि। होतेहु बीर प्रमाणिक जो बल पूरणहोत भुजानमें आपहि॥ तौ किन लेतेहु भूतलमें बर बाहुँनके बल आपने बापहि। जो करतूति सुकै जगमें यश काहेन लेतिहु जीति कलापहि॥

(बाण) दो० पितुआनौं काकेभवन सकल लोकदियदान।
परब्रह्म रस लीन सो जीति दान मैदान॥

कुण्ड०॥ साख्यो सब सुरकाज ज्यहि मार्‌यो खल बलवान। मधु मुरकैटभ से सुभट जिन जीत्यो मैदान॥ जिन जीत्यो मैदान भुवन त्रैपालन करता। पूरण ब्रह्मसमान रचत सोई संहरता॥ संहरता महि भार नेति जेहि वेद पुकास्यो। मांगन हित स्वइनाथ हाथ बलिपाहिं पसाख्यो॥

(रा०) दो० हे बाणासुर मम त्वया यह बकवाद कलाप।
बूझिय नहिं खुलिजाइगो शिवै चापतेआप॥

(बाण) क०॥ औरहीते और कछु कीन्हीं करतार ज्यहि जानी नहिंजातगति अतिशै प्रबलहै। आए इत शूरन मिलनकाज आज हम गयो मिलि कहां आनि रावण अबलहै॥ बादि बकवाद गयो नाहक रे भाट यह भूलिनासुनाए गारि प्रणराउ फलहै। भाग्यवन्त कीरति सुहेतहौं दलव चाप करै नृप आप पुत्रि राजही अचलहै॥

(रावण) स०॥ रावणनाम बली भट आख्य सकै जग रोंकि हमें कहु कोरे। औरनकी न बखान करौं यमराजहु युद्धजुरे कर जोरे॥ नेकु नहीं बलवान तुम्हें बतुवात कहा मुख सम्मुख मोरे।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तौंधूग मोहिं पुकारि कहौं घरजाउँ जु आजु बिना धनुतोरे ॥
दो० राजसभा तिनुका सरिस मय करि लेखौं बान।
भूपसुताको देखि पुनि देखौं धनुषपुरान ॥
(बाण) सवैया॥ रावण बातबनावतहै तु उठावत क्योंनहिं शंभु शरासन। आदिहिं बादिकरै वचवादि सुत्यागत क्यों बकबादिन आसन॥ रे जड़ जानतहै कि नहीं जगजाहिर तै सुनिजै मदनाशन। पूरण क्यों मनभावतहोइ न जावत पूरकरैं नृपशाशन॥
(रावण) भुजंगप्रयात छन्द ॥ रहे क्या वृथा काज वे लाज माखी। न आवै तुझै बात रे बाणभाखी॥
(बाण) बड़ोहैजु वातूलतैं बाहुबीहा। कहै जो रुचै तोहिंसो रे अलीहा॥
(रावण) करैगो तु क्या मोररे भूरिबाहू। करैंगे हमैंसेहिसीताबिवाहू॥
(बाण) जु साहस्रबाँहूँ करीतौ दशा रे। करौंगो स्वई आजु हौं राकसारे॥
(रावण) सवैया॥ भृंग सों बासुकि भूत गणेश सुगंगमनों मकरन्दसुहैना। धूरिसो भूरि उड़ै पटगौरि मृणाल सो बाहुँ भयो बलऐना॥ आयुधसर्व समेत सुताहि उठायकिये गति पन्नसचैना। जानत बानहै बातसबै बर बाहुबलै ममजानततैना॥
दो० बाणपिनाक पुरान में पलमें लेब चढ़ाय।
तुमहूँ तौ करि बलकछू देखौ याहि उठाय॥
(बाण) मेरे गुरुको धनु यह रावन। सीता मेरी मातु सुहावन॥
इहूँ भाँति असमंजस जानी। गवनेउ बाणभवन सुखमानी॥
(रा०) दो० हौं बिनुलीन्हे सीयकहुँ तौलगि टरौं न आन।
जौलगि सुनौं न दासको आरत शब्दसुकान॥
येते महँ कहुँ राकसहि हत्यो वीर कउबान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आरतशब्द सु तासु सुनि रावण कीन पयान ॥

सवैया ॥ सिंह समान पस्यो लखि एकन एकनको दरस्यो जिमि व्याला । एकन व्याघ्र लख्यो कर छूवत एकन लाग यथा नल ज्वाला ॥ शम्भु समान लख्यो धनुबान गये ढिग भोकइ अंध भुवाला ।बातसबै जियजानि सबान किये उठिगौन गवैं दशभाला ॥

दो॰ सबलभूप यहिबिधि सकल गे मन समुझि प्रताप ।
अबलभूप बलकै थके टरेउ न शंकर चाप ॥
बरियाई माँग्यो तबहिं व्याह सुधन्वा राय ।
भूपन दीन्ह्यो कोपिदल सजिपुर घेस्यो आय ॥

छप्पै ॥ तासों जनक नरेश समर बहुभांतिन कीन्हा ।जब त्यहिं चह्यो सकोप आगि पुर चहुँदिशि दीन्हा ॥ तब सुमिरेउ मिथिलेश शंभु निज पठै सहाई । परद्दल सहित सँहारि लीन त्यहि देशबसाई॥ है सुथिर बहुरि मिथिलेश नृप धनुषयज्ञ कर साजकिय । बदि प्रथम दिवस कातिक नृपन लिखि लिखि पत्र अपार दिय ॥

दो॰ पत्रपाय सजि साज बहु निज निज सकल नरेश ।
चले परम आनंद मन पावनपुर मिथिलेश ॥

इतिश्रीमन्नृअयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितायांभक्तिशिरोमणिग्रंथश्री जानकीजन्मोत्सववर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

राम सीयकर जन्म सुहावा। निजमति सरिस कछुकमैंगावा॥
मुनि आगमन कहौं अबगाई। सादर सुनहु सुजन चितलाई ॥
विश्वामित्र गाधि सुतज्ञानी। सुरसरि तट बन थल भलजानी॥
मुनिगण सहित करहिं तहँ बासा। भये दुखित अति दनुजनत्रासा॥
लागहिं करन योग मख जबहीं। आय बिध्वंस करहिं खल तबहीं॥
तब मुनि हृदय मंत्र अस आना। कोशलपुर प्रकटे भगवाना ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लावहु जाय माँगि मैं तिनका। ते द्वउबंधु शमन करि इनका॥
करिहैं मम मखकै रखवारी। अस बिचारि मुनि तुरत सिधारी॥

दो० कोशलपुर प्राची दिशा सोरह योजन पाहिं।
विश्वामित्र ऋषीश को शुभ आश्रमहै ताहिं॥
क्वार कृष्ण षष्ठी दिवस मुनिवर कीन्ह पयान।
नौमीदिन आये अवध करि सरयू अस्नान॥
द्वारपाल यक भेजिकै दीन्ह्यो खबरि जनाय।
सुनि दशरथ सानंद उठि सादर भेट्यो आय॥

त्रोटकछन्द॥ करि दण्डप्रणाम ऋषीश्वरको। लय सादर भूप चले घरको॥ शुभ आसन बैठन को सुदिये। पुनि पूजन षोडश भाँति किये॥ जुतरानि बिनय बहुभाँति कियो। सुत चारिहुलै पग मेलि दियो॥ छबि देखि मुनीश प्रसन्न हिये। पुनि बारहिं बार अशीश दिये॥

दो० तब करजोरि महीपकह मुनि आयो क्यहि काज।
कहउ करत सो नाथ मैं देर न लैहउँ आज॥

सवैया॥ देव धरा द्विज गो मुनि रक्षक सत्यब्रती मम बैनसुनीजे। निश्चर घोर सतावत मोहिं करै मख आश्रम देत नहींजे॥ सो दुखमानि भयों तव याचक धर्म बिचारि भलो यशलीजे। सानुजरामहिं देहु महीपति मारहिं दुष्टन मो दुखछीजे॥

दो० गाधिसुवनके वचन इमि सुनि नृपगये सुखाय।
जैसे परसत तुहिनके कमलजाय मुरझाय॥
पुनि धरिधीर महीप कह माँग्यो मुनि न विचारि।
राम लषण किमि देउँ द्वउ जीवनप्राण हमारि॥

सवैया॥ माँगहु धेनु महीधन कोष सरोषदियो सब शंकन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यामै। धामहु बामदियो बिनखेद करौ इनकारण रंचकतामै॥ प्राण समान प्रियाकछुदेह न देउ स्वऊ मुनि एक छनामै। राउर काज दियो सबआज बनै यकदेत न केवल रामै॥ हे मुनिराज विचारकरौ सुकुमार कहाँ सुतहैं ममबारे। राकस घोर कठोर कहाँ गिरिसों बलवान महाभयकारे॥ जे धनुबानगहै नहिं जानत बालसखा सँग खेलनहारे। ते लरि हैं किमि संयुगमें मुनि माँग्यहु तौ नहिं योग विचारे॥ किरीटछन्द॥ रामसनेहमई सुनि बानि कह्यो ऋषिराज सुनो महिपालक। चातुर वीर बड़े रणधीर न जानिय आपु इन्हैं करि बालक॥ रक्षकहैं सुर साधुनके अरु घोर तमीचर बृन्दन घालक। मानिसही ममबानि महीपति द्यौ चलिमेटहि मो दुखजालक॥

दो० तब वशिष्ठ बहुभाँति सों समुझाये नरनाह।
जग मंगलके काज सुत दीजे सहित उछाह॥

कुण्डलिका॥ दीजे नृप मुनिराज कहँ पुत्र परम सुखमानि। निश्चरदलि मखराखिकै बेगि मिलहिंगे आनि॥ बेगि मिलहिंगे आनि लाभ इनको अतिहोई। होई जगयश आपु बिलँब कीजे नहिं कोई॥ कोई भाँति न आन गुनियमनमें सुनिलीजे। लीजे आयसुमानि मुनिहिं सादर सुतदीजे॥

दो० गुरुवशिष्ठके वचनसुनि नृप द्वउतनै बुलाय।
दीन सौंपि मुनिराज कहँ कुल सबरीति सिखाय॥

सवैया॥ मानि पिता गुरु मातु समान सदा मुनिसेवनमें चितलायो। बैन कठोरकह्यो न कभू जन याचक दानदिह्यो मनभायो॥ भूलिलख्यो परनारि दिशा नहिं सम्मुख शत्रुन पीठि तकायो॥ कै मुनि कौशिककाज सबै सुत आतुर लौटि घरै निजआयो॥ छप्पै॥ पितुआयसु धरि शीश वेगि सानुज रघुराई। जननि जनक शिर-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नाय मुदितमन आशिषपाई ॥ लीन्हे कर धनुबान कसे सुन्दर कटि भाथा । श्याम गौर द्वउबन्धु निरखि लाजत रतिनाथा ॥ मुनिराज परम आनन्दमन जपतपकर फल जनुमिल्यो । बहुभाँति नृपहि आशीषदय राम लषण सँगलैचल्यो ॥

दो० चलतसमय हनुमानको दीन छोरि रघुराय ।
कह्यो कछुक दिनमें तुम्हें मिलबै बनमें आय ॥

कवित्त ॥ जात मग ताड़का करालरूप ब्योममाहिं आवत बिलोकि मुनि रामही बतायो है । देखिताहि राघवेश कौशिकै कह्यो कि नाथ कामिनी बिहीन नाह नीमशवगायो है ॥ ताहूपै न सामुहे समर कौनभाँति याहि मारिये न रीति वंश क्षत्रियो अहायो है ॥ होय जैस आयसु कृपालको करौं मैं शीघ्र राउरे के काजहेत तात मो पठायो है ॥

दो० रामचन्द्रके वचनसुनि कह मुनि कौशिक येह ।
पातकमय यह राकसी मारिय बिनु संदेह ॥
सुनत राम एकै विशिख तासुप्राण हरिलीन ।
दीनजानि त्यहि दीनहित तुरतहि निजपददीन ॥
कन्या यक्षसुकेत यह हती रूप आगार ।
घटज शाप कुरूपभइ कीन्हे हरि उद्धार ॥
प्रभुप्रभाव लखिकै ऋषय हृदय हर्ष अतिकीन ।
विद्यानिधि भगवान कहँ विद्या बहुविधि दीन ॥

सवैया ॥ लाग न प्यास क्षुधा ज्यहिते न घटै बल तेज तनोपर छावै । सुन्दर मङ्गलमै मगदायक त्रासहु नींद समीप न आवै ॥ बिघ्न निवारण शत्रु बिदारण मंत्र अनेकन जे गनिजावै । आयुध सिद्धि समर्पि सबै निज आश्रमलै प्रभु को सहचावै ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ षोडश विधि पूजन किये दिये मूल फलखान।
प्रातसमय शुभ जानिकै बोले श्रीभगवान॥

सवैया॥ निर्भय यज्ञकरौ तुम जाय सजे धनुबान खड़े हम आहैं। आयसुपाय अरम्भ किये मख देखत धूम निशाचर नाहैं॥ लैदल धायचल्यो जबहीं प्रभु मार्योबान बिनाफरकाहैं। लागतही शतयोजन पार पयोनिधि जायमरीच गिराहैं॥ रामबहोरि सुधारि शरासन जार्यो पावकबान सुबाहैं। लक्ष्मण सेन संहार किये सब राकस एकन भागि बचाहैं॥ शोक गये मुनि वृन्दनके मख पूरण भे ऋषि मोद लहाहैं। देव अनन्दभरे भगवंत करैं नभजै जयकार महाहैं॥

दो॰ पुनि मुनि बोले राम सों तात जनकपुर माँहि।
अद्भुत यक कौतुक अहै चलहु देखिये ताहि॥

सवैया॥ कीन बिदेह अहै प्रणयों शिव चाप कठोर जुकै दलि डारी। सादर ताहि बरी तनया महिपाल जुरे बहुगे सबहारी॥ टारि सक्योधनु नेकु क्यहू नहिं रावण बाणहि हारि सिधारी। दूरिकरौ चलिकै रघुनायक राजहिं धर्म कुसंकट भारी॥

दो॰ धनुपयज्ञ सुनि जनकपुर रघुकुल कमल पतंग।
राम लषण द्वउ बन्धुबर हरषि चले मुनिसंग॥

छप्पै॥ नराकार यक शिलापरा आगे प्रभुदेखा। पूंछेउ कौशिक पाहिं कह्यौ मुनि हाल बिशेखा॥ गौतम ऋषिकी नारि परम सुंदरि गुणखानी। ऋषि तनुधरि बिबुधेश बंचि त्यहि सों रति ठानी॥ ऋषि आय देखिकरि कोप तब दीन शाप सुरराज कहँ। भगएक हेत आयो इहाँ होयँ सहस तवदेह महँ॥ घनाक्षरी॥ देखि ऋषि याहि फेरि कोपिकै कुशापदीन पाहन स्वरूप ह्वैकै तोहू दुःख भोगु जाय। कीन्हीं जब अस्तुति अपारमनि दीनभाषि रामपद धूरि-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लागि जाई पाप तू नशाय ॥ इन्द्रहू अपारकीन अस्तुती कहा कि जाउ चाप धुनि सुनि अक्षहैहै कछू कालपाय । सोई है अहल्या यह चाहती चरणधूरि कीजिये कृपा रघुराम दीजिये चरण छाय ॥

दो० सुनत राम त्यहि शीशनिज दीन्ह्यों चरण छुवाय ।
दिव्यरूप ह्वै करनलगि अस्तुति अति हरषाय ॥

मात्रात्रिभंगी छन्द ॥ जैजै रघुनन्दन असुर निकन्दन हर अघ वृंदन भारमही । यश अमल अनन्ता तव भगवन्ता कह श्रुति संता पारनही ॥ सब गुण गण भारा रूप उदारा प्रभु सुख सारा आप अहै । ज्यहि दरश प्रभावा मैं गतिपावा सकल नशावा पाप अहै ॥ मैं जड़ मतिपर्मा पूरुब जन्मा अमित कुकर्म्मा करतभई । करि कृपा कृपाला पदरज भाला धरि अघजाला दूरिकई ॥ किमि विनय सुनाऊँ पद शिरनाऊँ यह बरपाऊँ रामप्रभू । तव चरणन माहीं प्रीति सदाहीं रह न छुटाहीं नाथ कभू ॥ भावत मन पाई बर सुखदाई पद शिरनाई हरषभरी । जैजै बहुभाखी प्रभुउरराखी निज पति लोकै गमनकरी ॥ सुर देखत हरषे प्रभुपर बरषे सुमन जैति जय व्योम कही । यह कीरति पावन परम सुहावन विशद तिहूंपुर छायरही ॥

स० ॥ बिनु कारण राम कृपालसदा शरणागत पालक बानिहिये । अपराध अपार करी ऋषिनारि कृपाकरिकै गति ताहिदिये ॥ असजानि नितै भगवन्त भजौ करुणाकरको दृढ़नेम लिये । नतु जाइहि जन्म अकार्थ वृथाफल कौनकहौ जगमाहिं जिये ॥

पुनि सानँद सानुज रघुनाथा । गमन कीन्ह आगे मुनिसाथा ॥
पहुँचे जाइ देव सरितीरा । सानुज करि प्रणाम रघुबीरा ॥
पुनि मुनिसन पूछेउ रघुराई । क्यहिविधि नाथगंग महिआई ॥
अरु उत्पति क्यहिविधि भै गंगा । कहहुनाथ सो सकल प्रसंगा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुनि मुनिकह तव कुलमें ताता। भयो सगर नृप जग विख्याता॥
केशि सुमति युग तिय तिनरहेऊ। बिनसुत दुखित भूप मन भयऊ॥
त्रियन सहित नृप कानन जाई। सुतहित तपकीन्हे अधिकाई॥
भृगु तबआइ देन बर लाग्यो। एक पुत्र केशी तिय मांग्यो॥
दो० सुमतिकह्यो प्रभुदीजिये म्वहिंसुत साठिहजार।
एवमस्तु कहि भृगुगये आयउ नृप आगार॥
केशि सुवन असमंजस जयऊ। अंशुमान तिनके सुतभयऊ॥
असमंजसहि शिशुन बध दोषा। घर बाहिर किय नृप सहरोषा॥
साठिसहस्र सुमति सुतजाई। ते रणधीर बीर सब भाई॥
भूपति सगर यज्ञ जब कीन्हा। छाड़्यउँ बाजि इन्द्र हरिलीन्हा॥
लै पाताल कपिलमुनि नेरे। बाँध्यो नहिं पायो नृपहेरे॥
तब पठये सुत साठिहजारा। तिन ढूंढ्यो सबजगत मँझारा॥
नहिंपाये महिखोदन लागे। पहुँचे जाइ कपिलके आगे॥
लखिहय मुनिहिं बचनकटु कहेऊ। खोलत पलक भस्म सबभयऊ॥
दो० अंशुमान कहँ बोलि पुनि कह्योभूप समुझाय।
सुत नहिंआये जाय तुम लावहु खोज लगाय॥
गीतिकाछन्द॥ सुनि तातके इमिबैन सादर अंशुमान सिधा-
यऊ। मगगरुड़ मिलि ज्यहि भाँति भे सुत नाश हाल बतायऊ॥
सह गरुड़मुनि पहँजाय किय बहुबिनय हय तौ पायऊ। खगनाथ
पुनि अँशुमान सों कहि बचन ऐस सुनायऊ॥
दो० गंगा जो आवहिं अवनि तरैं पितृ तव आसु।
अंशुमान सों भाषि इमि गे खगपति हरि पास॥
मल्लिका छन्द॥ अंशुमान भौनआइ। हाल भूपको सुनाइ॥
अश्व पाय बोलिलीन। बिप्रवृन्द यज्ञकीन॥ राज अंशुमान दीन।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गौन काननापुकीन॥ तोमरछन्द॥ बहुभांति स्वातपकीन। पुनि त्यागिते तनुदीन॥ अंशुमान पुत्रदलीप। तिन्ह राजदै सुमहीप॥ बन गौन आपहुकीन॥ तपकै सुत्यागि तनुदीन॥

भागीरथ दलीपके भयऊ। जिनको सुयश लोकतिहुँछयऊ॥
सुतहिं राजदै नृप बन गयऊ। करितप कठिन तहां त्यउमरयऊ॥
पुत्र भगीरथ के काकुस्था। भये जबहिं सब भांति समर्था॥
तिनहिं राज दै गे नृप कानन। कीन अमित तप लखिचतुरानन॥
आइ कह्यो मांगहु बरराई। जोरि पाणि कह नृप शिरनाई॥
नाथ कृपाकरि दीजे याही। आवहिं गंग अवनिके माही॥
सुनि अजकहा शिवहितुमध्यावो। तिनते मांगि ऐस बरलावो॥
गंगहि महि हम छोड़ी जबहीं। राखहिं रोंकि जटनमें तबहीं॥

दो० तब भागीरथ शम्भुको बहु प्रकार तप कीन।
राखब सुरसरि रोंकि हम ह्वै प्रसन्न बरदीन॥

पुनिअस्तुति बिधिसों नृपकीन्ही। तब सुरसरिहिछाँड़ि अजदीन्ही॥
हाहाकार करत सोधाई। दीन शम्भु निज जटा बढ़ाई॥
त्यहि महँ सुरसरि धार समानी। वर्ष एक तहँ रही भुलानी॥
भागीरथ बहु बिनती कीन्हा। गहिकर जटा गारि शिव दीन्हा॥
तब तहँ भई धार त्रैतामें। कारण सुनहु जवनहै यामें॥
शंकर गान कीन्ह यकबारा। मालकोश वर राग उचारा॥
सुनि सुर सब गलि जल ह्वै गयऊ। पुनिबिधिरचेकछुकजलबच्यऊ॥
ताहि कमंडल में धरिलयऊ। तासु अंशते धार जु भयऊ॥

दो० स्वर्ग लोक कहँ सो गई धार परम अभिराम।
मंदाकिनि त्यहि नामहै दायक सब मन काम॥

नाम प्रचेता ऋषि यकबारा। करत रहे तप विपिन मँझारा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तन महँ कछुक पसेऊ बहेऊ। त्यहि क्षणबिधि बरदेन जु गयऊ॥
सुकृती लखि ऋषिकेर पसीना। पोंछि कमंडल में धरि लीन्हा॥
तासु अंश प्रकटी जो धारा। जात सुभई पताल मँझारा॥
परभावती नाम त्यहि अहई। अमित प्रभाव पार को लहई॥
बलिहि छलन बामन जब गयऊ। तीनि पैग महि माँगत भयऊ॥
नापत तनु यहि भाँति बढ़ाये। पग पताल यक स्वर्ग लगाये॥
ब्रह्मलोक पहुँच्यो पग जबहीं। चीन्हिधोइ अजलीन्हेउ तबहीं॥

दो॰ धर्यो कमंडल माहिं लै तासु अंशकी धार।
रही भगीरथ हेतमहि गंगा नाम उदार॥
भागीरथ सँग सो चली करत लोक निस्तार।
गंगा सागर में मिली नृपपितृन करिपार॥
यहिप्रकार गंगा अवनि आई जग विख्यात।
महिमा अमित अनूपहै जो नहिं कहे सिरात॥

कवित्त॥ पावन करणि लोक जीवन हरणि शोक दोष दुख दारिद करत अघ भंगाहै। अमित प्रभाव जाको पावत न पार वेद पीवत पुनीत बारि होत शुद्ध अंगाहै॥ ज्ञान प्रकटावै तीनि तापको हटावै द्वार मुक्तिके अँटावै बेगि दिब्य जातरङ्गाहै। घोर भवतारिबेक यमगण मारिबेक बीगरी सुधारिबेक भूतलेक गंगाहै॥ दर्श जासु जन्म शतमज्जत बिशतबारि पीवत सहस जन्म संचिताघजावई। ऐसो ब्रह्म बारि जाहि शीशपै पुरारि धारि वेद औ पुराण जाकी नित्य कीर्त्ति गावई॥ दानमख योग जप नेम ब्रत पुण्यभूरि गंग असनान सम तुल्य एकनावई। भाग्यवंत प्रकट प्रभाव लोक तीनि माहिं सेवत सुभाय जाको मुक्तिजीव पावई॥ जैसे बाज लावाको झपटि एक धावालेत कंदनके बृन्द यथा मारुत उड़ावई। जैसे तूल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राशिकरै दावानल जारि छार निविड निशांध यथा भानुभा मिटा-
वई॥ जैसे लघु व्यालन शिखंडि धाय खाय जात परत तुषार यथा
कंज सूखि जावई। तैसे भगवंत धार गंगाजूकी लोक माहिं पापन
कि राशि एकक्षण में नशावई॥

दो० सुरसरि कथा बिचित्र अति सुनि हरषे भगवान।
सहित ऋषिन मज्जन किये बिप्रन दिय बहुदान॥
पुनि सानुज मुनि संग प्रभु मिथिलापुर कियगौन।
आय दीख शोभा परम कहत बनै नहिं तौन॥

कवित्त॥ बापी कूप सरित तड़ाग सोहैं नानाभाँति बनज बि-
काश जामें रङ्ग रङ्ग ह्वै रहे। पुरट बँधान मणि जटित बिचित्र बारि
पूरण सुधासों रसमत्त भृंग लैरहे॥ डोलत सुगन्ध मंद शीतल पु-
नीत बायु वृक्षन विहंग जाल शोर घोरकैरहे। कैरहे सनान ग्राम
नारिनर भाग्यवंत आनँद अपार ठौर ठौरपै सुछैरहे॥ चारोंओर बाग
बन बाटिका बिराजै भूरि फूल फल भारनसों डौरै भूमि नैरही। वृक्षन
लतानके बितानसे तने हैं पुंज तासुमध्य पक्षिन कि झीनीशब्द
ह्वैरही॥ हाटबाट चौहट नगर द्वार द्वारपर आनँद अपारहोत भारी
छबि छैरही। भाग्यवन्त कौन भांति शोभसो बखानिपाव देखतहि
जासु अमरावती लजैरही॥

दो० पुर बाहेर जहँ तहँ विपिन सरिसर कूप समीप।
निज निज लीन्हे सेनसँग उतरे बिपुल महीप॥

सवैया॥ कौशिक देखि अनूप तहां यकदायक मोदभली अम-
राई। पावन भूमि समीप नदीसर फूलसवृक्षलता नवछाई॥ मंदिर
हू बहु देवनके नहिं मज्जन पूजनमें कठिनाई। है सब भांति सुपास
इहां मनभावत मोरहिये रघुराई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० भलेहिनाथ कहि मुदितमन तहँ मुनिबृन्द समेत।
उतरे भलथल जानिकै सानुज कृपानिकेत॥
मिथिलापति मुनि आगमन सुनिलै संग समाज।
मिलन हेतु आये तहां उतरे जहँ ऋषिराज॥

सवैया॥ कीन्ह प्रणाम मुनीशहि भूपति दीन्ह अशीश ऋषीश्वरज्ञाता। लीन्ह बिठाय समीप नृपै पुनि सादर पूछतभे कुशलाता॥ बाग विलोकनगेजुरहें त्यहि औसर आवतभे द्वउ भ्राता। श्यामल गौर किशोर उभै क्यहि भांति कहौं छविसो सुखदाता॥ भूप विदेह विदेह भये सुविशेषि विलोकत राम निकाई। प्रेम भरे युगनैन चकोर निहारिरहे मुखचन्द्र लुभाई॥ राज समाज सबै वश प्रेम न देहदशा सुधिकेहु रहाई। धीर हृदै धरि कौशिक सों पुनि पूछत भूपति यों शिरनाई॥ नाथ अहैं क्यहिके युग बालक ये गुण धाम सुभाय सुहाये। कै मुनिपुत्र कि राजकुमार कि व्यापक ब्रह्म द्विहै इत आये॥ की धरि काम उभैवपु संग कि भूप क्यहू तपकै फल पाये। मोमन ज्ञान विराग सदारत देखि इन्हैं सुख ब्रह्म विहाये॥ हे नृप आपुकहे सबनीक न होहिं अलीक सुबैन तुम्हारे। प्राणिजहांलगि लोकबिषे सबहीक अहैं यइ प्राणनप्यारे॥ कोशलराज कुमार द्वि मोमख रक्षकह्वै रणरक्षस मारे। नाम सुराम बड़े लघु लक्ष्मण देखन यज्ञ इतै पगुधारे॥

दो० सुनि मुनि वचन विदेह कह नाथ कृपा बड़ि कीन्ह।
मोहिं कृतारथ करन हित आपु इतै पगदीन॥

सवैया॥ राउर तेज प्रताप महा जिन क्षत्रिय ह्वै पदवी द्विज लीन्हें। दूसरि सृष्टि रचै सुलगेरु त्रिशंकुहि स्वर्ग पठै तुम दीन्हें॥ हौ परस्वारथ सदारत कौशिक राजकुमारन संग सुलीन्हें। दुष्ट म-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राय तराय तिया ऋषि मोपर आय कृपा बड़ि कीन्हें॥ छप्पै॥ पुनि सादर नरनाह विनै बहुभांति सुनाई। सहित लषण रघुनाथ मुनिहिं पुरचले लिवाई ॥ दायक सुख सब काल सदनलै तहां टिकाये। करि पूजन बहुभांति पाय आय सु घर आये॥ पुनि ऋषिन सहित रघुनाथ शुचि अशन पाय विश्रामकरि। सह अनुज मुदित बैठतभये रह्यो दिवस यकयामभरि॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेविश्वामित्रागमनश्रीरामचन्द्रयात्राताडकासुबाह्वादिवधअहल्याउद्धारजनकपुरआगमनश्रीजनकविश्वामित्रसमागमवर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः॥ ६॥

दो० लषण हृदय अति लालसा देखन पुर मिथिलेश।
जानि राम मुनिराज सन बोले वचन सुवेश॥

सवैया॥ उत्सवनाथ महा मिथिलापुर शोभ अपार छई सबठाई। है धनुयज्ञ टिके बहुभूप जहाँ तहँ बाजत मोद बधाई॥ देखन लक्ष्मण चाहतहैं परनाथ सकोच करैं न जनाई। पावहुँ मैं भगवन्त जु आयसु लावहुँ साथहि जाय दिखाई॥ कवित्त॥ धर्मसेतु पालक सदाहौ रामचन्द्र तुम काहेन कहहु ऐसि रीति कुल स्यावहू। दर्शनाभिलाष तौ विकल पुर नारि नर जायकै देखाय रूप चित्त हरि ल्यावहू॥ अबला अबलइत आयना सकत आपु देखे बिनुपरी अधमरी तिन्हैं ज्यावहू। प्यासे छवि नैनन चकोरनको भाग्यवन्त चन्द्रमुख सुखमा पियूष रस प्यावहू॥

दो० मुनि पदपद्म प्रणामकरि रामलषण दोउबन्धु।
हरषि नगर देखन चले रूपराशि गुणसिन्धु॥

कवित्त॥ श्यामगौर गातमंजु राजत सुपीतपट सुखमा निधान कामकोटि भा लजाये हैं। सोहत निषंग लंक शायक कोदंड हाथ नाग मणिमाल छवि ऊपमा न पाये हैं॥ पूर्णचन्द्र आनन प्रकाश

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मान भाग्यवन्त चौतनी अनूप भाल तिलक सुहाये हैं। आये ग्राम देखन नगर नरनारि सुनि धाम काम त्यागि सब देखिबेको धाये हैं॥

दो० देखि सहज सुंदर युगल बन्धु सकल गुणखानि।
पावहिं सुख पुरजन परम सफल विलोचन मानि॥
आठौसखि सियकी सुभग निरखि झरोखन जात।
सहित प्रेमसानंद सब कहहिं परस्पर बात॥

चारुशीला वचन॥

दो० सखिइन कोटिन कामकी लीन जीति छवि आहि।
शोभा सुर नर नाग में सुनियत असि कहुँ नाहि॥

सवैया॥ विष्णुहि चारि भुजा सखि हैं चतुराननहू के अहैं मुखचारी। व्याल कपाल विभूति जटाधर आनन पञ्च सदा त्रिपुरारी॥ और कई असदेव नहीं छविवान इन्हैं उपमा जु विचारी। मोहन जो यह रूप निहारि कहौ जग में अस को तनुधारी॥ लक्षमणा वचन॥ कवित्त॥ भूप दशरत्थ के कुमार युग यहै सखि कौशिक कि राखि मख दुष्टन सँहारे हैं। गौतम कि नारिवश शापभै उपल ताहि देखिकै चरण धूरि छ्वाय मगतारे हैं॥ गौरजे लषण नाम तनय सुमित्रा लघु श्याम राम नाम ज्येष्ठ कौशला के बारे हैं। रूपगुण धाम ये द्विबंधु मुनिराज संग चाप मख देखनार्थ इतै पगुधारे हैं॥ हेमा वचन॥ सवैया॥ सुन्दर श्याम स्वरूप अनूपम जात नहीं सुखमांगकही है। मोहनरूप अहै सखि ये चट मोहि रही सिय देखतही है॥ जानकि योग यहै वरहै अरु योग इन्हैं सिय क्या दुलही है। जो तकिहैं मिथिलेश इन्हैं करि हैं तजिकै प्रण ब्याहु सही है॥ क्षेमावचन॥ सवैया॥ जानि चुके महिपाल इन्हैं मिलि सादर श्री ऋषिराज सलैकै। जाय सुवास दिये शुभ मंदिर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भोजन पान सुपास सबै कै ॥ है सब यद्यपि गों प्रथमै पर दुस्तर बात अहै सखिएकै। त्यागहिंगे प्रणभूप नहीं विधि वश्य हठी भजि हैं अविवेकै॥ वरारोहावचन ॥ सवैया ॥ दानि उचित्त अहै फल जो विधि तौ मिलिहै सियको वर याही। जो विधि योग सँयोगवनै भल यों कृतकृत्य सबै ह्वै जाही ॥ आवहिं नात यही नतु दुर्लभ जाय सकै तियद्वार सुनाही। पुण्य पुराकृत भूरिउदै जबहोइ सँयोग सखी इन पाही॥ पद्मगंधा वचन ॥ सवैया ॥ ज्यों मिथिलेश सुता छवि आगरि त्यों सु अनूपम रामललाहै। उत्तम वंश उभै कुलभूषण लोक प्रकाश्य सु कीर्यमला है॥ मोदमयी भगवंत द्विरूप विलोकत जन्म भयो सफलाहै। कैस सँयोग बन्यो इनको यह ब्याह सखी सबहीक भलाहै ॥ सुलोचना वचन ॥ सवैया ॥ शुभश्यामल बैस किशोरलला अतिसुन्दर कोमल गातअहै। तिमि गोरिमनोहरि भूपलली भलयोग बन्यो सब लोग कहै ॥ पर भूपकिये प्रणदुर्घटहैं शिवचापदलै स्वइ ब्याहुलहै। सु कठोरमहा नहिं योग्यइन्हैं अवरेब बड़ी सखि एकयहै॥ सुभगावचन॥ सवैया॥ कउकोउ कहै इनको सजनी लघु देखतहै सुप्रभाव महा। पदपंकज धूरि छुये जिनके ऋषिनारि तरी अघभूरिदहा॥ शिव चापदले बिनु सोकिरहै यप्रतीति तज्योजनि सत्यकहा। विधि चातुर खूब विचारि रच्यो दोरूप इन्हैं जस योगचहा॥ यहि भांति सखी सब आपुसमें कहि बैनरहीं प्रभु ओरचितै। फल लोचन देतसबै भगवन्त सबंधु गये मखभूमि जितै॥ पुरबालक सादर प्रेमभरे प्रभुसोकरि बातरहे सहितै। धनु यज्ञ थली यह नाथभली रचनाद्भुत देखहु आय इतै॥ सुनि प्रेमभरे तिनके प्रभु बैन कृपाकरि आपु उतै चलिजावत। लखि शील सुभाव सनेह महा सब बालकवृन्द हिये सचुपावत॥ शिशुसादर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

संगलगे प्रभुके सुखमाद्भुत रंगधरा दिखरावत। ज्यहि ठौर जहां ज्यहि बैठकहै मृदुबैनन सो कहि नाम बतावत॥ कवित्त॥ विस्तृत विचित्र चारु चाप मखभूमि यह देखिये सुशोभकैस मंचनावलीको है। हेममणि जटित विमलबीच वेदिका सुभाग्यवन्त सूखमा अनन्त या थलीको है॥ ग्रामलोग देखत इहाँपै सब बैठि बैठि बैठक अनूप अत्र भूपमंडलीकोहै। बैठक बहारदार इतै पुर नारिनके आसनय दिव्य मिथिलेश लाड़िलीको है॥

दो० रङ्ग अवनि शोभा परम निरखि राम सचुपाय।
शिशुन प्रेमवश जानिकै अनुजहिं रहे देखाय॥

सवैया॥ तात तकौ धनुयज्ञ मही कसि मंजु प्रभा सब ठामहिं छाई। कंचन मै वर मंचन जाल जटे मणिभा लखि काम लजाई॥ क्यावरणौं यह वेदिभली छवि अद्भुत को नहिं देखि लुभाई। आनि विरञ्चि मनो सुखमा तिहुँलोकन की यह राशि लगाई॥ जा प्रभुके अनुशासनते भगवन्त सकृल्लवमाहिं सुमाया। सुंदर सर्व्व विभौ परिपूरण देतअहै रचिलोक निकाया॥ सो प्रभु दीनदयाल सदाकहि नेतिजिन्हैं श्रुति सन्तत गाया। चक्रितह्वै मखशाल तकैं निज भक्तनपै करि दृष्टि सुदाया॥ कौतुकदेखि चले गुरुकेढिग जानि बिलम्बहि ह्वै उरआयो। जाडर सों डरके डरहोत स्वभक्ति प्रभाव सुस्वामि दिखायो॥ सुन्दर प्रेमभरे कहि बैनन बर्बस बालन भौन पठायो। दै भगवन्त सबै फल लोचन सानुज आय मुनी शिरनायो॥ रोलाछन्द॥ निशि आगमन विलोकि दीन कौशिकमुनि शासन। सहित ऋषिन रघुनाथ कीन तब संध्योपासन॥ कहहिं कथा मुनिराज सुनहिं सादर चितदीन्हे। विगत निशा युगयाम शयन मुनिवर तब कीन्हे॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ चरणकमल चापनलगे सहित प्रेम दोउभाय।
जिनके पदपङ्कज नितहिं रहे योगिजन ध्याय॥

मदिराछन्द॥ ध्यावतहैं जिनको नित शङ्कर नारदहू गुणगावतहैं। गावतहैं यश वेदपुराणहु आगमनेति बतावतहैं॥ तावतहैं तनको जन योगिनहीं लखितेउहु पावतहैं। पावतहैं भगवन्त न अन्त अनन्त महन्तहु ध्यावतहैं॥

दो॰ ते द्विबन्धुवश प्रेमगुरु सेवत पद जलजात।
लहिनियोग कीन्हेशयन प्रात जागि दोउभ्रात॥
सकलशौचकरि नित्यक्रिय मुनिवर आयसु पाय।
चले सुमनबीनन मुदित राम लषण दोउ भाय॥
जायदीख नृप बागकी शोभा सकल अपार।
नानाविधि फूले सुतरु करत भ्रमर गुंजार॥

सवैया॥ कुन्द कँदेल जुही कचनार अनार लवंग सुचम्पक जाही। फूलिरहे सघने तरुहैं नवपल्लव शोण झुके महिमाहीं॥ वृक्षन नव्य लता उरझी तिनमध्य विहङ्ग भरे चुचुहांहीं। गुञ्जत भृंगन की अवली कहिजात प्रभाद्भुत बागकि नाहीं॥

दो॰ अजब अजब फूले सुमन द्रुमनदेत अतिशोभ।
जिनहिं निरखि सुरराजको होत सद्य मन क्षोभ॥

कवित्त॥ सुंदर सुगन्ध मिष्ट मंजुल प्रकाशमान सूखमा अपार समता न फूल तूलाहै। कोमल कलाप सेत चिक्कन विलोकि जाहि चञ्चरीक वृन्दनको सद्यमन भूलाहै॥ देवता निहाल कार हारचित्त मैनझूक आनँद अगार औ सुढर स्वच्छमूलाहै। संकुल प्रसूननको शीशताज भाग्यवन्त बेला सुरसीला क्यालबेला फूल फूलाहै॥ कोमल अतीव मंजु माधुरी करनिमोद जात जा सुगन्ध मन्द ठौर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठौर पेली है। सोहत सुरङ्ग दिव्य चीकनी चटकि जनु लीन सर्व फूलनकि सूखमा सकेली है॥ पूरित सुरस भूरि पावनि चमकदार भाग्यवन्त गन्धताकि स्वच्छ याहवेली है। सुन्दरि सुदर नव्य ऊपमा न योग्य आन फूलनकि रानियालबेली क्या चंबेली है॥ शोभित विचित्र कै सुदेखिये बहारदार पाखुरी अपार अंग अंग सब खूला है। कोमल विशेषि क्षीरफेनहुते जासुदल आवत सुगन्ध मन्द चारु सुक्खमूलाहै॥ अजब रसील स्वच्छदार गुच्छ शोण पीत भाग्यवन्त सूँघत मलिन्द मन भूलाहै। सुन्दर गँभीर गोल पावन अमोल सर्व्व फूलनमें फूल एक गेंदा फूल फूलाहै॥ अद्भुत सुगन्ध ज्योंन कुन्द कचनारन में सेवती कदम्बहूकि गन्ध मन्दकारी है। पावन विचित्र स्वच्छ कोमल सफील जासु सूखमा अपार देखि कंज गतिहारी है॥ होत है प्रसन्न चित्त सूँघत नशात खेद फूलनि अनूप जो लगतकेन प्यारी है। भाग्यवंत कौनभांति पाउँमैं बखानि शोभ फूलन समाजमें गुलाब छवि न्यारी है॥ सम्पुट सुगन्ध कोकि सूखमाको शाल मंजु कोमल न मल रञ्चदायक बहारहै। चिक्कनन्वकील मिष्ट तीक्षण सुवास जासु छूवतहि जात अंग अंगकै पसार है॥ उत्तम निकंट औ सरस आबदार खूब भाग्यवन्त ऊपमा न आन मो विचारहै। जैसोय विचित्र चारु मीथिलेश बागमाहिं फूलन में फूल गूलशब्बो सुखसारहै॥ फालसा करौंद आंब आमरूत तूत सेव जामुनी अँगूर आडु गोंदनी अनारही। नारँजी अँजीर रम्भ दाख पक्क नासपत्र पेसता बदाम औ सरीफली छुहारही॥ कागदी चकोतरादि निम्बु मिष्ट भूरि पूरि भाग्यवन्त लांगली पनस बिल्वतारही। अगणित सुमेवनाम पारपाव कौनडार भूमती अवनि पै सफल फूल भारही॥ सवैया॥ कंचन मै महि सुन्दरि चारु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विशाल बनी मणिमै बहुक्यारी । पांतिन पांति लगे द्रुम संकुल थाल्हन पूरण निर्म्मलवारी॥ रौसनकी गति क्या वरणौं मग पन्नन की रहि छाहि उज्यारी । श्रीमिथिलाधिप बाग विषे भगवन्त सबै छवि सोहत न्यारी ॥ चातक हंस चकोर मयूर करै धुनि कोकिल कीर सुमैना । गुञ्जत भौर जहां तहँ संकुल डोलत पौन भली सुख दैना ॥ वासकिये जहँ नित्यरहैं भगवन्त लिये ऋतुराज सुसैना। कौनसि वस्तु अहै जग में नृपबागम जो हरवक्त मिलैना ॥ कुण्ड- लिया॥ ताके मधि सरसुभगयक सोहत परमविचित्र। मणिमै शुभ सोपान त्यहि पूरण सलिल पवित्र ॥ पूरण सलिल पवित्र वनज विकसे बहुरंगा। कूजत जलखगवृन्द विविध गुञ्जत तहँ भृंगा ॥ गुञ्जत भृङ्ग समोद उड़त पंकज रसछाके । सुरसर प्रभा अपार त- दपि समता नहिं ताके ॥

दो० बागप्रभा दोउ बन्धु लखि भये मुदित मुदमूल।
माली सन बोले कि हम चहत लेन दलफूल ॥

सवैया ॥ श्यामल गौर किशोर मनोहर कोटिन काम प्रभा ब- लिहारी। आपुअहैं किनके सुत सुन्दर औ क्यहिसंग इतै पगुधारी॥ कौन निवास कहां क्यहि मंदिर आजुभई धनिभाग्य हमारी । सो सुखजात कह्यो भगवन्त न मोहिं भयो जस आपु निहारी ॥ हैं हम श्रीअवधेश तनै मुनि संग इतै मखदेखन आये । श्रीमिथिलेश्वर पौरिटिके दलफूल लिये गुरुदेव पठाये ॥ शासन वेदय पूछिलिये बिनु मालिहि फूलछुवै न सुभाये । ताहित पूछत मालिकहौ दल फूल लयावहिं जाय सुहाये ॥ कवित्त ॥ कौशलेश चक्रवर्ति जा- नत जहान नाम बैठक सुरेशपै सिंहासनार्द्ध पावही । तासुपुत्र आपु जासु कीरति प्रसिद्ध लोक आइये सुबागहौ द्रुमावली देखा-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वहीं ॥ कछहू ते कोमल अतीव मंजुपाणि आपु कंटकसवृक्ष फूल छोतैगड़ि जावहीं। रावरो न योग्यदेहु आयसु कृपाल मोहिं फूल फल दल वेगि तूरि हम लावहीं ॥ छप्पै ॥ सुनु माली ममबैन धर्म सेवक यह रीती। स्वामिकाज निज हाथकरै सन्तत सहप्रीती ॥ जो तुम्हरे रुचि होय बैठि गुरुढिग लखि मोहीं। दल फल फूल उतारि डालि लायो सजिवोहीं ॥ निज पाणि तूरि दल फूल सुठि लैजावै गुरुपहँ हमहिं। असि कठिन सहतक्षत्रीय करि तुच्छ कहा कंटक सकहिं ॥

दो० रामवचन सुनि वंदिपद कह्यो मालि करजोरि।
नाथ कृपाकरि हाथ निज लेहु पुष्पदल तोरि ॥

घारीछन्द ॥ लागिलेन फूल ज्योहिं। आइ बाग सीय त्योहिं ॥ सवैया ॥ त्यहि औसर आयसु मातु सियाहित पूजन गौरि सखी सँगलै। शुभ गावत गीत सुआइ तहां सर मज्जनकैगईं गौरिनिलै ॥ करि पूजन प्रेम समेत विनै बहुभांति किये धरिमाथइलै। करि मातुदया वरदेहु यहै वर सुन्दर मो अनरूपमिलै ॥ त्यागि सिया सँग एक सखी सुविलोकन जातभई फुलवाई। देखिसि सो द्वउ बन्धु तहां छवि सिन्धु रही वशप्रेम लुभाई ॥ विह्वलगात पसेउ बहै अति आतुर लौटि सिया ढिग आई। तासु दशा सखि देखि कहै कहुकारण मोदयतें कहँ पाई ॥ देखत बाग द्विराजकुमार सुश्यामल गौर उभै छविऐना। आननचन्द्र प्रभा भगवन्त विलोकत पागि चकोर सुनैना ॥ चोरि लिह्यो चित घायलकै म्वहिं मारि कटाक्षन के शरपैना। रूप अनूप कहौं किमि सो सखि बैन अनैन न नैनन बैना ॥ सुनि बैन मनोहर तासु सखी हरषीं सब आपुसमाहिं कहैं। नृप पुत्रअली स्वइ हैं य सुना मुनिसंगम आयजु काल्हिरहैं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भगवन्त लिये जिन मोहि सबै नरनारिनको निज रूपमहैं। छवि लोग जहां तहँ वर्णतहैं चलिदेखहु देखन योग्य अहैं॥

दो० राघव दर्शन हेतु सिय चक्षुरहे अकुलानि।
तातें त्यहि सखिके वचन अतिशै सियहि सुहानि॥
ताहि अग्रकरि जानकी सहित सखिन सानन्द।
चली उतै जितही रहैं सानुज रघुकुलचन्द॥
कंकण किंकिणि नूपुरन सुनि रव राजिवनैन।
ताहि हृदै गुनि अनुज सन कहत मधुर इमि बैन॥

कवित्त॥ पैदर सुगुल्म लता बाजिन समाज सोह शीतल सुगन्ध मन्द मारुत मतंगहै। पल्लव रसाल रथ चढ़ि फूल चापधारि सेनापति राजऋतु लीन्हे सेन संगहै॥ रम्भ ध्वज जानकी प्रताप बल सखी शब्द नूपुरादि कंकण कि होत यों उतंगहै। भाग्यवन्त साजिकै सदल विश्वजीतिबेक दुंदुभीय दीन जनु भूपति अनंगहै॥

दो० बहुरि चितै त्यहिओर प्रभु सिय सुखमा हिय आनि।
कृपासिन्धु निजबन्धु सन पुनि बोले मृदु बानि॥

सवैया॥ तात तको छविराशि अनूपम श्री मिथिलेश सुता यह सोई। कारण जा धनुयज्ञ अहै सुनि आवत भूप भये सब कोई॥ पूजन गौरि लयाइ सखी इत रूप अलौकिक देखत जोई। मोमन स्वच्छ सुभाय सदा तजि सीम गयो निज क्षोभित होई॥

दो० यहिविधि गे बातें करत लतन ओट सुख ऐन।
चकित निरखि श्रीजानकिहि कहे सखिन इमिबैन॥

सवैया॥ चौतनि शीश अनूप सजे श्रुति कुण्डल लोल चलें अमलाहै। भ्रूधनुबाण कटाक्ष सकोर सु आनन पूरणचन्द्रकलाहै॥ हास विलास हरै मनको मणिमाल लसै अति कम्बुगलाहै। क्यों

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नहिं देखत सीय उतै बिच कुंदलता दोउ ठाढ़ि ललाहैं॥ श्रीरघुनंदन रूपप्रभा अति देखतही मिथिलेश किशोरी। देह दशा सुधि भूलि सबै वश प्रेम अतीव सु ह्वैगइभोरी॥ त्यागि निमेषलगी अवलोकन ज्योंदिशि पूरणचंद्र चकोरी। दीन कपाट दृगंचल रामहिं आनि हृदै मग अक्षन ओरी॥

दो० जानि बिलँबकरि मातु भै धरि उर मूरति श्याम।
सहित सखिन पुनि जानकी गईं गौरिके धाम॥
श्रीगिरिजा पद बंदिकै युगल जलज करजोरि।
बोलीं सीता वचन मृदु मातु विनय सुनु मोरि॥

किरीटछन्द॥ जय जय श्री गिरिराजकुमारि सदाशिवप्राणप्रिया छविरासिनि। गावत नेति किहे यशवेद विमोहनि विश्वसबै उरवासिनि॥ उत्पतिकै जग पालिहरौ वरदानि सुरासुर ज्ञान प्रकासिनि। मातु मनोरथ पूरकरौ मम आनँदरूप स्वछंद विलासिनि॥ सेवत तोहिं सुभाय मिलैं फलचारि विनाश्रम हे गिरिनंदिनि। जाहिर लोकप्रभाव अहै तव अद्भुतरूप सुरासुरवंदिनि॥ मोर मनोरथ भाँति भली तुम जानहु मातु त्रिताप निकंदिनि। देवि विनय सुनि मोरि कृपाकरि पूरण आश करौ निजछंदिनि॥ गिरिजावचन॥ सवैया॥ मम सत्य अशीष य सीय सुनौ तव जैहहिं पूर मनोरथ ह्वै। मुनि नारद बैन पुनीत सदा सब ह्वैहहिं सत्य गये कहि ज्वै॥ करुणाकर शील सनेह त्वया ज्वइ जानत जानन जागतिकै। भगवंत रँगो मन जाहि नितै मिलिहै वर श्यामल सुन्दर स्वै॥

दो० गिरिजाशिष सुनि जानकी पुनिपुनि करिसुप्रणाम।
सहित सखिन सानंद मन गमन कीन्ह निजधाम॥
इत सानुज रघुवंशमणि आये कौशिकपास।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करिप्रणाम सब हाल प्रभु कीन्हे तुरत प्रकास ॥
नृप मिथिलेश बाग हम जाई । मालिहिं पूछि मुदित द्वउभाई ॥
लगे लेनदल फूल पुनीता । सहितसखिनत्यहिअवसरसीता ॥
गिरिजा पद पूजन तहँ आई । रूप अनूप वरणि नहिं जाई ॥
नख शिख अमित सीयकै शोभा । देखि नाथ मेरो मन क्षोभा ॥
उनहुँ हमहिं यकटक रहि देखी । सहित सखिँन परिहरी निमेखी ॥
पुनि युत सखिन गौरि गृह जाई । करि पूजन जब भवन सिधाई ॥
तब हम लषण सहित इत आये । सुनि मुनिकौशिकिअतिसचुपाये ॥
लहि प्रसून मुनि पूजन कीन्ह्यों । आशिर्वाद मुदित मन दीन्ह्यों ॥

सो० चिरंजीवि द्वउ भाय सफल मनोरथ होहिं सब ।
सुनि सानुज सचुपाय वार वार वंदत चरण ॥

दो० पुनि भोजन करिकै मुदित बैठे मुनि ससमाज ।
करि प्रणाम कर जोरितब बोले श्रीरघुराज ॥
निमिवंशी रघुवंश को एकै कुल रवि होय ।
उत वशिष्ठ गौतम इतै हैं प्रोहित क्यों दोय ॥
बोले मुनि कि वशिष्ठ हैं प्रोहित घरके दोउ ।
पर गौतम इत होनको कारण सुनि ये सोउ ॥

गीतिका छन्द ॥ यक समय निमि मखहेतु निउता सकल ऋषि राजनदिये । नहिं लीन न्योत वशिष्ठ सुरपति काजलगि स्वर्गहिं गये ॥ निमि बोलि तौ ऋषि गौतमहिं निज भौन प्रोहित करि लिये । मख पूरणांत वशिष्ठ आय कुशाप तब राजहिं दिये ॥ नृप प्राणतन भे हीन निमिहू शाप मुनि तनु तजिदियो । विधिकी कृपा मुनिराज पुनि तनुपाय अति हरषित हियो ॥ तुम करहु पलकन वास बिनुतनु निमिहि ऋषि गौतमकहा । पुनि देह निमि मथवाय

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मैथिल पुत्र उपजाये तहा ॥ ऋषि गौतमाशीर्वादते यह कुल वि-
देही ह्वै गयो। भगवन्त याही हेतुते यहि माहिंप्रोहित ह्वै भयो ॥

दो० विगत द्योसनिशि आगमन जानि गुरायसुपाय।
चले मुदित संध्या करन राम लषण द्वउभाय ॥
प्राचीदिशि शशिउदैलखि सियमुखसम सुखपाय।
बहुरि कहेउ सीतास्यसम नाहिंन यह निशिराय ॥

कवित्त॥ बन्धुविष शत्रुराहु जन्मसिंधु रोगयुक्त पातकी कलंकि
गुरुतीय रति ठानी है। पंकजको द्रोही दिन मन्द घट बढ़ होत रह-
तन एकरस कोक दुःखदानी है ॥ विरही दुखावै नित व्योमबीच
धावै कल पलहू न पावै भूरि औगुण कि खानी है॥ चन्द रंक ऊप-
मान योग्य पाव भाग्यवन्त आनँदको कन्द मुख सीय सुखदानी है॥

दो० सीतानन शशि मिसुवरणि जानि निशा बढ़िराम।
आय गुरुहिं शिरनाय लहि शासन किय विश्राम ॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे
श्रीरामचन्द्रवाटिकावलोकनवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

दो० प्रात जागि प्रभु बन्धुसन बोले अतिमृदु बैन।
तात लखहु पूषण उदै सकल लोक सुख दैन ॥
सुनिलच्मणशिरनायपद जोरि जलजयुगपाणि।
प्रभु प्रभाव दर्शायकै कहेउ मधुर इमि बाणि ॥

सवैया॥ भानु किये तम नाश यथा तिमि राउर शङ्करचाप द-
लैंगे। ह्वैहहिं दुष्ट महीप नखत्त मलीन सुपङ्कज सन्त खिलैंगे ॥
ज्योहिं उलूक लुके दिन त्यों खलवृन्दन के नहिं खोज मिलैंगे।
चन्द प्रकाश तज्यो जिमि त्यों परशाधरहू निज गर्व ढिलैंगे ॥

दो० यथा उदै रविके जगत प्रगट प्रकाश कलाप।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तथा दलत शङ्कर धनुष फैली आप प्रताप॥

तोमरछन्द॥ सुनि बन्धुके इमि बैन। विहँसे कृपा सुख ऐन॥

तोटकछन्द॥ पुनि मज्जत सानुज रामभये। करि नित्यक्रिया गुरु पाहिं गये॥

दो० त्यहि अवसर आयसु जनक शतानन्द तहँ आय।
कौशिक मुनि पद बन्दिकै कहे वचन सुखदाय॥

स०॥ पठये मिथिलेश हमैं मुनिसो तुम जायक हाल कहौ सकला। हित शम्भु शरासन तोरनके नृप आवतभे बहु रङ्गथला॥ करि हारि गये बल भूप बली पर नाहिंन सो क्यहुं नेकुहला। मम शोच हरौप्रभु आय कृपाकरि लै सँग लच्मण रामलला॥

दो० शतानन्दके वचन सुनि कह्यो मुदित मुनिनाथ।
बोलि पठाये जनक नृप चलहु लषण रघुनाथ॥
सीय स्वयम्बर काज हित आये बहु अवनीश।
आजु बड़ाई काहिधौं देखी देवै ईश॥
कह्यो लषण जापै कृपा मुनिनायक तौ होय।
राजसभा के बीच में यश भाजन है सोय॥
सुनि लच्मण के वचन वर भये मुदित मुनिवृन्द।
होहिं मनोरथ सफल सब दिय अशीस सुखकन्द॥

क०॥ सानुज कृपाल रामचन्द मुनिवृन्द संग देखनार्थ चाप मख शालही सिधाये हैं। आय रङ्गभूमि में द्विबन्धु पाय हाल ग्राम नारि नर बालक सबृद्ध युवा धाये हैं॥ देखि मिथिलेश भीर भूरि बोलि भृत्य दीन आयसु सबन यथायोग्य बैठाये हैं। ताहीक्षण भाग्यवन्त रूपगुण शीलसिन्धु आनँद अगार द्वौ कुमारभूप आये हैं॥

दो० जिनके उर अन्तर विषे रही भावना जैसि।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रामचन्द्र मूरति मधुर तिन देखी तहँ तैसि॥
कोऊ सुत कोऊ सुहृद कउ बिराट कउ इष्ट।
कउ स्वामी कउ रिपु सखा कोऊ नृपति सरिष्ट॥
रामहिं चितवत भाव ज्यहि सिय सनेह सो सुक्ख।
शेष गणेश न कहिसकैं क्यों वरणै यक मुक्ख॥

सवैया॥ राजत राज समाज उभै अवधेश कुमार प्रभा सुख ऐना। पूरण चन्द्र शुभानन सुन्दर मंजु विशाल सुपंकजनैना॥ गोल कपोलसजैं श्रुति कुण्डल बोलत चारु अमोल सुबैना। श्यामल गौरकिशोर मनोहर को अस जो लखि रूप ठगैना॥ चौतनि शीश सजै तिलकांकित भाल सुमेचक केशसुहाये। बाहु विशाल धेर धनुबान दुकूल कसे कटि तून लगाये॥ अंगन अंग अपार प्रभा भगवन्त विलोकत काम लजाये। देखिभये सबलोग सुखी छविसिन्धु उभै दशस्यंदनजाये॥

दो० नृप विदेह द्वउबन्धु लखि भै मन परम निहाल।
मुनि पदपद्म प्रणाम करि कहे सकल निजहाल॥

कवित्त॥ एकबार पूजनार्थ चापथल लेपिबेक आई आपु रानि नासुकन्यकै पठाई है। आइ सो उठाइ चाप चारौकोर चौकादीन फेरि धरि वाहीथल भौनको सिधाई है॥ देखिहौ सशोच पूँछि रानि जानि हाल सब्ब कीन मय प्रण चाप जोई तोरिपाई है। ब्याहै सोई जानकी बदनदश बाण आदि सके न चढ़ाय फेरि भौनगे लजाई है॥ सवैया॥ महिपाल बहोरि दिखाइ सबै मुनि कौशिक को शुभ रङ्गथली। चितवैं सब चकित बन्धु द्वऊ चलि जाहिं जहां जब जौन गली॥ रुचि जाहि यथा भगवन्तरही सुतथाहि लख्यो प्रभुभा अमली। मुनिराज कह्यो मिथिलेश कियो रचना अति उत्तम शोभ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भली ॥ सब मंचन ते यक मंच विशाल प्रभा ज्यहिकी सब माहिं जुदै । मणि चित्रित कंचन मे झलकै अटकै तितही जितही मनुदै ॥ मुनि संयुत राजकुमार तहां बैठाय महीपसु आसनुदै । भगवन्त कहौं किमिसो सुखमा त्यहिमंच मनो युग चन्द उदै ॥

दो॰ रामचन्द्र मुखचन्द्र लखि नृपगण उडुप समाज ।
भयमलीन यकटकलखै ज्यों चकोर द्विजराज ॥

साधु भूप ॥ सवैया ॥ यप्रतीत सबै रघुनन्दनजू दलिहैं शिवचाप सँदेह नही । न दलैं तबहूं अस जानिपरै सिय मेलि इन्हें जयमाल सही ॥ सुविचारि प्रताप बलै यश तेज गवांय पयानकरौ घरही । सिय ब्याहन आश विहाय सबै तजि मोह भजौ रघुनन्दनही ॥ दुष्ट भूप ॥ सवैया ॥ तोरयहु शंकर चाप अहै अवगाह महा सिय ब्याहबभाई । है असको जग वीर बड़ो धनुभङ्ग विना सिय जो लै जाई ॥ राजनकी गन कौन कहै यकबारजु कालहु सम्मुख आई । तौसु विवाहब सीय हमै महिसंयुग में त्यहि मारि हटाई ॥ साधुभूप ॥ कवित्त ॥ व्यर्थही बजावतेहौ गाल तुम भूप सब आवत न लाज बैन बोलौ न सँभारिकै । जानहू न तेज बल राघवलषणकेर राखे मुनि यज्ञ जे असुरवृन्दमारिकै ॥ तोरि चाप ब्याहैंगे विदेहजा नशंक नेकु गर्ववन्त भूपन को गर्व सर्व टारिकै । जानि जक्क मातु पितु राम सीय भाग्यवंत लेहु क्यों न शोभ भरि नैनन निहारिकै ॥ सवैया ॥ लखि राघवसीय स्वरूप अनूप लहे हम तौ जगजन्म फला । सुख जात कह्यो नहिं जोहिभयो बहुजन्मन को दुखदोष दला ॥ नहिं मानहु तौ तुम जाय करौ मनलागहि जाकहँ जोइ भला । कहियों सुमहीप लगे भगवन्त लखै प्रभु आननचंद कला ॥ जानिसमैसु विदेह शतानँद भेजि तहां सिय बोलि पठाई । आयसु मातु समोद

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सखी सजि भूषण चरि सुअंग बनाई॥ गावत गीत मनोहर सादर सीतहिलै चलि संग लिवाई। श्रीजगदम्बिक रूप प्रभा भगवन्त कहै किमि शेष सकाई॥

दो० रंग अवनि आई जबहिं निरखिरूप नरनारि।
भे मोहित ज्यों मृग मृगी दीपक ज्योति निहारि॥

छप्पै॥ जनक नगर नर नारि राम सिय रूप निहारी। करहिं बिनय बिधि पाहिं जोरिकर अंचलधारी॥ हे बिधि दीनदयाल कृपा करि यह बरदीजै। होय रामसिय ब्याहु लाहु लोचन भरिलीजै॥ शिबचाप तोरि प्रणपालि नृप मुदित राम सीतहि बरय। मसि बदन लाय भूपति सकल सकुचि जाहिं निज २ घरय॥ रोलाछन्द। बन्दीजनकी सुता एक ताको यहकामा। होय स्वयम्बर सुताजासु जावै त्यहिधामा॥ लै कन्या जयमाल जबहिं भूपन ढिग जावै। तब तहँ ताके संग अब सो बचन सुनावै॥ भूपन को कुल गोत्र राज्य पितु सह त्यहि नामा। बल प्रताप यश कीर्ति सकल बरणै त्यहि ठामा॥ सो कन्या सुनिलेइ बहुरि भावै मन जोई। तासु भूप के कण्ठमेलि जयमाला देई॥ जयमाला जो पाव ताहि भूषणधन देवै। यजमानी को हक्क सुता पितुसों सो लेवै॥

दो० ताके सँग लिय जानकी करसरोज जयमाल।
सहित सखिन आई तहां बैठे जहां भुवाल॥
एक ओरते नृपन को नाम गोत्र कुल थान।
सीतासन सोइ कन्यका लागी करै बखान॥

दिगपालछन्द॥ ये भानुदत्त पुत्र बीर बाहुनाम याको। है कौशल कुल क्षत्री बंगदेश राजबाँको॥ अति तेजवन्त शूर बीर सत्य शौचदानी। शुभ शांति शील बिद्यारत धर्म्म भक्त ज्ञानी॥ शिव

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चाप जो न टूटै पितुशासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये चित्रकेतु पुत्र श्रीदत्तनाम याको । है चंद्रवंश क्षत्री वैदर्भराज बाँको ॥ भलजान बाणविद्या गुणधाम वीरशूरो । बल बुद्धि धर्मधारी श्री शम्भुभक्तरूरो ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये हरिश्चंद्र पुत्र विष्णुदत्त नाम याको । है पुरुवंश क्षत्री करनाटक राजबाँको ॥ गुणशील सिंधु ज्ञानी यशनाम लोकजानै । बलवंत धर्मधारी रत सत्यसंध दानै ॥ शिवचाप जो न टूटै पितुशासन मन भावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये सुयशकेतु पुत्र भानुवन्त नाम याको । है कश्यपकुल क्षत्री देशद्राविण राज बाँको ॥ ये सत्यसन्ध ज्ञानी बुद्धि धर्मवन्त पूरो । श्रुतिशास्त्र रीति पालै गुणवन्त भक्तरूरो ॥ शिवचाप जो न टूटै पितुशासन मन भावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये सत्यवंत पुत्र विक्रमध्वज नाम याको । है भानुवंश क्षत्री महाराष्ट्र राजबांको ॥ भलनीति धर्म ज्ञाता बलवन्त प्रजापालै । ये जान चापविद्या गुण सिन्धु क्षमाआलै ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये भावासुरपुत्र नाम लवणासुरयाको । है आख्य दैत्यवंशी शूरसेन राजबाँको ॥ बलवन्त वीरऐसो चढ़िलंक जीतिलायो । दशकण्ठ भगिनि ब्याही यश पुञ्ज लोकछायो ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ येब्रह्मदत्त पुत्र चित्रकेतु नामयाको । है गर्गगोत्र क्षत्री गुजरात राजबाँको ॥ ये धर्म्मवन्त विद्या भलनीति रीतिजानै । हरिभक्त संतसेवी रत सत्यसंधज्ञानै ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमालसबै

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लोकन यशछावै ॥ ये पुत्र भूपकेकै जुधाजित्सु नामयाको। हैयव
त्सकुलक्षत्री काश्मीर राजबाँको ॥ बुद्धिशांति शील विद्या गुण-
वन्त वीरशूरो। अति तेजवन्त ज्ञानी प्रजापाल धर्म्म पूरो ॥ शिव
चाप जोन टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लो-
कन यशछावै ॥ ये सुकीर्तिवन्त पुत्र श्रुतिसेन नामयाको। है को-
शल कुल क्षत्रीवन्तिका राजबांको ॥ ये धर्म्मवन्त ज्ञानी हरिभक्त
नीतिज्ञाता। तपसत्य दयादानी मुनि साधुन सुखदाता ॥ शिव
चाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लो-
कन यशछावै ॥ ये सुचित्रभानुपुत्र यशकेतु नामयाको। है गाल्हव
कुलक्षत्री हरद्वार राजबाँको ॥ श्रीशंभु भक्तरूरो रतनीति रीतिदानै।
बलसिन्धु बुद्धिआलै धनुविद्या भलजानै ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु
शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये
भानुभद्र पुत्र तुंगध्वज नामयाको। है गौतम कुलक्षत्री चीनदेश
राजबाँको ॥ ये खानि बुद्धि विद्या गुणवन्त शूरभारी। नयधर्म ज्ञान
राशी बलवन्त खड्गधारी ॥ शिवचाप जो न टूटै पितुशासनमनभावै।
पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये भूप यश केतु पुत्र
श्रीवन्तनाम याको। है भानुवंश क्षत्री इलाव्रत राजबाँको ॥ ये दक्ष
बाणविद्या शिवभक्त वीरशूरो। बल बुद्धि तेजराशी शुभधर्मवन्तपूरो॥
शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै
लोकन यशछावै ॥ येभूप गुणकेतु पुत्र शुभदत्त नाम याको। है क-
श्यप कुल क्षत्री भद्राश्व राजबाँको ॥ गुणवंत भक्तरूरो वासुदेव इष्ट
मानै। रत दान धर्म ज्ञानी श्रुति शास्त्र नीति जानै ॥ शिवचाप जो
न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश
छावै ॥ ये चित्रभानु पुत्र ध्वजकीर्तिनाम याको। है सोमबंश क्षत्री

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हरिबर्ष राज बाँको॥ तप तेजवन्त शूरो बल धर्मवन्त ज्ञानी। श्रीनृसिंह पादसेवी। है सत्यसन्ध दानी॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै॥ ये हैं सुधृष्ट-पुत्र बीरकेतु नाम याको। कुशकेतु बंश क्षत्री केतुमाल राजबाँको॥ ये मानइष्ट कामदेव रूपवन्त भारी। यश तेजवन्त शूरो गुणवन्त क्षमाकारी। शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै॥ ये सत्यवंत पुत्रधर्मकेतु नामयाको। है उत्तमकुल क्षत्री रम्यकेतु राजबाँको॥ तपसत्यशौच ज्ञानी बुद्धि नीतिवन्तपूरो। गुणशील शांतिआलै हरिमत्स्य भक्तरूरो॥ शिव चाप जो न टूटै पितुशासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै॥ ये प्रस्तसेन पुत्र धीरकेतुनाम याको। है पुरुबंश क्षत्री कुरुखण्ड राजबाँको॥ वाराहरूपसेवी बलबीर धीरदानी। शुचिशांति शीलआलै नय सत्यवन्त ज्ञानी॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश छावै॥ ये सत्रजित्सु पुत्र हरिवर्मनाम याको। है कोशल कुलक्षत्री किम्पुरुषराजबाँको॥ गुणवन्त ज्ञानमानी श्रीरामभक्त रूरो। श्रुति शास्त्र नीतिज्ञाता बुधिवंत बीरशूरो॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश छावै॥ ये भानुबंशक्षत्री दशरत्थ पुत्रमानी। है भरतखण्ड माहीं श्रीऔधराजधानी॥ श्रीरामनाम इनको पितुकीर्ति लोकछायो। ये सत्यसंध दानी यशनाम वेदगायो॥ गुणवन्त बीरबांके बहुदुष्ट वृन्दमारी। मुनि कौशिक मखराखे मग गौतम तिय तारी॥ शिव चाप जो न टूटै पितुशासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबैलोकन यशछावै॥ ये भानुबंश माहीं दशरत्थपुत्र ज्ञानी। है लक्ष्मण नाम इनको लघु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बन्धु रामजानी॥ विद्याबल शील शक्ति तेजवन्त बीर शूरो। गुण-वन्त बुद्धिराशी शुचि धर्मवन्त पूरो॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश छावै॥

दो० यहिबिधि सों सब नृपनके कहेनाम गुणगाय।
सहित सखिन पुनि जानकी बैठी आसन आय॥
राम सीय शोभा अतुल निरखि देव समुदाय।
बर्षिसुमन कहि जैतिजै हर्ष न हृदै समाय॥

इतिश्रीदअयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे श्रीरामचन्द्ररङ्गभूमिआगमनवर्णनोनामअष्टमोऽध्यायः ८॥

दो० त्यहि अवसर बंदीजनन पठये जनक बुलाय।
कह्यो कहौ सब नृपन सों प्रणहमार तुमजाय॥
सुनि शासन नरनाहको भाट सहसदश सद्य।
भुज उठाय बोले बचन राजसभाके मध्य॥
सुनहु बचन भूपति सकल चितलगाय दै कान।
जनकराज महराजको प्रण हम करैं बखान॥

क०॥ रेख बज्रदन्त ज्यों गयन्द को तथाहि प्रण जानिये वि-देह राज लोक वेद ख्यातहै। शङ्कर पिनाक शैल शम्भुते गरू अ-पार भूमिही के सङ्ग रचि दीनज्यों बिधातहै॥ परमकठोर कूर्म पृष्ठिहू ते पुष्टबाण रावणादि बीर बाँवदीन जाल खात है। सोई यह शम्भु चाप तोरि है जु आजु ताहि ब्याहिहै विदेहजा कहत सत्यबातहै॥ रङ्कराज शीशताज आज या समाज सोइ लेइ जो प्रचण्ड दण्ड शम्भुको उठाइहै। खैंचि तोरि डारि है जु याहि शूरबीर कोइ कीरति कलाप तासुलोक लोक छाइहै॥ भाग्यवन्त कण्ठताहि मेलिमाल जैकिशोरि आनँद समेत ब्याहि जानकी सुपाइहै। होय बल्ल तो-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रिबे समान सो धरै पिनाक राजन समाज मुख कारिख न लाइहै॥ बाम परधाम धन हेत देत प्राणहठि मानत न मातु पितु काम को-धलै रह्यो। देतहै प्रजै प्रचण्ड क्लेश बाँधि सेतु पाप पुण्य को बि-नाशिकै अधर्म मार्ग में बह्यो॥ त्यागि सत्य धारत असत्य काल कौन्यहूम देतहै न दान अग्निलाय ग्राम जे दह्यो। भाट बैन मानि कै कलंकरूप भूपऐस शङ्कर पिनाक को न भूलि हाथसे गह्यो॥ ज्ञानधर्म्म लेशनाहिं मानहीन पितृदेव साधुन सताव देतगारि माय बापही। शत्रुबीर संयुग बिलोकि देत पीठिताहि बिप्रन को दानदै सु फेरि लेत आपही॥ नित्यही मदान्ध पंथ जानहीन वेद शास्त्र काम क्रोध बश्य याम आठ कृत्य पापही। राजन समाज में पसारि हाथ भाट बैन भाषही छुयो न भूप ऐस शम्भु चापही॥

सवैया॥ जिनके नहिं धर्म्म दया मनमें गुरु साधुन की नहिं सेवकरै। परनारि सदारत लाज नहीं शरणागत को नहिं दुःखहरै॥ प्रतिकूल सुपंथ कुपंथ चलै पितु मातन सों बसुयाम लरै। मुख का-रिख लागहि गो तिनके इमि भूपति ना शिव चापधरै॥

कबित्त॥ चंद्र सों प्रकाशमान कीरति कलाप लोक पावक स-मान दीप्ति जाग जासु चंडहै। भाग्यवन्त बुद्धिवन्त ऐस ज्यों सु एकदन्त तेजवन्त भूरि ज्यों प्रसिद्ध मारतण्डहै॥ भूमिभार धारिबे मधीरमान शेष जैस पौनहूते पुञ्ज जौन बीर बरबण्ड है। रङ्गभूमि मध्यआजु होइ जो महीप ऐस लेइ सो उठाय बेगि चंद्रमौलि दंड है॥ कैतौ भूपरूप धारि शङ्कर समाज माँझ आये होइँ लेइँ ते उठाय सद्य चापहै। कालकूट तेज ते जरत देखि देव दैत्य कारु-णीक शम्भुताहि कीन पान आपहै॥ खोलिनैन जोर मैन त्रिपुर दनुज दुष्ट मारेबान एक दुःखदेत जो कलापहै। लोकनाशकारक

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुजन तापहारक भवाब्धि घोरतारक प्रसिद्ध जा प्रतापहै ॥ कैतौ विधि सारिखे प्रतापवन्त होय भूप जासु यश विस्तृत कलाप ठांव ठांवई। भाग्यवन्त बुद्धि तीव्र चातुरी प्रसिद्ध जासुलोक रचिदीन जो सकल सृष्टि जावई॥ शैल सरिताल जाल दिग्गज समुद्र सात कानन अपार जीवजन्तु को गनावई। होय जो प्रचंड ऐस आय सो दलै पिनाक जानकी समेत जै त्रिलोक आजु पावई॥ कैतौ हरि आपरूप भूपको अनूपधारि आये या समाज मध्यहोयँ शोभ शालहै। कोलरूप धारिजे हिरण्य अक्षपातकीक दीनबंधु मारे आपु पैठिकै पतालहै॥ कीनहै कमठपृष्ठि धारण सुमंदराद्रि गावत सुयश चारु जाको वेदजालहै। भाग्यवन्त स्वामि सो सबल भूमिभार हार तोरही उठायचाप शङ्कर विशालहै॥ सवैया॥ कै गणनायक सों वरदायक जाहि सुरासुर शङ्कर ध्यावै। विघ्नविनाशन बानिअहै सुमिरे ज्यहि सिद्धि सबै जनपावै॥ जासुप्रभाव महाप्रथमै पदपंकज पूज्य सदा सब ठावै। जो इमि होय महीप कऊ भगवन्त स्वई यह चाप उठावै॥ कै हरिचन्द समान हुवैसति कीरति जासु चहूँदिशि छाई। कै पृथुसों गहि बर्बस ज लिय धेनु स्वरूप धराहि दुहाई॥ कै रघुसों जिन पीठिलही रिपुनाहिंन नानहि याचक पाई। दृष्टि दिये परनारि नहीं इमि भूपचहै धनुलेहि उठाई॥ कै नृपबान समान कऊ परिपूरण जो सब धर्महिपालै। कैसुदिलीप समान जिन्हैं डरगो हरि वारिपिये यक आलै॥ कैजिमि सागर जासुत सागर खोदिगये सब पैठि पतालै। कैसुययाति दधीचि भगीरथ ज्यों नृपसो शिव शारँगदालै॥ छप्पै॥ देवदनुज मुनि सिद्धमनुज गंध्रवदिक्पाला। पितृनाग शशि भानु यक्ष मारुत यमकाला॥ गिरिसरि सिंधु अपार जहाँलगि वेदन गाये। रङ्गभूमि के माहिं आजुते सब

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चलिआये ॥ त्यहि सभामध्य बंदी वचन कहत सबहिं गोहरायकै । बलहोय जाहि सो उठि तुरत तोरै शिवधनु आयकै ॥

दो० सुनि विदेह प्रण भूपसब उठे तुरत अभिलाखि ।
परिकर कटिकसि बांधिके चलत भये मनमाखि ॥

सवैया ॥ निज इष्टनवंदि महीपति मानि सुधाय सक्रुद्ध पिनाक धरै । तजि एक दियै गहिएक लियै इमि बारहिंबार सुजोर भरै ॥ बल बुद्धि उपाय अनेक करै पर नाहिंन सो कहुं नेकुटरै । ह्वय लज्जित हारि गँवाय बलै तब आसन ओर पयान करै ॥

दो० तब सहस्र दश भूपमिलि शिवधनु एकहि संग ।
लागि उठावन नहिं टस्यो कियोमान तिन भंग ॥

सवैया ॥ श्रीहत भूप समाज भये सब देखिय ज्यों दिन चन्द्र कला है । हारिगये करिभूरि बलै सब भूपनको धनुमान दला है ॥ घोर कठोर शरासन शम्भु रती नहिं छांड़त भूमि तलाहै । ज्योंजन कामिहि बैन सती मनपावन नाकहुँ रंच चलाहै ॥ शिवचाप सुमेरुहुते गरु भो नहिं छाँड़त जो तिलमात्र धरै । नहिं हालत डोलतहै तनकौ जनु जामतभो यह शेषशिरै ॥ शिव आप चढ़्यो यहि ऊपरकै गरुता स्वइ नाहिन देतमुरै । लियभार उदै गिरिअस्त किधौं धनुरूप धर्यो महिंजानि परै ॥

दो० नृपसमाज गति देखिकै उठे जनक अकुलाय ।
बोले बचन सक्रोध तब भूपन सबहिं सुनाय ॥

सवैया ॥ नाग सुरासुर भूपजिते धरि मानुषदेह इतै सब आये । तोरनको धनु कौनकहै नृपकाहु न रञ्चक भूमि छड़ाये ॥ कीरतिजै बड़ि दिव्यसुता जनु पावनहार न ब्रह्मउपाये । जाहुघरै अब गर्व करै जनि कोउ धरापर बीर न जाये ॥ जो जनत्यों भटहीन मही

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करत्यों इमि तौ प्रथमैं प्रण मैंना। जो करिकै अब ताहि तजौं मम धर्म नशै भल कोउकहैना॥ पुत्रिकुमारि रहै हमकाकरि कर्म लिखा कइमेटि सकैना। जाउघरै मुख कारिखदै सियव्याह विरञ्चि कियो लिखबैना॥ श्रीमिथिलाधिप वैनलगे इमि लच्मणके उर ज्यों शर-पैना। राघवत्रास न बोलिसकें रिसशोण भयो मुख पंकजनैना॥ ठाढ़ेभये करसम्पुट के शिरनाय कहे प्रभुसों इमिबैना। नाथ विदेह कहे कटु ज्यों रघुबंश समाज कहै तिमि कैना॥ कवित्त॥ भूप मि-थिलेश आपुबात ना सँभारि कीन तुच्छका पिनाक रामशासन जु पावऊं। गेंदसो उठाय भौन चौदहौ समान घटभूमि को पटकि फोरि मेरुको उखारऊं॥ शेष केशधारि खैंचि भूमिदेउँ बोरिसिंधु सिंधुलै रसातल मझारभरि आवऊं। भाग्यवन्त देउं करिदिग्गज यकत्रसर्व भूमिसा पिनाक शंभु ख्यालही उठावऊं॥ सवैया॥ सत्यकहौं नहिं झूठकछू रघुनायक जो तव आयसु पावौं। तौ यहिराज समाज बिषे मिथिलाधिपको निज बूत दिखावौं॥ पंकजनाल समान च-ढ़ाय पिनाक लिये शतयोजन धावौं। तोरिमिलै रजदेउँ करौंनहिं तौ कर ना धनुबान उठावौं॥ तामरसछन्द॥ लषण कहे इमि बैन जबैहैं। डरतभये सुनि भूपसबै हैं॥ डगमग भू सब दिग्गज डोले। जनकशके जब लक्ष्मण बोले॥ जनमनमोद सिया हरषानी। सुख रघुनंद लहे मुनिज्ञानी॥ पुरजनहीं अतिशै सचुपाये। रघुबर सैनहि बंधु क्षमाये॥ सहित सनेह लगे निज राखा। तब प्रभुसों मुनि कौशिक भाखा॥ सवैया॥ रामउठौ शिवचाप दलौ मिथि-लाधिप को दुखमेटहु भारी। शोचहरो य सभाक सबै भगवन्त करौ सुरसंत सुखारी॥ चाप उठाय सुरेनृप जे मुख कारिख दै गवनै घर झारी। पंकजनालसमान करौ यहि खंडन सद्य पिनाक पुरारी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुनतै गुरुबैन उठे रघुनन्द हृदय नहिं हर्ष विषादलये। पदनाय सुभाल सुभायचले मधिवेदि पिनाक समीप गये॥ भगवन्त प्रभा पुर लोग निहारि सँभारत आपनि पुण्यभये। सुरसानँद वर्षि प्रसून सबै नभसंकुल दुंदुभि शब्द दये॥

दो॰ सीयमातु लखि रामतनु अति कोमल छवि ऐन।
सखिन समीप बुलायकह सहित प्रेम मृदुबैन॥

हरिपदछंद॥ देखौ सखि यहि सभामांझ हैं बैठे चतुर अपारा। यह अनुचित अतिहोत बातहै कोउ न करत विचारा॥ गरुव कठोर कहां शंकरधनु येतौ अति सुकुमारे। रावण बाण महाभट जाको देखत गवहिं सिधारे॥ अपरभूप बलवंत बलैकरि परमहार सब पायो। त्यहि करषणहित राजकुमारै अब मिलि सकल पठायो॥ सोलखि होत हृदै मेरे दुखबरजत कउ न अहावै। हंससुवन किमि कहौ सखीरी मंदरमेरु उठावै॥ सुनिबोली सखिबैन गनौनाहिं तेजवन्त लघु रानी। देखत लघु रवि उदैहोत ज्यहिं तीनि भुवन तमहानी॥ प्रणव मंत्रलघु विवश जासुहैं विधि हरि हर सुरसर्वा। कहँ गयंद ताको वश अपने राखत आंकुश खर्वा॥ अस बिचारि संदेह करौ जनि इनहिं अतुलबल जानी। बिनहिं प्रयास शंभुधनु दलिहैं मानु सत्यमम वानी॥ सखी वचनसुनि मातुसुनैनै भईधीर मनमाहीं। लगी लखन भगवन्तरूप छबि प्रेमजात कहि नाहीं॥ सवैया॥ ताक्षण रामहिं देखि सिया मनमाहिं उठी अतिशै अकुलाई। घोरकठोर शरासन शङ्कर रावणबाण सके न उठाई॥ ये अति कोमल क्यों दलिहैं प्रणठानत नीकभयो नहिंराई। काहकहौं मतिभोरि सबै भइ देखत ना कउ हानि भलाई॥ हे गणनायक शम्भुशिवा दुख भंजन रंजन भक्त सदाई। होहु प्रसन्न कृपाकरिये प्रभु सेव कियौं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तब आजुहि लाई ॥ पूरण आशकरौ मनकी धनु कौतुक भंगकरैं रघुराई। कै हित मोर हरौगरुता धनु राघव बाँहन होहु सहाई॥ जो हमरे मनकाय गिरा रघुनायक के पद प्रीति भली है। तौ मिलिहैं न संदेह कछू करि हैं ममआश सबै सफली है॥ जापरजाहि सनेह मिलै त्यहि आवत संतत रीतिचली है। यों मन आनि चितै प्रभु ओर ठन्यो प्रण प्रेम विदेह लली है॥

दो॰ अन्तरयामी रामप्रभु हरणभक्त दुखघोर।
कीन्ह्यों प्रण सियजानिकै लखत भये धनुओर॥
लषणलाल देख्यो चहत प्रभु भंजन भवचाप।
कमठ कोल अहिदिग्गजन दियेसजग करिआप॥
त्यहि औसर प्रभु मनहिंमन गुरुपदपंकज ध्याय।
अतिलाघव आतुर परम शिवधनु लीन उठाय॥

छप्पै॥ बामपाद अंगुष्ठदाबि गोसायक दीन्हा। बायेंकर गहि मध्य दाहिने दूसर लीन्हा॥ रोदा खैंचि चढ़ाय बहुरि दहिने गहिबीचा। दमक्यो दामिनि सरिस भयो नभ इव जबईंचा॥ भयो कठिन घोर गम्भीर त्यहि समय शब्द त्रिभुवन भरयो। सब लखत दलत काहु न लख्यो राम खण्ड द्वउमहि धरयो॥ कवित्त॥ हालउर्वि गुर्वि अद्रि दिग्गज सकंपमान उछल समुद्र दिगपाल गे सनाका है। कोलहू कमठ ब्याल जालभे विकल चौंकि शङ्कर विरञ्चि काहहोत भो धमाकाहै॥ देवगण चक्रित विमान भानु चंद्रमाक धाय लड़िजात एक माहिं भे धड़ाकाहै। भाग्यवन्त लोक लोक छायगो प्रचण्ड शोर खंड्यो रामचन्द्र दण्डखैंचि ज्यों तड़ाकाहै॥ सवैया॥ रामदल्यो शिवचाप जबै त्यहिकाल उठी सब हालिधरा। रावणही अतित्रास भयो करिकम्प गिरयो महि आस्यभरा॥ राखिसके नहिं धीरधरा:

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धर राजन मानस मान जरा। राखिलियो भगवन्तनृपै प्रणलोक तिहूं यशराम भरा॥

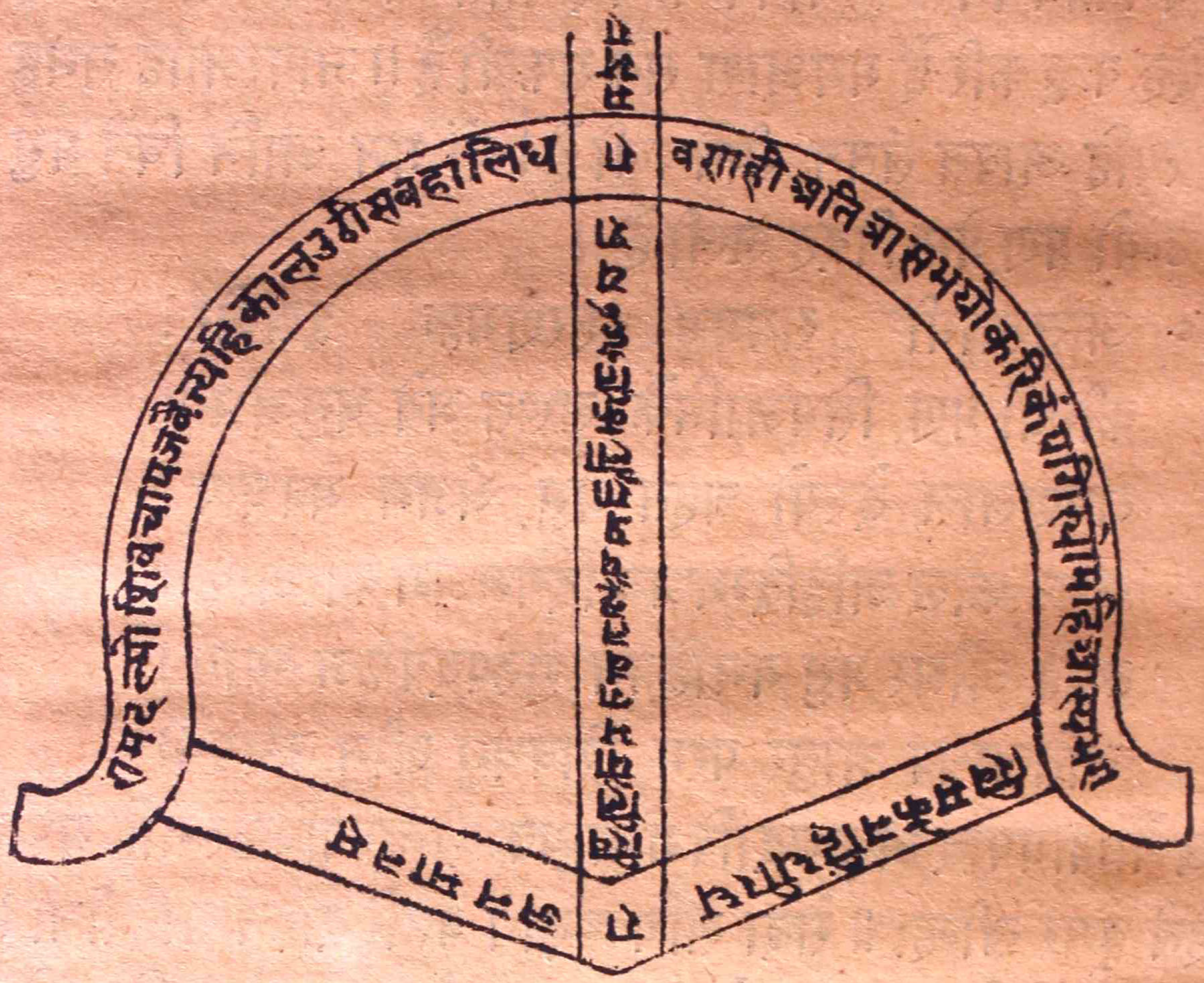

कवित्त॥ कुलिशकठोर दंड वीरबरिवंड भूरि हारिगे उठायरंच काहु तौन मोराहै। बाण दशकंधवीर वीरताको मान जिन्हें देखत लगाय बांवगौने भवन ओराहै॥ प्रबल प्रचंड तेजवन्त भूपमंडली क नाशभो प्रताप ज्यों मलीन चंद्रभोरा है। भाग्यवन्त कौशलकुमार ता समाजमध्य सेमि बीच सारिखे पिनाकशंभु तोराहै॥ व्योम देव दुन्दुभी बजाय भाषि जैति जैति वर्षहीं प्रसूनपुंज क्षोणि बांधि भोराहै। बंदीसूत मागध कलाप कीर्तिगानठान जैति जैति शब्द लोकतीन पूरि घोराहै॥ भाग्यवन्त ता समय कि मोदना बखानि जात रामचन्द्र जा क्षणे पिनाक शंभु तोराहै। रंगऔनि नारि नर सानँदास्य रामचन्द्र देखें एकटक ज्यों चकोर चन्द्रओराहै॥ श्याम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कंद आभअंग अम्बर सुरंगपीत कुंडल अनूप दिव्यझूलैं गोलगाल पै। चन्द्रमास्य चारुनव्य पंकजाक्ष बंक भौंह सूखमा निधानहै तिलक उच्चभालपै ॥ श्यामकेश वेशबाम बाम सोहशीश श्रोण चौतनी सुवोघ एतवार शोभजालपै। भाग्यवन्त रूप सूपमान आन काम कोटि वारडार अंगनांग कौशलेश लालपै॥ छप्पै॥ नवलकमलदल नयन अमलकल जनन दरदहर। सजलजलद तनलसत बसनभल चमक पटलहर॥ वदन अधरवर दशन हसन मद मदन हतन कर। अनद सदनतन सकल लखतमन परमहरषभर॥ जय सकल हरनभव भय दलन धनष जनक कर पनपलन। यश भनत अमरनर शमन अघ चरण शरण दशरथललन॥

दो॰ शतानंद आयसु तबहि राम हृदय जयमाल।
मेली सिय छबि देखिकै भै सबसभा निहाल॥
लखिलखि गलभल माल सुर हरवर जयजय गाय।
धनिधनिभनि कलफूलथलैं झरिकरि हरिपरआय॥

कवित्त॥ कंचन सुथारवारि आरती सवांरि नारि दूब दधि रोचना सुरभि धारि फूलनै। बांधिकै झमेलजाल मंद मंद बाम वृन्द आवतीं करत गान देवदार भूलनै॥ बाजत निशान ब्योम दुन्दुभी बिमान साजि बर्षहीं प्रसूनमाल देव सानुकूल नै॥ भाग्यवन्त आरती उतारिवारवार देखिपावतीं अपार मोद हीय मोदमूल नै॥ दोहा॥ सियशोभा अद्भुत अमित देखि दुष्ट महिपाल। जहँ तहँ

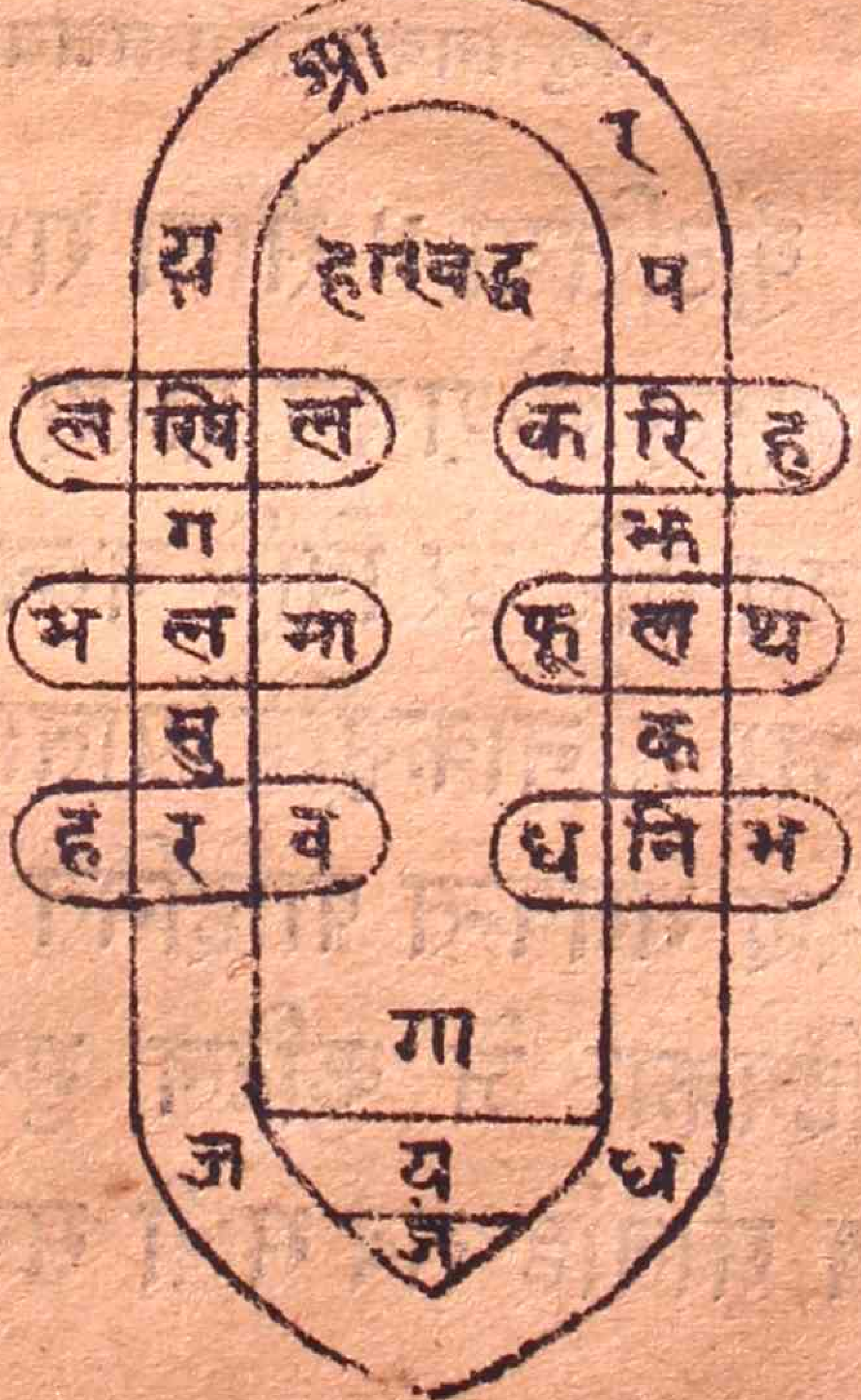

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आपुसमाहिं तौ लगे बजावनगाल ॥ सवैया ॥ साजि गयंद तुरंग रथै चढ़ि कूँड़िसनाह सुअस्त्रन धारो । धावहुवेगि गेरेरिपुरे सिय छीनि लियोदृढउबांधि कुमारो ॥ जो बरजै मिथिलेश कछू रणसेनसमेत तिन्हें पुनि मारो। काजसरै नहिं चापदले बिनुजीति लिये नृप वृन्द अपारौ ॥ सोरठा ॥ सुनि दुष्टनके बैन साधुभूप बोले वचन। सूझततुम्हें न नैन जक्कमातु पितु राम सिय ॥ बादिबजावत गाल नृपौ सब लाज अहै क्यहुँ लेशनराई। तेजप्रताप गरूर गुरु बल नाक पिनाकहि संग सिधाई ॥ स्वैबलकी कछुसाधन के सुरइष्ट प्रसाद अबै कहुँ पाई। है असिबुद्धि तुम्हें ध्रुव तौ चतुरानन आनन कारिख लाई ॥ ज्यों खगनायकको बलिभाग चहै बलकै खल पावन कागा। ज्यों खरगोश नहोश चहै खुद मत्तगयंदनके रिपुभागा ॥ ज्यों हरिसों प्रतिकूल चहै गति पावन कैमतिमन्द अभागा। त्योंहिं वृथा सिय व्याहन को तुम सारिष दुष्टन लालच लागा ॥

दो० बरकेबर रघुनाथजी वरवर पौरुष शाल।
वरसम तुम वरवर करत व्यर्थ भूतपति जाल ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितातेभक्तिशिरोमणिग्रंथेश्रीरामचंद्र धनुभंगकरणसीताजयमालमेलनवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९ ॥

कुंडलिया ॥ सीता राघव पद्मपद बंदौं सब सुखदानि । निरय निवारण भौशमन शरण सुखदकी बानि ॥ शरण सुखदकी बानि भजत हरि हर बिधि चरना। नामलेत अनयास मुक्त जीवन भौ मरना ॥ नाकभूमि पाताल सुयश जा आख्य पुनीता। ताकि शरण भगवन्त पाहिनित राघव सीता ॥

यहिप्रकार जे कुटिल भुवाला। रहे बजाइ व्यर्थ सब गाला ॥
तब सीतहि सब सखी सयानी। चलीं ल्यवाइ मातुपहँ आनी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गुरु समीप गवने रघुवीरा। धनुषभंग सुनि शब्द गँभीरा॥ परशुराम त्यहि अवसर आये। देखत भूप सकल डरपाये॥

सवैया॥ गौर कलेवर भूतिलसै भलिभाल त्रिपुंड्र सजै छबि ऐना। शीशजटा मुखचन्द्र प्रकाशित बंक सु भ्रू रिसलोहित नैना॥ चारुजनेउ सुमाल गरे मृगछाल विशाल लिये सुखदैना। लंक वितून कसे धनुबान गहेकर कंध कुठार सुपैना॥ कवित्त॥ देखि कै कुठार पाणि वेषकी करालताति भूपवृन्द खौफखाय धाय माथ नाये हैं। बाप साप नाम भाखि राखि पांशुपाँव माथ भूरि मानि त्रास वेष बामको बनाये हैं॥ फेरिनैन हेरही सुभाय जासुओर ता-सु जान गे खुटाय आयु लेनप्राण आये हैं। आयतौ विदेहराज नायमाथ बोलिपुत्रि मेलिपाँव पायकै अशीष मोद छाये हैं॥ स-वैया॥ कौशिक आयमिले पुनि सादर पंकजपाँय द्विबंधुनडारी। राम सुलच्मण नामइन्हैं अवधेश कुमार विमोहितकारी॥ रामस्व-रूप प्रभाति विलोकि थके भृगुनन्द निमेषबिसारी। दीन अशीष भली भगवन्त भयेसुनि सानुज रामसुखारी॥ फेरि विलोकि वि-देहदिशै कहु उत्सव क्या तव मंदिरआजू। कारज कौनय भीरबड़ी इत आनिजुरे सब देशनराजू॥ मैंप्रण कीन य तोरहिं जोधनु ब्या-हहि सो सिय तौन्यहिकाजू। आवत भे भगवन्त इतै सब देशनके नृप साजिसमाजू॥

दो०॥ नृप विदेह के वचनसुनि परशुराम रिसठानि।
बोले रेजड़ जनक तैं डोरे करि बड़िहानि॥

परशुराम वचन॥

कवित्त॥ दीनशम्भु पूजनार्थ चापतोहिं मंदबुद्धितासुतैं अनाद-रेन कीन नेकु काजहै। ठानतै पनै न हीय कीन शङ्क शङ्करौ कि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

त्र।सहृ न राखिमोरि रवहीन लाजहै॥ तोरे चाप दुष्टकौन कैसीसो लुकान बैठ तिक्षण कुठार अग्निदाही तौन आजहै।वेगि दे बताय मोहिं मूढ़ सो विदेहनातु ऊलटौं धराहि सद्यजाहँलौ तु राजहै॥ बिम्बछन्द॥ सुनिपरशुरामवानी। रिस अधिक माहिंसानी॥ सब सभयरामजानी। भयकहत आपबानी॥ राघवबचन सवैया॥ नाथ अहौं तवदासमहीं यह शम्भुशरासनकेर दलैया। आयसुकाह कहौ किनमोहिं कृपाकरि सोइकरौं यहिठैया॥ भाविहि काहकरौं प्रभुमैं यहतौपि रहै ममहाथ टुटैया। सोकर छूतहि टूटिपर्यो मुनि नायक है ममदोष नरैया॥ परशुरामबचन दोहा॥ करणी करिकै शत्रुकी बनाचहौ अबदास। तजिसमाज कीजै समर त्यागिजीव की आस॥ लच्मण बचन सवैया॥ खेलत टूटिगई धनुहीं बहुकीन कबौं रिसयों न गुसांई। याधनुपै ममता क्यहि कारण आजुयती भृगुनाथ बढ़ाई॥ साँचिकहौ मुनिजानत ना हम ग्रीव रहै य तुम्हैं अधिकाई। टूटिगयो जनि व्यर्थकरौ रिस हैनकछू रघुबीर लगाई॥ परशुराम बचन कबित्त॥ एरेमन्द बालक सँभारि बैन बोलु क्योंन अज्ञके समान मोहिं ज्ञानतू सिखावई। घोर शम्भुचाप जो प्रसिद्ध तीनि लोकमाहिं ताहितू समान सर्बधानुहीं बतावई॥ जानकीस रामतोहिं खेदिकै सँहारि दुष्ट डारिहौं कलाम जो बदन फेरिलावई। भाग्यवन्त मानु सत्यशीघ्रही करौं न जोपि परशुराम नामतौं न आजुते कहावई॥ लच्मण बचन सवैया॥ हे भृगुनन्द सुनौ मम जान अहैं सगरे धनु एकहिनाई। लाभकहा यहि तोरनमें करछूतहि टूटरह्यो घुनखाई॥ मारतहौ मुनिगाल मृषा तजिईश बियोकरि काह सकाई। जोपिनहीं यह नामप्रिया द्विजबोलि लियो क्इ और ध- राई॥ परशुराम बचन कबित्त॥ जानना प्रभाव मोर कानना सुने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुभाव मारहूँन तोहि मूढ़बालक बिचारिकै। देखु या कुठारधार जाहि सों यकीसबार क्षत्रिनै सँहारि भूमि क्षत्रहीन कारिकै॥ दीन सौंपि बिप्रन समाज में न जानतौन साहस भुजादि बीर संयुग पछारिकै। सोई है कुठार बालगर्बिनै बिनाशकार तातमात शोकदेन मंदमोहिं रारिकै॥ लक्ष्मण वचन सवैया॥ भृगुनन्द सुनो मैं सत्य कहौं यकमानि तुम्हें द्विजनातडरौं। नतु छीनि कुठार तुम्हें हतिकै कुल क्षत्रिन दाँवल्यतूं सगरौं॥ पर धर्म तुम्हें रखवार बड़ो वधकै शिरपातक भूरिपरौं। भगवन्त डरौं पुनिराघवको नतु कौतुकही तवगर्वहरौं॥ कबित्त॥ बारबार मोहिं क्या देखावतो कुठार तानि चाहतो उड़ाय देन फूकनै पहारहै। कूम्हडेकि बातियाहौं बिप्रदेव अत्रमैंन तर्जनी बिलोकि शीघ्रहोत जो सँहारहै॥ गायबिप्रदेव साधु मारिबे म शूर नाहिं मानि बिप्रनातबैन साहत तुम्हारहै। जानि बीरकीन बाद की-जिये क्षमा समान कोटिबज्र बैनधार व्यर्थही कुठार है॥ परशुराम वचन कबित्त॥ कौशिक सुनीय मन्द बालक य टेढ़ खोट चाहतोहै जानबेगि यमके अगारहै। भानुवंश चन्द्रमें कलङ्करूपहीन शङ्क अंकुश बिहीन योग्य झोंकिदेन भारहै॥ लीजिये बरजि जोपि चाहहु उबार याहिरोष बलबीरता सुनायकै हमारहै। भाग्यवन्त टेरि मैं कहौं न खोरि मोरि फेरि डारिहौं सँहारि याहि काढ़िकै कुठारहै॥ सवैया॥ ज्वइधार कुठार कराल भयो बहुबीर महीपन के घर घा-लक। स्वइ आजहु हाथ बन्यो हमरे सुनुरे मतिमन्द महीपति बालक॥ कस बोलत बैन सँभारि नहीं जड़ जानत नाम न क्रोध कहालक। मुख लागहिगो खल जो हमरे तो देहहुँ सौंपि अबै त्वहिं कालक॥ लक्ष्मण वचन कबित्त॥ आपुही अछत की-र्त्ति आपुकी बखान कौन कह्योबार भूरिशांति जोन फेरि गावहू।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रोंकि रिस सहौ न मुनीश दुःखहीय माँहि वीरव्रती गारीदेत शोभ को न पावहू॥ शूरना बखानकरें शूरता समर आपु कायरन कामहै प्रलाप सो न लावहू। भार्गवेश बार बार हांक यों लगाव आपुमोहिं लागि मानों बेगि कालको बुलावहू॥ परशुराम वचन सवैया॥ ठानत बाद कठोरअहै शठ बाल बिचारि बध्यों नहिं तोहीं। जानत मोर सुभाव नहीं कुलक्षत्रिन शत्रु सुभायन कोही॥ आवत है त्वहिं त्रास नहीं यह तिक्षणधार कुठारहि जोही। चाहतहौं बध याहिकरै अब लोगदियै जनि दूषण मोही॥ विश्वामित्र वचन सवैया॥ भृगुनन्द क्षमा अपराधकरौ यह तौपि अबै अन जानतहै। वश बाल स्वभाव न त्रासधरै तुमसों प्रतिउत्तर ठानतहै॥ शुचि साधु सुजानअहैं जगजे शिशु के गुण दोष न मानतहै। भगवन्त करौ असजानि कृपा मुनि साधु तुम्हैं सब मानतहै॥ परशुराम वचन॥ कवित्त॥ बालक बिचारि तोहिं मारौं न महीपपुत्र बार बार लाव ज्वाब देतहौं बरायमें। हाथहै कुठार घोर क्रोधित सुभाव मोर द्रोही गुरुठाढ़ अग्र रहौं रिस तायमें॥ भाग्यवन्त सो तौ सब कौशिक तिहारो शील नातरु कठोरबैन हालद्यों बतायमैं। काढ़िकै कुठारघोर धारहीते याहि आजु गुरुते उऋणहोत्यों थोरही उपायमैं॥ लक्ष्मण वचन कवित्त॥ शीलमुनि रावरो जहान में न जान कौन भयो है उऋण भांति आछे तात मायसो। रहिगो गुरूको ऋण बाढ़्यो अति शोच तौन काढ़्यो जनु मेरे शीश बैठ्यो आपु खायसो॥ बीतिगये बार भूरि बाढ़्यो है कलाप ब्याज लावो ईश व्योहरै मुनीश ह्यां बोलायसो। भाग्यवन्त जोरिकै सकल ब्याज मूलयुक्त थैली खोलि शीघ्र आजु देउँ मैं गनाय सो॥ परशुराम वचन सवैया॥ मतिमंद अरेशठ बालकतें कुलघालक क्यों कटु बैनकहै।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उपजावत क्रोधहिये हमरे ममहाथहिका खलु मृत्युचहै॥ भल आ-पन चाहसि जो शिशुतें लखि घोर कुठारहि मौनरहै। नतु सत्य पुकारि कहौं सबते अब तोहिं पठावत कालपहै॥ लक्ष्मण वचन सवैया॥ महिदेव कुठार दिखावत का द्विज मानितुम्हैं मनमांहिडरैं। इमि और प्रचारत जोपिहमैं लखतू पुनितागति जौनकरैं॥ द्विजदेव गये बढ़िधामहिं में प्रतिवीर कबौं न मिल्यो समरैं। भगवन्त सुन्यो रघुवंशप्रभाव न कालहु जेरण त्रासधरैं॥ राघव वचन कवित्त॥ सूधमुख दूधहै न कीजिये कृपालु कोह बालभाव मानि याहि विप्रजू क्षमाकरो। रावरो प्रभाव जोपि जानतो कछूकनाथ भूलिहून आपुसों य लावतो बराबरौ॥ बालक अयोग्य कामकृत्य जोपि देखिताहितात गुरू मात मोदपुञ्ज हीयमाभरौ। भाग्यवंत शील समधीर हौ मुनीश ज्ञानि सेवक विचारि बैन बालहीय नाधरौ लक्ष्मणवचन॥ सवैया द्विजह्वैकरि धारण अस्त्र किये पुनि क्षत्रिनके कुल घातकहै। बिनु कारण कोहि सुभावसदा अरु मारतभे निज मातकहै॥ उरमाहिं दयाकर लेश नहीं रत हिंसहि में दिन रातरहै। भगवन्त विचार करौ मनमें सुकृपाकि इन्हैं कसिबात अहै॥ परशुराम बचन सवैया॥ रामतवानुज पापमयी बिष आननहै यहतौ मुखपैना। गौरशरीर अहै मन श्याम सुभाय सुटेढ़ तुम्हैं य बजैना॥ नीच कुबुद्धि महा यह बालक मीचुसमान हमैं सु लखैना। ढीठ अतीव दबै तनकौ नहिं बोलत मोहिं बराबरि बैना॥ लक्ष्मण बचन कवित्त॥ पाप मूल क्रोध बश्य जासु ह्वै अनीति लोग करत बिचारि आपुलीजे देखि मनमें। त्यागिकै सकल क्रोधकीजिये कृपाल छोह बिप्रदेव स्वामि आपु संततांघ्रिजनमें॥ टूटो चाप जुरैन रिसाने मुनिबैठे आपुबाढ़ी ह्वै है पीर भूमिठाढ़े सो पगनमें। भाग्यवन्त भ्रीव चापहोय जो अ-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तीव आपदेउतौ जुरायक्कै गुणीय बोलिबनमें ॥ परशुराम बचन सवैया ॥ तनसुन्दर ज्योंघट हेमलसै मनमैलभरो विषको रसज्यों। निकसै जनुज्वाल कराल महा कटुबैन कहेज्वइ बालकयों ॥ लघु भ्रातय राम विचारि तुम्हार अबैलगि मैं नहिं याहि हत्यों । कुश लात चहौ यहि बालक जो कटु बैनकहैं न मना करिल्यो ॥ राघव बचन कवित्त ॥ बालकारु बरैं सुभाव तुल्य एकजानि संतना बिदूषैं नाथ आपुतौ सुजानहीं। रवरो न काज सो नशायो बालबिप्र देव टूटचाप हाथ मो पराधवानहौं महीं ॥ जानिदास अपनो कृपासु कोप बन्धवध कीजिये कृपाल जौन शीशसो सबैसहीं । जायजा प्रकार क्रोधकीजिये प्रसिद्ध तौनकरौं सो उपावनाथ याही काल शीघ्रहीं ॥ परशुराम बचन सवैया ॥ रामकहौ क्यहि भांति मिटै रिस हेरत बन्धु अजौंतु अनैसो। जोयहि कण्ठकुठारन दीन तु कीन कहा पुनिमैं रिसकैसो ॥ नारि महीपन गर्भकहा जु कुठार कराल बन्यो कर है सो। देखत शत्रुमहीप किशोर अबैलगि जीवत अप्रखड़ैसो ॥ महिपालन जालन घालन जो य कुठार सुकुंठित धार भयो। नहिं हाथबहै ज्यहि घातकरौं वश क्रोधहियो ममजाततयो॥ प्रतिकूलभयो बिधिमोपरहै त्यहिते फिरि मोर सुभावगयो। कसि बात कृपाकि हृदै हमरे स्वइ आजुदया दुखभूरिदयो ॥ लक्ष्मण वचन कुण्डलिया ॥ जैसी मूरति आपुकी बिप्रताहि अनुकूल। कृपाबाउ चलभूंक त्यहि झरैं वचन जनुफूल ॥ झरैं बचन जनुफूल सुनी यह जातन बाता। जरैं कृपामुनिगातभये रिसराखु बिधाता॥ ताप व्याधि उरहोयकरौ औषधि पुनि तैसी । जरतहोय जलह्वाव रुचै कीजे मनजैसी ॥ परशुराम बचन सवैया ॥ देखु बिदेह अहै यह बालक खोट महाकटु बोलत बैना । देखन ब्याह उछाह चहै

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नहिं जानचहै सुकृतांतहि ऐना ॥ आवत कालभयो चलियाकर दोषदिह्यो परिणाम हमैंना। जोपि उबार चहौ यहिको तौ ओटकरौ किन सद्यहि नैना॥ लक्ष्मण बचन नाराचछन्द॥ रुचै उछाह जोन आपु नैनमूँदि लीजिए। परैन देखिकै कतौं वृथान क्रोधकीजिए॥ कितौ मुनीश जाहुवेगि काननै सिधायजू। नभेजि दूत आपुको पठावकै बुलायजू॥ राघव प्रतिपरशुराम बचन कबित्त॥ तोरिशंभुचाप शठकरे है प्रबोध मोर कहै कटुबन्धु ताहिदीनतू सिखाई है। आपु करै बिनैछल छाड़िदे कहाउबाजु तेनी रामनाम कैतौ तोषु अस्त्र आई है॥ त्यागि छलद्रोही शम्भुकरै किनयुद्ध आय भूपपुत्र मारौं ताहिं नातौ युक्तभाई है। कहौं सत्यबचौन सुभायन मृदुल आजु देखु या कुठार घोर क्षत्रवंशहाई है॥ राघव बचन सवैया॥ सूध्यहु दोषपरै कतहूँ शशि वक्रहिं ज्योंनहिं घेरत राहू। लक्ष्मणकेर गुनाह अहै ममऊपर तौ मुनिव्यर्थ रिसाहू॥ हाथ कुठार अहैशिर अग्ररुचै मन जो तजि क्रोध कराहू। जानि हमैं भगवन्त स्वदास करौ रिसजाय यथा मुनिनाहू॥ कसियुद्ध अहै प्रभुसेवककी तजि क्रोधमुनीश कृपाहिधरौ। धनुबाण कुठारधरे लखि बालक बीर बिचारि सुक्रोध भरौ॥ नहिं चीन्हत जानत नामअहै निजबंश प्रभाव सुज्वाब करौ। मुनिवेष जुहोत्यहुतौ धरतै शिशुपङ्कज पायँन धूरि शिरौ॥ कवित्त॥ क्षमौचूक बालक अजानकी द्विजन हीय चाहिये अपार कृपा क्रोध ना हृदैधरौ। रावरो न मोहिं है बराबरी सुबिप्रदेव पादकहां माथहै बिचारहीय मैं करौ॥ रामनाम छोट मोर रावरो बड़ोहै नाम एकै गुण मेरे चाप आप माहिंनौभरौ। दाता दयावन्त दत्त तापसेंद्रिजीत ऋजु क्षमा तृष्णातोष आपु सबै भांति हौबरौ॥ परशुराम वचन छप्पै॥ त्वहूं बन्धु समराम निपट जानै द्विजमोहीं। सुनु जैसो मैं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विप्रतथा वरणौं अबतोहीं॥ चापश्रुवाहुति बाण क्रोध ममघोर कृशानू। समिधसेन चतुरङ्ग भूपगण बलिपशुजानू॥ यहि परशु काटि बलिदीनमैं युद्ध यज्ञ बहुकीनभव। भ्रम द्विजन निदरि बोलत तुकस मोरप्रभाव न विदिततव॥

दो० एकचाप दलिदाप बड़ गयो हृदै तवबाढ़ि।
तातेअति अहमिति मनहुँ भयो जीतिजगठाढ़ि॥

राघव वचन कवित्त॥ विप्रदेव बात आपु कहियो विचारिहीय चूकहै हमारि थोरि क्रोधतौ अपारहै। कौनहेत करौं मानछूतही सुटूटचाप जानै कौन कबको पुरान सो सरारहै॥ भाग्यवन्त कहौं सत्यसुनिये सुभार्गवेश करौं वदिविप्र जोनिरादर तुम्हारहै। तौतो असबीर कौन दूसरो जहानबीच नावैं हमशीश जाको मानि त्रास भारहै॥ सवैया॥ देवअदेव महीप जितेभटभूरि बलीसमवाधिक होई। जो रणमाहिं प्रचार हमैं सुखमानि लरैंलहु जै चह जोई॥ क्षत्रिनको तनुधारि शकै रणनीच स्ववंशकलंकित सोई। वंश प्रशंसन रीतिकहौं रघुवंश डरैंनहिं कालहुकोई॥

दो० विप्रदेव तव वंशकी यह प्रभुता बड़िआहि।
होय अभै भगवंत सो जो जन तुमहिं डराहि॥
परशुराम सुनि रामके वचनगूढ़ मृदुचारु।
भयो प्रकाशित ज्ञानउर मिट्यो मोहमदमारु॥
राम रमापति को धनुष लेहु हाथ निजएहु।
खैंचि चढ़ावहु जाहिते मिटै मोर सन्देहु॥
देतचाप आपै गयो चढ़ि विलोकि भृगुनन्द।
भइ विस्मय मन इनहिं मैं कहे कटुक वचवृन्द॥
प्रभु प्रभाव तव जानिकै पुलकगात सानन्द।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लागे पुनि अस्तुति करन जोरि पाणि भृगुनन्द ॥

कवित्त ॥ जैति रघुवंश कंज कानन दिनेश वेश दाहन कृशानु घोर दैत्यकुल काननै । जैति सुर धेनु साधु विप्रहितकार जैति काम क्रोध लोभमान मोह भ्रम भाननै ॥ शीलगुण सागर उदार चित्त कारुणीक जैति हंसमानसरहीय पञ्चआननै । जैति जैति भाग्यवन्त दास हितकार नित्य धार अवतार हेतहार भूमि भारनै ॥ जैति जै दयाल दीन संतत स्वछन्द चारु गावत पुराण वेद कीरति उदारहै । रूपता अपार वार मार कोटिरूप भद्रनीति धर्मपाल नाम संसृति उधारहै॥ बानी रचनामें पटुदानी वीर तेजवन्त भानुवंश भूषणायु पूरणावतार है। भाग्यवन्त शंकर विरञ्चि विष्णु शेष ध्याव लोकन प्रकाश यश रावरो अपारहै॥ शुद्धशांति शक्ति बल वैभव प्रतापवन्त शील तोष सत्यसन्ध नीति के अगरहौ। धर्मसेतु प्रीतिपाल सज्जन सुखदजाल योगिन अगम्य ध्यान उत्तम उदारहौ ॥ भाग्यवन्त गावत पुराण वेद शास्त्रकीर्त्ति पावत न पार नाथ अद्भुत अपारहौ। कहौं काह एक मुख रावरो पुनीत यश जैति जैति जैतिजै हरण भूमिभारहौ।।जैति जैति रामचन्द दीन बन्धु मोदकंद भंजनाभिमान तूल पापनै कृशानुहौ । शोभधाम सौख्यसिंधु कामधेनु दासनार्थ लोकसिंधु पोत मोहकंदपवमानुहौ।। भाग्यवन्त व्यापक सकल विश्व नीतिपाल चातुर सुबुद्धिमान ज्ञान के निधानुहौ। हंसवंश सागरायु पूरण सुचंद दानि आनदाब्ज साधु नै प्रकाशकार भानुहौ ॥ सवैया ॥ जैगुण सिंधुकृपा सुख मंदिर सुंदर श्री दशस्यन्दनजाये ।मैं अनजान अयोग्य कहे बहुनाथ प्रभाव सुजानिनपाये ॥ बन्धु द्वि धामछमा छमिये अपराध कृपाकर वेदन गाये । योंकहि शीशनवाय बनै तपहेतु तुरन्त मुनीश सिधाये ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० बरषि सुमन कहि जैतिजै व्योम मुदित सुरवृन्द ।
पुरनर नारि प्रसन्नअति निरखि राम सुखकन्द ॥
असुर दलन पातक दलन दलन चाप नृपमान ।
दलनगर्व भृगुनन्द बल जयजय जै भगवान ॥
जै शोभा सुखधाम प्रभु जै करुणा गुणऐन ।
जै सुररञ्जन भक्तहित जैति विश्व सुखदैन ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेश्रीरामचंद्र परशुरामसंवादेविविधवागविलासवर्णनोनामदशमोऽध्यायः १० ॥

दो० ॥ वन्दौं राम कृपालुपद भवसागर दृढ़पोत ।
सुमिरत सब संकट शमन सिद्धि मनोरथ होत ॥
मिथिलापुर आनँदमहा बाजहिं विविधनिशान ।
वृन्द वृन्दमिलि भामिनी करहिं मनोहरगान ॥

तब विदेह मुनिपद शिरनावा । जोरिपाणि मृदुवचन सुनावा ॥
नाथशम्भु धनु भंजेउ रामा । आयसुहोइ करौं स्वइकामा ॥
बोलेमुनि सुनु भूप सुजाना । धनुकर रह्यो ब्याहु जगजाना ॥
भयो सुधनु टूटत है ब्याहू । तदपि मानि ममबच नरनाहू ॥
निजकुल रीति होइ जसिकीजै । पठैदूत कोशलपुर दीजै ॥
सहित बरात भूप दशयानै । सानँद बोलि शीघ्र इतआनै ॥
भलेहिनाथ कहि जनक सचावा । तुरतहि शतानन्द बुलवावा ॥
पत्री दीन्ह मुदित नरनाहू । कह्यो वेगि कोशलपुर जाहू ॥

दो० श्रीदशरथ महराज कर दीन्ह्यों पत्रीजाय ।
सुनि धावन धाये तुरत हरष न हृदय समाय ॥
बहुरि महाजन बोलिकै दीन्हेउ शासन भूप ।
हाट बाट सुर सदन पुर रचहु वितान अनूप ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुनि निदेश मिथिलेशको बोलि गुनीन उताल।
दिय नियोग लागेरचन नाय सुविधिपद भाल॥

रोलाछन्द॥ कञ्चनमै कलरम्भ खम्भ अति सुंदर बनाये। हरित मणिनफल पत्र श्रोण मणि फूल सुहाये॥ वेणु हेर मणि हरित सरल सपरण रचि दीन्हे। शोभा अमित अनूप भ्रमत मन परत न चीन्हे॥ सर पितु सदल सँवारि रजत घनतर कल छाये। नागबेलि अलबेलि कनकमय रुचिर बनाये॥ बन्धन तासु बनाय कोरि बांसन पचिलाये। मोतिमाल बहु गुच्छ बीच बीचन लटकाये॥ माणिक मरकत हीर रङ्ग जङ्गाली मनिसो। रचे रङ्ग बहुपद्म शोभ सक कबिको भनिसो॥ तिन कमलनपै रचे बिहँग बहु भृंग अमोलैं। पाय समीर प्रसङ्ग भ्रमर गुंजहिं खग बोलैं॥ खम्भन चित्र बिचित्र बिविध देवन गढ़ि काढ़े। मंगल बस्तु अपार सकल लीन्हें कर ठाढ़े॥ सिन्धुर मणिमय चारु विविध चौके पुरवाई। कोरि नीलमणि रचे आम्र पल्लव सुखदाई॥ कलित कनकमय बौर श्याम मणि घौरि बनाये। बन्दनवार सु तासु डोरि रेशम गुहिलाये॥ हेम कलश बहु साजि जहां तहँ सुभग पधारे। दीप जाल मणि लाल ठौर ठौरन कलधारे॥

दो०॥ ध्वज पताक पट चमर कल सोहत जहँ तहँ भूरि।
जनक सदन शोभा परम रहेउ मोद भरि पूरि॥
ज्यों शोभा भूपति भवन त्यों पुर घरघर माहि।
कहि न सकैं श्रुति शेष मैं कहौं कौनविधि ताहि॥

सवैया॥ दुलही सिय राम जहाँ दुलहा द्वउ आनँद कंद बिराज अहैं। सुमिरे ज्यहि नाम मिलै अभिराम बिना श्रमही फल चारि लहैं॥ स्वइ पूरण ब्रह्म सुपूरण शक्ति सुव्यापक विश्व निहार ज़ुहैं।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भगवन्त अहै अस को कवि जो सुखमा पुरकी त्यहि गाय कहै ॥

दो० यह सब कथा अनूप मैं कह्यों यथा मति गाय ।
अब सुनिये चर अवधपुर पहुँचे ज्यहिविधि जाय ॥

कार्तिक कृष्ण बाणतिथि कहियां । पहुँचे दूत अवधपुर महियां ॥
द्वारपाल यक तुरत पठावा । जाय भूप पहँ खबरि जनावा ॥
सुनत बोलि लीन्ह्यो नरनाथा । आय दूत नाये पद माथा ॥
तुरतहि दीन्ह पत्रिका काढ़ी । उठि नृपलीन हर्ष अतिबाढ़ी ॥
बांचत प्रेम उमँगि तन आयो । गद्गद कण्ठ नैन जल छायो ॥
पुनि धरि धीर हृदय नर भूपा । लागे बांचन पत्रि अनूपा ॥

हरिपदछन्द ॥ सिद्धि श्रीपद् सत्य दान तप शौच धीर व्रत धारी । नीति धर्म थिर बीर शिरोमणि निगमनेति अनुसारी ॥ भानु बंश अवतंस महीपति सकल लोक हितकारी । महाराज दशयान ज्ञाननिधि चक्रवर्त्ति रिपुआरी ॥ राउर चरण सरोज दास लिखि शीरध्वज कहिनामा । बिविध भांति कर जोरि नाय शिर पहुँचै मोर प्रणामा ॥ कुशलअत्र तव कृपा कृपाकर सदा कुशल तव चाहौं । जाते मम कल्याण श्रवण सुनि मन परमानँद लाहौं ॥ राम लषण द्वउ बन्धु रावरो सुवन भुवन सुखदाई । तव शासन सादर संग गवने विश्वामित्र सहाई ॥ मारग चलत ताडका मारे सिद्धाश्रम पुनि आये । हति सुबाहु सहसेन राखि मखमुनिमन मोद बढ़ाये ॥ गौतम ऋषिकी नारि शाप पति भई उपल लखि ताको । चरण कमल रज छ्वाय दीन गति हर्यो पाप तन वाको ॥ दिव्य रूप ह्वै तुरत अहल्या गई स्वपति के धामै । पुनि सानुज मुनिसंग कृपालै गवन कीन्ह मम ग्रामै ॥ राजन राउर पुत्र अनूपम निरखि सकल नरनारी । भये कृतारथरूप विना श्रमलहे मोद मनभारी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अब कृपालकरि कृपा सुनीजै ममवृतान्त चितलाई। मैं कीन्ह्यो प्रणपूर्व इदं जोभंजै शिवधनुराई॥ सादर ताहि सुता निजब्याहौं तस्यहेतु यहहोई। लेपतभूमि वामकर कन्या लिय उठाय धनुसोई॥ चतुरकोण चौकाकर दक्षिणदै सुचापधरि दीन्ह्यो। अर्चनार्थ मैं जाय देखिकै तुरतप्रतिज्ञा कीन्ह्यो॥ ताहित देश देशकेराजन लिखि लिखिपत्र पठाये। दर्शनार्थ धनुभूमिपाल सुनिसकल इतै चलि आये॥ बाणासुर दशकण्ठ आदि भट निजनिज जोरलगाये। भये सकल बलहीन तिलौभरि काहुन भूमिछुड़ाये॥ तबमिलि सकल भूपएकै सँग धरिधनुचह्यो उठायो। तदपि डग्यो नहिं शम्भुशरासन सबहि पराजयपायो॥ त्यहि अवसर कौशिकमुनि आयसु श्रीरघु-नन्दसुभाये। कमलनालसमदल्यो शरासन त्रिभुवन जै यशपाये॥ तबहिं सीयसानन्द रामउर जयमाला पहिरायो। रौरेपुण्य प्रभाव हमारो भयो सकल मनभायो॥ परशुराम जमदग्नि तनै सुनिआय बाद बहु कीन्हा। लखि प्रभावकरि विनै गयेबन सौंपि शरासन दी-न्हा॥ तबहिं शतानँद कौशिक सम्मत मार्गशीर्ष भृगुबारा। शुक्ल बाणतिथि कर्क उदै में पाणिग्रहण विचारा॥ त्यहि कारण महराज आपुपै पठयों दूत हँकारी। सहित पुत्र बांधव गुरुमन्त्रिण सुभग बरात सँवारी॥ कृपादृष्टि करिकै ममऊपर कृपासिन्धु इत आवो। होय सफल ज्यहि मोरमनोरथ नैनलाहु भरिपावो॥ आपु कृतारथ रूप रावरे हमहिं कृतारथ कीजै। जानिभृत्य पादाब्ज आपने आय सबहि सुखदीजै॥

दो० हम पत्री बनके सदा करण कल्प रबिकल्प।
करौं प्रशंसा कौन विधि मैं राउर बुधिअल्प॥
राउर दर्शन चन्द्रको हम चकोर चितचाह।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सहित समाज नक्षत्र इत उदै होहु नरनाह॥
सुनि पत्रिका परम सुखदाई। लह्यो सभा सब सुखसमुदाई॥
त्यहि अवसर रिपुदवन समेता। आये भरत समोद निकेता॥
बूझत नृपहिं प्रेम सरसाते। तात पत्रि आई कँहवांते॥
राम लषण द्वउबन्धु हमारे। सुखसागर प्राणन के प्यारे॥
कहिये कुशल अहैं क्यहिदेशा। सुनि पुनि बांच्यो पत्रिनरेशा॥
सुनत भये द्वउबन्धु निहाला। तब दूतन ढिग बोलि भुवाला॥
बोले अति विनीत मृदुवानी। सरल सनेह सुधा रस सानी॥

सवैया॥ ममप्राण प्रिया सुठिपुत्र उभै जबते मुनि कौशिकसाथ गये। तबते तव आनन आजुभली सुधिपावत या हम सांचुभये॥ द्वउश्यामल गौरकिशोरकसे कटितून शरासन बानलये। पहिचानहुतौपि स्वभाव कहौ उनपै तुम जो निज दृष्टिदये॥

दो० तातकहौ क्यहि विधि उनहिं जाने जनकनरेश।
सुनत दूत मुसकायकै बोले वचन सुवेश॥

सवैया॥ राजनराज शिरोमणि राउर चक्रव्रती सम और न जायो। कौनप्रकार प्रशंसकरौं जिन विश्वविभूषणकै सुतपायो॥ पूछन योग नहीं नृपते यश पुञ्जप्रताप तिहूंपुरछायो। सिंहसमान प्रसिद्ध उभै गुणसागर नागर जाहिं न गायो॥ कवित्त॥ शील सम साहसी कृपाल क्षमाधाम राम रूपतानिधान अङ्ग कामकोटि वारहैं। नीतिधर्म्म पूरण प्रतापवन्त शूरवीर तैसही लषणलाल बांकुरे उदार हैं॥ श्यामगौर बै किशोर माधुरी सुठौर ठौर सूखमा अपार विश्व बीर जैतवारहैं। भाग्यवन्त आंखितर आवतो न तैस और कौशलेश वेशज्यों द्विरावरे कुमारहैं॥ सीय के स्वयम्बर महीप दीप दीपजाल समिटे पिनाक शम्भु काहुना उठायो है। बाण

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दशकण्ठवीर देखि जाहि बाँवदीन ताहि रामचन्द्र कंजनाल सों चढ़ायो है ॥ विश्व जैतवारे भृगुनन्द तौ दुलारे देखि डारिकै कुठारचाप पाँव शीश नायो है । भाग्यवन्त रावरेसमान कौन भाग्यवन्त जासुदिव्य पुत्रन प्रभाव लोक छायो है ॥ तारकछन्द ॥ सुनि दूतनके मुख बैन कहे हैं। सुखपुञ्ज हिये अवधेश लहे हैं॥ कहिजात न मोदहृदै नृपजेतौ। निवछावरि दूतन देनलगेतौ ॥ चर लेत न जानि अनीति हिये हैं । मृदुबैन नृपै इमि ज्वाबदिये हैं ॥ हम दूत सुनो मिथिलाधिप के हैं। तनुजा इत व्याहनते चहते हैं ॥ महराज अहै धनतौ दुहिताको। यहिकारण हाथछुवैं नहिं ताको ॥ इमि धर्ममई सुनि दूतनबैना। सुख भूरिलह्यो सबही उर ऐना ॥

दो० तब भूपतिलै पत्रिका दीन बशिष्ठहि जाय।
दूतन निकट बुलायकै कही कथा सबगाय ॥

कवित्त ॥ मारि मग ताड़का ससेनकै सुबाहु नाश राखिकै मुनीश यज्ञ जालशोक दाये हैं। तारिकै सुनारि ऋषि कौशिक समेत फेरि देखनार्थ चापयज्ञ आपहू सिधाये हैं ॥ भूपवृन्द हारे तत्र राघव पिनाक तोरि भानिकै कुठारपानि गर्वही नवाये हैं । रामचन्द्र व्याह काज मोहिं सावरात वेगि बोलनार्थ मीथिलेश दूतपत्र लाये हैं ॥

दो० जो आज्ञा मुनिराज तव होइ करौं स्वइकाज।
सुनिवशिष्ठ बोलेवचन सुनिये नृप शिरताज ॥

सवैया ॥ ज्योंद्विजदेव गुरूपद सेवक आपु अहौ तन मानस बानी। त्यों भगवन्त पुनीतमहा नृप संततहै तुव कौशिलरानी ॥ आपु समान नभो सुकृती जगहै नहिं होनसबै गुणखानी। राजन राज प्रशंस करौं किमि वेद पुनीत सदा यशभानी ॥

दो० ज्यों सरिता बिनु चाहना जात सिंधुके पाहिं।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

त्योंहीं सब सुख सम्पदा धर्मवानपै जाहिं॥
अस विचारि मन भूपमणि सजिबरात सानन्द।
नैनलाभ चलि लूटिये रामब्याह सुखकन्द॥
सुनि गुरुशासन भूपतब दूतन सुथल टिकाय।
आपुगये भीतर भवन रानिन निकट बुलाय॥
बांचिसुनाई पत्रिका राम लषण कुशलात।
भईसुनत रानी मुदित प्रेम न हृदै समात॥
रानिन विप्रन बोलिकै दीनविविध विधिदान।
त्यहिक्षणको भगवन्त मुद कोकवि करैबखान॥

पुनि महिपाल द्वार चलिआये। सादर याचक वृन्द बुलाये॥
बहुविधि दीन्ह निछावरि भूपा। धनमणि भूषण बसन अनूपा॥
देत अशीष सकल नर नारी। जाहिं भवन उर आनँद भारी॥
पुर नर नारि मुदित यहिभांती। जनु चातक पायो जलस्वाती॥
विविध भांति बाजहिं बहुबाजा। लगे सजन सब मंगलसाजा॥
रामसीय कर ब्याह सुहावा। सुनिसुनि नगरलोग सुखपावा॥
लागे घरघर होन बधाये। मंगल मै सब सदन सजाये॥
ध्वज पताक पट चामरभूरी। रचे सकल रचना अतिरूरी॥
पुरशोभा किमिकहौं बखानी। जहँ अवतरे राम छबिखानी॥
अमित उछाह अवध पुरहोई। परमानन्द मगन नरलोई॥
सजि नवसप्त शृँगार सुवामा। मंगल गानकरहिं अभिरामा॥
भूपभवन शोभा अधिकाई। शेष सहसमुख सकहिं न गाई॥
अति सुन्दर शुभरच्यो बितानां। मंगल बस्तु सोह विधिनाना॥
बाजहिं बाजन द्वार सुहाये। बिरदावलि बंदीजन गाये॥
करहिं वेदध्वनि भूसुर भूरी। जयजय शब्द लोक तिहुँपूरी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बहुत उछाह कहां लगि गावों। बाढ़े ग्रन्थ पारनहिं पावों॥
भूपति बोलि भरत तब लीन्हा। सजहु बरात सुआयसु दीन्हा॥
शिरधरि आयसु भरत सुजाना। पठये बोलि साहनी नाना॥
आयतुरत सादर शिरनाये। पाय भरत आयसु सबधाये॥
रामब्याह हित अति अनुरागे। रथ गज बाजि सवाँरन लागे॥

छप्पै॥ सिरगा समुद कपूरि सेतसब्जा अबलक्खी। श्यामकरण गुल्दार नकुल गर्रारु सुरक्खी॥ कुल्ला स्याह सुचीतिजर्दबादामि सुरंगा। सुश्की पँचकल्यान नील कुम्मैत पिलंगा॥ बहुबरण बरण राजत तुरँग बरणिसकै को नाम कबि। जगमगत जीन अङ्गनि सुभग कहि न जाय सो भूरिछबि॥ कवित्त॥ साजि अङ्ग बाजिन विचित्र चारु जीनधारि हेमहीर आदिमें जटित रङ्ग रंगनै। नोकता अनूपदै लगाम हेम बागपाट गूंथिआल चोंटि शीशबांधि ग्रीवगंडनै॥ दूमची बिशाल मंजु कंचन रकाब सोह लायकै सुजेरबन्द खैंचि पृष्ठि तंगनै। भाग्यवन्त कौनभाँति गाउँ मैं सुशोभजाल जग्मगाति ज्योतिपुंज भूषण तुरंगनै॥ भाग्यवन्त कौशलेश द्वारभै अपार भीर बाजिन समाजकी बखानि जोन जातहै। मारत उछाट एक पुस्तक बहाय फेरि घूमि घूमि भूमि बारबार हिंहिंनातहै॥ जमत जकंदि एक फफकि तुरायबाग मारिहींस जोरधाय सौंह दाबिजात है। पाछे दौरिधारिकै सहीस बाँधिबागडोरि लावही सक्रोधते न भूमि ठहरातहै॥ टापत सक्रोध ओर चारिहू सुताकि ताकि दर्दराय दन्तन लगाम जोर चाबहीं। बारबार भूमिपै पटकि पांव घूमि घूमि फर्रफर्र करत सुबंधनै तुरावहीं॥ जातझूकि पांवचारि लंकही नवाय डाटि तानिकै कनौटिकाढ़ि अक्षनै तकावहीं। भाग्यवन्त जोरदार बाजिन कि ऐंठमुर्र देखि देखि राजपुत्र जालमोद पावहीं॥ साजि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अङ्गचीर ऊन रेशमी अमोल चारु जरी जरबफ्त आदि सोह जरतार हैं। धारि शीशपाग मंजु कलँगी विराजमान कुण्डल सकान कंठ गजमणि हारहैं॥ भूषण अपार अङ्ग अङ्गनै सवांरि दिव्य बांधिकै दुशाल लंक तून बानभारहैं। डाबमें कृपानलाय धारिचाप बानहाथ भाग्यवन्त राजपुत्र साजिभे तयारहैं॥ अतर लगाय पट केवड़ा गुलाब खसमोतिया हिनादिजे अनूप गन्धदारहैं। खायपान पावन इलाइची मिलाय चारु हाथलै रुमालनव्य मोतिगुच्छ बारहैं॥ पाद-त्राण पैन्हिपांव छरेछैल रूपवन्त मंद मंदजात अङ्गवार कोटि मार हैं। भाग्यवंत राजपुत्र भरत समानबीर शत्रुहन आदि फांदि बाजि भे सवारहैं॥ बैठिगांठि आसनै दबायरान साधिबाग बाजिन लगाय ढंग संगएक धावहीं। जावत रुहाल कोइ दूलकी दुगामपोइ साहगाम चालकैकदम्मको बढ़ावहीं॥ ठाढ़े एकडाटे बाजिउमागि उछाटै एक मारिसरपट्ट नालि झट्टफांदि जावहीं। भाग्यवंत देखि जाल अ-श्वन कलोल चाल राजपुत्र सासमाज मोदपुंज पावहीं॥ सोहत बिशाल झुंड झुंडन गयन्दजाल अंग अंग पुष्टश्याम दीरघदतार हैं। जातरूप हीर मै अंबारी चारु ज्योतिवन्त पन्नन प्रकाशपुंज झूल कामदारहैं॥ राजतउहार दिव्य ऊपर झलक्कदार कञ्चनजंजीर स्वच्छ झूम चारिवार हैं। भाग्यवन्त साजि अङ्ग भूषणास्त्र चीर चारु भये रघुवंशी लोग बारण सवारहैं॥ चारिओर गाजत गयन्दमस्त घोर नाद होत ज्यों अपार व्योम घनघहरात हैं। घण्ट घंटि शब्द जाल दीरघ अनूप सोह मन्दमन्द चाल देखि मैन बलिजात हैं॥ बाजत निशान भाँति भाँतिनै प्रमोदकार झुण्डन कतार बाँधिचले पील जातहैं। भाग्यवन्त कौन भाँति गावै सो अपार शोभ देखत प्रभाव पुञ्ज शक्रहू सिहातहैं॥ सांड़िया समाज ना बखानिजात भाग्यवंत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राजत सवार पीठि शोभ जालदैरहे । काठिन प्रकाश पुञ्ज हीरन कि ज्योतिहोत मखमली उहार नव्यमोति गुच्छछैरहे ॥ माणिकस-जातरूप जटित नकेल स्वच्छ पावन अनूप शब्द घूंघुरु मचैरहे। छम्मछम्म चलत कदम्मन बढ़ाय संग सुतुर सवार पंथकेलि कोटिकै रहे ॥ हेममणि रचित प्रकाशमान तेजवन्त अमल बिछावने वि-छाय रङ्गरङ्गहैं । चामर पताक ध्वज किंकिणी विराजमान झालरैं समोति गुच्छटांकि चौअलंग हैं ॥ सोहत उहार दिव्य ऊपर सु-कामदार सूखमा अपार देखि लाजत अनंगहैं। श्यामकर्ण पौनछूते वेगवन्त साजि अंग लायेतारथन माहिं सारथी तुरंगहैं ॥ भूषण व-सन अंग साजि अस्त्रशस्त्र धारि रथन सवार चले रथी शोभकन्दहैं। बाजत निशान अग्र सोहत अतीव यान देखत अनूप शोभ भानु यानमन्दहैं ॥ शीविका सुखासन अनेक भांति भांति साजि तापर सवार है सुचले विप्र वृन्दहैं। भाग्यवन्त सूखमा अपार ना बखानि जाति धरेतनु चलेजात मानौ श्रुतीछन्दहैं॥ बेसराशकट ऊंट भारन लदाय जाल तम्बूसाकनात छोलदारी सामियानही । डोरी चोबैं बादरसां मेखन के भारभूरि दरीदरा जाजिमै सुतारखानि खानही ॥ रेशमीसऊन सूति कोमल कलीन जाल तोसकै सुगीरदा अनेकन विधानही। कूरसीसमोढ़ का पलंगन तखत चौकि अमित धराय बस्तुपारको बखानही ॥ अमित विधान पकवान को बखान नाम छरस सुधासों भरे पात्रन अपारहैं । मेवासा मिठान भांति भांतिनै भराय जालचले लैअपार भार कांवरैं कहारहैं ॥ भूषण बसन हेम-हीर आदि मालधन शकट लदायकै संदूखन संभारहैं। भाग्यवन्त सौज और जावत बरात योग्य चलीसो अपार कौन पावै गनिपार हैं॥ साजितौसुमंत आनि यानद्वै अनूपचारु सूखमानिधान कोटि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भानु तेज भ्राजहै। राजसाज साजि एक दूसरो सुतेजवन्त जगमग ज्योतिहोत देखि मैन लाजहै॥ तापर सवारकै वशिष्ठको हरषि आपुचढ़े रथ भूपमणि बंदि गनराजहै। भाग्यवन्त सहित वशिष्ठ सोह भूपकैस मानौ देवगुरु संगराजै सुरराजहै॥ देखिकै बरात साज भूप कुल वेदरीति करिकै बजाय शङ्ख कीनतौ पयानहै। भाग्यवन्त आनँद अपार ना बखानिजात वर्षहीं प्रसून देव ब्योमछै विमान है॥ बाजत निशानजाल बदत विरदबंदि मंगल कलापगान ग्राम तीयठानहै। छायो धूमधाम लोकतीनिहू प्रमोद होत सगुन अपारभये मंगल निधानहै॥ चाराचाखु बाम अंगलेत है सुमोदकन्द दाहिने सुखेत काग सिद्धिदा सुहायो है। सघटसबाल आवनारि अग्रधेनु बच्छ प्यावत कुरङ्गमाल फेरि दाहिनायो है॥ सानुकूल त्रिविध समीर डोल श्यामावाम सुतरु विराज दर्श नकुल दिखायो है। मीनदधिआयो अग्रपुस्तकी सविप्रदोय दीनदर्शलोवा क्षेमकरी क्षेमगायो है॥ चाखुशक्र धर्म्मराज बायस सरयु कुम्भ भागीरथ वालदेवसरी दिव्यवामहै। धेनुभूमि मालमृग देवगन शोभवन्त प्रबल त्रिदेव आवपौन अभिरामहै॥ श्यामा अद्रिजाई मंजुनकुल धनेश जानि मीनसरिजाल सिन्धुदधि शुभधाम है। विप्रशुक्र वृस्पति सुपुस्तक बिशाल वेदलोवा औध क्षेमकरी देवि दानिकाम है॥ मंगलको खानि फल चारिहूको दानि हारकलुष गलानि मोदकंद सुखसारहै। धर्मको अगार भक्ति मुक्तिको भंडार चारु संतन अधार लोकजीवन उधारहै॥ भक्तनकोप्रान खलबृन्दनको त्रान मोहरातिको बिहान ऋद्धि सिद्धिको सुद्वारहै। ऐसोराम सीयब्याह जानिकै सगुन सब सांचे होनकाज आनिभये एकबार है॥ डंकनादहोत अग्र चली सुबरातसाजि आनँद अपारदेव फू-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लमाल बरषत। बाजत निशान भेरि दुन्दुभी पणव झांझ शब्द साहनाइका किचारुमन करषत॥ आसपास भूमत मतंगनकेझुंड जात बीचरथ सूखमा दिनेशयान धरषत। चारिओर बाजिनसमाज पादचार सोह भाग्यवन्त कौशलेश देखिशोभ हरषत॥ नाकनटी करैंनाच कौतुक बिदूषकै सुटेरत नकीब फैर तूपकान घमकत। बैरख अनेक रंगरंग फहरात ब्योम झण्डीबरदार ऊंचिकुंत फोंक चमकत॥ खेलत अनेक खेल फरीगदा बांक सैफ बाने पटेबाज पंथ जातचले झमकत। करैं नटकला कोटिआनँद अपारहोत हाथी पै निशान अग्रजात चोब धमकत॥ ऊंटजाति बेसरा शकट बृन्दबृन्द सोहपीनस कहार कंधलियेजात मटकत। सेवक समाजभूरि चोबदार सजे साज चलेजात पागशीश छोर पीठिलटकत॥ बाजिबृन्द फेरत उमंगि बीरभरतादि साँड़िया सवारजात अग्रदेह झटकत। भाग्यवन्त सूखमा बरातकी बखान कौनदेखि बिभु कौशलेश देवराजभटकत॥ सवैया॥ जातनचावत पन्थ तुरंगन रंगन रंग चलावत चालैं। बागन तंगकिये असवार जमावत ठेकन ठोंकत आलैं॥ फेंकत पोइ कदम्मनकै दमकैं द्युतिदामिनि ज्यों पगनालैं। क्यों भगवन्तकहै गतिबाजिन मैनहृदै छबि अद्भुत शालैं॥ झझकैं झमकैं झपकैं छपकैं सुउमंगि फफन्दि जकन्दिचलैं। झटकैं लटकैं मटकैं अटकैं सुटकैं बलकैं दलमाहिं रलैं॥ झगरैं धंगरैं डगरैं सगरैं पकरे जकरे थँभते न थलैं। जुरतैं फुरतैं सुरतैं बहुतैं करते चलते मग कोटिकलैं॥ झलकैं मणिभूषण भूरिसजे अँग अंग अतीव प्रभा छलकैं। छलकैं छबि मारगमें चहुंघालखि राजकुमार हृदै ललकैं॥ ललकैं रबिबाजि बिलोकि गती सुरसंकुल जैजयकै पुलकैं। पुलकैं कुलकैं अवधेश हिये भगवन्त सुभाग उदै झलकैं॥ खटकै कहुंपात जुबात लगे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चकि चौंकि चितै तनको झटकैं। झटकैं बलक्रोध फफन्दिउड़ैं नभ जातचले मगना अटकैं॥ अटकैं मन देवबिलोकि प्रभा पुनिआवत भूमि कलापटकैं। पटकैं न समीर सकैं फुरती छबिबाजिन मैन हृदै खटकैं॥ खन कूदत खूदत पंथधरा चुचकारि सवारन वागहने। झमकाय नचाय बढ़ायचले सब राजकुमार प्रमोदसने॥ भगवन्त कहै किमि भूरिप्रभा सुरदेखत व्योम विमान घने। बरषाय प्रसून सुदुंदुभिदै पुनि सानँद जैजय शब्द भने॥

दो० यहिविधि सुभग बरातसजि सकलराज अवतंस।
चलेजात सानंद मग को कविकरै प्रशंस॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितायांभक्तिशिरोमणिग्रन्थेश्री
जनकदूतअयोध्याआगमनश्रीदशरथमहाराजप्रतिदूतवार्ताश्रीरामचन्द्र
ब्याहहेतनृपवरातसजिगमनवर्णनोनामएकादशोऽध्यायः ११॥

सो० बन्दौंरघुपति पांय सुखदायक भञ्जन विपति।
पुनि पुनि शीश नवाय कहौं कथा भौभयहरणि॥

जब सबरात चलन नृप लागे। दूतन दीन बिदा करि आगे॥
लै पत्रिका प्रथमते आये। जनकराज कहँ खबरि जनाये॥
सुनिनृप लीन बोलि निजपासा। जायदूत सब हाल प्रकासा॥
नृप दशरथकर पत्र विशाला। दीन हर्षि लीन्ह्यों महिपाला॥
सभा समेत राउ सुखपागे। प्रेमस खोलि पढ़न पुनिलागे॥

दो० स्वतिश्री सर्व्वोत्तमो पमायोग्य मिथिलेश।
गुणगण मंडित ज्ञाननिधि विदितकीर्त्ति सबदेश॥
पहुँचै शुभ दशरत्थकी सादर विविध प्रणाम।
कुशल अत्र सब क्षेम तव राखै चन्द्रललाम॥

भुजंगप्रयातछन्द॥ लिखी हस्तभूपाल तव पत्रिआई। कहौं क्या प्रभापुञ्ज आनन्द दाई॥ भयो मोद बांचे हृदय बीच भारी।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुनेसो सभालोग ह्वैगे सुखारी । लिखा हाल जो आपु सो सर्व्व जाना। कृपाकौशिकैकी सबै सिद्धि माना॥ लिख्यो जोकि आवो इतै लै बराता। हुवै व्याह राघौ जुरै नेहनाता॥ भलीबात सोहैसबै हीय भायो। पुनःपत्रिलै सो बशिष्ठै सुनायो॥ भये सो प्रसन्नाति दीन्हे नियोगू। चलौलै बराता मुनीकोसँयोगू॥

दो० सोमैं सादर शीश धरि सुनिये नृप मिथिलेश।
आवत सहित बरात हौं सद्य तुम्हारे देश॥

बांचिपत्र नृप सबहिं सुनावा। सुनि सब सभापरम सुखपावा॥
आवत जानि नगर अवधेशू। परमानन्द मगन मिथिलेशू॥
मारग जहँ जहँ बास रहाये। तहँ तहँ सकल सुपास बनाये॥
इहां भूप सब सहित बराता। करत निवास पंथ सुखदाता॥
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशि काहीं। पँचयें दिवस जनकपुर माहीं॥
पहुंचे सुनि आगमन बरातै। नृप मिथिलेश हृदै हरषातै॥
अगवानी कर साज्यो साजा। त्रिविध भाँति बाजहिंबहुबाजा॥
तुरग नाग रथ पदचर नाना। सजिसजि लेनचले अगवाना॥

दो० अशन बसन भूषण विविध दधिच्यूरा सुखकन्द।
भरिभरि कंचन भाजनन पठयदीन सानन्द॥
अगवानिन देख्यो जबहिं आवत सुभग बरात।
चले बजाय निशानवर हर्ष न हृदै समात॥
करिसादर अगवान बर बहुबिधि मोद बढ़ाय।
बहुरि परस्पर एकमहँ भये दोउदल आय॥
सादर भूपहिं भेटदै करिसन्मान बढ़ाय।
अतिसुन्दर जनवासलै दीन्ह्यो सबहिं टिकाय॥

त्रोटकछन्द॥ पुरआइ बरात सुजानि सिया। महिमाकछु आप

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रसिद्धि किया ॥ तुरतै सब सिद्धिन बोलिलिया। प्रथमै अणिमा महिमा द्वितिया ॥ तृतिया गरिमा लघिमाचतुरी। पँचई कहि प्रापति सिद्धिफुरी ॥ छठि कामबसी करणी सतई। अरुईशत नाम कहे अठई ॥ तिनको इमि आयसु सीय दियो। पहुनाइ महीपकरो सबियो ॥ सुनि सानंद सिद्धिगईं तहवाँ। जनवास अनूपरह्यो जहवाँ ॥ सुरलोक जुभोग विलास सबै। क्षण में करिपूरण दीन तबै। प्रभुता सिय काहुन जानिपरो। जनकैंकि प्रशंसकरै सगरो ॥

दो० सिय महिमा रघुनाथजी गये तुरत सब जानि।
भये परम आनन्द प्रभु हृदै हेतु पहिचान ॥
सुनि श्रवणन पितुआगमन राम लषण मुनिसाथ।
चले मनहु सरवर निरखि तृषावन्त हित पाथ ॥

कुंडलिया ॥ कीन्ह्यो मुनिहि प्रणाम नृप नृपहि लषण रघुराय। सानुज पुनि भेटेभरत रघुपति पद शिरनाय ॥ रघुपति पद शिर नाय बशिष्ठहि सानुज बन्दे। पुरजन भेटेराम निरखि छबिधाम अनन्दे ॥ आनन्दे सुरबृन्द सुमन झरि दुन्दुभि दीन्ह्यो। गाय सुयश भगवन्त सफल जीवन जगकीन्ह्यो ॥

दो० कोशलपाल कृपाल ढिग राजत सुवन सुचारि।
जनु सुन्दरफल चारिहू सोहत नरतनुधारि ॥
दक्षिण रघुपति मोक्षफल भरतधर्म अभिराम।
लषण काम रिपुहन अरथ राजत नृपदिशिबाम ॥

पुर नर नारि देखि अति शोभा। परमानन्द मगन मनलोभा ॥
कहहिं परस्पर सहित उछाहू। बड़भागी दशरथ नरनाहू ॥
जिन ऐसे सुत सुन्दर पाये। सब गुणधाम सुभाय सुहाये ॥
जिनके दरशन पाय अनूपा। हम सब भये कृतारथ रूपा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धन्य धन्य श्रीजनक सुनैना। होइहि ब्याह इनहिं जिन ऐना॥
हमहुँ धन्य देखब उतसाहू। राम सियाकर सुन्दर ब्याहू॥
यहिविधि सबमन करहिं बिचारा। कोकहि सकै प्रमोद अपारा॥
कहुँ कहुँ नारिवृन्द मिलिसंगा। कहहिंबचन इमिसहितउमंगा॥

सवैया॥ सखिभूपति संग सुऔर अहैं गुणसागर नागर बालक द्वै। लषनै अनुहारि जुगौर अहै तनश्याम मनो धुवरामहिं स्वै॥ सब वैसहि अङ्गमनोहरहै उनसों कहुँ रंचक फेरनक्वै। भगवन्त बखान करैं छबिते लखिआय उन्हैं निज नैनन ज्वै॥

वैसहि बिधु आनन छबि ऐना। वैसहि अमल कमलदल नैना॥
वैसहि भाल तिलक छबिछाजैं। वैसहि कानन कुण्डल भ्राजैं॥
वैसहि अधर दशन द्युतिकारी। वैसहि मृदुमुसक्यानि पियारी॥
वैसहि बसन लसत सुठिअंगा। वैसहि कर धृत शर शारंगा॥
वैसहि मनमोहनि शुभचाली। वैसहि सकल ढंगहैं आली॥
वैसहि शील सुभावहु वैसा। वैसहि वैस प्रतापहु वैसा॥
वैसहि अंग अंग छबिधामा। भरत शत्रुसूदन शुभ नामा॥
वैसहि प्रीति रीति इनकेरी। कहहिं सखी जिन नैननहेरी॥
वैसहि ये सबके मन भावत। वैसहि अंग सुलक्षण जावत॥
सबके हृदै लालसा येहू। जो सखि समुझैं मनहिं बिदेहू॥

सवैया॥ जो समुझै मिथिलेश हिये तौ देहि सु ब्याहि इहैं चहुँ भ्रातै। ज्योहिं कुमारि कुमार तथा मिलयो यह योग सुकैस बिधातै॥ को सुकृती मिथिलाधिप सो शिवदीन जिन्हैं इनसों करि नातै। यों भागवन्त सप्रेमरहीं बनितागन आपसमें करिबातै॥ ह्वैहहिं ब्याह इतै इनके जब मानि सुनात कबौं पुर ऐहैं। कैकछुकाल निवास इहाँ पुनि पायविदा निजधामहि जैहैं॥ ऐहहिं आनन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

फेरि कबौं जब भूप कुमारिन बोलिपठै हैं। या विधि चारिहु राजकुमार सदा पुर आवत जातहि रैहैं॥ आवहिंगे ससुरारि जबै चहुँ राजकुमार महा छबिऐना। श्यामलगौर किशोरधरे भ्रुव चाप कटाक्ष सजे शरपैना॥ लेब तबै मनभाव सुखै भगवंत बिलोकि इन्हैं भरिनैना। ह्वै हहिं तृप्त सबै पुरनारि सप्रेमकहैं इमि सुंदरबैना॥ सुकृती हमसों जग कौन वियो मिथिलापुरमें लिय जन्महिज्वै। अरु जानकिराम निहारिप्रभा सुकृतारथरूप गये सबहै॥ पुनि देखब ब्याह उछाह अबै भगवन्त महानँददायक स्वै। परमोत्तमहै यह ब्याह सखी मनभावत लाहु लहै सबकै॥ किरीटछन्द॥ राजकुमार उदार चहूंछबि कोटि मनोज निछावरिगातन। ब्याहहिं जो मिथिलापुर ये हम मंगलगाय करैं सफलातन॥ जन्म जहां भगवन्त मिलै बश कर्म छुटै इनसों तहँनातन। होय सखी जबपुण्य बड़ी पुरवै करतार तबै इनबातन॥

दो॰ यहिविधि पुर नरनारिसब कहहिं मनायपुरारि।
करिये प्रभुपूरण सकल मनअभिलाष हमारि॥
एक मास अरु सप्तदिन लग्नते प्रथमबरात।
आवतभै ताते अधिक पुरप्रमोद सरसात॥

छप्पै॥ यहिप्रकार सानंद सबहि कछुदिवस बितायो। हिमऋतु अगहनमास लग्न दिन सुंदरआयो॥ ग्रह तिथि नखत सुवारयोग शुभमूल सुहायो। तुरत देवऋषि हाथ शोधि विधि लग्न पठायो॥ ज्वइ गनी जनकगनकन इहांपठायो लिखि स्वइ सकलविधि। सुनि भयेमुदित पुरजन परम लगन सुमंगल मोदनिधि॥ तब प्रोहितकहँ दीन्ह मुदित आयसु मिथिलेशू। साजि सुमंगलसाज वेगि लावहु अवधेशू॥ सुनत साजिसब साज शतानंद तुरत सिधाये। बाजत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विपुलनिशान भूप जनवासहि आये॥ लखि अवधनाथकर विभव बड़ लाग तिनहिं लघु अमरपति। वचन सप्रेम बिनीतकह समय पावँधारिय नृपति॥ सुनि दशरथसानंद गुरुहिं अनुशासन लीन्ह्यों। करि कुलरीति ससाज गमन सादर नृपकीन्ह्यों॥ मंगल समय बिचारि देवफूलन झरिलाये। चढ़िचढ़ि सुभग विमान ब्याह देखन सब धाये॥ मिथिलेश नगर शोभा निरखि लागिलोक निज लघुसबहिं। भो बिधिहिं परम अचरजकतहुँ लख्यो न निज करणी जबहिं॥ तबशंकर बहुभांति सकल देवन समुझाये। त्रिभुवनपति ज्वइ स्वामि जासु यश वेदनगाये॥ सुमिरत जाकरनाम तरहिं भवसागर प्रानी। करुणासिंधु उदार भवनमंगल गुणखानी॥ सोइ रामसियाकर ब्याहु शुभ दायक सब मन कामफल। जनिकरहु हृदै आचरज धरि धीर देव देखौ सकल॥ सुनि मृदु शंकर बैन सकल सुरगण मनहरषे। पुनि पुनि जैजैभाखि सुमन संकुल महिबरषे॥ दशरथ सहित समाज जातपथ सोहत कैसे। सुरवृन्दन के मध्य अमरपति राजत जैसे॥ श्रीराम लषण रिपुहन भरत जात नचावत तुरँगबर। भगवन्त परम शोभा निरखि उमासहित आनन्द हर॥ ज्यहि सुंदरबर बाजिराम असवार विराजैं। देखि सुभग गति तासु हृदै खगनायक लाजैं॥ कहि न जाय छबिजाल मनो रघुनायक काजैं। धर्यो मनोहर वेषबाजि कर ज्यों रति राजैं॥ मणिजटित जीन जगमगित द्युति लसत विभूषण भूरितन। निजरूप गुण वय बपुषसन लिय मोंहि सो त्रिभुवन सबन॥ सवैया॥ चलते छबि पावतबाजि महा उपमा क्यहि भांति कहै कवि कै। तन राघवश्याम पयोद मनोपटपीत लसै द्युति दामिनि स्त्रै॥ नगभूषण भूरि नक्षत्र सजै वरहीवर बाजि विलोकतज्वै। अति आनन्द नाचत प्रेम सनो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लखिकै न गयो छवि मोहितहै ॥ गीतकाछन्द ॥ लखि रामरूप अनूप शङ्कर परमआनन्दमें पगे । कहि जाय नहिं सुख एकमुख अति नैनपन्द्रह प्रिय लगे ॥ हरषे विरञ्चि विलोकि पै पछितानि दृग आठैसये। मुदपुञ्ज छ.नन हृदय विधिते ताहुहम डेवढ़े लये ॥ सुरराज रामहिं देखि नखशिख मुदित मन हुलस्यो हियो । हित परममान्यो ताहि करि जो शाप ऋषिगौतम दियो॥श्रीराम शोभा धाम लखि सुर वृन्द आनन्द पायऊ। भगवन्त जैजै भाषि शंकुल सुमन महि वरषायऊ ॥

दो॰ श्रीरघुनन्दन रूप छवि नखशिख सादर जोहि।
रमासहित श्रीविष्णुकर गयो सद्यमनमोहि ॥

सवैया॥ राघवश्याम शरीर अनूपम सोहत यों अतिपीतपटा हैं। ज्यों नवनील पयोद विषे सुप्रकाशित मंजुल ज्योति छटा हैं ॥ ब्याह विभूषण भूरि सजें छवि देखत मैन कमान हटा हैं। यों भगवन्त विलोकि प्रभा मिथिलापुरभे नर नारि कटाहैं॥ होत महानँद मारग में छवि भाषत सो मुख एक बनैना। बाजत जाल निशानबढ़ें विरदावलि बंदि हृदय सुखदैना ॥ आवत जानि बरात भली भगवन्त लह्यो मनमें अतिचैना । मंगलसाज सजे सुसबै परछैं हित दूलहरानि सुनैना ॥ कवित्त ॥ मंगल सँवारि भूरि धूप दीप फूलमाल दूब दधि रोचना कनकथार भारिकै। मत्तगज गामिनी सुभामिनी शुभगजाल भूषण वसन अँग अंगन सवाँरिकै॥ शची रमा शारदा सगौरि जे अमर तीय मिलीं रनिवास आनिवेष वरनारिकै। गावत सुराग दिव्य मंगलीक वृन्दवृन्द चलींवारि आरती सरोज पाणि धारिकै॥आनन्द अपारहोत बाजत निशानजाल सूखमा कलाप मों बखानि सो न आवतीं।सुन्दर अनूप देखि दू-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लह सुवेषराम नारि वृन्द मोदपुञ्ज हीयमध्य पावतीं ॥ भाग्यवन्त द्वारचार पर्छिकै सकल रीति आरती उतारि बारबार प्रेम छावतीं। देत पटपावड़े लवाय लाय मण्डपै सुआसन पधारि दिव्य नारि गीत गावतीं ॥ चौपैयाछन्द ॥ लखि राम स्वरूपा परमअनूपा नखशिख सुभग सुहैना। भरिनैन निहारी अमित सुखारी भइमनसा-सुसुनैना ॥ तनमन बलिहारी अरति उतारी पुनि पुनि प्रभुहिं विलोकी। अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा रहति प्रीति नहिंरोंकी ॥

दो० मिले जनक दशरथ नृपहिं सादर प्रीति समेत।
चले लिवाय सुमण्डप पहिं अर्घ पाँवड़े देत ॥

सवैया ॥ निजपाणि सुजान विदेह सबैहित बैठन आसन लायदये। सनमानि बिठाय वरासनपै पुनि पूजत प्रेम बढ़ाय भये ॥ भगवन्त बिनै बहुभांतिन कै सुखशंकुल आशिषपायलये। रघुनन्दन आननचन्द्र प्रभालखि आनन्दही समुदाय छये ॥

दो० जानि सुऔसर प्रोहितहि मुनिवर कह्यो बुलाय।
भयो समै अबकुवँरि इत लावहु वेगि लिवाय ॥

छन्दत्रिभंगी ॥ आयसु मुनिपाये तुरत सिधाये खबरि जनाये रनिवासे। मुनि प्रोहित बैना अति सुखदैना मातु सुनैना सहुलासे ॥ करि सकल शृंगारा सियहि सँवारा विविधप्रकारा शोभभली। संग सखीसयानी छविगुण खानी लै महरानीं वेगिचली ॥ सुखमा सरसाती वरणि न जाती निरखि बराती सिय आवत। अवधेश समेता सब मन जेता हरषनतेता कहिजावत ॥ यहिविधि नृपजाई मण्डप आई वरणि न जाई छविभूरी। मुनिवर बहुभांती द्विजवेदांती पढ़हिं सुसांती ध्वनिपूरी ॥

दो० कुलविचार ब्योहार करि गणपति गौरि पुजाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुनि सादर श्रीजानकिहिं दीन्हें आसन आय॥
कनककलश मणि कोपरन भरि सुन्दरशुचिपानि।
लागे धोवन रामपद मुदित राउ अरु रानि॥

कवित्त॥ जेई पदपङ्कज महेश हीय मान सर सन्तत निवास ध्यान योगी जन धारहीं। जेई पद पंकज परसि नारि गौतम कि पाई गति पावन समान पाप भारहीं॥ जेई पद पंकज सो शम्भव सरित देवपावन करणि लोक जीवन उधारहीं। भाग्यवन्त भाग धन्य जनक सुनैनिकाक तेई पांय पंकज स्वपाणि जे पखारहीं॥ जेई पद पंकज भवाब्धि घोर पोतचारु जेई पद पंकज कृतांत त्रास हारहीं। जेई पदपंकज करन पाप ताप नाश जेई पदपंकज हरत भूमि भारहीं॥ जेई पदपंकज मुनीन्द्र मनभृंग बास बदत प्रभाव वेद पावत न पारहीं। भाग्यवन्त भाग धन्य जनक सुनैनिकाक तेई पांय पंकज स्वपाणि जे पखारहीं॥ जेई पदपंकज विरञ्चि ध्याय रचैं लोक जेई पदपद्म सेइ शङ्कर सँहारहीं। जेई पद पंकज सुमिरि विष्णु करैं त्रात जेई पदपद्म ध्याय शेषभूमि धारहीं॥ जेई पदपंकज पुनीत सेइ भक्तजन पावत अमल भक्ति दानिफल चारहीं। भाग्यवन्त भाग धन्य जनक सुनैनिकाक तेई पांय पंकज स्वपाणि जे पखारहीं॥ जेई पदपंकज पुनीत कैसकृत ध्यानभये मुक्तपातकी बिलंद बेशुमारहीं। जेई पदपद्म चारु लोकन प्रकाशकार सेवत सुभाय दानि वैभवअपारहीं॥ जेई पदपंकज अधार सुर सिद्धि जालदीनन उद्धारबानि वेद जा पुकारहीं। भाग्यवन्त भाग धन्य जनकसुनैनिकाक तेई पांय पंकज स्वपाणि जे पखारहीं॥ जेई पदपंकज अनूपचारु मंगलीक ध्यावत शमन कोटि विघ्न पाप हारहीं। जेई पदपंकज सकल जग बन्दनीय विस्त्रित त्रिलोक पुञ्ज

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कीरति उदारहीं ॥ कौनभांति गावै कवि ऊपमा न आवै फवि सू-
खमा निधान जे सुलभ जीव तारहीं। भाग्यवन्त भाग धन्य जनक
सुनैनिकाक तेई पांय पंकज स्वपाणि जे पखारहीं ॥

दो० जे पदपावन देवतन दुर्लभ कोटि उपाय।
ते पदपद्म पखारहीं धनि रानी धनि राय ॥

पुनि कर तल बर कुँवरि जुराई। शाखोच्चार कीन्ह मुनिराई ॥
पाणिग्रहण होत पुनि भयऊ। मुदित देवगण दुंदुभि दयऊ ॥
सुखद मूलवर कुँवरि निहारी। रानी राय लहे सुख भारी ॥
लोक वेद विधि सादर कीन्हा। कन्यादान भूप वर दीन्हा ॥
पुनि करि होम सुगांठि जुराई। होनलगीं भँवरी सुखदाई ॥
निरखि कुँवरि बर आनँद मूला। मुदित देवनभ वरषहिं फूला ॥
विरद बदहिं बंदीजन भूरी। परमानन्द नगर नभ पूरी ॥
भाँवरि देत कुँवरि वर दोऊ। निरखि निहाल होत सबकोऊ ॥

दो० झलकत मणि खम्भन शुभग सियरघुपति प्रतिछाह।
जनु तनु धरि रति काम बहु देखत सुन्दर ब्याह ॥

यहि प्रकार शुभ भाँवरि फेरी। भये सब मुदित जाल छबि हेरी ॥
त्यहि अवसर मुनि आयसु पाई। सिय शिर सेंदुर राम लगाई ॥
कहिनजाय छबि सो रजलाला। भूषितकियेशशिहिजनुब्याला ॥
पुनिमुनि शासन लहिसियरामा। एकासन बैठे सुखधामा ॥
निरखि परम शोभा सुखदाई। दशरथ हृदय न हर्ष समाई ॥
रामब्याह सुखमा अधिकाई। कवन प्रकार कहौं मैं गाई ॥
सकल भुवन भरिरहा उछाहू। कहि न सकैं शारद अहिनाहू ॥
कहैं भगवन्त धन्य ते प्रानी। जिन सिय रामचरण रतिमानी ॥

दो० तब बिदेह नृपसन कह्यो मुनि बशिष्ठ सचुपाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ब्याह साज सजि तीनिहूं लावहु कुँवरि लिवाय ॥
मुनिवशिष्ठ अनुशासन पाई। वेगि तीनिहूं कुँवरि बुलाई ॥
नृप लघुबन्धु कुशध्वज नामा। तिनकी सुताजेठि अभिरामा ॥
गुणनिधि नाम मांडवी जोई। दीन्ही ब्याहि भरतकहँ सोई ॥
सिय भगिनी लघु परम सयानी। नाम उर्मिला छबि गुणखानी ॥
सो नृपदीन लषण कहँ ब्याही। लोक वेद सब रीति निबाही ॥
पुनि कुशकेतु सुता लघु जोई। नामजासु श्रुतिकीरति होई ॥
अति सुन्दरि नहिंजाय सराही। रिपुसूदनहिं दीन स्वइ ब्याही ॥
बर अनुरूप दुलहिनिन देखी। हरषे पुर नर नारि विशेखी ॥
दो० सहित कुमारिन कुँवर सब मण्डप एक मझारि।
राजत जनु जिय उरसहित बिभुन अवस्था चारि ॥
जनक जीव बिभु कुँवर चहुँ कुवरि अवस्था जान।
तिन सबहिनके नाम अब क्रमते करौं बखान ॥

कुंडलिया ॥ जाग्रदवस्था उर्मिला लषण विश्व विभुजानि। श्रुतिकीरति कहिस्वप्न विभु तैजस रिपुहन मानि ॥ तैजस रिपुहन मानि मांडवी सुषुपति जानौ। ताको विभुकहि प्राज्ञ भरतपुनि तुरी बखानौ ॥ तुरी बखानौ जानकी अन्तरयामी विभुमिला। रामचन्द्र सुखधामकहि जाग्रदवस्था उर्मिला ॥

राम भरत सुन्दर तन श्यामा। गौरसीय मांडवि अभिरामा ॥
गौरलषण रिपुहन तन जैसे। श्याम उरमिला श्रुतियश तैसे ॥
यथा जनक नृप जीव मझारी। बिभुन समेत अवस्था चारी ॥
बसहिं सदा तिमि एकहिं धामा। राजहिं कुँवरि कुँवर अभिरामा ॥
छबि अपार नहिं बरणि सिराई। रतिशतकोटिमदन बलिजाई ॥
निरखि निरखि पुरजन सुखभरहीं। तन धन प्राण निछावरिकरहीं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सहित दुलहिनिन सुतन निहारी। दशरथ हृदय भयो मुदभारी॥ सो सुख चुक न एक मुख गाये। जनु युत क्रियन चारिफलपाये॥ कुंडलिया॥ श्रुतिकीरति उद्यम क्रिया रिपुसूदन फलअर्थ। अनुष्ठान क्रिय मांडवी भरत सुधर्म्म समर्थ॥ भरत सुधर्म समर्थो-मिल। तपस्या जानौ। लषण काम फल भक्ति क्रिया श्रीजानकि मानौ॥ मानौ हरिको मोक्षफल यहै वेद निर्णय किया। जोरीचारु सुभग अति श्रुतिकीरति उद्यम क्रिया॥

दो० ज्यहिप्रकार श्रीरामको भयो ब्याह सुखसिंधु।
त्यहि प्रकार सादर मुदित ब्याहे तीनौं बन्धु॥
जनक राजदीन्ह्यो मुदित दायजु नृपहि अपार।
हय गय रथ भूषण बसन धनमणि मुक्काहार॥

सवैया॥ दायजु दीन जितो मिथिलापति सो सहसानन जाय न गायो। सादर श्रीअवधेशलिये पुनि याचक वृन्दन बोलिपठायो॥ दीन हिये सुखमानि सबै नृपबस्तु ज्वई ज्यहिके मनभायो। पूरण याचक बृन्दनकै उबरोधन सो जनवासहि आयो॥ मेघमघा अवधेशभये जन याचक दादुर मोरसुहाये। बिप्रन वृन्द नदी सरजाल सुबाढ़ि उमंगि चहूँदिशिधाये॥ शालिसु श्रीजनकादिक रानि कृषी परिवार प्रजा समुदाये। वर्षतवारि मणीपट भूषण रामसिया ऋतु पावसपाये॥ हरिपदछन्द॥ तब नृप जनक जोरिकर पंकज कहि सुन्दरि मृदुबानी। दान मान बहुभांति विनयकरि सब बरात सनमानी॥ मुदित प्रेम सरसाय नायशिर मुनिगण देवनवन्दे। अभिमंत आशिषपाय जनक नृप जानि सुभाग अनन्दे॥ पुनि सबंधु-नृप अवध नाथ सों जोरिजलज युगपानी। बोले सहित सनेह मनो हरि बानि सुधारससानी॥ सवैया॥ सम्बन्ध सुराजन राउर के हम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आजु बड़े सब भांतिभये। यहराज समाज समेत हमें करि भृत्य गन्यो बिन वित्त लये॥ करुणाकरि पालव नाथ सदा परचारिककै निजदारिकये। क्षमिये अपराध जुढीठि करी जनराजन बोलि इतै पठये॥ कुल पूषण भूषण भांतिभली समधी सनमान विदेह किये। नहिजात परस्परकी विनती कहि पूरणप्रेम द्विराज हिये॥ बरषै सुर शंकुल फूलमही भगवन्त महामन मोदलिये। विरदावलि बन्दि कदम्ब भनै जनवासहि भूपति पांवदिये॥

दो॰ तब मुनि आयसुपायकै सखिन सुमंलगाय।
सहित दुलहिनिन दूलहन कोहबरचलींलिवाय॥

पद॥ क्याबरणौं छबिरामबनेकी। श्यामजलद तन परम मनोहर वारनशोभ मनोज घनेकी॥ यावकयुत पदकमल बिराजत कटिपटुका पट पीतहनेकी। जामारुचिर मौर कंचन शिर अँग अँग भूषण अमल ठनेकी। भाग्यवन्त छबिजाल बिलोकत सुधि न रहत तन मन अपने की॥ सियाबर बनरा क्यासोहै। निरखि छबिमैन मनमोहै॥ चरण द्वउयावक युतराजै। मुनिन मनभृङ्ग जहँ भ्राजै॥ लसैरँग पीतशुचि धोती। तड़ित रविबाल हर ज्योती॥ सोहत कटि किङ्किणि ललित उरआयत मणिमाल। पीतजनेऊ देत छबि कर कङ्कण सुखशाल॥ मुदरिका चोर चितकोहै॥ सजैरङ्ग पीततन जामा। कमल दल नैन अभिरामा॥ कुँडल कल कान द्युतिकारी। तिलक बरभाल छबिन्यारी॥ मौर शिर कंचन छबिऐना। सकल अँगअङ्ग सुखदैना॥ श्यामजलद सुन्दर वपुष मन मोहनि शुभचाल। भाग्यवन्त अलौकि बदनवर भैनरनारि निहाल॥ सकल यकटक छबि जोहै॥ बनीबनरी जनक जाई। बना नृपनन्दन सुखदाई॥ छके छबिदेखि नरनारी। निछावरि प्राणधनकारी॥ सियातन गौर पिया

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्यामा। लजैं लखिरूप रतिकामा॥ सियरघुवर जोरी रुचिर अल्प बैस छविखानि। मोहेसुर नरनाग लखि बिनगथ हाथ बिकानि॥ सराहत सुन्दरताई॥ सखी सब मोद मनकैकै। चलींगृहकेलि सँग लैकै॥ दिये शुभ आसन अनुरागीं। करन तियगान बरलागीं॥ महामुद ऐन बिचछायो। बदन यकजात नहिंगायो॥ लहकौरि सिखावत रामकहँ गौरि सहित उरचाय। भाग्यवन्त श्रीजानकिहि सिखवत शारदमाय॥ कहैको सुखमा वहगाई॥ पार्व्वती वचन सवैया॥ बालपना मुखनारद के सुनि पावन राउर नाह पुनीतै। तादिन सों करि नेहहिये भगवन्त सदा तव मूरति चीतै॥ आजु बन्यो भल आनि सँयोग मनोरथ पूरकरौ सबही तै। राघव स्वातिजलै मधुपर्क खवावहु याचक चातक सीतै॥ आपु सनेह जुट्यो हियमें करिभूरिमया सुख संकुल दीजै। प्रीति बिचारिलियो चितसो करिये हितजासन प्रेम न छीजै॥ औसरहै यह आनँद को जनिराजकुमार सकोचहि कीजै। राघवजी मधुपर्क मिसे सिय आनन चन्द्रहि चुम्बन लीजै॥ ज्यों सहसेन सुबाहु बध्यो सुखपुंज दियो मुनिवृन्दन भारी। पंकजनाल समान दल्यो जिमि घोर कठोर पिनाक पुरारी॥ राजसभा बिच भंगकियो अभिमान यथा परशाधर भारी। त्यों रघुनन्द सँभार करयो सिय सन्मुख आजुपरै जनिहारी॥ काजहतो उत शूरनको जित शङ्करचाप सुबांहुदली है। नायकता रसकेलि इतै बरचातुरतासन कामचली है॥ हारहुगे सिय सन्मुख जो तो देहहिंगारि तुम्हैंय अली है। राउर सूधसुभाव लला फरफन्द भरी मिथिलेश लली है॥ शारदा बचन सवैया॥ जासुख जूँठनि को तरसैं बिधि शङ्कर नारद शक्र सदाई। साधत योगहि योगिसदा ज्यहिलागि करैं मुनिवृन्द उपाई॥ कागभुशुंडि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुनीतभये ज्यहि खायलही जगजाल बड़ाई। तासुख सीय सुओठन जूँठ सुमिष्ठदियो मधुपर्क खवाई॥ कानसुने यशचाह चढ़्यो चित बाग मँझारि बिलोकि अघाई। पूजन पारवतीक कियो बहु आशिरवाद लह्यो मनभाई॥ पूर मनोरथ आजुभयो सब क्यों प्रगटौ न सनेह सगाई। लैसियजू करकंज दियो रघुनन्द मुखे मधुपर्क खवाई॥ ये गुणधाम प्रवीनकला श्रुति षष्ठबली रणशत्रु दहे हैं। पांवन पांशु छुवाय किये पविनारि सुकीर्त्ति कदम्बलहे हैं॥ बालपनान कहीघरते तुव घूमिय कौशिक संगरहे हैं। चूक्योहुखेल न भोरि सिया तुम चातुरता रघुबीर गहे हैं॥ बालपना सखि वृन्दन संग य केलिअहे न गुणी गुणरासी। लाघवताकर कामअहे भगवन्त मिलै ज्यहिं जैति हुलासी॥ हारहुगी सिय जो इनके सँगतौ हित राउरि बात न खासी। देहहिंगारि तुम्हैं यअली करि हैं पुर नारि सबै सुनि हाँसी॥ कै यहिभाँति बिनोदमहा सुखमा सुख एक परै न बखानी। राम सियाछबि देखिभली अलिवृन्द सबै बिनमोल बिकानी॥ प्रीतिकिरीति अपारअहै भगवन्तसकै त्यहि सो नरजानी। जाउर भूरि कृपाकरिकै नितबासकरैं प्रभु शारँगपानी॥ एकसखी पदत्रानहिलै पटअन्तर मूँदि कह्यो मुसकाई। गुप्तअहै यह देबिलला बैठी मुखमूँदि लगौ यहिपाई॥ याकुलमें बर आवत जो इन पूजत सो दल फूलचढ़ाई। पावहुगे मनभाय फलै करिहौ इन पूजन जो चितलाई॥ यों रचना युत बैनसखी सुनिराम मनै हँसि बानि प्रकासी। पूजितहै यह देबितुम्हैं हमरेपद यासम कोटिनदासी॥ यों सुनि लालनके बरबैन भरेरसप्रेम सुदानि हुलासी। मोद अपार लह्यो रनिवास करैंछबि नैनन पान सुधासी॥ बातिमिसै बिलभाय रहीं करिमोद मई बहुभाँतिन बातैं। प्रेमपगी सुधिलाज भगी वह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

माधुरि मूरति ना तजिजातें ॥ याविधि हास बिलासहिमें सुख संयुत बीतिगई बहुरातें । लै सुबिदा सबधूटिनके जनवास पयान किये ढिगतातें ॥

दो० जनवासहिं पहुंचायकै लोकरीति करवाय।
बहुरि सखी सब कन्यकन लाईं भवन लिवाय॥

कवित्त ॥ कीनज्यवनार पुनि भूपति बरातबोलि प्रेमसों पखारि पांव पीठनै बिठायकै। हेमघट आनि भरि पूरिकै सुवारिपात्र दिये पनवार फेरि सूपकार आयकै ॥ षटरस चारि भांति ब्यंजन सँवारि दिब्य सरिससुधा के स्वादगये पर्सिलायकै । करि पंचकौर लागे जेंवन सुमोदधारि कहै भाग्यवन्त कौनभांति शोभ गायकै ॥

दो० मीठा खट्टा तिक्त कटु अम्लक अरु नमकीन।
येई षटरस जानिये भाखत सुकवि प्रवीन॥
भक्ष्यभोज्य अरुलेह्य पुनिचोष्य चतुर्विधि जान।
यकयकमें पुनि भेद बहु सो कछु करौं बखान॥
बोंदी मोदक खूरमा खाझादिक बहुखान।
चरबनवत रूखे जवन भक्ष्य भेद सो जान॥
दालि भातु अरु खीचरी मालपुवादिक खान।
सरसरुखाई रहत जिन भोज्य भेद सो जान॥
दूधदही अरु रावड़ी हलवादिक जो खान।
अधिक रसीले होतजे लेह्य भेद सो जान॥
सालन सब तरकारिका चटनी और अँचार।
चोष्य भेद सो जानिये बुधजन कीन विचार॥
जेंवत जानि बरात वर नारि वृन्द हरषाय।
लगीं देन गारी मधुर एकन एक लगाय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

समय सुहावनि गारि सुनि हरषत नृपसबरात।
जेंवत भयो प्रमोद जो सो नहिं बरणि सिरात॥
करि भोजन लै आचमन पाय पान सनमान।
जनवासहि आये मुदितसहसमाज दशयान॥
राम व्याह उत्सव परम पाव न पारअनन्त।
गिरा सुपावन हेत निज कह्यो कछुक भगवन्त॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे
श्रीरामजानकीविवाहवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः १२॥

सवैया॥ रामसिया सुखदानि सदासुमिरैं सिधिदायकहैं जग जेऊ। मंगल मोदमई युग मूरति आगम वेद न जानत भेऊ॥ ध्यावत शम्भु विरञ्चि नितै कहिनेति बखानतहैं जिनतेऊ। तापदबंदन कै भगवन्त कहै कछु गाय सुरामकलेऊ॥

कीन्ह सैन पुनि सहित समाजा। उठि प्रभात कोशल पुर राजा॥
प्रात क्रियाकरि पाथ सुपासा। नृपमणिगये मुदित गुरुपासा॥
करि प्रणाम मुनि आयसु पाई। बैठे नृप आसन हरषाई॥
बोले नृप मुनि कृपा तुम्हारी। भयउ पूर्ण अभिलाष हमारी॥
एक मनोरथ अब मनजागा। पूरण करहु सुकरि अनुरागा॥
विप्र वृन्द अब लेहु बुलाई। तिनहिंदेहु बहुविधिसजिगाई॥
सुनि मुनीश द्विज वृन्द बुलाये। आये लखि नृप पदशिरनाये॥
करि सन्मान सुधेनु मँगाई। सकलप्रकार सुसाज सजाई॥

दो॰ दीन्हे नृप सादर द्विजन बहुविधि विनय सुनाय।
भये मुदित मनभावती द्विज मुख आशिषपाय॥

पुनि याचकन बोलि नृप लीन्हा। मनभावतो दान तिनदीन्हा॥
भये मुदितमन सुखन समाई। रुचि अनुहारि दान वर पाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जयजय करहिं कुलाहल होई। अतिआनन्द मगनसबकोई ॥
इहां जनक निज सुवन बुलाये। सहित सखनलक्ष्मीनिधिआये॥
कीन्ह प्रणाम चरण शिर नाई। बोले नृप लखि गिरासुहाई॥
तात वेगि जनवासहि जाहू। राजत जहँ दशरथ नरनाहू॥
विनय सुनाय रजायसु पाई। करन कलेऊ हित सुखदाई॥
लावहु चारिहु कुँवर लिवाई। सुनि लक्ष्मीनिधिपदशिरनाई॥
दो० सादर सखन समेत तब ह्वै बाजिन असवार।
चले तुरतसानंदमग कौतुक करत अपार॥
आये जहँ जनवास बिराजा। बैठेदशरथ सहित समाजा॥
बिभव अपार वरणि नहिं जाई। देखि जाहि सुरराज सिहाई॥
उतरि तुरँग ते सखन समेता। कहिनजाय उर आनँद जेता॥
अवधनाथ कहँ जाय जुहारे। सखन सहित मिथिलाधिपवारे॥
नृप गहिपाणि निकट बैठाये। लखिछबि सकलसभासुखपाये॥
तब श्रीनिधि भूपति रुखजानी। जोरिपाणि बोले मृदुबानी॥
चारिहु कुँवर सुभाय सुहाये। करन कलेऊ भूप बुलाये॥
सो मम बिनय मानि अब लीजै। राजकुमारन आयसु दीजै॥
दो० सुनिलक्ष्मीनिधि बैनमृदु सादर सुतन बुलाय।
जाहु कलेऊ करन हित कहेउभूप हरषाय॥
सुनि पितुआयसु चारिहु भाई। सखन समेत उठे हरषाई॥
भूषण बसन सकल तनसाजे। छबिअवलोकि मदनशतलाजे॥
बाजिन फांदिभये असवारा। सानुज सब रघुबंश कुमारा॥
ज्यहि तुरङ्गपर राम सवारा। त्यहि छबिकहै कौनकबिपारा॥
मणिमय भूषण अमित बिराजैं। हरि हरि छबिलखिहरि हरिलाजैं॥
चलत कलामग कोटिन करई। जलथलअनलअनिलनहिंडरई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कबहूँ उड़ि अकाश को जावै। निजशोभा सब सुरनछकावै॥
बेग अपार मरुतगति हारै। चलत चरण जनुभूमि न धारै॥
दो० जगबन्दन रघुनन्द को बाजि मनोहर देखि।
अमर नाग नर सिद्ध मुनि मोहित भये बिशेखि॥
भरतबाजि छबि बरणिन जाई। समुद सुमुद सब लोगनदाई॥
चञ्चल सुभग जासुबर चाली। करत निहाल सकलसुर आली॥
झमकिझमकि जबचलतउतालैं। पटल प्रभासम चमकहिंनालैं॥
अमित कलोल करत मगमाहीं। बनत एकमुख बरणत नाहीं॥
रिपुसूदन करबाजि बिशाला। चम्पानाम ललित बलजाला॥
त्यहि छबिसकल सभामहँन्यारी। चलतचालु लागत अतिप्यारी॥
लषण लालकर लक्खी घोड़ा। जगमहँ जासु आननहिं जोड़ा॥
अति बांकुरो चलत छबि देवै। सुर मुनि जनन चोरि चितलेवै॥
दो० लषणलालको बाजिबर अनुपम कला दिखाव।
ज्यों पावस घनघोर लखि नाचत मोर सचाव॥
अपर जिते रघुवंश कुमारा। ते बर बाजिन सकल सवारा॥
कौतुक अमित करत मगमाहीं। सहित प्रमोद चले सबजाहीं॥
राम बाम लक्ष्मीनिधि राजै। लिये संग निज सखासमाजै॥
छबिअवलोकि अमित सुरहरषैं। जै जै करत सुमन बहुबरषैं॥
यहिबिधिसखन सहितरघुनन्दन। पहुंचे जनकनगर जगबन्दन॥
पुरतिय निरखि रामछबि ऐना। श्याम शरीर सुजन सुखदैना॥
सोहत शीश मौर अभिरामा। भालतिलक मंजुल छबिधामा॥
अलकझलकलखिपलकन परई। आननप्रभा चन्द्रद्युति हरई॥
दो० नवपंकज लोचन अमल भृकुटी कुटिल बिशाल।
श्रुति कुंडल नासारुचिर दशनओष्ठ छबिशाल॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मृदुल हासबर सुन्दर बोला। सोहत उर मणिमाल अमोला॥
ब्याह बिभूषण सकल सुहाये। अङ्ग अङ्ग प्रति अति छबिछाये॥
नारिवृन्द नख शिख लखि शोभा। प्रेमबिबश तन मन छबिलोभा॥
लाज काज गृह सकल बिहाई। निरखहिं रामरूप सब धाई॥
प्रभु मुख देखि परमसुख पावैं। तन धन प्राण सकल निउछावैं॥
बोली कउ ये दशरथ बारे। क्यहिकारण इत जात सिधारे॥
यह सुनि अपर कह्यो मृदुबानी। पठये बोलि इनहिं नृप ज्ञानी॥
करन कलेऊ हेतु बुलाये। लक्ष्मीनिधि सँगजात लिवाये॥

दो० धनि धनि सजनी भागबड़ हमसबकर यहआज।
जो भरिनैनन दीख छबि रघुकुल मणि शिरताज॥

ज्यहि कारण मुनिजन समुदाई। नानासुख सब भोग बिहाई॥
करहिं कठिन तप योगहि साधैं। निशिदिन हृदय रूप अवराधैं॥
सन्तत जाहि शम्भु उर धरहीं। ब्रह्मादिक सुर सुमिरण करहीं॥
आगम निगम जासु यश गावैं। अगजगमय कउ पार न पावैं॥
सो प्रभु कृपासिंधु रघुनायक। निज भक्तन सन्तत सुखदायक॥
हमसब सादर नयनन देखी। भयनि कृतारथ रूप विशेखी॥
धन्यभाग्य मिथिलाधिप बेटी। जो मिलिहै इन भुजन समेटी॥
सुनि इमि वचन श्रवण सुखदाई। बोली अपर सखीसचुपाई॥

दो० भलो बनो संयोग यह चलिये भूपति ऐन।
हंसि हँसाय अवलोकि छवि सफलकीजिये नैन॥

यहिप्रकार सब मनहिं दृढ़ाई। चलीं मुदित नृप भवनसिधाई॥
सखा अनुज युत इत श्रीरामा। पहुँचे भूप द्वार अभिरामा॥
सुनि सिय मातु परमसुख मानी। बोलि सुवासिन तुरत सयानी॥
सजि आरती अनेकप्रकारा। विविध भांति मंगल भरिथारा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मंगल गान करत समुदाई। परिछन करन चलीं हरषाई॥
जाय निकट रघुवर छवि देखी। भईं सकल बसप्रेम विशेखी॥
सासु हृदय सुख भयउ अपारा। निरखिरूप दूलह सुखसारा॥
करि आरती सुमंगल गाई। परिछन कीन कुंवर सुखदाई॥
॥ दो० तब लक्ष्मीनिधि तुरँगते उतरि सहित आनन्द।
॥ सखनसमेत उतारयऊ सानुज रघुकुलचन्द॥
चले लिवाय मुदित निजसाथा। सहितसभा जहँतिरहुति नाथा॥
रामहिं देखि अनुजयुत आवत। उठे तुरत निमिवंशी यावत॥
अनुज सखन युत अवध दुलारे। जनकराय कहँ जाय जुहारे॥
करि आदरबहुविधि अधिकाई। भूपति लिये निकट बैठाई॥
नखशिख रामरूप छवि देखी। सभासहितनृप मुदित विशेखी॥
कछुक देर बैठे नृप पासा। पुनि लक्ष्मीनिधिआयप्रकासा॥
भीतर चलहु बुलावहिं रानी। करन कलेऊ हित सुखदानी॥
सुनत वचन नृप आयसु पाई। सखन समेत चले चहुँ भाई॥
॥ दो० आवत राजकुमार लखि उठीं रानि हरषाय।
॥ करि सन्मान अनेकविधि लाईभवन लिवाय॥
चारि सिंहासन मंजु सुहाये। बरणि न जाहिं अमितछविछाये॥
तिनमहँ चारिहु कुँवर अनूपा। बैठाये गहि कर सुखरूपा॥
आसन अपर अनूपम आनी। दीन्हे सखन सहित सुदरानी॥
राम श्याम तन लखि छविऐना। प्रेम विवशभईं सासुसुनैना॥
यकटक चितवत प्रभु मुख ओरी। ज्योंदिशि पूरणचन्द्र चकोरी॥
प्रेम मगन तन दशा भुलानी। गदगद कंठ नैन ढरु पानी॥
पुनि धरिधीर सुनैना रानी। कंचनकलश बारि शुचिआनी॥
सुख कर पाद प्रछालन कीन्ही। लै पटअमलपोंछि पुनिलीन्ही॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ तब सप्रेम बानी मधुर कह्यो सुनैनासासु।
उठहु कलेऊ कीजिये जो रुचिहोवै आसु॥

सुनि प्रिय बचन सुराम कृपाला। उठे सखानुज सह ततकाला॥
मुदित रानि सँगचली लिवाई। अति सुन्दर पीढ़न बैठाई॥
सहित प्रीतिलै कंचन थारी। षटरस ब्यंजन विविध सवाँरी॥
अति आदर परस्यो सबकाहू। प्रभुआगे धरि सहित उछाहू॥
बोली सासु मधुर मृदुबैना। जेंवहु मैं बलि राजिवनैना॥
नेग विचारि हरष हियभारी। मणि मुक्ताधरि सबहिनथारी॥
नेगपाय निज कृपानिकेता। सहितअनुज सबसखनसमेता॥
जेंवनलगे कुवँर बर चारी। सखि सब देनलगीं मृदुगारी॥

दो॰ जेवतजानि कुमारवर सखिन हर्ष हियधारि।
लगींदेन श्रीरामको ब्यंगवचनमें गारि॥

गारी छन्दहरिपद॥ जेंवत राजकुमार चारिहू निरखि अली अनुरागीं। हासविलासभरे मृदुबैनन गारिदेन सबलागीं॥ सुनिये राजकुवँर रघुनन्दन बहिनि तुम्हारी कैसी। शृङ्गीऋषिहि ब्याहि ज्यहि दीन्ह्यो कहौ बात फुरि जैसी॥ करत ब्याह निजजाति माहिं सब यह अयोग्य रघुनाथा। कै मुनिराज भगे लै उनको धौं लागीं वै साथा॥ बोले लषणलाल तब हँसिकै सुनहु बैन ममप्यारी। कर्मलिखा कइ मेटिसकैना देखहु आपु विचारी॥ जनकविरक्त जक्त सबजानै हमहानि राजकुमारा। तिनके भवन ब्याहभे हमरे तबकहँ रह्यो विचारा॥ सुनिलजाय मुसकाय नवेली बोली अपर सुबानी। और सुनी यकबात लालजी कहौ सत्य सुखदानी॥ तुम्हरे कुल कउ भूपरूप नर गर्भधर्‌यो उरमाहीं। जायो सुवन मानधाता जिन साँसुअहै की नाहीं॥ औरौ सुनि यकबात लालजी हँसी हमारे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आवै। तुम्हरे देश खाय तिय पायस सुवन अनूपम जावै ॥ पति संयोग तनको नहिं चाहत कहौ बात किमिआहै। सुनत सखीके बैन चैनधरि कह्यो बिहँसि सियनाहै ॥ मातु पिता बिनु कोउन जन्मै जगप्रसिद्ध श्रुतिगावै। तुम्हरे तौ यहरीति अनोखी महिते सब उपजावै ॥ सुनि उत्तर मुसक्याय पाय सचु अपरसखी पुनि बोली। रघुराजाकी सुता लालजी कउ यकरही अमोली ॥ चन्द्रा- वति शुभनाम तासुको विदितअहै सबठायो। बिनब्याही तिन गर्भ भरी उर नाशकेतु सुतजायो ॥ इमि तुम्हरे कुल रीति रावरे और सुनौ यकबाता। तात मात द्वउ गौर तुम्हारे तुमकस श्यामलगाता॥ अतिसुन्दर यहरूप आपु किमि कहौ लाल कहँ पायो। कै तव मातु कामपति कैकै तुमहिं अनूपम जायो ॥ सुनत वचन बोले रघुनायक जो जैसो है ताको। तैसहि परै बिलोकि सकलजग ज्यों सावन अन्धाको॥ सुनिबोली कउ सखी लालजी रह्यो मुनिनके साथा। इमि बातैं फरफन्दभरी किमि गईं आइ तवहाथा ॥ कह्यो भरत तुम अबै कुमारी कहाँसिख्यो इमिबातैं। घरहीमाहिं अनुज सँगपरिकै पढ़्यो चतुरताघातैं॥ एककह्यो इन रूप अनूपम निरखि परम मनुहारी। ह्वै मोहित बशकाम पास इन गई ताड़ुकानारी॥ सपस्यो नहीं काज कछु इनते विवश लाज त्यहिमारी। कह्यो श- त्रुसूदन हे प्यारी सुनिये बात हमारी ॥ जो तुम्हरे मनहोइ सँदेहू जनि पछितावन कीजे। हम सब बैठे सदन तुम्हारे लै सुपरीक्षा लीजे॥ सुनि रिपुहनकी बैन चातुरी बोली सखि मुसकाई। पिता तुम्हारे सूध लाड़िले सूधि सुमित्रामाई ॥ तुम चातुर क्यहि भाँति भयो है यह कछु फेर अहावै। हमैं जानि असपरत मातु तौ किये चतुर असनावै ॥ यहि विधि देहिं वचन मृदुगारी सुनहिं सकल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सचुपाये । करिकै अशन अँचै पुनि सानँद निज निज आसन आये ॥ तब उठि सखिन प्रेम उरभरिकै सादर पानखवाये । भाग्य-वन्त लखिरूप रामको जीवन फलसब पाये ॥

दो० रामचन्द्र मुखचन्द्र वर सखिजन सरिस चकोरि ।
यकटक रहीं बिलोकि छबि हृदय प्रीति नहिं थोरि ॥

त्यहि अवसर श्रीनिधि की नारी । सिद्धिनाम पति प्राण पियारी ॥
जो सरहज रघुनायक केरी । सब गुणधाम रूप मैं हेरी ॥
अलबेली नहिं जाय बखानी । प्रीति रीति महँ परम सयानी ॥
सखिन समेत तहाँ सो आई । भरी उमंग अंग समुदाई ॥
निरखि रामसुख पंकज शोभा । प्रेम भरा मन अलि रसलोभा ॥
स्वकर पाणि धरि राजिव नैना । गई ल्यवाय मुदित निज ऐना ॥
अति सुन्दर आसन बैठाई । बिबिध भाँति कीन्ही सेवकाई ॥
सखिगण निरखि राम सुखभरहीं । निज निज रुचि सेवा सबकरहीं ॥

दो० औरहु जे नृप कन्यका आई न्यवत विवाह ।
सिद्धि सदन गमनीं सकल राम मिलनकी चाह ॥

रामहि नखशिख जाय निहारी । भई प्रेम बश सब सुकुमारी ॥
हरि सनेह अनुरागिनि जानी । सादर सिद्धि सबहिं सनमानी ॥
बैठीं मुदित प्रेम रस पागी । निरखहिं रामरूप अनुरागी ॥
ज्यहिदिशिप्रभुचितवहिंमुसकाई । भृकुटी कुटिल सुचाप चढ़ाई ॥
बाण कटाक्ष ताकि हनिमारैं । निकसैं काटि हियो वहिपारैं ॥
घायल गात बिकल ह्वै जाहीं । रहत सँभार देह कछु नाहीं ॥
प्रेम सु बिष ब्याप्यो सब जामा । छूट्यो लाज काज धन धामा ॥
यह न कछू प्रभुता बड़िगाई । मोहन विश्वरूप रघुराई ॥

दो० पुनि धीरज धरिकै सकल सादर भरीं हुलास ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रेम उमगि श्री रामसों करन लगीं अलिहास॥
बोली कउ यक सखी सयानी। सुनहु राम दुल्लह छबिखानी॥
सुनियत तुम्हरे कुल कउ भूपा। भयो पुरुष ते नारि अनूपा॥
भोग कीन तिन सँग निशिराई। तिनयक पुत्र अनूपम जाई॥
कहिये साँचु अहै यह ताता। सुनि तिय अपर कहै मृदुबाता॥
हमहूं एक बात सुनि पाई। ब्याहन समय तुम्हारी माई॥
लै भाग्यो दशमुख निशिचारी। लोलुप नीच निरत परनारी॥
त्यहि पुनि पिता तुम्हारे ब्याही। कहिये साँचु अहै की नाही॥
और बात यक जगत प्रकाशी। केकै सुता परम छबिराशी॥
दो० नारद मुख सुनि तात तव विवश काम अकुलाय।
ब्याहे त्यहिं करि छल अमित कालीदेव पठाय॥
यहिबिधि अमित हास मै बाता। भई तुम्हारे घरमें ताता॥
सुनियत दशरथ रानि सुमित्रा। जन्मी यकसँग द्विसुत विचित्रा॥
यकसुत जन्मत गति जो हाई। कहै कौन जानै तिय सोई॥
द्वै सुत एक संग तिन जायो। प्रसव बाट उन कितिक बढ़ायो॥
यहिबिधि करहिं हास सबबाला। बिलग न मानहिं रामकृपाला॥
तिन्हकी रुचि राखनके हेता। देहिं उतर नहिं कृपानिकेता॥
निरखि निरखि रघुबीर सुभाऊ। सखिसब लहहिंपरम मनचाऊ॥
ज्यहिउर रही लालसा जैसी। प्रभुसन किये भावना तैसी॥
दो० रसिकराज रघुबंशमणि प्रीतिपाल छबि ऐन।
राखी रुचि सब तियनकी कृपासिन्धु सुख दैन॥
सब तिय राम प्रेमरस पागी। परवश भई देहसुधि भागी॥
सिद्धि कुँवरि बोली मृदु बैना। सुनहु बचन मम राजिवनैना॥
हम निज ननँद मिलावातुमको। देहु नेग मनभावत हमको॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नतरु जन्मभरि बनिये दासा। सुनि राघव मृदु बचन प्रकासा॥
हम क्षत्री सेवा नहिं कीन्हा। औरनते निज कारज लीन्हा॥
बनिहैं सो न करत सुकुमारी। देबनेग रुचि जवन तुम्हारी॥
निज मन भावत लीजे मांगी। बोली सिद्धि कुँवरि अनुरागी॥
राजकुँवर सुन्दर सुरत्राता। देहुनेग यह म्वहिं सुखदाता॥

सवैया॥ भव प्राणप्रिया सुखधामसदा जन रञ्जन सन्तत भक्त हितै। बिनु कारण दीनदयाल प्रभो दुख दासन मेटत कोर चितै॥ गुण पुञ्ज सुपावत पार न वेद बखानत कोटिन कल्प बितै। यह रूपबसो भगवन्त हिये ससमाज कृपाकरि रामनितै॥

दो० एवमस्तु कहि बचन मृदु बोले राम सुजान।
देहु बिदा प्यारी हमैं ह्वैहहि अवध पयान॥

सुनि प्रभु बचन बिरह रस पागे। बाण समान तियन उर लागे॥
विवरण दशा कढ़त नहिं बानी। सहमि सूखिगइँ सकल सयानी॥
समय बिचारि धीर धरि भारी। बोली बचन सिद्धिसुकुमारी॥
राजकुँवर रघुबर चित चोरा। सुर मुनि बनज बनन रबिभोरा॥
प्रथम प्रीतिके बश करिलीन्हा। अबक्यहिकाजदयातजिदीन्हा॥
हम तजि आपु अवध जो जैहैं। तौ क्यहिभांति प्राण मम रैहैं॥
लोकलाज कुलकानि बड़ाई। सबतजि तुमहिं प्रीति हमलाई॥
सो न तजब तजबै बरु देहा। सुनहु राम मम प्रण दृढ़ येहा॥

दो० कठिन प्रीतिकी रीतिहै ताहि न करिये काहु।
जो करिये तौ जन्मभरि चहिये करन निबाहु॥

अहै कठिन अतिप्रीति कि रीती। स्वइ जानै ज्यहि ऊपर बीती॥
अपर कहा क्अउ जानै हाला। जिमिदुख प्रसव बांझबरबाला॥
ज्यहिसनजाहि प्रीति लगिजावै। त्यहितजि ताहिआननहिंभावै॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आठौपहर मीतकी मूरति। भूलतिनहिं त्यहिरहतबिसूरति॥
बिनु देखे मित्रहि निज नैना। एकौ क्षण न लहत मनचैना॥
तनते अधिक मित्रहै प्यारा। त्यहिकिमिकहौ करैकोउन्यारा॥
वैसाहि कऊ अदरदी होवै। मित्र बिरह जो सुख सों सोवै॥
त्यहिते राजकुँवर सुनि लीजै। बिरह बियोगहमहिंजनि दीजै॥

दो० प्रीति कठिन संसार में जो दीजै करतार।
तौ न्यारो जनि कीजिये आपन प्रीतम यार॥

सवैया॥ जाय बसै बरु काननमें तजि भोग विषै जगको सुख सारो। ज्वाल त्रिताप जरै बरुआप कलापसहैं दुख दारिद भारो॥ जीवनते बरु मृत्यु मिलै तजि स्वर्ग परै चहु नर्क मँझारो। पै भगवन्त करै करता न कबौं प्रियप्रीतम आपनन्यारो॥ लाजहु काज छुटै धनधाम अराम बहै कुलकानिहु टूटै। धर्म्महु कर्म्म तजै सगरे दुख भूरिसहै यमकिंकर कूटै॥ योगहु ध्यान बिराग छुटै ठग मोह मदादिकते धन लूटै। पै करतार कृपा करिदे भगवन्त कबौं निज मित्र न छूटै॥ त्यागिसुखै सब प्रेम मदांध फिरै जगमाहिं सहैबहु सोगू। आदर मान घटै सब ठावरु शत्रु बनैं सगरे गुरुलोगू॥ जातिहु पांति सुजाति रहै घर नीचन मांगि करै बरुभोगू। पै भगवंत न दे करतार कबौं निज प्रीतम यार बियोगू॥ होत सुखौ दुख मूल सबै क्षणएक लहै कहुँ चित्त न चैना। खानहु पान रुचै न कछू जितहेरि तितै निज हित्त लगैना॥ झूलतिअन्तर मीत कि मूरति सूरति नैननते सुकढ़ैना। ताहि कबौं सुख स्वप्न नहीं बिछुरै ज्यहि मित्र प्रिया सुख देना॥ ऊँचहु नीच बिचार नहीं कछु प्रीति गई ज्यहिसों जब लागी। ताराँगमें रँगिजात स्वई रहिजात नहीं पुनि अन्त दुजागी॥ भावतहै मन वाहिसदा भगवन्त रहै मतिस्वै रति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पागी। तासु बियोगकरै बिधि जो बसुयाम दहै खलु सो बिरहागी॥

दो० ताते हम बिरहीन को सुनिये राजकिशोर।
बिरहानल जनि दाहिये प्रीतिपाल बरजोर॥

सवैया॥ करिप्रीति स्वछन्द कियो पहिले अब प्रेम कि ग्रन्थि सुछोरियना। यमिलाप अमीरस प्यायलला सुबियोग हलाहल घोरियना॥ दय बांह निबाहन पारचही मैंझधारहिमें हरिबोरियना॥ भगवन्त बढ़ाय सनेह लता प्रतिपालकरौ त्यहितोरियना॥ हम चांतक स्वाति पयोद सदा सुख बुन्दनते मुख मोरियना। अबलाकरि भोरि अजोरि लिह्यो चितजोरि मरोरि सुतोरियना॥ यह प्रेमकफंद अनन्द मई गरडारि लला झकझोरियना। भगवन्त हमैं सुखदै करिकै पुनि निर्दय ह्वै त्यहि छोरियना॥ यह प्रीति कि बाग लगाय भली सरसाइय सींचि सु तोरियना। प्रतिपालक प्रीति सुनी तुमको त्यहि जोरि भली बिधि फोरियना॥ भगवन्त प्रभानन चन्द्र अमीरस नैनन प्याय अजोरियना। अबला बलहीन बिचारि हमैं हरि प्रेम पयोनिधि बोरियना॥

दो० लगन लगी तौ लगिगई अब नहिं छूटन हार।
ज्यहि त्यहि बिधि निरबाहिये सुनिये राजकुमार॥
रसिकशिरोमणि रावरो भक्त कुमुद बन चन्द।
कबहुँन सुरति बिसारिये हम अबला मतिमन्द॥
सिद्धि आदि सबतियनकी बरणि सकैको भागि।
ऐसे प्रभुसन नेह जिन किये कपट छल त्यागि॥
नेह सरिस संसार में नहिं दूजो कछु आन।
बिना नेह नहिं मिलत हैं कृपासिंधु भगवान॥
नेह तो ऐसो चाहिये ज्यों पानी अरु क्षीर।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जहाँ बिकै तहँ आपने भाव बिकावै नीर॥
पावक जब जारन लगै प्रबल कोप करि क्षीर।
निज प्रीतम दुख देखिकै आपु जरावै नीर॥
नीरहि जरत बिलोकिकै पुनि पुनि पै उफलाय।
ऐसी जलपै प्रीति लखि नेहीजन बलिजाय॥
बिना नेह निर्छल किये कबहुँ मिलै नहिं पीव।
पीव मिले भगवन्त बिनु सुख न लहै यह जीव॥
ताते सब छल त्यागिकै हरिसन करिय सनेह।
धरिये उर मूरति स्वई जिन दीन्ह्यो यह देह॥
सुनि इमि आरत बनितन बानी। सरल सनेह प्रेम रससानी॥
कृपासिन्धु रघुपति सुर रञ्जन। बोले बचन भक्त भय भञ्जन॥
सुनहु प्रियहु निज कहौं सुभाऊ। नहिं राखौं कछु तुमहिं दुराऊ॥
मोसन प्रीति करै जो कोई। ऊँच नीच चाहै सो होई॥
प्राण सरिस राखौं सो प्रानी। गहौं सुगुण सब अवगुणभानी॥
यह हमारि संतत है रीती। जानहिंते जिन कीन्ही प्रीती॥
जो हमसन दृढ़ प्रीति लगावै। स्वप्नेहु सो न तनक दुखपावै॥
अपर जिते प्रेमी जगमाहीं। निर्छल प्रीति काहुमें नाहीं॥
दो० सूर कमल अरु चातकी स्वाती चंद्र चकोर।
अम्बुमीन अरु पाँखियाँ दीप शिखा घनमोर॥
मित्र मित्र पंकज प्रिय अहई। जबत्यहिं समय पाय हिमिदहई॥
तासु पीर रवि तनक न जानै। इमि प्रीतम कर को यशभानै॥
चातक पीव पीव रटलावै। पीव बिरह निज प्राण गँवावै॥
पीव न जीव दया कछु धरई। ऐसी प्रीति दैव जनि करई॥
चितवत शशिहि चकोर रहावै। खान पान सब सुधि बिसरावै॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तासु प्रीति नहिं चंद्र बिचारै। अपनी बिरह ताहि नित जारै॥
बिछुरत जलहिं मीन मरिजावैं। तद्यपि जल उर दरद न आवै॥
जरत पतंग प्रेम बशदीपै। जारत सो न दया धर जीपै॥

दो० निज प्रीतम घन मोद लखि नाचत कानन मोर।
सो नहिं हेरत तासु दिशि मारत पाहन घोर॥
प्रीतिवंत ऐसे बहुत हम देखे संसार।
यक तौ तनमन दै रह्यो एक दया नहिंधार॥

हमरी प्रीति अहै असिनाहीं। जैसी कछु इन प्रेमिन माहीं॥
हमसन प्रीति रीति जे करहीं। एकौ क्षण न ताहि परिहरहीं॥
मम मित्रहि दुख देन जु चाहै। सोदुख वह खल आपहि साहै॥
तजि सब आश हमहिं रतिलावै। ब्रह्मादिक त्यहि शीश नवावै॥
निज तन तातन भेद न राखौं। त्यहितजि एकश्वासनहिंचाखौं॥
तन धन अरु त्रिभुवन सुखसारे। येनहिं लागहिं म्वहिंतसप्यारे॥
जसकछुम्वहिं निज प्रियासनेही। म्वहिंतजिनाहिंआनगतिजेही॥
अस प्राणी म्वहिं बिसरत नाहीं। बसत सदा सो मम उरमाहीं॥

दो० जप तप योग मखादिते मोहिं सकै नहिं पाय।
पर यक प्रेमी जननते चलत न मोर उपाय॥

तुम सब प्रिया प्रेमकी मूरति। धनि धनि धन्य तुम्हारीसूरति॥
प्राण समान हमहिं तुम प्यारी। कबहुँ न ह्वैहहु मोसन न्यारी॥
सदा बसैं हम तुम्हरे पासा। मानहुँ प्रिया बचन बिश्वासा॥
स्वर्ग पताल भूमि दिशि चारौ। करि मनथिरज्यहिओर निहारौ॥
अग जग मै त्रिभुवन सब ठाईं। केवल हमरहि रूप दिखाई॥
सुनि प्रभु बचन ध्यान उरआनी। सिद्धिआदिसब कुँवरिसियानी॥
बढ़्यो प्रेम मन धीरज कीन्हा। रामश्याम छबि उरधरिलीन्हा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बहु बिधि करि रघुबीर बड़ाई । पुनि बोलीं सब अलिसचुपाई ॥

दो० धन्य धन्य रघुनाथ हम आपु कृपा बड़िकीन ।
बूड़त सागर जगत में राखि बाँह गहि लीन ॥
हम अबला संतत अबल करि न सकैं उपकार ।
रवि सम कबहुँ कि होवही जुरै जुदीप हजार ॥

सवैया ॥ जन्म जहां ज्यहि योनि बिषे बस कर्म बिरश्चि कृपा करि देही । आनिपरे दुखहू सुख जो हित मानि सबै शिर सोसहि लेही ॥ और कछू चितचाह नहीं भगवन्त उरास अहै यक येही । राजिव लोचन राम मिलौ तुमहीं तहँ आपन प्राण सनेही ॥ लागि सदा तुम सों रतिहै गतिहै उर अंतर औरन केही । जानतहौ सब जानशिरोमणि कानधरौ बिनती मम येही ॥ कर्म्म प्रभाव जहाँ भगवन्त लहौं जग जन्म तहाँ तनतेही । राजकुमार मिलौ तुमहीं नित राजिवलोचन राम सनेही ॥ ज्वैकरतार दियो करि छोह महा यह मोदपियै भरि घूंटै । दुर्लभ देवनरूप ज्वई त्यहि नैन निहारि हिये सुख लूटै ॥ स्वैकरतार कृपा करिदे जयवार चहैं तित यातन छूटै । पैप्रभु सों यह लागिलगी भगवन्त सु कौन्यहु जन्म न टूटै ॥

दो० सुनि सभेस बाणी मधुर रामकृपा सुख ऐन ।
सन्माने बहुबिधि सबहि कहि प्रिय सुन्दर बैन ॥
पाय विदा सब सों बहुरि आये सासु समीप ।
बन्दि चरण लहि आशिषा गमने रघुकुल दीप ॥
द्वार आय मिथिलाधिपहि बन्दि रजायसुपाय ।
जनवासे गमने मुदित सहित सखन चहुँभाय ॥

हरिगीतिका छन्द ॥ चहुँ बन्धु सानँद सखन युत असवारवर बाजिन भये । पग देत लोचन लाहु सबको आइ जनवासहिगये ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शिरनाय कीन्ह प्रणाम भूपहि निरखि नृप सुख पायऊ। भगवन्त दै आशीश बहुबिधि हरषि ढिग बयठायऊ॥

दो० रामचरित अद्भुत अमित अमितकहत श्रुतिसन्त।
बरणिसकै सोकौन बिधि अतिमति लघु भगवंत॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतासिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेश्री
रामचंद्रकलेवाकरणवर्णनोनामत्रयोदशोऽध्यायः १३॥

सो० सघन कंद तनश्याम चन्द्रानन पंकज नयन।
त्यहिपद करौं प्रणाम भवभय भंजन नाम ज्यहि॥
दलनमोह तम घोर दानि मुदासुर सुर सुजन।
दशरथराज किशोर बन्दौं पुनि पुनि नायशिर॥

दो० नित नव आदर सहसविधि करैभूप मिथिलेश।
प्रेम विवश अवधेश को जानदेत नहिं देश॥

सवैया। मांगहि राउ बिदा उठिकै नित राखहिं भूप समेत सनेहू। भूरि उछाह बढ़्यो मिथिलापुर राजन गौन सुहाय न केहू॥ जाय सतानँद कौशिकतौ समुझाय कहे बहुभांति बिदेहू। बीति गये बहुवार इतै अब कोशलपालहि आयसुदेहू ४॥

दो० भलेहिनाथ कहि जनकनृप सचिवहिकह्यो बुलाय।
कौशलपति चाहतचलन भीतर देहु जनाय॥
सत्यगमन सुनि अवधपति मिथिलापुर नरनारि।
भये बिकल पंकज यथा बिछुरत सांझ तमारि॥
तीनिमास मिथिला नगर दशरथ कीन निवास।
ताते दुउ दिशि सकलजन फँसे प्रेमकी फाँस॥
आवत पंथ बरातबर जहँ जहँ कीन्ह निवास।
पठै दीन तहँ तहँ जनक बहुविधि भोग बिलास॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुनि सानन्द जनक महराजा। विविधभांति दायजु बहुसाजा॥
दिग्गज सहस पचास सजाये। जिनहिंदेखिदिशि नागलजाये॥
श्यामल अंग पुष्ट दंतारे। दीरघ मत्त पुंज बलभारे॥
कसी जरकसी मंजु अँबारी। झूलि रहीं झूलैं छविकारी॥
मणि मुक्ता मै झालरि राजैं। बरणि न जाहिं करिणकीसाजैं॥
गाजहिं गज घंटा घहराहीं। रहीपूरि रव त्रिभुवन माहीं॥
तुरँग लाख दश नखशिखसाजे। रथ बाजिन ते अधिक बिराजे॥
चंचल नवल बपुख निरदूषण। भूषण द्युति किरणी जनु पूषण॥
मन मारुत ते वेग अपारा। बरण बरण बरणै को पारा॥
अरुण पीत सित नील गुलाबी। लक्खी हरित सुऊदी आबी॥
दश हजार स्यंदन सजवाये। भानु यान उपमा नहिं पाये॥
बृषभ बृन्द दशलाख सँवारे। अति सुन्दर सब गुणगण भारे॥
महिषी लाख सत्तानबे साजी। देखत जिनहिं होत मन राजी॥
मनहुँ श्याम घन सुवन सुहाये। नभते उतरि चरन महि आये॥
कंचन मढ़ित शृंग छबि जारा। सोहत कण्ठ मणिन के हारा॥
शिशु सुकुमार लिये सँग प्यावैं। दूध धार धरणी धसि जावैं॥
यककरोरि चौरासी लक्षा। सजीं धेनु सोहत सँग बक्षा॥
कामधेनु सम सब फलदानी। सूधी परम दूध की खानी॥
सबहिंन सुबरण शृंग मढ़ाई। मुक्ता पूँछ रजत खुर लाई॥
अंग अलंकृत सकल विशेखी। को छबि कहै जान जिन देखी॥
लक्ष बहत्तरि शिविका साजीं। तिनपर सियदासी सब राजीं॥
भइजनु काम बाम असवारा। सबतन करि षोडश शृंगारा॥

छप्पै॥ उबटन मंजन चीर चरण जावक सजिवारै। लेपन मलै सिंदूर मेहँदी वेसरि धारै॥ अरगजारु शुभ गन्ध नयन अंजन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शृक फूलैं। पटुता मिस्सी लाय खाय आनन ताम्बूलैं॥ इतिसाजि मनोहर नवलतन षोडश बिधि शृंगारकल। भईंचढ़त मुदित शि-विकन सुभग प्रियदासी सियकी सकल॥

लक्ष सवाउक पिंजर साजे। कनकखचितअतिरुचिरबिराजे॥
तिनमहँ बिहँग अनेक सुहाये। जिनहिंसीय सुखमानिजियाये॥
लिये करन सेवक समुदाई। जेरत संतत सिय सेवकाई॥
पुरबाहिर सब जुरी समाजा। पाव न वर्णि पार अहिराजा॥
कंचन पट भूषण मणि लाला। दायजुदीन अमित महिपाला॥

सवैया॥ दायजु जाल दियो महिपाल बहोरि समोद सु को-शल राजहि। क्यों भगवन्त बखान करै न बखानन योग सुहै अहिराजहि॥ सम्पति सो अवलोकि सबै लघु लागत लोकनि जै सुरराजहि। है न कछू बिभु भूरि यतो जहँ दुल्लह आपु बने रघुराजहि॥

दो० सुनत बरात पयान सब रानिन सुता सवाँरि।
लगींदेन शिख आशिषा लय लय गोद दुलारि॥

कवित्त॥ सेयहु सुभाय सासु स्वसुर चरण चारु भोरयहू सदैव नाह आयसु न पेल्यहू। राखिरुख स्वामि काज करब सकल नित्त खेदहू सुमोद आव सँग तासु भेल्यहू॥ धारि दृढ़ धर्म्म पतिव्रतहि पुनीत यश कीरति बिशाल लोक लोकनै सकेल्यहू। भाग्य-वन्त होहु पीव सन्तत पतिन पुत्रि जानि भल बैन माल गूँथि कण्ठ मेल्यहू॥

दो० अति सनेह सब कन्यकन सखिन तियन सुखदैन।
नारि धरम सिखवहिं मुदित कहि प्रियकोमल बैन॥

पतिब्रत निरत सदा जे बामा। तिनकर यह सुधर्म अभिरामा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रथम स्वपति भोजन करवावै। पाछे अशन आप सो पावै॥
पतिहि सुताय सु सोवन लागै। पतिसों प्रथम आपु नितजागै॥
संतत कर पति हित अनुरागी। छल बिहीन जे तियबड़भागी॥
बोलै पति गृह काज बिहाई। तुरत समोद निकट चलिजाई॥
जोरिपाणि युग करि सुप्रणामा। बंदै बचन इमि तिय अभिरामा॥
क्यहि कारण बोल्यो प्रभु मोहीं। आयसु होइ करौं तुर वोहीं॥
जो आज्ञा देवै पति ताही। करै तुरत धरि मुद मन माही॥
स्वप्न स्वपति नित मूरति देखै। परपति दृष्टि कबहुँ नहिं पेखै॥
सो तिय उत्तम वेद बखानै। निजपतितजि जानै नहिंआनै॥
पितृ भ्रातृ सुतवत परनाहै। पश्य तिया सा मध्यम आहै॥
जो निज धर्म समुझि मनमाही। रहै निकृष्टा कथितासाही॥
पतिकुल त्रास न कर अघ जोई। पतिव्रता अधमा है सोई॥
प्रत्युत्तर जो पति सों ठानै। रहै सदा मन क्रोध समानै॥
शरमाग्राम कहै श्रुति ताही। कैपि शृगालिनि वनकै आही॥
उच्चासन कबहूं नहिं सेवै। दुष्ट निकट पग भूलि न देवै॥
लज्जाकार बचन पतिपाहीं। रंचक कहै कबहु तियनाहीं॥
नारि धरम यह जो मैं गावा। शिवपुराण महँ सो सब पावा॥

दो० नारिधर्म यहिबिधि सबहिं सादरसखिन सिखाय।
बारहिंबार सनेहवश लेहिं सकल उरलाय॥

सवैया। त्यहि औसर सानुज राम तहां सुबिदा हित भूपति ऐन गये॥ लखि आवत राजकुमारन रानि समोद बरासन आनि दये॥ शिरनाय सुभाय प्रणाम सुकै लहिशासन आसन बैठिगये। भगवंत नृपाजिर मध्य मनो सुउदै विधु पूरण चारि भये॥ चारिहु भाय सुभाय मनोहर श्यामलगौर महाछबिछाये। आननचंदप्रभा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुखछन्द अनंदित कंद मनोज लजाये ॥ हेत बिदा नृपमंदिर में सुपयान किये दशस्यंदनजाये। पाय सुहाल बिहाल कमाल उताल सबै छबि देखन धाये॥ कवित्त॥ कहैं एक एकनसों बात या सुपंथजात नैनन निहारि आजु रूप या सुलीजिये। कोशल कृपाललाल सुखमा विशालजाल पावन सप्रेमकार क्षेम धाय पीजिये॥ चाहत चलन आजु प्राणन अधार ए सुमूरति पुनीतमणि फणि मन कीजिये। भाग्यवंत धारि उर रूप ये अनंद धाम पूरण सुकाम यामआठ सुखभीजिये ॥ जानै कौन कौनेधौं सुकृतभे सुलभ आनि रूपके अगार येकुमार चारु चारिहू। लेहु भरि नैनन निहारि लाहु जन्म जग चाहत चलनभूप कीनहै तयारिहू ॥ हतो यतनोई योग इनको हमार इत भयो सो ब्यतीत अब बीच बिधि डारिहू। कहत परसपर बातैं इमि बारबार मगन पयोधि प्रेम सबै नर नारिहू ॥ सवैया ॥ लखि राघवरूप छटा अमली बश प्रेमभई गजगामिनिया। सुधिभोरि चकोरि सो गोरि सबै अवलोकि मुखै बिधु यामिनिया॥ ठगिसी रहिं चालत नाहिं पगै लखि दीपयथा मृग भामिनिया। धन प्राणन वारि निहारिपगीं मिथिलापुरकी सब कामिनिया॥ मिथिलापुरकी मिलि नारि सबै करि आपुस माहिं रहीं बतियाँ। हमको इन दर्शन ऐस भयो नरकीनर पाव यथा गतियाँ॥ सुखजात कह्यो मुख एक नहीं अवलोकत शीतलभै छतियाँ। मन भावतहै कछु और नहीं इनके रस प्रेमपगी मतियाँ॥ तनत्याग समै जिमि पाव कऊ रसअमृत त्यों हमको अँलिया। इन दर्शन आनँद दानि भयो जगजीवन लाहु लह्यो भलिया॥ मनमोद महा यश पाय भली जलजात कली भ्रमरावलिया। भगवन्त निछावरि प्राण करौं लखि रूप नखशिख माथलिया॥ अति सुन्दर श्याम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

स्वरूप मुदाकर देखतही सुख धामिनियाँ । तन लाजभगी मतिप्रेम पगी रँगराम रँगी सब कामिनियाँ ॥ जगआश जिती मनमाहिं तिती छन ताहि बितीन सुहावनियां । भगवन्त मनाव विरञ्चि हिये यह रूप बसौ दिन यामिनियाँ ॥ नहिं आश हिये ऋधिसिद्धि किये फल चारिहु चाह नहीं रखिया । परवाह नहीं कछु औरनकी जगजाल सुखौ हित ना झखिया ॥ अरु शंक नहीं गुरु लोगनकी मन लुब्धभयो अब तौ सखिया । निबहैं परटेक सुएकयही बिलगायँ नहीं इनसों अखिया ॥

दो॰ यहिविधि पुरनरनारि सब वचन समेत सनेह ।
कहहिं परस्पर प्रेमबश बिसर्‌यो तन धन गेह ॥

चामरछन्द ॥ रूपसिंधु बन्धुचारु चारिहू निहारिकै । आरती उतारहीं समोद सासु वारिकै ॥ प्रेमपुंज छायहीय नैननीर धारही । रामरूप माधुरी बिलोकि प्राण वारही ॥ लाजही रही न नेकु प्रीति भूरि छायऊ । पावना सनेह तासमैक भाखि नायऊ ॥ चारिहू सुभाइनै उबट्टिकै न्हवायऊ । भांति चारि भोजनानि प्रेमसों ज्यँवायऊ ॥ जेंय पाय पान बैठि हर्षि आसनायकै । पेखही प्रभास प्रेम सासुहीय चायकै ॥ चंचरीकछन्द ॥ जानि औसर राम तौ मृदुबैन बोल्यो सासुसों । राउ चाहत जान औधहि देहु आयसुआसुसों ॥ मोहिं आपन जानि बालक मातु छाँड़ब नेहना । पीवहै जसनेह मोकहँ भाव तो तस देहना ॥ बानि कोमल राम यों अभिराम सानि सनेहकी । रानिनै सुनि शोकभो बहुभूलिगै सुधि देहकी ॥ लीनलाय कुमारि चारिहु प्रेमसों सबनै हिये । बार बारहि भेंटि सादर सौंपिलै पतिनै दिये ॥

दो॰ पतिन सौंपि सब कन्यकन बहुविधि विनै सुनाय ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जोरिपाणि पुनि बचन मृदु कहत सुनैना माय ॥

तोटक छन्द ॥ सुनिये सुत जीवनप्राण मया। बिनती इतनी करि भूरिदया ॥ परिवारहि राजहि मो सप्रजा। सम प्राणप्रिया नित ये तनुजा॥ नहिं ताति बयारि लगी कबहूँ। पुतरी हगसो रखती सबहूँ॥ कर आपु निबाह अहै तिनको। नहिं रक्षक आन बियो जिनको॥ निज किंकरि मानव तात इन्हैं। तजि आपुगती नहिं आन जिन्हैं॥ बहुभाँति बुझाय न तात कहौं। बलिजाउँ सबै तुम जानतहौ॥ यहि भाँति बिनै बहु रानिकरी। गहि राघव पंकज पांयपरी॥ मुख आवत बानि न प्रेम फँसी। लखि राम प्रभानन पूर्ण शसी॥ शंखनारी छन्द ॥ इदं सासुबानी। सुप्रेमाम्बु सानी॥ सुनी राम ज्योंहीं। कृपासिंधु त्योंहीं॥ चतुरंसा छन्द ॥ कहि मृदु-बानी। प्रभु सुखदानी॥ बहुशिख दीन्हे। चित थिरकीन्हे॥ तब रघुबीरा। अति मति धीरा॥ जन झख नीरा। परम गँभीरा॥ युग कर जोरी। सुख रस बोरी॥ कहत सुबानी। अब म्वहिं रानी॥ शंखनारी छन्द ॥ बिदा वेगि दीजे। कृपादृष्टि कीजे॥ इदं भाखिरामा। उठेके प्रणामा॥

दो० पायबिदा आशिष अमित पुनि पुनि शीशनवाय।
पितु समीप गमने मुदित सहित अनुज रघुराय॥
कमल नैन श्रीराम छबि मंजु मधुर उर आनि।
प्रेमविवश मनतन शिथिल अतिसनेह सबरानि॥

शुभगीत छन्द ॥ पुनि धीर धरि सब कुँवरि सादर मातु लई हँकारिकै। मणि बसन भूषण भूरि नखशिख सखिन सजे सवाँरिकै॥ गुनि चलन तर मन लहत दुख सब बिकल जननी रोवहीं।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उरलाय पुत्रिन बार बारहि प्रेमबश मुख जोवहीं ॥ पहुँचाय पुनि फिरि मिलहिं भरि भरि अङ्क जल नैनन बहै। यहि समय प्रीति कि रीति अति भगवन्त क्यों बैनन कहै॥ सवैया॥ प्रेम पयोनिधि मग्न सबै नर नारि समेत सखी रनिवासू। रोवहिं पुत्रिन लायहिये पट भीजिगये दृगधारन आँसू॥ देखि विलाप कलाप समय अस को न भयो उर जासु हरासू। मान्हु श्रीमिथिलेश पुरै करुणा बिर-हानि किये सुनिवासू॥

दो० जे शुक सारिक जानकी कनक पींजरन राखि।
पालि पढ़ाये बिकलते रहे सकल अस भाखि॥
हाय प्राण प्रीतम सिया कितै गई तजि मोहिं।
सुनि बाणी सानी विरह तजै न धीरज कोहिं॥
जहां दशा असि जड़नकी कहै सचेतन कौन।
समय समाज बिषाद बड़ कहत बनै नहिं तौन॥

कुण्डलिया॥ ताही अवसर बंधुयुत आये तिरहुतिराय। प्रेम उमगि जल नैन भरि लीन सियहि उरलाय॥ लीन सियहि उर-लाय ज्ञान गुण ध्यान पराने। प्रबल रामसिय नेहजानि मन सकल डराने॥ आनेजिव रिपु मोह भयाप सहायक ताही। निरखि सहा-यक सबल तेपि गवने तुरताही॥

दो० समुझाये सब सचिव मिलि कुसमय जानि नरेश।
धरि धीरज दीन्ह्यो बहुरि मंत्रिहि बोलि निदेश॥
साजि मनोहर पालकी बेगि लयावहु जाय।
सुनिशासन आनेतुरत शिविका दिव्यसजाय॥

कवित्त॥ पौष शुक्लवार सोम दशमी लगन मीन रेवती नक्षत्र

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मंत्र दाहिने नुमानिकै। प्रेमबश भूप सब सहित समाज हर्षि बंदि गणराज देव साधु सनमानिकै ॥ सादर कुमारिकान पालकी चढ़ाय फेरि दीन सीख भांति भूरि नारि धर्म्म आनिकै। कीनयों पयान सीय सगुन अनेक होत वर्षहीं प्रसून व्योम देवगण आनिकै॥ सीयके चलत सब व्याकुल नगर लोग रोदन अपारकै सुशोच बश ह्वैरहे। सचिव समाज साथ चले तीरहूतिनाथ पुत्रिन पठावनै सुनैन जल च्वैरहे ॥ रोवत बिचारि भूप सकल कुमारिकान धीरज कलाप मृदुबैनन सो दै रहे। रोवहू न पुत्रिबेगि लेवहौं मँगाय तुम थोरही दिवस माहिं तोषयोहिं कैरहे॥ रोलाछन्द ॥ बाजहिं बिपुल निशान नगर नभ आनँदभारी। रथ बाजिन गज साजि बरातिन किये तयारी॥ दशरथ मुदित बुलाय सकल द्विज वृन्दन लीन्हे। दान मान करि बिनय तिनहिं परि पूरण कीन्हे॥ बारबार शिरनाय चरण रज नैनन लाई। पाय अशीश महीश मुदित मन सुख न समाई ॥ तब दशरथ मनमाहिं सुमिरि सादर गणराजै। कीन्हे अवध पयान सहित निज सकल समाजै॥ मंगलमूल अपार सगुन सुंदर मगपाये। बरषहिं विपुल प्रसून देव नभ संकुल छाये॥ पुनि याचकजन बोलि अवधपति सादर लीन्हे। धनमणि भूषण बसन बाजि गजरथ बहुदीन्हे॥ भे परिपूरण काम सकल विरदावलि भाखी। चले मुदित फिरिभौन हृदय निज रामहिं राखी॥ पुनि पुनि कहत महीप पलटि मिथिलाधिप जाहू। तदपि प्रेमवश फिरब चहत नाहिंन नरनाहू ॥ तब ठाढ़े भय उतरि भूप लोचन जल छाये। कहत जाहु फिरि जनक दूरि बड़िलौ चलि आये॥ तब सादर शिरनाय जोरि युग पंकजपानी। कहत जनक मृदुबानि मनहु रस अमृतसानी॥ महाराज क्यहि भांति कहौं मैं वि-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नय सुनाई। जानि नाथ निजदास दीन म्वहिं विपुल बड़ाई॥ सुनत सरल मृदुबैन अवधपति अति सुखमाने। बहु विधि सहित सनेह जनक समधिहि सनमाने॥ तब नृपते ह्वै बिदा जनकमुनिगन शिरनाये। आशिर्बाद सुपाय हरष नहिं हृदयसमाये॥ पुनि सादर जामात सकल भेटे नृपजाई। छबिसागर चहुँ बंधु निरखिमन सुख न समाई॥ गौरश्याम अभिराम कोटि मनसिज मद मोचन। आनन चन्द्र प्रकाश अमल पंकज नव लोचन॥ सहित प्रीति करजोरि कहत मंजुल मृदुबानी। रामकरौं क्यहिभांति विनय त्रिभुवन सुखदानी॥ छंद तोटक॥ क्यहि भांति प्रशंस करौं प्रभु मैं। तव ब्यापक रूप चराचर मैं॥ सुखसिंधु गुणालय धामपरे। ज्यहि ध्यावत शंकर ध्यानधरे॥ परतंत्र नहीं निज तंत्रसदा। ज्यहिनेति निरंतर वेदवदा॥ रस एक ज्वई तिहुँकाल रहै। महिमा ज्यहि वेद न पार लहै॥ जन योगि सदा ज्यहि लागिकरें। तपकानन आनन नाम रैं॥ गुणगावत नारद ब्यास सदा। नहिं पावत पार अनंत जदा॥ जनसंसृत मोचन दीनहितं। सतचेतन आनँद रूपनितं॥ त्रयताप निवारण भौ शमनं। सुररंजन दुष्ट दलं दमनं॥ तवरूप अनूपम वेदपरे। गुण शीलक्षमादि अनेक भरे॥ मुनि सिद्ध सदा यश गावतहैं। चतुरानन ध्यानन पावतहैं॥ करुणालय रामकृपाल स्वई। ज्यहि थाह न पावत पार कई॥ मम नैन विषै स्वइ आनिभयो। करि भूरि कृपा सुख पूरिदयो॥ गुरुताति हमैं सब भांति दिये। जन जानि सदा अपनाय लिये॥ मुख एककहौं यशभानि कहा। पुरयो अभिलाष यथाहि रहा॥ शुक शारदनारद शेषहु जो। शत कल्पकरौं मिलि लेखहु जो॥ मम भाग गुणोत्तम आपु जिते। न सिराहिं कहे तिनसोपि तिते॥ अबकै सुकृपा बेर एक

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दियो। भगवंत जुपाय प्रसन्न हियो॥ सवैया॥ जे पदपंकज चारु सदा मनमानस शंभु धरेअनुरागें। जे पदसेवत देव सबैमुनि सिद्धकरैं लगि जा जपजागें॥ जे पदपंकज सों प्रकटी सारिदेव बिलोकत ज्वै अघभागें। ते पदपंकज शोभमई भगवंत कबौं मन मो नहिं त्यागें॥

दो० सुनत प्रेममै बचनबर रामकृपा सुखऐन।
सन्माने बहुबिधिश्वसुर करि विनती मृदुबैन॥

पुनि नृप जाय भरतकहँ भेटे। लीन लगाय हरषि निज पेटे॥
बहुप्रकार नृप आशिष दयऊ। भरत प्रणाम करत तब भयऊ॥
पुनि नृप मुदित लषणरिपुहाई। भेटे अधिक सनेह बढ़ाई॥
दीन अशीश मुदित दुहुभाइन। समय सनेह बरणि मुख जाइन॥
बारहिबार नृपहि शिर नाई। भाइन सहित चले रघुराई॥
तब नृप कौशिक पदशिरनायो। जोरिपाणि बहुविनयसुनायो॥
नाथ कृपा तव हे मुनि राजू। भये सकल मम पूरण काजू॥
अस कहि नृप नायो पद माथा। दीनअशीश मुदित मुनिनाथा॥

दो० पाय अशीश महीश तब हृदय राखि सियराम।
फिरे सहित पुरजन सकल आये निज निज धाम।

कबित्त॥ बाजत निशान भूरि चली सूबरातपूरि आनँदअपार धूरिछायगै अकाशही। गगन मगनदेव सुमनकरत बृष्टि गावत सुयशचारु जैतिजै प्रकाशही॥ देत नैनलाहु मग लोगन सकल राज बीच बीच बासवर करत निवासही। पौषशुक्क पूनव पुनीत एतवारको सु पहुँची बरातआनि दिब्य औधपासही॥

दो० जहँतहँ लोगन मुदितमन गहगह हने निशान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुर प्रसूनबरषहिं हरषि शोभित विपुल विमान॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे श्रीरामचन्द्रबरातअयोध्याप्राप्तवर्णनोनामचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

कवित्त॥ पालन निगमरीति घालन सुजनभीति दालन सबै कुरीति रीति वेदगानकी। आकर सुबुद्धिके प्रभाकर सुनक्र मोह हाकर अदेब हार भीति देवतानकी॥ पावन त्रिलोककार दावन महीकभार जावन उदारकीर्त्ति हार पीरप्रानकी। भाग्यवन्त मोदमै कृपालपाल भक्तवानि जानि दास दीनपै द्रवौसु राम जानकी॥ छप्पै॥ आवत अकनि बरात सकलपुर नर अरु नारी। पुलकंगात सरसात प्रेम उर आनँदभारी॥ निजनिज सुन्दर सदन सबन बहु-भाँति सँवारे। हाटबाट सरिघाट सुभग चौहट पुरद्वारे॥ बहुभाँति सुमंगल साजसजि कलश द्वारथापे मुदित। जगमगत ज्योति मा-नहु नगर द्वारद्वारप्रति रविउदित॥ भूपधाम अभिराम समै त्यहि वरणिन जाई। रचना अमित अनूप देखि मन मदनलुभाई॥ मंगल मोद उछाह अधिक सुखसम्पति छायो। जनु कोशलपति सदन सकल धरि धरि तनुआयो॥ सिय रामरूप शोभाअवधि वरणिसकैं नहिं शेषज्यहि। भगवन्त सुछबि देखन हृदय कहहु लालसाहोन क्यहि॥ कवित्त॥ कौशिलादि मातु सब शिथिल सनेहगात परम प्रमोद प्रेम देहना सँभारतीं। पर्छनार्थ राम सीय सकल मुदित रानि मंगल अनेक भाँति भाँतिनै सँवारतीं॥ दूब दधि रोचना तंडुलदल फूल गन्ध कंचन सुथारधारि वारि मंजु आरतीं। चलीं गानकरत प्रमोद सालिवृन्दरानि सूखमाअपार ज्यों सुवेष भूरिभारतीं॥ जा-निकै समै सुदीन शासन मुनीश उत कीन तौ प्रवेशपुर सानँद महीपमनि। मागध सबन्दित सूत गावत सुयश चारु बर्षहीं प्रसून

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देव दुन्दुभी सुव्योमहनि ॥ बाजत निशान जाल नाचत अमर नारि पूरित प्रमोद विप्रवृन्दरहे वेदभनि। भाग्यवन्त आनँदअपार सो बखान कौन मंगलकलाप ग्राम रहे ठौर ठौर ठनि॥ डगर डगर बीच नगर अनन्दहोत नृत्यगान वाद्यशब्द लोकत्रै मचैरहीं। दूलह सुवेषदेखि मुदित सकल मात पुलक प्रफुल्लगात आरती सुकैरहीं॥ नारिवृन्द गावहीं सुमंगल उमँगि मोद भूषण बसनवारि याचकन देरहीं। बधुनसमेत पर्छि पुत्रन लिवाय संग चलीं देत पाँवड़े अरघ प्रेमछैरहीं॥ मन्दिरल्यवाय लाय चारिसू सिंहासनानि तापर कुमारिका कुमार चौपधारयऊ। सादर पखारिपाँय धूपदै सु हेमथार आरतीसँवारि माय चायसों उतारयऊ॥ लाय नयवेद्य चारु विटिका खवाय फेरि बस्तुलै अपार भाँति भाँतिनै सुवारयऊ। रूपशील सिंधु बन्धु चारिहू बधून युक्त प्रेमसों निहारिमाय मोद पुंज भारयऊ॥ सवैया॥ नैन लह्यो नर अन्धयथा अरु रंक महाजिमि पारस पायो। शूरलह्यो जय ज्यों रणमें अरु मूकमुखे जनु शारद आयो॥ पाय सुखी रुजवन्त अमी जस शीतल छाँह न्रुआतपतायो। यासुखते शतकोटि गुणे भगवन्त हृदै मुदमातन छायो॥

दो० पूजि पितर सुर विविध बिधि मांगहिं बर शिरनाय।
रहहिं कुशल आनन्द नित सहित बधुन सब भाय॥
अन्तरहित सुरगण सकल अति हित आशिष देहिं।
सादरसो भरि अंचलन मुदित मातु सब लेहिं॥
तब नृप सादर मुदित मन बोलि बरातिन लीन।
पट भूषण रथ बाजिगज तिनहिं विविधविधि दीन॥
पाय रजायसु नायशिर राखि हृदय श्रीराम।
बहुबिधि नृपहिं प्रशंस करि चले सकल निजधाम॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हरिपद छन्द ॥ तब सादर सानन्द अवधपति बोलि नगर नर नारी। पट भूषण पहिराय भाँति बहु कीन्हे तिनहिं सुखारी॥ याचक जन यांच्यो ज्वइ जोई मुदित भूप स्वइ दीन्हे। परमानन्द पाय मन भावत गवन भवन सब कीन्हे॥ तब गुरु बिप्रन सहित अवधपति भीतर भवन सिधाये। मुनि बशिष्ठ अनुशासन सादर जग श्रुतिरीति कराये॥ पुनि प्रक्षालिपाँय नृप बिप्रन शुचिजल आनि न्हवाये। षोड़श भाँति पूजि अति आदर षटरस अशन ज्यँवाये॥ दान मान बहुभाँति विनय करि पुनि पुनि शीश नवाये। देत अशीश मुदित सब भूसुर निज निज भवन सिधाये॥ पुनि कौशिकहि पूजि बहुभाँतिन चरण धूरि शिरलाई। दीन्हे बास भवन भीतर लै करि बहु बिनै बड़ाई॥ पुनि पूजे गुरु पाँय प्रेमसों भूपति युत सब रानी। सुत सम्पदा राखि बहु आगे बिनै कीन्ह सनमानी॥ नेग मांगि लीन्ह्यो मुनिनायक सुखदायक मन भायो। दैअशीश धरि उर सियरामै हरषित भवन सिधायो॥ पुनि महिपाल मुदित प्रिय पाहुन बिदाकिये सनमाने। सुरन हरषि यशगाय सुमन झरि चले सकल निजथाने॥ श्रीरघुबीर बिवाह मोद मैं रह्यो सकल जग छाई। शेष गणेश शम्भु शुक नारद शारद बरणि न पाई॥ तब भूपाल सहित उर आनँद गये जहां रनिवासू। सहित बधुन सुत निरखि चारिहू भयमन परम हुलासू॥ ज्यहि विधि भयो ब्याह चहु भाइन भूपति सकल सुनाई। सुनि रनिवास लह्यो सुख संकुल उर आनंद न समाई॥ जनकराज गुण शील सम्पदा प्रीति सुरीति बड़ाई। भाटसरिस उपमामित दैदै बहुबिधि भूपति गाई॥ सवैया ॥ भूमि क्षमाब्धि गँभीर प्रभाकर तेज निशाकर सो यश छायो। धर्म्म धुरीण धराधरसो सनकादिक के सम शुद्ध सुहायो॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राज सुरेश सों मेरुगरू जिमि भक्त ध्रुवाचल ज्यों जगजायो। भाषत रानिन सों अवधेश बिदेह गुणामित जाहिं न गायो॥

दो॰ सुनि प्रमुदित रानी सकल जनकराज गुण जाल।
तब सादर सब सुतन युत मज्जन कीन भुवाल॥

कबित्त॥ बोलि विप्र ज्ञाति गुरु भाइन समेत भूप भोजनसुकीन भाँति षटरस चायकै। अँचे पान पाय सब सादर बिलोकि राम पाय कै रजाय राउ चले मोद छायकै॥ समय प्रमोद प्रेम बरणि सिरात सी न अगम लखात शेष शम्भु गणनायकै। भाग्यवन्त राम न बिरञ्चि वेद शारदाहु कौनभाँति अल्प बुद्धि कहौं मैं सुगायकै॥ सवैया॥ तब रानिन बोलि महीप कह्यो लरिका श्रम सों बश नींदे भये। अब शैन करावहु जाय इन्हें कहिकै नृप यों गृह शैन गये॥ नृप आयसु लै मणिहेममई पलँगा कल सेज डसायदये। भगवन्त कहौं किमिसो सुखमा लखि मैनहुं मान हृदै रितये॥

दो॰ तब सादर सब सुवन लै दीन सेज पौढ़ाय।
प्रेम बिबश पुनि मातुसब बैठीं प्रभु ढिग आय॥

तोमर छन्द॥ लखि राम श्यामल गात। बशप्रेम ह्वै सब मात॥ मृदुमंजु पूछहिं बैन। कहिये कृपा सुखदैन॥ मगजात पातक पीन। किमि ताड़का बध कीन॥ खल वृन्द क्यों युत सैन। बधकीन राजिव नैन॥ क्यहि भाँति गौतम नारि। पदछ्वाय दीन्ह्यउ तारि॥ किमि घोर शंकर दण्ड। करकंज कीन्ह्यउ खण्ड॥ भृगुनन्द गर्ब्ब नवाय। जगजैति जानकि पाय॥ भयसिद्ध जो सब काज। अतिशयकृपा मुनिराज॥ गीतिका छन्द॥ बलिजायँ जननी भुजनपर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गहि बार बारहिं चापहीं। लखिराम छबि अभिराम मानहिं सकल धनिधनि आपहीं॥ परतोषि तब प्रभु सबहि मातन नींद बश सोवन लगे। भगवन्त क्यों सुख समय बरणै जान जे प्रभु रँग रँगे॥

दो० तब सादर बर बधुन लै रहीं सासु सब सोइ।
जनुफणिपति निज शीशमणि राखी उरबिच गोइ॥

छप्पै॥ प्रात समय शुभकाल सोइ रघुनायक जागे। बन्दी मागध सूत सुयश गावन बर लागे॥ सकल शौचकरि बन्धु सहित भूपति पहँ आये। निरखि रामछविधाम सभा सबही सुख छाये॥ तब पाय भूप आयसु मुदित बैठि सबहि शिर नायकै। मुनिराज कहहिं इतिहास बहु सुनहिं सकल चितलायकै॥ यहि प्रकार नव नित्त अवधपुर आनँद होई। मंगल मोद बिनोद बरणि पावै नहिं कोई॥ कौशिक चाहत जान नितहि राखहिं रघुराऊ। दिन दिन सौगुन अधिक करैं भूपति मुनि भाऊ॥ पुनि गाधिसुवन कह भूप अब देहुबिदा उर हरषभर। लखि मुनिहिं बिशेषि तयार नृप कह्यो बचन मृदु जोरिकर॥ मैं सेवक प्रभु आपु सदा सबयुत परिवारा। उज्ञुरु नहीं कछु मोहिं सकल धन धाम तुम्हारा॥ सेवक जानि मुनीश करब सबपर नित छोहू। कृपादृष्टि करि रहब देत दर्शन मुनि मोहू॥ पुनि परखउ भूप रानिन सहित चरण दीन आशिष ऋषय। धरि हृदय रामसिय रूपछबि चले बनहिं निरभर सुखय॥

दो० नृप शासन पुनि लोग सब निज निज गये निकेत।
अवधनाथ आये भवन सानँद सुतन समेत॥

कबित्त॥ राम सीय ब्याह मोद मंगल उछाह भूरि अवधि सो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अपार पार ताहि कौन पावई । नारद गणेश शेष शारद महेश ब्यास थकित बखानि वेद नेति कै बतावई ॥ तदपि स्वबुद्धि मैं सुसज्जन करत गान अमित बिचारि हीय भजन प्रभावई। भाग्यवन्त करन सफल हेतु बानि आपुमति अनुरूप त्योंहिं राम यश गावई॥ सवैया ॥ यह रामचरित्र पवित्र महा नर गावहिं जे नित नेमलिये। गुण ज्ञान विराग क्षमादि सबै निबसैं हरिभक्ति सुआनि हिये॥ कतहूं नहिं लेश कलेश लहैं बिचरैं धरनी हरि प्रेम पिये । भगवन्त सदा सियराम तिन्हैं बसुयामरहैं सुख क्षेम किये ॥

दो० श्रीगुरु कृपासुपाय बल अल्प बुद्धि भगवन्त।
बालकाण्ड बरणयो कछुक हरियश अमित अनन्त॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहबर्मात्मजभगवन्तसिंहाविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे बालकाण्डसमाप्तिवर्णनोनामपंचदशोऽध्यायः १५॥

इति बालकांड समाप्तम्

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भक्तिशिरोमणि अयोध्याकाण्ड

छप्पै ॥ सिद्धिसदन शोभाढ्य कदन दुखदोष अपारं । अद्रि जात्मजवेश्मि सुगुण विघ्नौघ निवारं ॥ शुद्ध सुधी वरदानि शुभ्र नागास्य विशालं । नित्यानंद गणाधिप भजतारति जनदालं ॥ कृत सुमनस नरनागादिसब शारंगांघ्रि बंदनसतत । भगवंतसपुट कर नाय शिर मन बच क्रम गणपति नमत ॥ सवैया ॥ समश्यामल अम्बु धराभतनुं पटपीत धृतामल जालद्युतौ । शिखरेन्दुत क्रीटतमीश मुखं धृतपाणि शिलीमुख चापयुतौ ॥ जनकात्मजसा करुणाम्बुनिधे मररक्षनितावध नाथसुतौ । ममभानस मासु निवास करौ भगवंत सदा जलजांघ्रिनुतौ ॥

दो० श्री गुरु पद पाथोज रज शिर धरि नयन लगाय ।
सीयराम पावन सुयश कहौं सो मतिसम गाय ॥
जबते राम बिवाहि घर आये कोशलराय ।
तब ते मुदमंगल अवध नितनूतन सरसाय ॥
कोशलपाल कृपाल को भाग बखानै कौन ।
वेद तत्त्व पुरुषोत्तमहि करि पाये सुत जौन ॥
कोशलपुर नर नारि सब निरखि रामसुख चंद ।
सुकृत सुभाग सराहि निज लहहिं परम आनंद ॥
केकै नृप सुत बारयक नाम युधाजित जासु ।
अवध आय नृपसन विनय कीन्हे सहितहुलासु ॥

करि बहु विनय जोरि युगपानी । सहित प्रीति पुनि कहमृदुबानी ॥
नाथ हमारे पुर चहुँ पासा । करत अहैं बहु दुष्ट निवासा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

परम सबल ते जीति न जावैं। तिन ते हमसब अति दुखपावैं॥
त्यहि हित आयन याचन तुमहीं। देहु भरत रिपुसूदन हमहीं॥
ते चलि सकल दुष्ट संहारैं। हम सबकर दुख दुसह निवारैं॥
तुम नृप सकल लोक हितकारी। धर्म धुरीण दीन दुख हारी॥
जानि सभीत कृपा अब कीजे। दीजे सुवन सुयश जगलीजे॥
मुनिहु बहुत बिधि नृपहिबुझाये। तबनृप सादर सुवन बुलाये॥

दो० सादर सुवन बुलाय तब दीन्ह्यों भूप रजाय।
सुनत भरत रिपुहन मुदित चले नृपहि शिरनाय॥

पितु पदबंदि बहुरि दोउ भाई। रामचरण पंकज शिरनाई॥
प्रभुसन बिदा पाय दोउभ्राता। बंदि मातु गुरुपद जलजाता॥
चले सुभट सेना सँग लीन्हे। प्रभुपद कमल मधुपमनकीन्हे॥
यहि बिधि भरत समेत सहाई। केकै नृपपुर पहुँचे जाई॥
भूप आय आगे लै लीन्हा। भवनआनि अतिआदरकीन्हा॥
पुनि नृप द्विजन बोलिअनुरागे। सादर यज्ञकरन तहँ लागे॥
सुनि खरमुख लै सैनसमूहा। आयउ धाइ तहां करि हूहा॥
भरत समर सब असुर सँहारे। विगत त्रास सब भये सुखारे॥

दो० तब तहँ पुनि सानुज भरत लखि सनेह अधिकार।
लगे रहन मातुल भवन बाढ़ी प्रीति अपार॥

यह कछु चरित कहा मैं गाई। अपर कथा अब सुनहु सुहाई॥
कोशलपुर यकबार सुभाये। बिधि सँदेश लै नारद आये॥
अति हित रामचरित जिन केरे। राम प्रेम भाजन मुनि हेरे॥
मुनिहि बिलोकि मुदित रघुनाथा। उठि करजोरि चरण धरिमाथा॥
दीन अशीश हरषि मुनि राई। प्रभु आसन बैठारिन्हि लाई॥
बिबिधभांति पुनि पूजन करिकै। बोले रामचरण शिर धरिकै॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

क्यहि कारण आगमन कृपाला । कहहु मुनीश वरणि सो हाला ॥
सुनि प्रभुबचन मुदित मुनिराई । विधिसँदेश कहि सकलसुनाई ॥
दो० दशकन्धर अतिकृत अनृत त्यहिभय दुखित त्रिलोक ।
शीघ्रसदल खलमारि प्रभु करिये सबहि विशोक ॥
सुनत बचन बोले रघुबीरा । ऐसइ करब झटित मुनिधीरा ॥
सत्यसन्ध मुनि रामहि जानी । दृढ़ विश्वास हृदै निजआनी ॥
पुनि नारद विधिलोक सिधाये । रामस्वमाया प्रकटि जनाये ॥
अस अभिलाष भयउ सबकाहू । आपु अछत सानँद नरनाहू ॥
देहिं रामकहँ करि युवराजू । होहि सफल सबकर सुखसाजू ॥
यहिविधि सकल अवध नर नारी । सादर कहहिं मनाय पुरारी ॥
कृपासिन्धु शिव अवढर दानी । पुरवहु आस दास निजजानी ॥
भूप हृदय मति प्रेरहु तैसी । हम सबहिन उर निवसी जैसी ॥
दो० रामराजसम स्वातिजल चातक पुर नर नारि ।
तृषित सपदि पावनचहत त्यहिबिनु निपटदुखारि ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितायांभक्तिशिरोमणिग्रन्थे
भरतशत्रुघ्ननन्योरगमननारदआगमन विधिसंदेशश्रीरामप्रतिकथन
वर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दो० बन्दनकरि सिय रामपद बारबार शिरनाय ।
कहौं कथा पावनकरणि जो सुनि कलुष नशाय ॥

चकोरछन्द ॥ एकसमै ससमाज सबै सुखराजत राजसभा अवधेश । आरसिरायसुभाय लिये कर कानसमीप लख्यो सितकेश ॥ मानहु सो पन चौथअहै लगि कानरह्यो करियों उपदेश । जीवन को फल लेहुन क्यों रघुनाथहि दै युवराज नरेश ॥ कबित्त ॥ सोई मनआनि भूप हीकरि विचार चारु चैत्रकृष्ण वार गुरु तृतियासु पायकै । परम प्रमोद प्रेम पुलक प्रफुल्लगात सानँद महीपसच

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भौन गुरुजायकै ॥ जोरि पाणि सादर नवाय पदपद्ममाथ बारबार जोहि मुख चन्दवृन्द चायकै। भाग्यवन्त भूप आपु अन्तर विचार जोपि भाखत वशिष्ठ सो वचन मनकायकै ॥ नाथ रामचन्द्र भये लायक सकल काज नीतिधर्म वीरतादि पूरण उदारहैं। आपुसम छोह सब राखत संततनाथ रामपै सुविप्रवृन्द सास्वपरिवारहैं ॥ सेवक समाज सब सचिव नगरलोग शत्रु मित्र वर्गयत्र यावत हमारहैं। मोहिंसम रामसब काहूको लगत प्रीव रावरे अशीश जनु सोही तनुधारहैं ॥

दो० नाथकृपा तव दासके भये सिद्ध सबकाज।
अब अभिलाषा एक उर है मेरे मुनिराज॥
राजतिलक रघुनाथ कहँ करिय जु आयसु होय।
हमहिं अछत आनन्द यह ज्यहिदेखै सबकोय॥
जियन मरणकर शोच पुनि रहैन मोमन माहि।
प्रभुप्रसाद अभिलाष यह जो पूरण ह्वै जाहि॥

सुनि नृपवचन कह्यउ मुनिराजू। करियन बिलँब सजियसबसाजू॥
मंगलमोद सुदिन सब तबहीं। रामराज बैठहिं नृप जबहीं॥
जानि न जाय ईशगति राई। त्यहिहितकरि निश्चयनहिंगाई॥
तब महिपाल भवन निजआये। बोलि सुमन्त सुबचन सुनाये॥
वेगिसजहु अभिषेक समाजू। रामहि करनचहौं युवराजू॥
भूपवचन सबके मनभाये। मनहु रंक मणि पारस पाये॥
जयजय करि मुनि आयसुपाई। सेवक सचिव चले सबधाई॥
जल दल चंदन अक्षत फूला। पान पुंगफल औषधि मूला॥
औरहु जो मुनि नाम गनाये। खोजि सु बस्तु सचिवसबलाये॥
मंगल मे सब नगर सजाये। विपुलवितानविविधबिधिछाये॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्वज पताक तोरण बहु सोहैं। गज मणि मै चौकैं मन मोहैं॥
बाजहिं अमित सुमंगल बाजा। बरणि न जाइ नगरकर साजा॥
रोलाछंद॥ कन्या तोरण चौक कलश बर बिप्र समाजै। बंदन वार पताक केतु ध्वज चमर विराजै॥ नृत्यगान बरवाद्य दूब दध्य-क्षत हरदी। धूप दीप फल फूल सूत मागध अरु बंदी॥ वेद नाद सशान्न सुरभि रम्भारसि चित्रम्। अंकुर रोपण पान व्यजन पल्लव घृत छत्रम्॥ चतुरंगिणी सुसेन बारमुख्यारुविताना। मंगलांग चालीस नाम इति वेद बखाना॥

दो० ये सब मंगल अवध पुर साजे सबहिं बनाय।
शोभाअमित बिलोकिज्यहि अमरावती लजाय॥

मुदित सकलपुर लोग लुगाई। जहँ तहँ नृपके करहिं बड़ाई॥
धन्य भूप सुकृती जग चीन्हा। लोचनलाभसबहिजिनदीन्हा॥
यहि विधि अवध महानँद होई। बरणि न जाइ एक मुख सोई॥
होहिं सगुण शुभ सिय रघुबीरै। कहहिं सप्रेम बचन धरिधीरै॥
भरत सबन्धु मनहुँ पुर आवत। असम्वहिंशकुनप्रभावजनावत॥
मोहिं भरत प्रिय प्राण समाना। मिलनचहतअस शकुनबखाना॥

दो० इहां सुनिहि नृप बोलिकै पठये रघुपति ऐन।
नेम क्रिया व्रत धर्म्म सब सादर प्रभु शिख दैन॥

सवैया॥ मुनि राजहि आवत रामसुने उठि द्वारहि आनि प्रणाम किये। दय अर्घ सआदर आनि निलै करि पूजन आसन दिव्य दिये॥ करजोरि बहोरि ससीय बिनै करि पूछत पूरण प्रेम हिये। क्यहि कारण स्वामि पयान किये गृह सेवक भूरि कृपाहि लिये॥ मंदिर सेवक आगम स्वामि सुमंगल मूल अमंगलहारी। यद्यपि नाथ उचित्तरहै अस प्रीति समेत स्वदास हँकारी॥ सौंपिय

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

काज य नीति कही प्रभुता तजि पै प्रभुनेह सँभारी। सो भगवन्त पुनीत भयो गृह सेवक आजु सुभाग्य हमारी॥

दो० होय जु आयसु नाथ तव बेगि करौं स्वइ काज।
शुचि सनेह साने बचन सुनि बोले मुनिराज॥

सवैया॥ राउ सज्यो अभिषेक समाज सु चाहत देन तुम्हैं युव राजू। ताहित मोहिं इतै पठये रघुनायक देन तुम्हैं शिखराजू॥ सो सिय संयुत रामकरौ ब्रतनेम क्रियादिक संयम आजू। जो भगवंत प्रभात करै कुशलात विरञ्चि निबाहन काजू॥

दो० यहि प्रकार गुरु शीखदै गये राउके गेह।
शीलसिंधु रघुबरहृदै भयो अधिक संदेह॥

सवैया॥ जन्म लिये सब बंधु यकैसँग भोजन केलि सुबाल पनेकू। कर्ण सुबेध भयो उपवीत बिवाहन संग उमंग अनेकू॥ पावन हंस य बंश विषे अनुचित्त सु होत अहै यह येकू। ते प्रिय बन्धु बराय कियो अब चाहत भूप बड़े अभिषेकू॥

दो० इति सप्रेम पछितानि प्रभु हरणि भक्त मन बंक।
लषणलाल आये तबहिं सानँद सहज अशंक॥
प्रेम सँपुट करि पानि युग नाये पद रज भाल।
अति आदर राखे निकट रघुपति राम कृपाल॥

तोटकछंद॥ पुर बाजि निशान रहे बहुते। अति आनँद जात न मो कहुते॥ घर बाट सहाट अथाइनमें। चरचा इमिलोग लुगाइन में॥ वह लग्न सुमंगल मूलकबै। पुजिहै विधि मो अभिलाष जबै॥ पुरटाद्भुत मंजु सिंहासनपै। करुणाकरि भूरि स्वदासनपै॥ बैठे सिय संयुतराम जबै। सब पूरमनोरथ होइ तबै॥ भरतागम सर्वमनाय कहैं। फल लोचनते इत आयलहैं॥ यहिभाँति प्रमोद सुछायर-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कहसिकहा घर फोरनि बानी। रामराज ममहोइ न हानी॥
रामभरत म्वहिं प्रिय सम दोऊ। भलम्वहिं रामराज जोहोऊ॥
रामहिं राज काल्हि जो होई। देहौं त्वहिं मनभाइहि जोई॥
कौशल्यासम रघुपति मोहीं। जानत चेरि कहौं ध्रुव तोहीं॥
तदपि प्रीति राखत बहु मोते। कहत न उनहिं काजम्वहिंहोते॥
ऐसे सुतहि तिलकतैं होते। कुमति कुचालि उपद्रव जोते॥
दो० जो देवै विधिजक्तमें जन्मभूरि करिछोह।
तौ देवै सियराम सम सुन्दर पूत पतोह॥
ताते सत्यकहसि किन मोहीं। कवनहेतु उपजा दुख तोहीं॥
बोली चेरि वचन मनमारी। तुमहिं नहीं परतीत हमारी॥
निरखि तुम्हार अहित मैं माई। साँचिबात कहि तुमहिं जनाई॥
सोरौंरेहि नहिं तनक सुहान्यो। घर फोरनिकहि मोहिं बखान्यो॥
त्यहिते बहुरि कही अबकाहा। पायनफल कहिजसकछुचाहा॥
हमहिं नहीं कछु लाभ न हानी। तव दुख निरखि कहा मैं रानी॥
तुम जो कहहु राम प्रिय मोही। सो सब सत्यझूठ नहिं ओही॥
पर यह बात जान सबकोई। असमय परे सुहृद रिपुहोई॥
सवैया॥ पङ्कजको पितु वारिधिहै विष चन्द्रसुधा ज्यहि बन्धुसगोई। मित्रप्रियारबिलच्यनु जासु विरञ्चि तनै हरि हैं बहनोई॥ यों परिवार भरो ज्यहिको न सहायक कै हिमिजारत सोई। त्यों भगवन्त विचारि कहै सुविपत्ति परे नहिं काहुक कोई॥ हैं जबलौं दिन आपभले तबलौं हितहैं सकलौ अपनोई। देव अदेव प्रसन्नसबै नहिं तौसन आपन तौ हितहोई॥ ते दिन ज्यों विपरीत भये विपरीत भये तुरतै हितसोई। त्यों भगवन्त विचारि कहै सु विपत्ति परे नहिं काहुक कोई॥ बास अकाश प्रकाश महा निशि नायक दायक

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शीतल जोई। कल्पद्रुमानुज काम दुहा भगनी प्रिय आपु सुधाधर सोई॥ यों बिधु राहुग्रसै जब आनि सहायक तासु न ह्वै तब होई। त्यों भगवन्त बिचारि कहै सु विपत्ति परे नहिं काहुक कोई॥ कानन अग्नि प्रचंड दहै तब मारुत तासु सहायक होई। दीप शिखै कृश पेखि महालघु जानि बुझावत है त्यहि सोई॥ है यह संतत रीतिहु वै रिपु निर्बल में निज मित्रहु जोई। त्यों भगवन्त बिचारि कहै सु विपत्ति परे नहिं काहुक कोई॥ श्री मणि रम्भ हलाहल शंख अमी गजराज सुधाधर जोई। चाप धन्वंतर काम दुहा कलपद्रुम बाजि सुराष्ट षटोई॥ रत्न दिये सरिनायक जो त्यहिं गाढ़ सहाय भयो नहिं कोई। त्यों भगवन्त बिचारि कहै सु विपत्तिम काहुक कोउ न होई॥

दो० बिपति परे काहुक कऊ होत नहीं संसार।
सुदिन जानि ताते अबहिं कीजे काज सँभार॥

सवैया॥ नाह सनेह त्वयाजर चाहत पुत्रहिकै नृप सौति उखारन। रूँधहु बारि बनाय घनी त्यहि राजसुतै करि लावहु बारन॥ शोच सुहाग बलै न तुम्हैं करती कछुहौ निज काज सँभारन। शुद्ध सुभाव लखौ तुम क्यों मुख मीठ हिये हित तौ भरतारन॥ राम कि मातु प्रवीण बड़ी लहि बीचलिये निजकाज बनाई। रामहिं मातुमतो इतिजानब जो भरतै उत भूप पठाई॥ भूपहि प्रीति विशेषितुम्हैं पर सौति सुभाव सकै न लखाई। साजि प्रपंच नृपै बशकै सुतराज हितै उन लग्न धराई॥ सेवहिं सौति भले सब मोकहँ राखत कोउ अभावनजीके। गर्ब लिये निज हीयरहै यक भर्त्त कि मातु सदै बलपीके॥ है कौशल्यहि शाल तुम्हार कपट्ट प्रवीण खुलै नाहिंनीके। सोइ उपाव कियो हितराउर डारहिं सो विधि शीश वहीके॥ यद्यपि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राज उचित्त अहै यहि बंश बिषे रघुनंदनहीको। भावतहै सबकोय मतो अरु लागत मोहिंरहै मुठि नीको॥ पै यहि आगिलबात बिचारि भयो दुखदाह महा ममहीको। सो दुख देउ बिरञ्चि उन्हैं अनहित्त तक्यो जिन राउरजीको॥

यहिविधि कहि कहि बचनबनाई। दिहिसि कुटिलपनहृदयदृढ़ाई॥
बहु सवतिनकी कथा बखानी। ज्यहि सुनि बैर बढ़ै उररानी॥
चित्रकेतु नृप ज्यहि जग जानी। षोडश सहस रहीं त्यहिं रानी॥
मुनि अङ्गिरा नृपहि यकबारा। मुक्तिहेतु शिख दीन्ह अपारा॥
पुत्रहीन नृप कीन न काना। तबमुनि हृदयअधिकदुखमाना॥
नारद मुनिसन जाय सुनाये। बहुरि देन बर द्वउजन आये॥
भूपहिं बर दीन्हे हरषाई। होइहि पुत्र तुम्हारे राई॥
दयबर द्वउ मुनि आश्रम गयऊ। लघुरानी सुत जन्मत भयऊ॥
पुनि नारद तहँ जाय सुभाये। रानिन अपर बहुत समझाये॥
तुमहिं न दीन पुत्र करतारा। लघुरानिहिं होइहि सुखसारा॥
सुनि तिन घात पाइ इकबारा। बिषदै डारिनि मारि कुमारा॥
नृप रानिहिं दुख भयो कलापा। पुनि नारद आये तहँ आपा॥
पुत्रहि जाय दीन बोलकारी। हरषे निरखि पिता महतारी॥
कहेउ सुवन स्वइ बचन अनूपा। हम पंचाल देशके भूपा॥
राजछोड़ि कानन तपकाजा। गयनरही तहँ तापस साजा॥
भिक्षाकरि यकबार सुभाये। यक स्त्रीके द्वारे आये॥
त्यहिसन कंडा माँगि बनावा। भोजन हरिहि अर्पि मैं पावा॥
उन कंडनमें चींटी रहेऊ। सोरहसहस सकलते दहेऊ॥
भईं आइ ते सब नृपरानी। कंडादीन हमहिं जो आनी॥
सो भइआइ हमारी माता। पायनअशन अर्पि जगत्राता॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

त्यहिते एकहि जन्ममझारा। गयउ हमार होइ उद्धारा॥
सोरहसहस जन्म नतु मोहीं। धरनपरत धरणी अघवोहीं॥
ताते को काको सुत आहै। सुनि इति भयो ज्ञान नरनाहै॥
तजि सबगयो विपिनहरिशरना। चित्रकेतु इतिहासय बरना॥
नृप उत्तानपाद जगजानी। सुरचि सुनीति रहीं द्वै रानी॥
उत्तम नाम सुरुचि सुत जाई। ध्रुव सुनीति जन्मी सुखदाई॥
सुरुचि नृपहि प्रिय रहै बिशेखी। सवति सुखहि सो सकै न देखी॥
एकबार ध्रुव गोद मँझारा। लिये नृपति सो सुरुचि निहारा॥
ध्रुवहि दिहिसि उतराइ दुराई। कहि कटु बचन बहुतखिसुवाई॥
तेहि गलानि ध्रुव बनहिं सिधाये। इति सुनीति दुख दारुणपाये॥
कद्रू बिनतहि दुख दिय भारी। ये दोऊ कश्यपकी नारी॥
कद्रू अहै अहिन कै माता। बिनता सुवन गरुड़ बिख्याता॥
यक दिन दोऊ बाद बढ़ाई। कवनबरण कहिये निशिराई॥
कद्रू कह्यो श्याम बिधु होई। बिनता कह्यो श्वेत है सोई॥
तब दुनहुन मिलि बाजी लाई। हारै जो सो करै सेवकाई॥
कद्रू तब निज सुतन पठाई। ते सब लिहिनि घेरि शशिजाई॥
त्यहि ते श्याम परेउ सो देखी। बिनता गइ तब हारि बिशेखी॥
आपु भई रानी सों दासी। बहुतकाल लगि कीनखवासी॥
पुनि यकबार गरुड़ निजमाता। निरखिदुखितअतिशैकृशगाता॥
पूंछेउ मातु दुखित अति तोहीं। देखत हौं कहुकारण मोहीं॥
तब बिनता कहि कथा सुनाई। सुनत बचन बोले खगराई॥
अब ते बाद करहु फिरि माई। श्वेतशशी हम देब दिखाई॥
सुनि बिनता फिरि बादहिकीन्हा। खगपतिसकलभक्षिअहिलीन्हा॥
श्वेत बिलोकि परेउ तब चंदा। गयउ छूटि बिनतहि दुखफंदा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होत सवति यहि विधि दुखदाई। कहँलगि कहौं सवतिकुटिलाई॥
शरमिष्ठै दुख शुक्र कुमारी। दीन आपुभईं पतिहिपियारी॥
यहिविधि बहुसवतिन के करणी। बारहि बार कुमति सो बरणी॥
ज्यहि सुनि रानिहिं भा दुखगाढ़ा। सवति स्वभाउ बैरउर बाढ़ा॥

शशीछंद॥ सुनी तासुबानी। सुकैकेइरानी॥ फिरीबुद्धितैसी। रही होनि जैसी॥ कहै सौंह राखी। कहौ सत्य भाखी॥ हुवै बात जैसी। सुनावो सुतैसी॥

दो० कहै चेरि पुनि पुनि कहा पूछति हौ म्वहिं सोय।
आपु हिताहित जानई पशु पक्षिहु सब कोय॥
पाख दिवस बीते सजत रामतिलक को साजु।
कह्यो न तुमसन सो कोऊ जान्यो मोसन आजु॥

सवैया॥ सत्यकहौं सुनु रानित्वया छलछांड़ि सबै करिकै बिधि शाखी। रामहिं काल्हि जु होइहि राज परी दुखजाल तुम्है लखि आँखी॥ ह्वैहहि त्यों भगवन्त यहै दृढ़ रेख खचाय कहौं बलभाखी। पुत्र समेत कि सेवकरौ नतु ह्वैहहु भामिनि दूध कि माखी॥

दो० कपट प्रवीनी कूबरी हरि इच्छा बलपाय।
बचन धतूरा प्याय करि दीन्हेसि त्यहिं बौराय॥

इतिश्रीमन्अयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितायांभक्तिशिरोमणिग्रंथे श्रीरामचन्द्रराजातिलकहेतुपुरमंगलसजनकैकेईप्रतिमंथराछलकथन वर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

सवैया॥ शुभ अद्भुत जासु चरित्र सबै गुण गूढ़ महा श्रुति गान करौ। गति जानन योग न योगिनहू कल कीरतिजा दुख दोष हरौ॥ भवफन्द निकन्दन आनँद कन्द सदा सुख वृन्द स्वछंद चरौ। करुणाकर स्वै सिय राघव के भगवन्त पदाब्जन माथधरौ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कवित्त ॥ मानि सत्य बानि तासु केकई सु बुद्धिहीन पूँछती सप्रेम ताहि भाषुमो उपावरी । दाहिनी सु आँखि मोरि फर्कती सुभाय नित्य कीन ना जनाव तोहि याहि सो प्रभावरी ॥ मित्रही समान मैं सुजानती सबैन कीन ईरषाहि सौति काहि कीन सो कुदाँवरी । कौन लाग एकबार दैवदीन शोक जाल लोक में हितू हमारि तूहितौ लखावरी ॥ नैहरे मँझार जन्म काटबे बरुकजाय जीवते न सेव मोहिं सौतिकी सुहोइहै । शत्रु बश्य राखिदैव ज्यावई जहान जाहि देवई सुमौतनीक जीवनो न सोइहै ॥ मोर तौ सुभाव सूध जानहूँ न शत्रु मित्र कौशिलाय मोहिं लागि कीन घात जोइहै । डारु ईश शीश ताहि खीसकै सुराज साज राख जो प्रतीत वाहि कृत्य योन कोइहै ॥

दो० यहिविधि भाषत केकई बचन अनेकन दीन ।
सुनि करि माया कूबरी बोली कपट प्रवीन ॥

बेगवतीछंद ॥ यहि भाँति कहा तुम भाखौ । बानि हमारि हिये धरि राखौ ॥ सुखमोद सुहाग तुम्हारो । दून दिनै उर धीरज धारो ॥ ज्यहिं आपु अकाज तकाहै । स्वै फल पावहिं गोय पकाहै ॥ जब ते तु अकाज सुनामैं । नींद न रैन न भूँख दिनामैं ॥ सवैया ॥ पूँछयउँमैं गुनि लोगन सों यह बात कही तिन रेखहिं खाँची । ह्वैहहिं भर्त्त भुवाल सही परिहै इति वाक्य कबौं नहिं काची ॥ सोय उपाउ करौ अब भामिनि मानि हिये मम बानि सुसाँची । है तुम्हरी बशभूप अबै त्यहिते करिलेहु न क्यों मनराँची ॥ छप्पै ॥ परौंकूप तव बचन सकौं पति पूतहि त्यागी । देखि मोर दुख कहसि करब काहेन हित लागी ॥ कैंकेई बलि पशुहिं चेरिकर कारि दृढ़ लीन्हीं । कपटरूप बरछूरि टेइ उर शिल खर कीन्हीं ॥ दुख अमित आय शि-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रपर गयो रानि अयानि न इमि लखत। तृण हरित निरखि बलि पशु यथा धाय ललकि ताको चखत॥ कुंडलिया॥ बानी तासु कठोरि अति अंत सुनत सुखदानि। ज्यों माखन मधु एकमें कुमति खवावति सानि॥ कुमति खवावति सानि माखि पुरजन समुदाई। रामराज मधुरूप देव दुख रोग नहाई॥ माखन भरतहि राज मेलि कछु दीन्हेसि रानी। भइ बिधवाँ अधमरी मेरे भूपति त्यहि बानी॥

दो० कह्यो चेरि रानी सुनहु भाषौं सरल उपाउ।
राख्यो कहि मोसन चहत द्वै बर तुम्हरे राउ॥

देवासुर संग्राम मँझारी। सम्बरादि दैत्यन सों भारी॥
इन्द्र सहाय करन के काजा। कीन समर तिन सन बहुराजा॥
तब तहँ घायल भयो नरेशू। देखि पतिहिं तुम बिबशकलेशू॥
हाँकिरथहिं निशि पतिहिंबचायो। मुरछा बिगत भूप सचुपायो॥
साहस निरखि तुम्हार भुवाला। दुइ बरदेन कहे त्यहि काला॥
सो थाती राख्यो ढिग राजा। लेब माँगि जब लागी काजा॥
स्वइबर आजु भूपसन लीजै। सुतहि राज रामहिं बनदीजै॥
दृढ़ अवलोकि कहब अतिआली। ज्यहि पुनि परै बचन नहिंखाली॥
गीतिकाछंद॥ जब राम जैहहिं विपिन पैहहिं भरत पुरराजहिं सही। तब तुमहिं होई सकल सुख अरु सवति उर यहिविधि दही॥ सुनि बचन तासु प्रतीत आई मानि शिख लीन्ही स्वई। भगवन्त निबस्यो आय उर श्रीराम मन चाह्यो ज्वई॥

दो० दय आदर चेरिहि बहुत कोप भवन गइरानि।
डारि करि तन दुर्दशा देखि न जाय बखानि॥

भूषण पट सब धरिसि उतारी। छोरि बार दीन्हिसि लटझारी॥
सब तन महि रज लेपन कीन्हीं। फाटि पुरानि पहिरि पट लीन्हीं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भई कुरूप बरणि नहिं जाई। मनहुँ मृत्यु यमपुरते आई॥
भूप मरण की दशा बनाई। निश्चय नृप जिव हरि लै जाई॥
जो सुभाय सौभागिनि बामा। पतिब्रत धर्म निरत बसु यामा॥
सब तन किये शृंगार न रहई। घटै नाह आपू श्रुति कहई॥
यह तौ वेष बिधँवकर धारी। सत्यहि पति निजडरि है मारी॥
त्यहिपर नीच शिखहि उरआनी। ह्वैहहि अवशि काज यहिहानी॥

दो० बीज बिपति केकइ कुमति महि ऋतु पावसचेरि।
छल जललहि अंकुरजम्यो वरदल फल दुखहेरि॥

छप्पै॥ का न करै बलवान कर्म क्यहि काल न खायो। काहि न ब्यापो क्रोध काहि नहिं मरुत डगायो॥ तृष्णा ताप न तप्यो कौन क्यहि मोह न बाँध्यो। को न भयो दुखदीन काहि शार मैन न साध्यो॥ क्यहि छल्यउ नाहिं युवतीतरल चिन्ताहिनि नहिं क्यहि डस्यो। भगवन्त विचारहु सुजनजन काहि न मानस मदबस्यो॥

कवित्त॥ कीन जो कुचाल रानि प्रगटन हाल औध आनँदअपार धूमधाम धाम ह्वैरह्यो। बाजत निशान गान मंगल प्रचार जाल कौशलेश द्वारपै सुभीर भूरि ह्वैरह्यो॥ दुन्दुभीबजाय ब्योम गावत सुकीर्त्ति देव वर्षिकै प्रसून औनि मोदको सचैरह्यो। भाग्यवन्त होहि भूप रामचन्द मोदरूप सर्वयाभिलाषहीयग्रामलोग कै रह्यो॥

दो० बालसखा सुनि मुदितमन मिलि दशपांच सप्रेम।
जाहिं निकट प्रभु आदरहिं पूँछि कुशल शुभक्षेम॥
पाय सुआयसु फिरहिं घर बहुविधि करत बड़ाइ।
माँगहिं वर यह जोरिकर मन शशिमौलि मनाइ॥

सवैया॥ हे हरहारक दास दुखै सुखसारक कारक पूरणकामै। मारन मारक धारक धर्म उधारक दीन दयागुणधामै॥ देहुयहै

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भगवन्त हमैं बर जन्मलहौं ज्यहियोनि जहाँ मैं। होहिं तहां हम सेवक स्वामि मिलैं सुखधाम सुजान श्रिरामैं ॥ पालक नीति सुप्रीति सदैं प्रणतारति भंजन अन्तरयामी। औढरदानि सुभाय द्रवौ भवनाशकभौ भव शंकरनामी ॥ देहु यहै बर माँगतहैं भगवन्त सदा प्रभुतौ अनुगामी। जन्म जहाँ बश कर्मलहौं तहँ सेवकहौं रघुनायक स्वामी ॥

दो० यहिविधि मन अभिलाष सब करहिं समेत उछाहु।
केकयसुताहि दाहुअति ज्यों निशिपति हित राहु ॥

सवैया ॥ जाय सुराज्य न नीति जहाँ यशजाय हिये बहुलोभहि आये। जाय सखासन शोचसबै कुलजाय नशाय सुबिप्रसताये ॥ जाय बिमोह सुज्ञानभये अघजाय हरीहरके गुणगाये। जाय यती वश कामअपी सुमती तिमिजाय कुसंगति पाये ॥ साँझसमै सउछाह हिये नृपगौनकिये प्रिय केकइऐना। कोपनिलै सुनि भूप सक्यो मन भै बश अग्र सुपाँउपरैना ॥ जाबल बाहु अभैसुरराज नराधिप आयसु मेटिसकैना। सो सुनि कम्पितभो तिय क्रोध मनोजबली शरहै इमि पैना ॥

अस बलवान काम जगमाहीं। ज्यहिबश अनुचितकियक्यहिनाहीं॥
भूप ययाति दिलीपमहेशू। मुनि कौशिक सुरराजनिशेशू ॥
इनके गति मनलखहु बिचारी। कामबिवश अनुचितकियभारी॥
भूप ययाति कामबश लागी। युवाअवस्था सुतसन माँगी ॥
नृप दिलीपकी यकदिन रानी। कीन्ही ऋतुस्नान सयानी ॥
त्यहि रतिदान देनके काजा। जातरहे बश कन्द्रपराजा ॥
मिली कामसुरभी मगमाहीं। कीन प्रणाम प्रदक्षिण नाहीं ॥
कामविवश नृपख्याल न कीन्हा। कामधेनु तब शापहि दीन्हा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० ताते नृपति दिलीपके भयो न सुत सुखदानि।
बहुत कालसेये सुरभि तब जन्मी सुतरानि॥
रूप मोहनी हरिको देखी। कामविवश शिवभयो विशेखी॥
धारनको धायो शशि भाला। बीज पतित ह्वैगो त्यहि काला॥
विश्वामित्र रहैं व्रत कीन्हे। करत तपस्या हरि मनु दीन्हे॥
तब तहँ एक अप्सरा आई। निरखि कामबश भे मुनिराई॥
तासु संग मुनि भोगै लीन्हा। काम विवशा व्रत खंडन कीन्हा॥
इन्द्र अहल्यासन रति ठानी। भईं भगसहससकलजगजानी॥
चन्द्र कलंक विश्व सब चीन्हा। सुरगुरुतियनिजतियकरिलीन्हा॥
को समर्थ अस त्रिभुवन माहीं। कामबाण ज्यहि बेध्यो नाहीं॥
धरि नृप धीर गयो जहँ रानी। देखि दशाभइ बिथकित बानी॥
दो० अरुण नयन सूखे अधर पट पुरान महि शैन।
कुमतिहि फवत कुवेषजनु भइ बिधवाँ पतिहैन॥
तब ढिग जाइ पाणि गहि राजा। पूंछतरिस कीन्हेउक्यहिकाजा॥
परसत पाणि अधिक रिस ठानी। दीन्हेउ झटकि पकरिकररानी॥
मनहुँ सक्रोध अहिनि विषभारी। बिषम भाँतिरहि नृपहिं निहारी॥
मर्म स्थान भूप बपु डाटै। फन फनाय जनु चाहत काटै॥
द्वउ बरदान बासना जोई। रसना उभय भुवंगिनि सोई॥
दसन द्विवरगत तालू जोई। जासु डसे नहिं जीवन होई॥
सोवन राम अपर द्विज ताके। भरतराज विषडसें न जाके॥
पुनि नृप कहतबचन मृदु वोहीं। गजगामिनि कहुकारण मोहीं॥
दो० कवन हेतु कीन्हेउ रिसहि कहहु प्रियासो मोहिं।
अर्थ धर्म्म कामादि फल मांगु देउँ सो तोहिं॥
नाराच छन्द॥ प्रिया अकाज ताक तोर कौनआजु जाहिको।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चढ़्यो कराल काल शीश लेन चाह वाहिको ॥ कहौ करौं महीप काहि रंक भूप रंकही। जनाउ बेगि मोहिं सो बिहाय तूहि शंकही ॥ सकौं सँहारि शत्रु सद्य होइ जो त्वयामरौ। कहाय तुच्छ पूर्ष बाम शंक जासु मै धरौ ॥ सदै सुभाव मोरतें प्रिया प्रवीन जानई। चकोर मोमनास्यतू निशेश ध्यान धारई ॥

अस बिचारि मन भावत प्यारी। माँगहु जो रुचि होइ तुम्हारी ॥
तजि रिस पट भूषणनि सवाँरहु। सुख अवसर कतदुखमनधारहु ॥
मैं प्रिय परम तुमहिं सुखलाई। राम तिलक शुभ घरी शुधाई ॥
सो सुनि अवध बधावन होई। भयो तोर मन भावत जोई ॥
सुनि नृप वचन प्रेम रसपागे। बाण समान कुमति उर लागे ॥
भइ अति पीर तदपि उरमाहीं। राखिसि गोइ जनायसि नाहीं ॥
ज्यों परकिया नारि परकंतै। निरत भयो बिछुरन दुख अंतै ॥
राखति गोइ न रोइ जनावै। कैकेई गति तिमि कबि गावै ॥

दो० भूप न पेख्यो तासुछल यद्यपि नीति निधान।
नारिचरित बारिधि अगम गावतसुकबि सुजान ॥

करि कटाक्ष पुनि बचन बनाई। बोली कुटिल कुमति मुसकाई ॥
मांगु मांगु नित भाषत येहू। कबहुँ न कछू देहु नहिं लेहू ॥
द्वै बर देन कह्यो म्वहिं जोऊ। आजु लगे नहिं पायों सोऊ ॥
सुनित्यहिवचन कह्यो महिपाला। जान्यउँ प्रिया तोर मैं हाला ॥
याच्यो कबहिं दीन मैं नाहीं। नाहक क्रोध कियो मनमाहीं ॥
झूँठहि देहु प्रिया म्वहिं दोषू। दुइके चारि लेहु तजि रोषू ॥

सवैया ॥ कुलहंस प्रशंसप रीति सदैवरु संकट कोटि शरीरपरै। हितहोइ चहै हत द्रोहबढ़ै धनधाम छुटै बरु जीवहरै ॥ तजि स्वर्ग परै बरु नर्कजरै त्रयताप कलाप बिषाद भरै। भगवन्त अहै दृढ़टेक

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यही मुख भाषि न सो फिरि बैनटरै॥ नहिं पातक आन असत्य यथा श्रुति शास्त्र पुराण बखानकरै। चहुकोटिक गुंजन ढेर करौ कबहूंपर सोन समादि सरै॥ सब सुकृतमूल सुसत्यस्वई रघुबंश सबै दृढ़नेम धरै। भगवन्त विचारि प्रियालखुतैं बरु हंस हरै नहिं बैनटरै॥

सो० रामशपथ शतमोहिं मांगु देउँ भावतमनहिं।
कहौं सत्य प्रियतोहिं तजि रिस सजु भूषण बसन॥
यहिविधि बचन दृढ़ाय कुमति कुटिल बोलीबचन।
मनहुँ घात भलिपाय कपट बिहँग खोली कुलह॥

सवैया॥ राउ मनोरथ जोय हिए रघुनाथहि काल्हि करौं युवराजू। सो जनु कानन पावनहै सुख तासु मनोखग पुंजसमाजू॥ तापर केकइ भिल्लिनि चाहत छांड़न बैन भयंकर बाजू। ऐसि कठोर कुबुद्धि महा ज्यहि कीन सुखै दुख काज अकाजू॥

दो० प्रथम देहु बर एक यह मोहिं कृपाकरि आज।
यही समाज समेत पुर भरत होहिं युवराज॥
पुनि दूसर बर देहु यह ह्वै प्रसन्न म्वहिंराज।
बरष चतुर्दश बन बसहिं राम साजि मुनिसाज॥

सवैया॥ सुनि बैनगयो दलि भूपहियो जनु बज्र कि चोट सि घावकरी। मुख सूख सनीर बिलोचन भे अतिब्याकुलतासुधि बुद्धि हरी॥ प्रगट्यो उर दारुण दाह लिये करमूंदि युगाक्षन शोचधरी। वह कौनकहै दुख भूपशिरै जनु आय अचानक गाजपरी॥ छप्पै॥ भूपहि बिकल बिलोकि कुमति बोली कटुबैना। क्यहिकारण सुनि बचन लागि उर ज्यों शरपैना॥ देनकह्यो बरदान देहुकी भाषहु नाहीं। सत्यसंधता त्यागि अयश लीजे जगमाहीं॥ नृप सुवन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राम तव भरत नहिं जासु तिलक सुनि उरदहा। संभारि बचन बो-
ल्योकसन प्रथम जु असमन छलरहा॥

दो० सत्यसंध बनि प्रथम म्वहिं देनकह्यो बरराज।
॥ जान्यहु लेहै मांगि कहुँ चरबन मूठीनाज॥
सुनत कटुक बानीनृपति चितयो आंखि उघारि।
कुमति खड़ी आगेमनहुँ लिये क्रोध तरवारि॥

कवित्त॥ केकई कुबुद्धि मूठिधार निठुराई तासु कूबरी कुचालि
तापै धरी खरसानहै। पेखि भूप कंपित कराल अनुमान मन सत्य
कैकै सत्यकैधौं लेहै हठि प्रानहै॥ बोल्यो बैन सादर महीप मृदुमंजु
उर धीरधरि सूरिकरि बज्रके समानहै। कहत कुभांति कस बचन
प्रतीत प्रीति त्यागि बिनकाज मोहिं लावत तुफानहै॥ भरत सराम
नैन मेरे युग मातु सत्य कपट न राखिमन कहौं सतिभावहै। रामही
न लोभ राज भरतहि बोलि प्रात करौं युवराज आजु धारुमन चाव
है॥ छोट बड़जानि मैं विचारि नृप नीतिकीन दीनमत कौशिला
न मोहिं कछु कावहै। एकही बचन मोहिं लाग दुखजाल सुनि राम
बनबास कीन कठिन कुघावहै॥ हरिपदछंद॥ तजि सब प्रिया रोष
निज मनको कहहुराम अपराधू। सबकउ कहत सराहत तुमहूं राम
सहज सुठिसाधू॥ जिनकर शील सुभाव निरखि सुनि रहत अरिहु
अनुकूला। ते रघुनाथ कवनविधि करते बचनमातु प्रतिकूला॥ जो
प्रियहास किह्यो कछु होई तवतजि रोष कलापू। मांगु विचारि स-
मुझि नहिं जाते परै दुसह संतापू॥ मणि बिनु फणिक मीन बिनु
जलके जियै बरुक जगमाहीं। सत्यकहौं क्षणएक प्रियामैं जियों
रामबिनु नाहीं॥

दो० अस विचारि मनसमुझि लखु वचनप्रिया परवीन।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कहौंसत्य छलछांड़ि मम जिबन राम आधीन ॥
सुनत बचन मृदु कुमतिउर उठ्योक्रोध अधिकाय।
बरतअनल बाढ़त अधिक जिमिघृत आहुतिपाय ॥
बोली बचन कुमति दुखदाई। करहु कोटि किन भूप उपाई ॥
ये न बचन टरिहैं मम काऊ। मरौ आपु बरु उजरै गांऊ ॥
भाजन अयश मोहिं बिधि करई। नाशै सुयश पाप शिर परई ॥
शीतल चन्द्र स्रवै बरु आगी। होइ बरुक झख बारि बिरागी ॥
तपत भानु बरु शीतल होई। जलनिधि होइ बिनाजलसोई ॥
अन होनी इति होवहिं लाखा। टरहि न बचन जौन मैं भाखा ॥
त्यहिते भूप समुझि मनमाहीं। आयसु देहु राम बन जाहीं ॥
नतरु मरण मम अपयश तुमहीं। देखहुनृपतिसमुझि निजमनहीं॥
दो० असकहि उठि ठाढ़ी भई कुमति कुटिल दुख ऐन।
पकरि पाणि राखे निकट कह भूपति मृदु बैन ॥
सवैया ॥ प्राणप्रिया रबिबंशबनै जनि होसि बिखण्डन रूप कु-
ठारी। मांगसि माथ दियों अबहीं करु राम बियोग न मीचु हमारी ॥
राखहु राम रहैं घर ज्यों परि है पुनि तोहिं नतो दुखभारी। राम
नहीं सुत कानन योग बिलोकु प्रिया मनमाहिं बिचारी ॥
दो० बहुत बुझाये भूप त्यहिं सो न कान कछुकीन।
परेउ भूमि ब्याकुल नृपति राम राम रटिलीन ॥
छप्पै॥ पुनि बोली कटु बचन कुमति कूपति दुखदाई। होहिं न
दुइ यक संग बनब दानीकृपणाई॥ देनकह्यो जनि देहु कितो धी-
रज उर धरिये। अबला इव बिनुकाज नृपति कारन कत करिये ॥
तनु तनय धाम धन बाम महि सत्यसंध कहँ तृणसरिस। दयदान
बहुरि माँगहु सुतजि लाजलोक वेदन महिस ॥ सुनिबोल्यो नर-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नाह दोष कछु नाहिन तोहीं। लाग्यो मोह पिशाच काल मम लेइहि मोहीं॥ भरत सुधर्म निधान राज चाहत नहिं भोरे। मोहिं लागि दुख देन कुमति निवसी उर तोरे॥ त्यहिं विवश आजु हठ धारि तैं विपति बेलि बोयेकुमति। गति अगमनारि नहिं लखि परत कहत सत्य सज्जन सुमति॥ सवैया॥ ह्वैहँहिं राम गये कछु काल भुवाल बसी फिरि औध सुहाई। सादर बंधु सबै प्रभु के पदपंकजकी करिहैं सेवकाई॥ पैहँहिं मोद सबै भगवंत तिहूंपुर ह्वैहहि राम बड़ाई। तोर कलंक मया पछितावं मिटी न मुयेहु कबौं नहिं जाई॥ कवित्त॥ ऐसही अनेकभांति भूपति बुझावताहि कुटिल कठोर कान कीन सो न लेश है। पर्‍यो धुनि माथ हाथ रटत सुराम राम विकल भुवाल बिनु पंख ज्यों खगेश है॥ मनहिं मनाव विधि होय ना दिवसजाय कहै रघुनाथसन कोऊ य सँदेश है। याहीविधि शोचतभुवाल दुख दीनजाल विगत निशा यों बार उदित दिनेश है॥

दो० भूपद्वार आनँद परम बाजहिं विपुल निशान।
करहिं भाट गुणगान सुनि नृपहिं लगैं जनुबान॥
मंगल सकल नृपालही नहिं सुहात यहिभांति।
भूषण पट बनितहिं यथा मृतक स्वपति सँगजाति॥
कहहिं सुसेवक सचिवसब उदित विलोकि दिनेश।
भयो कवन कारण अबहिं जागे नहिं अवधेश॥

इतिश्रीमद्योध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेकोपभवनकैकेयिवरदानदशरथकरुणावर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३॥

बंदिराम सिय चरण सुहाये। जे हर मानस कमल दुराये॥
कहौं कथा भवसागर तरणी। पावनकरणि कलुषकलिहरणी॥
तव वशिष्ठ अनुशासन पाई। चले सुमंत जगावन राई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देखत भवन लाग भयकारी। अति डर सकत न करि पैठारी ॥
धरि धीरज गृह कोप सिधाये। नृप गति देखि परम दुखपाये ॥
पूंछि न सकहिं रहे चुपसाधी। बोली तब केकइ अपराधी ॥
राजहिं नींद परी नहिं राती। विलपत विकल रहे यहिभांती ॥
सो कारण मैंहूं नहिंजाना। रामराम रटि कीन बिहाना ॥

दो॰ जाहु वेगि रघुनाथही लावहु इहां लिवाय।
समाचार सब भूपकर पूंछेउ फिरि तुम आय ॥

सवैया ॥ राजनहूं रुख जानिचले अनुमानि कुचाल करी कछु रानी। व्याकुल शोक सकैं चलिना नृप रामहिं बोलि कहैं कसि बानी॥ शोचत भांति सुमंत यही पहुँचे जहँ राम तहांतर आनी। भूप रजाय सुनाय लिवाय चले सँग आतुर शारँगपानी॥ राम वि-लोक्यउ जाइनृपै दुख दीनदशा नहिं जाय बखानी। सूखहिं ओठ जरै सब अंग भुवंग दुखी मणि भै जनुहानी ॥ मीचुसमान निदान करैचह बैठिसरोष लख्यो ढिगरानी। धीरज धार हिये प्रभु मातहिं पूं-छत सादर भे मृदुबानी ॥ मातु कहौ दुखकारण तात करौं स्वइबात जु होइ निवारन। है सब कारण रामयही तुम ऊपर राजहिं प्रीति अपारन ॥ देनकह्यो बरदान हमैं युग माँग्यउँ सो सुनि शोच सु-वारन। संकटधर्म पस्यो इतही उत छांड़ि सकोच सकैं सु तुम्हारन ॥

दो॰ सत्यसंध रघुनाथ तुम पालक श्रुति मरयाद।
शिरधरि पितु आयसु करहु मेटहु विषम विषाद ॥
निज करनी रघुनाथही कहेसि कुटिल सबगाय।
धर्मवान सुत सो बचन जो पालै पितुमाय ॥
मातुबचन सुनि मुदितमन राम सहज सुखधाम।
अतिसनेह साने बचन बोले मृदु अभिराम ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सवैया॥ जननी सुनु सो सुत भागबली जगपावन कीरति तासु छई। बचपालहि जो पितु मातु नितैं धरिआयसु शीश अनंदमई॥ जननी पितु पोषणहार तनै जग दुर्लभ काहु विरञ्चिदई। भगवंत अनंद हमैं नितही बन आयसु जो पितु मातुभई॥ बड़काज अहै ममकानन में मिलिबो मुनिवृन्द विशेषितहां। पितु आयसु पालन धर्ममई जननी पुनि सम्मत तोर रहा॥ भगवंत सबैविधि सन्मुख आजु विरञ्चि दियो जस लाभचहा। बन ऐस्यहु काज न जाऊँ गनी प्रथमैं म्वहिं मूढ़ समाज महा॥ शुद्धगाछंद॥ सुरोंका रूख जे त्यागी कुशाखी रएड को सेवैं। सुधाको छांड़ि कै मांगी बिषैसानंद जे लेवैं॥ त्यऊना पायकै ऐसो समै सुन्मातु चूकाहीं। मिलो है आनि मो तैसो बिचारो माय मन्माहीं॥ हमारे शोच भो याही दुखारी देखिकै तातैं। सह्यो है क्लेश तन्माहीं जु थोरी लागिकै बातैं॥ भई है चूक मोसन्कै बड़ी सो जानि कै ताता। कहैना मोहिं सांची स्वै कहै तू सौंह मो माता॥

सुनि सनेह सानी प्रभुबानी। बोली कुटिल कपटपन ठानी॥
कारण अपर न कछु मैं जानी। भरत शपथ फुर कहौं बखानी॥
तुम सर्वज्ञ धर्मरत ताता। धर्म छांड़ि कछु करब न बाता॥
त्यहि ते पितुहित धीरज दीजै। उचित विचारि काज स्वइकीजै॥
गइ मुरछा नृप करवँट लीन्हा। रामागमन सचिव कहिदीन्हा॥
राम प्रणाम पितहि तब कीन्हा। अतिसनेह नृप भरि उरलीन्हा॥
कहि न जाय उर हरष अभंगू। मनहुँ गई मणि लह्यो भुवंगू॥
यकटक चितय रहे प्रभु ओरा। लोचन सजल प्रेम नहिं थोरा॥
तब रघुनाथ जोरि युगपाणी। पितु पद गहि बोले मृदुबाणी॥
मंगल समय शोचजनि कीजै। तात मुदित म्वहिं आयसुदीजै॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

याच्यो वर जननी जो ताता। सो सबभाँति हमहिं सुखदाता॥
धन्य सुवन जननी पितुबैना। पालहि मुदित सकल सुखऐना॥
करि प्रमाण जननी पितुबानी। चरणकमल पुनि देखबआनी॥
अवशि जाब मैं काननराई। माँगि मातुसन आयसु लाई॥

दो० असकहि रघुपति नाय शिर गवने मातु समीप।
प्रेम बिवश नहिं दीन्ह कछु उतर भानुकुल दीप॥

रोलाछन्द॥ नगर ब्यापिगइ बात सुनत सब लोग लुगाई। भये बिकल हिमत्रास यथा सरसिज कुम्हिलाई॥ कहहिं कीन करतार कहा कछु जानि न जाई। दीन्हेसि निपट बिगारि बातसब प्रथम बनाई॥ कैकेइहि दैगारि बिविधविधि दूषणदेहीं। सकल सुखहि दुखरूप कुमति डारिसि करिजेहीं॥ बिप्रबधू कुलमान्य प्रिया जे केकइ केरी। लगीं देन सिखभूरिजाय चारौदिशि घेरी॥ सदा कहहु तुम मोहिं रामसम भरत न प्यारे। आजुभये क्यहिकाज राम रिपुसरिस तुम्हारे। जो पठवहु बन राम देहु दुख सबहि कलापू। तुमहु सहब परिणाम समुझि मनमें संतापू॥ जो जैहैं बन राम लषण सिय तजब न संगू। भरत न करिहैं राज काज सब होइहि संगू॥ तुमहिं अयश अकलङ्क समुझि मन देखहु रानी॥ देहु भरत कहँ राज राम बन गय बड़ि हानी॥ नतरु रहैं गुरुगेह राम जनि बनहिं पठावो। करहु बेगि स्वइ बात जाहि दुख दुसह न पावो॥ तुमहिं कही सुनि काह समुझि मनमें सब लोगू। रामसरिस अभिराम सुवन काननके योगू॥ सवैया॥ ज्यहि भांतिन शोक कलङ्क नशाय उपायनकै कुल पालहि स्वै। हठि फेरसि रामहिं जात बनै जनि बातहि दूसरि चालसि कै॥ जिमि भानु बिना दिन प्राण बिना तनु चंद्र बिना जिमि यामिनि ज्वै।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तिमि औध बिना रघुनायकहै मन देखु विचारि सुभामिनि त्वै ॥

दो॰ बहुविधि सिखवन दीन तिन त्यहिन कीन कछु कान।
नीच प्रबोधी नारि पुनि होनहार बलवान ॥

छप्पै ॥ राम जाय ढिग मातु चरणपंकज शिर नाये। निरखि बदन सुखधाम हरषि जननी उर लाये॥ दीन्ही मुदित अशीश बसन भूषण धन वारी। बारबार मुख चूमि पुलकि लोचन भरि वारी॥ लिय राखि गोद सविनोद पुनि स्रवत प्रेमरस पय थनहि। भगवन्त परम आनँद मनहुँ लहेउ रङ्क पदवी धनहि॥ बोली तब मृदु बैन तात जननी बलिहारी। कहहु कबहि वह लग्न सकल मुद मंगलकारी॥ चाहत ज्यहि नरनारि कबहि सुख संकुल लूटी। सिंहासन सियसहित निरखि नखशिख छबि जूटी॥ सुख सुकृत मूल अघशूल हर तात सुमुख स्वइ उच्चरहु। बलि जाउँ न्हाय भगवंत कछु धरे मधुर भोजन करहु॥ तब जायहु पितु पाहिं बेर लालन बड़ि भैली। बोले सुनि मृदुबानि राम जननी सुख दैली॥ मातु दीन म्वहिं तात राज कानन सुखदाई। जहाँ मोर बड़काज देहु आयसु म्वहिं माई॥ ज्यहि कुशल जाय बन चारिदश बरष पालि पितु शासनहिं। पुनि आय पाँय देखब करहु मातु सुमनहि उदास नहिं॥ गीतिकाछंद॥ सुनि राम बैन बिनीत कोमल मातु उर शरसम लगे। गइ सहमि सूखि जवास जिमि परि बारि पावस मुद भगे॥ कहि जाय नहिं कछु हृदय दुखसुनि नाद केहरि मृगि यथा। तन कंप लोचन सजल दारुण दाह उर अन्तर मथा॥ शशिबदनाछंद॥ तब महतारी। धरि धृति भारी॥ गदगदबानी। रतिरस सानी॥ प्रभुतन देखी। कहत विशेखी॥ पितहि पियारे। तुम अधिकारे॥ निरखि तुम्हारे। चरित सुखारे॥ रहहिं हमेशा।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अवध नरेशा ॥ तिलकहि लागी। अति अनुरागी ॥ लगन शो-
धाई। सब सुखदाई ॥ क्यहि अपराधू। तुमसम साधू ॥ सुतहि
पियारे। बनहि निकारे ॥ कहहु निदानू। क्यहि कुलभानू ॥ भ-
यउ कृशानू। परम अयानू ॥ सुनि इति बानी। कह्यउ बखानी ॥
सचिव कुमारा। परम उदारा ॥ सकल हवाला। सुनत बिहाला ॥
भइ महतारी। अधिक दुखारी ॥ कढ़त न बानी। बिवरन रानी ॥

दो० राखि सकै नहिं कहि सकै राम बनहिं तुम जाहु।
दुबिधावश दारुण हृदय भा कौशल्यहि दाहु ॥

जो बन सुतहि जान नहिं देहूँ। बड़ अधर्म अरु फूटै गेहू ॥
पठवहुँ बनहिं राम क्यहि भांती। जिनहि निरखिजीवनदिनराती॥
पुनि मनमाहिं कीन अनुमाना। पतिव्रत धर्म परम बलवाना ॥
भरत राम सम भेद न कोई। म्वहिं भल भवन रहै सुत जोई ॥
धरि धीरज प्रभु बदन बिलोकी। बोली बचन नैन जल रोकी ॥
तात किहेउ भल जस कछु चाही। यहि सम धर्म अपर जग नाही॥
पिता बचन जो पालन करई। सो जनु सकल धर्म धुर धरई ॥
त्यहिते जाउ मुदित बन ताता। जो आयसु दीन्हउ पितु माता ॥
मोहिं शोच यक हृदय विशेखी। अति सुकुमार गात तव देखी ॥
क्यहिविधि तात धीर म्वहिं आवै। पलकओट करि तुमहिं न जावै॥
जीवन प्राण लाल तुम मोरे। तुमबिन कछु न भाव म्वहिंभोरे ॥
ते तुम जाहु बनहिं अब रामा।क्यहिबिधिकटिहिदिवसममधामा॥
तात मातु कर नात बिचारी। कबहुँ न भूल्यहु सुरति हमारी ॥
परम अभागिनि मैं जग माहीं। देखउँ बैठि सुवन बन जाहीं ॥
बड़भागी कानन रघुराऊ। जहँ तुम जाहु त्यागि गृह गाँऊ॥
अवधि गये जो अवध न ऐहौ। तौ पुनि मोहिं जियत नहिं पैहौ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

त्यहिते करेहु सोई सुखऐना। जियत सबहि देखहुँ ज्यहि नैना॥
अस कहि परी चरण गहि माता। मोरि सुरति जनि भूल्यहु ताता॥

पद ॥ सुरतिजनि भूल्यो राजिव नैन। करुणासिंधु कृपापरिपूरण रूप शील गुण ऐन॥ पालक प्रीति रीति परमारथ विरद दीनहित पैन। मातु पिता परिजन धन जीवन सुहृद सुजन सुख दैन॥ करि अनाथ रघुनाथ जाहु बन छोरि सकल सुख चैन। म्वहिं समान अति नारि अभागिनि अपर जयो जगमें न॥ इमि भगवन्त कहत कौशल्या करत बनत कछु हैन। भरि आये रघुपति जल लोचन सुनत मधुर मृदु बैन॥

दो० जननिहि राम उठाय तब लाये हृदय सप्रीति।
समुझाये बहुभाँति सों कहि मृदु बचन विनीति॥

त्यहि अवसर रघुपति बनवासू। सुनि सियमन अतिभयउहरासू॥
व्याकुल परम सासु पहँ जाई। सादर चरण कमल शिर नाई॥
बैठि नमित शिर आशिष पाई। शोचत हृदय प्रीति अधिकाई॥
प्राणनाथ बन चहत सिधावा। होइ संग क्यहि सुकृत प्रभावा॥
जो न साथ लेहैं भगवाना। तौ तजि देह जाइहै प्राना॥
यहिबिधि शोचत अवनिकुमारी। नयन नलिन युग मोचतिवारी॥
बोली मातु मधुर मृदु बैना। सुनहु बचन मम राजिवनैना॥
अति सुकुमारि तात बैदेही। प्राणते अधिक प्रिया सबकेही॥

सवैया॥ पुतरी दृगसो करि प्रीति बड़ी सिय राख्यउँ मैं निज प्राणन लाई। कल्पलता सम पालनकै बहु सींचि सनेह सुधा सुखदाई॥ फल फूल समय विधि बामभयो परिणाम कहा कछु जानि न जाई। बन जावन चाहत है सियसो अब आयसु होत कहा रघुराई॥ कबित्त॥ मातु कलगोद मंजु ललित हिंडोरनैसु अमित

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विनोद कीन सीय बालपन मैं। भई है सयानि जब पलँग पुनीत सेज कोमल बिहाय पगधरी न धरन मैं ॥ प्राणहू ते प्यारी मोहिं जनकदुलारी भूलि आयसु न दीन दीपबातिहू टरन मैं। भाग्य-वन्त च हत सो सीयवन जान साथ आयसु है काह मोहिं शोच भूरि मन मैं ॥

कानन कठिन परम दुखदाई। निशिचर करि केहरि समुदाई ॥
फिरहिं बिलोकि धीर डरिजाहीं। सिय सुकुमारि योग वननाहीं ॥
बिधुकर रसिक चकोरि कुमारी। रबिकरदिशिकिमिसकैनिहारी ॥
कोल किरात भील तनुजाई। बिपिन हेतु विधि चतुर बनाई ॥
सिय न सकी सहि वन दुखताता। बयकिशोरअति कोमलगाता ॥
कहहु समुझि मन जस रघुराई। तस मैं सियहि कहौं समुझाई ॥
मातु बचन सुनि प्रभु सुखमूला। बोले बचन समय अनुकूला ॥

सवैया ॥ राजकुमारि सिखावन मो सुनिये हित लागि कहौं जसचाही। आपन मोर चहौ भलजो मम बैन सुमानि रहौ गृह माही ॥ सेयहु सादर सासु सबै तियधर्म्मपरे यहि सों जगनाहीं। भामिनि भौन भलो सबही विधि शोक लहैं पितु मातु न जाहीं ॥

दो० करि पितुबचन प्रमाण मैं वेगि फिरब सुनुसीय।
बार न लागिहि जातदिन धरहु सीख ममहीय ॥

रोलाछंद ॥ विपिन महा दुखदानि निरखि लागत भयभारी। व्याघ्र सिंह वृक व्याल फिरत निश्चर गणभारी ॥ अनिल अनल हिमि घाम परत कंटक मग माहीं। गड़ि गड़ि जावैं पांव बिपति स-हिजात सुनाहीं ॥ पन्थ अगम दुखरूप मिलत सरिसर गिरिनारे। कन्दर खोह अपार जायँ नहिं नयन निहारे ॥ अशन कन्द फलमूल शैन महि वल्कल चीरा। कानन कठिन कराल सुनत डरपहिं मन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धीरा ॥ सवैया ॥ मृगलोचनि कोमलगात अवै तुम कानन के नहिं योगअहौ। सुनि देहहिं लोग सुखोरि हमैं तुमहूं बनसंकट भूरि सहौ॥ असजानि प्रिया घरमांहिं रहौ भलआपन जो हित मोर चहौ। नतु पावहुगी परिणाम दुखै वशप्रेम प्रिया हठ जोहि गहौ॥

दो० प्रिया न करिबो हठभलो बिदित अहै सबकाल।
हठकरि दुखपाये अमित गालव नहुष भुवाल॥

गालव मुनि कौशिक के पासा। बिद्या पढ़ि अस बचन प्रकासा॥
मांगहुमुनि गुरुदक्षिण जोई। आजु देउँ मैं तुमकहँ सोई॥
यहि बिधि हठकीन्हे त्रयबारा। है मुनि क्रोधित बचन उचारा॥
वसुशत श्यामकर्ण म्वहिं बाजी। देहु आनि तब होईराजी॥
सुनि गालव दुख दुसह उठाये। छासै मिले न दुइसै पाये॥
इति हठ करि गालव दुख सह्यऊ। नहुष अवध नृप सुकृती रह्यऊ॥
सुकृत प्रभाव इन्द्र पद लह्यऊ। इन्द्राणी सन भोगै चह्यऊ॥
कहेउ शची नहि रथ महिदेऊ। आवो चढ़ि तब भोगै देऊ॥
सुनिनृप सप्तऋषिन रथ लाई। है आरूढ़ चले हरषाई॥
सर्प सर्प चलिये नृप भाखा। सुनि अगस्त्यबोले करि माखा॥
होहु जाइ तुम सर्प भुवाला। इति हठ करि पाये दुख जाला॥

दो० ताते हठ जनि कीजिये रहहु प्रिया निज ऐन।
सासु श्वशुर सेवन करहु मानि मुदित मम बैन॥

कवित्त ॥ सुनि सीय बैन पति कोमल अमल चारु लोचन सजल पुंज प्रेम अत्र छायकै। जोरि कंजपाणि युग बोली बैन सासु प्रति बारबार पद्मपाँय शीश आपु नायकै॥ दीन पति प्राण मोहिं सीख जोसुहित भूरि दीख सो बिचारि पुनि हीय में बनायकै। पति सुबियोग सम वियो न त्रिलोक दुख भाग्यवन्त कहत पु-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राण बेद गायकै ॥ भ्रमरावलि छन्द ॥ कहि बैन इदं सिय राघव पाँय लगी। भ्रमरावलिसी बन जानन प्रेम पगी॥ धरि धीर कह्यो करुणाकर मो कहँ जो। प्रभु चाहहु ज्यावन तौ जनि मौन तजो॥ सवैया ॥ मातु पिता भगिनी सुत सुन्दर धर्म सुशील रचे सग भ्राते। मित्र पवित्र प्रिया परिवार जहाँ लगिहैं जग नेहरुनाते॥ सेवक स्वामि सखा हित सज्जन भूरि बिरञ्चि दिये सुख दाते। नाह बिहीन तियै सगरे प्रभु लागत हैं रबिहूसन ताते॥ देह सुगेह धरा धन राज सुसाज सबै सुख शोक समाजू। भोग सबै सम रोग अहै कल भूषणभार धरे जनु गाजू॥ लोक सबै यम यातन सो सुख दानि लगै सगरे दुखदाजू। नाहबिहीन तियै स्वपने सुख है नहिं सत्य कहौं इति राजू॥ प्राण बिना तनु सोह न ज्यों अरु सोह न ज्यों सरिता बिनु बारी। चन्द्र बिना रजनी न सजै नसजै सरपंकजहीन तमारी॥ सोह न शूर बिना रण ज्यों रसहीन यथा रस लुब्ध दुखारी। त्यों भगवन्त सुसत्य कहौं नहिं सोहतहै बिनुपूरुष नारी॥ त्यहिते नाथ साथ म्वहिं लेहू। तुम बिनु म्वहिंसुहाइनहिं गेहू॥ प्रभुसंगम्वहिं बनखग मृग जाला। परिजन सम करि हैं प्रतिपाला॥ बल्कल बसन अशन फल मूला। पर्णशाल म्वहिं सुखद समूला॥ नाथ साथ डर मोहिं न काऊ। रहब सुखी जहँ जहँ प्रभु जाऊ॥ क्षुधा तृषा बश दुखित न ह्वैहौं। प्रभु पद कमल निरखि सुखपैहौं॥ मोहिंसकल सुख रौरेहि साथा। असजियजानितजहुजनिनाथा॥

रोलाछन्द ॥ रहै भानु बिनु दिवस रहै चाँदनि बिनु चन्दा। रहै बारि बिनु पात्र रहै भ्रख बिनु जल बृन्दा॥ रहै कमल बिनु पाथ रहै सेवक स्वच्छन्दा। मैं न रहौं क्षणएक नाथ तुमबिनु सुखकन्दा॥

दो० सुनि प्रमाण लखि प्रीति दृढ कह्यो बिहँसि रघुनाथ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

त्यागि प्रिया मन शोच सब चलहु बेगि बन साथ ॥
सीय सहित रघुबंश मणि मातु चरण शिरनाय।
बारबार कर जोरिकै चले सुआशिष पाय ॥

कुण्डलिया ॥ पाये लच्मण लाल जब राम गवन बन हाल। अति आतुर आये तहाँ बिलखत परम बिहाल ॥ बिलखत परम बिहाल धरे रघुपति पद माथा। कहि न सकत कछु बैन ठाढ़ जोरे युगहाथा ॥ बन्धु बिकल अवलोकि राम बहु बिधि समुझाये। प्रभु बियोग सुनि सहमि अधिक लच्मण दुख पाये ॥

पुनि प्रभु कह्यो वचन सुखदाई। धरहु धीर लखि अवसर भाई ॥
जो मैं तुमहिं चलौं लै संगा। तौ पुर होइ काज सब भंगा ॥
भरत शत्रुसूदन गृह नाहीं। दुखित मातु पितुमम दुखमाहीं ॥
सबप्रकार असमंजस भ्राता। असजियजानि रहहुगृहभ्राता ॥
ज्यहि नृप राज प्रजा दुख पावै। अवशि भूप सो नरकहि जावै ॥
मातु पिता पद सेवन कीजे। लाभ लोक परलोकहु लीजै ॥
सुनि लच्मण बोले मृदु बैना। सुनहु कृपा करि राजिव नैना ॥
नाथ दियो सिखवन जो मोही। सो सब करन चाहिये वोही ॥

दो० जाहि सुगति कीरति विभव प्रिया पुत्र पितु मात।
मोरे तौ सबभाँति यक तुमहींसों प्रभु नात ॥

कवित्त ॥ मनवचकर्म छाँड़ि कपट सुसत्य भाय रावरेहि पाँयदृढ़ एक अनुरागिये। आपुहीसों काम बसुयाम अभिराम राम धाम धन धीव हैन प्रेम आपु पागिये ॥ आपुही भरोस आस दूसरो न जान दास जीवको सुपास पास आपुहीके लागिये। भाग्यवन्त जानि सबभाँति मोहिंआपनो सुराखिये शरणस्वामि दासही नत्यागिये ॥

दो० बन्धु बचन सुनि सरलशुचि कहेउ राम सचुपाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तात बिदा ह्वै मातु सन बेगि चलहु बन आय॥

छंदचौपैया॥ सुनि रघुबरबानी अतिसुखदानी लषण मोद मन छायो। अतिहरष समेता मातु निकेता आय चरण शिर नायो॥ लखि मलिन सुगाता पूछेउ माता कारण लषण बखानी। सुनि सहमि सुखानी धीरज आनी पुनि बोली मृदुबानी॥ सुनिये सिख ताता तव पितु माता सीय राम सुख दैना। रघुपति जहँ जाहीं अवध सुताहीं तहँ तुमहिं सुख चैना॥ सिय राम जु जाहीं बन घर माहीं काज कवन तव ताता। त्यहिते सँग जाहू जीवनलाहू लेहु सफल करि गाता॥ सुत मोहिं समेता भाग निकेता भयो लाल बलिजाऊँ। जो छल तजि सारे चित्त तुम्हारे किह्यो रामपद ठाऊँ॥

सवैया॥ पुत्रवती युवती जगस्वै रघुनायकभक्त तनै ज्यहि होई। नातरु बाँझ भली जगमें सुत जन्मत नाहक भै तिय सोई॥ राम सुवाम भये सुतते बड़ि हानि कहै कबि कोबि दलोई। भाग्यबली भगवन्त स्वई सियरामके रङ्ग रँगो नर जोई॥

अस जिय जानि रामसँग जाहू। लेहु तात जग जीवनलाहू॥
राम सीय पद सेवन कीन्ह्यो। स्वपनेहु चितकहुँ अनत न दीन्ह्यो॥
समुझि हृदय स्वइ करेहु उपाई। ज्यहि दुख लहैं न सियरघुराई॥
असकहि सुतहि लाइ उर लीन्ही। जाहु मुदितमन आशिषदीन्ही॥
मातुचरण सादर शिरनाई। चलेलषण शुभ आशिष पाई॥
आय रामपद बंदन कीन्हे। मुदित लिवाय संग प्रभु लीन्हे॥

दो० सीता लषण समेत प्रभु कृपासिंधु गुणधाम।
चले मुदित आये तुरत नृपमंदिर अभिराम॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहाविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेश्रीदशरथमहाराजविषादजानकीरघुनन्दनकौशल्याप्रतिविदामांगनसुमित्रालषणसंवादसीतालक्ष्मणसहितप्रभुनृपगृहागमनवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सीता लषण सहित रघुनाथा। जाय भूपपद नायउ माथा ॥
सहित सीय सुत सुभग निहारी। भय अतिबिकल धीरधुरधारी ॥
अति सनेह गहि हृदय लगावा। प्रेम विवश मुख बचन न आवा ॥
तब रघुनाथ जोरि युग हाथा। कहेउ बिदा म्वहिं दीजै नाथा ॥
सुनि प्रभुबचन भूप दुख पाये। गहि कर निकट राम बैठाये ॥
बहुप्रकार सिखदीन महीपा। रहत न जाने रघुकुलदीपा ॥
तब सीतहि उर लीन लगाई। दीन बिबिध बिधि सीखसुहाई ॥
नहिं सुहानि सुनि सीतहि कैसे। चकइहि शरद चांदनी जैसे ॥

दो० केकयसुता सकोप तब मुनिपट भाजन आनि।
बोली धरि रघुबर पहिरि जाहुबनै हित जानि ॥
राम तुरत मुनि बेष बनि अनुज जानकी साथ।
चले बंदि गुरुबिप्र पद नाय मातु पितु माथ ॥

आये गुरु बशिष्ठके द्वारे। देखिलोग सब भये दुखारे ॥
राम सबहिं बहु धीरज दीन्हे। याचकबृन्द बोलि पुनिलीन्हे ॥
दान मानकरि बिनय बड़ाई। प्रमुदित कीन्ह सबहिं रघुराई ॥
गुरुसन कहेउ जोरियुग पानी। तुम रक्षक सबके मुनिज्ञानी ॥
असकहि राम गुरुहिं शिरनाये। सुमिरि गजानन मुदितसिधाये ॥
प्रभु बनचलत बिकल सब लोगू। कहिनजाय पुर दारुण सोगू ॥

दो० इहाँ सुमंत्रहिं बोलिकै कहेउ बिकल नरनाथ।
रामहिं यान चढ़ायलै जाहुसखा तुम साथ ॥
बन देखाय अन्हवाय सरि तातगये दिनचारि।
सिय समेत द्वउ बन्धु पुनि लायहु पुर लौटारि ॥

लौटहिं नगर न जो द्वउ भ्राता। तौ तुमकहब बिनयकरिताता ॥
देहु फेरि रघुपति बैदेही। कहिनि सँदेशमातु पितुयेही ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ज्यहिअवलम्ब अवधिलगिप्राना। रहहिनतरुमम अवसि निदाना॥
कहिअस परेउ बिकल नरनाथा। चले सुमन्त नाइपद माथा॥
रथ अतिरुचिर साजि तहँ लाये। बिबिधभाँतिकरि बिनयसुनाये॥
सुनि पितु शासन राम उदारा। प्रिया अनुज युत भये सवारा॥
चलेनाय प्रभु अवधहि माथा। पुरजन बिकल लगे सबसाथा॥

गीतिका छन्द ॥ पुर लोगलागे साथ ब्याकुल राम बहुबिधि फेरहीं। नहिं फिरहिं ते बशप्रेम प्रभु मुखओर यकटक हेरहीं॥ लागत भयानक नगर अति जनु कालनिशि अँधियारि है। नर नारि जन्तुकराल डरपत एक एक निहारि है॥ निजधाम ज्योंहि मशान परिजन भूतसम भयदानिहै। यमदूतसम सुतमीत हित जनुचहत मारन आनिहै॥ बनबाग बेलिमलीन सरिसर हेरि नैन न जावहीं। गजबाजि पशु मृगबिहंग ब्याकुल देह सुधि बिसरावहीं॥ त्यहि समय दारुण दुसहदुख क्यहिभाँति कउ बरणनकरै। रघुबीर बिपिन पयानसुनि अस कौन जो धीरज धरै॥

दो० यहिबिधि पुरजन सहित सब कृपासिंधु रघुनाथ।
जायरहे तमसा निकट प्रथम दिवस बिनुपाथ॥
अवध दक्षिणैं कोस छा तमसा नदी बिशाल।
चैत्रशुक्ल तिथिनौमिको आये रामकृपाल॥

सवैया ॥ श्रीरघुबीर कृपा परिपूरण संतत दासनके दुखहारी। आपुदुखी बहुभाँति भये अवलोकि प्रजा निज प्रेम दुखारी॥ भाँति अनेक दिये उपदेश फिरैं नहिं लोग सनेह सँभारी। शीलसनेह न जाइ तजो रघुनाथहिं भो असमंजस भारी॥ छप्पै॥ लोगगये सब सोइ शोक श्रमबश निशिपाई। बिगत निशा युगयाम कह्यो सचिवहिं रघुराई॥ चक्रचिह्न दरशाय भ्रमित हाँकहुरथ ताता। ना-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हिन अपर उपाय चहत बिगरन सबबाता ॥ इमि सचिव रामशासन अकनि प्रभु सियं लषणचढ़ाय रथ । दिशि बिपिन तुरत हांकत भयो रथकर खोज दुरायपथ ॥ तोटक छन्द ॥ भय भोर जगे पुर लोग जबै । गय राम उठे करि शोर सबै ॥ रथ खोज कतौं नहिं पावतहैं । कहि राम चहूँ दिशि धावतहैं ॥ भय ब्याकुल भूरि न धीर धरैं ॥ यक एकन यों उपदेश करैं ॥ बनमें संग जानि कलेश महाँ । तजि दीन हमैं रघुनाथ यहाँ ॥ धृग जीवन राम बिना जग मैं । बपु छाँड़ि न हंस गये सँगमैं ॥ यहि भांति बिलाप कलाप करैं । रूख बंश प्रशंसि निजै निदरैं ॥ त्यहिऔसर केर बिषादमहा । नहिं जात कह्यो सुनि धीर बहा ॥

दो० यहि प्रकार बिलपत सकल आये अवध सप्रेम ।
राम दरश हित नारि नर लगे करन ब्रत नेम ॥

कुण्डलिका ॥ सीता सचिव समेत इत राम लषण द्वउ बीर । शृंगबेरपुर जायकै पहुँचे सुरसरि तीर ॥ पहुँचे सुरसरि तीर उतरि कीन्हे अस्नाना । पीवत अमल सुवारि भये मन मुदित सुजाना ॥ जाना मरम निषाद साजि शुभ भेंट पुनीता । चल्यो मिलन सानंद गयो जहँ राघव सीता ॥

दो० करि प्रणाम आगे धर्‍यो भेंट मूल फल कन्द ।
अति सप्रेम यकटक चितै रह्यो राम मुख चन्द ॥
तब रघुनाथ सनेह बश सादर ढिगबैठाय ।
कुशलप्रश्न पूछी मुदित प्रेम न हृदय समाय ॥

रोलाछन्द ॥ सुनि निषाद करजोरि नाय शिर बचन उचारे । कुशलनाथ सब भाँतिदेखि पदपद्म तुम्हारे ॥ मैं सेवक प्रभुआपु कृपा कीन्ह्यो जनजानी । दीन्ह्यो दरश कृपाल कहौंकिमि भागबखानी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अब चलि नगर कृपाल करिय पावन ममधामा। सुनि सप्रेम त्यहि
बैन कह्यो सादर श्रीरामा॥ कह्यो सखा तुम नीक मोहिं पितु आ-
यसु आना। चौदह वर्ष निवास विपिनभल नगर न जाना॥

दो० सुनि प्रभुबचन निषाद मन भयो विषाद अपार।
कहहिं नारि नर देखि द्वउ बंधु परम सुकुमार॥

सवैया॥ सुन्दर श्यामल गौर किशोर अनूपम आनन चंद्र उ-
दैसे। अङ्गन अङ्ग अपार प्रभा युग वेष धर्‍यो रतिनायक जैसे॥
कोमल शील सुभाव भलो भगवन्त बखान करौं छबि कैसे। ते पितु
मातु कहौ सजनी किमि जे पठये वन बालक ऐसे॥ सुनि बानि
सुतासु सयानि सखी कउ एक कहै भल भूप किये। छबिसागर
नागर बालक ये बहु कामप्रभा जिन जीति लिये॥ सहि संकट
आपु इन्हे पठये बन देखि जिन्है मगलोग जिये। भगवन्त मही-
पति धन्य मही जिन लोचनलाभ हमैं सुदिये॥

तबहिं निषाद हृदय अनुमानी। द्रुम शिंशुपा सुहावन जानी॥
शीतल सुखद छाहँ सबकाला। गयो तहाँ लै राम कृपाला॥
निजकर कुशसाथरी बनाई। मृदुमंजुलमय दीन डसाई॥
कंद मूल फल विविध सुहाये। दिये आनि लखि प्रभुमन भाये॥
सीता सचिव सहित द्वउ भाई। भोजन कीन प्रीति अधिकाई॥
करि भोजन सोवन प्रभु लागे। गहि शर चाप लषण अनुरागे।
बैठे कछुक दूरिपर जाई। कसि निषंग शरचाप चढ़ाई॥

दो० गुहबुलाय बहुपाहरू जहँ तहँ राखे आय।
बैठ्यो धनुशर साजिकै आपु लषण पहँ जाय॥
भूमि कुशासनपै निरखि सोवत राजिव नयन।
पुलकगात लोचन सजल कहत लषण सन बैन॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सवैया ॥ जे रघुनंदन सीय सदा सुख सिंधु जिन्हें शिव मानस गोए। ध्यावतहैं भगवन्त जिन्हें मुनि सिद्ध सदा तन लाजनखोए॥ सैनकरैं नित भूपनिलै मन लाजत मैन सुजो सुख जोए। ते सिय राम कृपा परिपूरण कानन भूमि कुशासन सोए॥

दो० फणि मणिसम भूपति जिनहिं जोगवत आठौयाम।
सोवत महिस्वइ रामसिय विधिगति काहिनबाम॥
कह्यो लषण यामें कछू दोष न काहुक होय।
करै कर्म जैसे ज्वई तस फल पावै सोय॥
मोह मूल दुख रूप सब जानिय जग व्यवहार।
सत संगति रघुपति भगति सार अंश संसार॥
व्यापकब्रह्म अनादि अज अविगत अलख अभेद।
नेति नेति कहि जाहि नित बरणत बाणी वेद॥
राम स्वई निज भक्तहित धरि जग मनुज शरीर।
करत चरित पावन विविध सुनत मिटहि भवभीर॥
सखा समुझि मन माहिं अस परिहरि मोह विकार।
भजहुराम रघुनायकहि हरण घोर भवभार॥

यहिविधि कहत राम गुणगाहा। भयो भोर जागे सुरनाहा॥
करि मज्जन वटक्षीर मँगाये। बन्धु सहित शिर जटा बनाये॥
लखि सुमंत मन भयो दुखारी। कहत बचन भरि लोचन वारी॥
नाथ कहेउ म्वहिं कोशलराई। विपिन दिखाय गंग अन्हवाई॥
सीता अनुज सहित रघुनाथै। लायहु फेरि बेगि निज साथै॥
सुनि रघुबीर सचिव बरबानी। बोले गिरा धर्म नयसानी॥
तात तुम्हार मर्म सब जाना। सत्य समान धर्म नहिं आना॥

दो० शिवि दधीचि हरिचंद नृप रंतिदेव बलिभूप।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धर्म धरयो सहि संकटहि कीरति बिदित अनूप ॥

किरीटछंद ॥ एक समय शिवि यज्ञकरै महिदेव रहैं तहँ बैठ अपारन। इन्द्रस अग्नि सुन्यो यशकान चल्यो तहँ लेन परीक्षहि कारन ॥ अग्नि कपोत स्वरूप भयो अरु बासव बाज कियो बपुधारन। खेद्यउ बाज कपोत भज्यो डरिजाय दुरयो नृप गोद मँझारन ॥ सवैया ॥ पाछहि धावत बाजगयो तहँ देखि नृपै असबैन सुनायो। भूप अहौ धरमज्ञ बड़े यशपुंज तुम्हार मैं हूँ सुनि पायो ॥ आवहि याचक द्वार जुके तुमसों वह बेमुख जान न पायो। सो अबधर्म सँभार करौ यशते यश लोकन भूप करायो ॥

दो० भोजन मोर कपोत यह त्यहि क्यों गोद दुराय।
बहुत दिवस को क्षुधितहौं दीजे म्वहिं पकराय ॥
सुनि राजा बोलत भयो श्येन बात सुनिलेउ।
पक्षी आयो शरण मम त्यहि कैसे तजिदेउ ॥
शरणागत आवै जु निज ताहि तजै जो कोय।
कोटि ब्रह्महत्या सरिस त्यहि शिरपातक होय ॥

ताते यह मोते जनि मांगौ। तजि यहि आश पंथ निजलागौ॥
सुनत बाज कह बचन बनाई। धर्म धुरीण अहौ तुमराई ॥
जो मम अशन देउ नहिं याही। तौ निश्चय मम जीवन नाही ॥
म्वहिं बिनु मरी सकल परिवारा। कवन धर्म तब तुम्हें भुवारा ॥
एक पुण्य अरु पातक भूरी। इन धर्मन कछु परी न पूरी ॥
कह नृप बृथाबाद जनि करहू। तजबन याहि सकल जो मरहू ॥
अपर माँगि जो चाहै लेहू। बिनु सन्देह बेगि सो देहू ॥
यहि बिधि हठ कीन्हेउ जबराजा। तब करिक्रोध कहेउ स्वइ बाजा ॥
धर्मवान जो नृप कहवावो। तौ यहिसम निज मांस खवावो ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सवैया ॥ दीनदयाल सभीतन पाल कृपाल सदा सुख दासन दायक। वेद पुराण पुकारतहै गुण दिव्य कलाप भरे सब लायक॥ धर्म धुरीण उदार सुखालय बीर प्रसिद्ध धरे धनु शायक। बन्दत है भगवन्त सदा कर संपुटके पद श्रीरघुनायक॥ कुण्डलिया ॥ राम कह्यो तब केवटहि लै आवहु निज नाव। सुनि बोल्यो केवट वचन सुनिये श्रीरघुराव॥ सुनिये श्रीरघुराव मरम रौरे मैं जाना। कीन्ह्यो शुभ मुनि नारि रही जो कठिन पषाना॥ ताते कठिन न काठ डरौं गति सुनि मुनिबामा। मानुष करणि सुमूरि अहै पद-रज श्रीरामा॥ कवित्त॥ पाहन ते काठ की कठोर है न मेरी नाव नाथ सो उड़ातवार नेकहू न लाइहौं। पालौं परिवार सब याही अ-वलम्बलाय दूसरो कबार है न बालक्यों जियाइहौं॥ होय कुल आ-पने कि हानि जो चढ़ाउँ नाव द्रव्यहू बिहीन क्यों सुदूसरी सजाइ हौं। रावरे शपथ बात साँची कहौं भाग्यवन्त धोये विनु धूरि पांव नाव ना छुवाइहौं॥ भूरि है प्रभाव पगधूरि को प्रसिद्ध लोक रावरे न लाग अनुराग रूपधारिहौं। मानुष उड़ात है परसि जाहि गात मैं सुछोटी गति काठकी सँभार कौन कारिहौं॥ गौतमकि नारि गति होय जो तरणि आजु मेरे परिवार सब बाट मोरि पारिहौं। भाग्यवन्त कीजिये उपाय किन कोटि आपु धोये विनु पावँ नाथ पार ना उतारिहौं॥ सवैया॥ कोटि करो किन बान छरो नहिं जी-वत आपनि हानि करैहौं। मोहिं मरे परिवार बचै बनबाहन हीन सबै मरिजैहौं॥ लेत ध्ववाय नहीं पद क्यों मम नाव उड़ाइ कहां तुम पैहौं। सत्य कहौं पग धोये बिना भगवन्त तुम्हें नहिं नाव चढ़ैहौं॥ प्रभु चाहहु पारहि जान जुतौ सुपखारन पायँ कहौ कस ना। पद धोइ उतारिहौं पार चहौं उतराइ कछू तुम सों मैं ना॥ वरु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मारहिं लच्मण तीर चहै जबलौं पदपद्म पखारवँ ना। तबलौं भगवन्त सुसत्य कहौं प्रभु रौखहि पार उतारबँना॥ कवित्त॥ केवट के बैन सुनि प्रेम लपटाने चारु बिहँसे कृपाल मन मोद भो अपारही। देखिकै सनेह तासु शीलसिंधु बारबार जानकी लषण ओर राघव निहारही॥ कह्यो करु बात सो न जाय ज्यहि नाव तब आनि कै सुजल पाँय वेगि तू पखारही। होतहै अबार अब लावै न बिलंब भूरि धोयकै चरण मोहिं पारको उतारही॥ व्यापक अखिल विश्व पूरण बिरज ब्रह्म ध्यानन अगम्य जापि योगीजन जागते। लावत समाधि शम्भु गावत सुयश वेद पावत न पार सुनि पाप पुंज भागते॥ शीलसिंधु नागर उदार चित्त कारुणिक दीनबन्धु दानिदास प्रेमपाग पागते। भाग्यवन्त स्वामि सोई पावन सुप्रेम बश ढाढ़े सरितीर नाव केवटसों मांगते॥ सवैया॥ ज्यहि थाह लहै श्रुति शास्त्र नहीं मुनि ध्यावनिकायन ध्यान अड़े। जपि नामतरे बहु पापभरे नर गोपद सो भवसिंधु बड़े॥ यमनादि अजामिल आदि कवी भय शुद्धकटे दुखजाल कड़े। भगवन्त स्वईप्रभु केवटसों अनुरागसों मांगत नाव खड़े॥ हरिपदछंद॥ केवट राम रजाय पायकै परिजन सकल बुलायो। अति आनन्द कठौता भरिकै सुरसरि जल लै आयो॥ चरण कमल प्रभु धोवन लाग्यो कहि न जाय सुखभारी। बरषहिं सुमन देव नभ संकुल जय जय शब्द पुकारी॥ जेपद कमल चहत बिधिशंकर मुनिजन ध्यान न पाये। ते पद पद्म आजु यह धोवत कुटुँब सहित उरलाये॥ धन्य धन्य कहि देवताहि बहु मुदित दुन्दुभी दीन्हे। केवट पाँय पखारि बारि स्वइ पान कुटुँब सह कीन्हे॥

दो० कीन पान जल कुटुँब सह केवट परम प्रवीन।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आप तर्यो परिजन सहित पितरपार सब कीन ॥
तब केवट अति आनँद पायो। सादर आनि सुनाव चढ़ायो ॥ गयो पारलै सबहिं तुरंता। कहि न जाय उर हरष अनंता ॥ तब केवटहि बोलि रघुराई। कह्यो लेहु थोरी उतराई ॥ सिय मुद्रिका देन प्रभुलागे। केवट कहेउ बचन अनुरागे ॥

नाराच छन्द ॥ लह्यों न आजु काह मैं कृपा कटाक्ष नाथके। मिटे दरिद्र दोष दुःख जन्म जन्म साथके ॥ किये कलाप काल जो कृपाल मैं मँजूरिका। दिये विरञ्चि आजुसो बनाय भारि पूरिका ॥ सवैया ॥ जे पद ध्यावत शम्भु सदा श्रुति गावत कीरति दिव्य जगी है। जे पदपंकजसों प्रगटी सरिदेव बिलोकत पाप भगी हैं ॥ जे पदपंकज पेषन को सुरसिद्धन की नित आस लगी है। धोयउँ मैं भगवन्त स्वई पदनाथ कृपा अब काह खँगी है ॥ जे पदपंकज धूरि छुये अघमै गति गौतम नारि लही है। जे पदधोय बिदेहलहे सुख कीरति दिव्य प्रकाश मही है ॥ जे पदपंकज को बरणै श्रुति शारद पुंज प्रभाव सही है। ते पदकंज प्रक्षाल्यउँ मैं भगवन्त कमी अब काह रही है ॥

दो॰ फिरति बार जनजानि म्वहिं जो कृपाल कछुदेब।
सो प्रसाद भगवन्त मैं सादर शिर धरिलेब ॥

नाराच छन्द ॥ किये उपाययो कदम्बपै कछू न सो लिये। स्व भक्ति चारुदै बिदा सुराम केवटै किये ॥ पुनः नहाय गंगराम पूजि शम्भु भायकै। किये बिनै बहोरि सीय गंग माथनायकै ॥ प्रभाव ब्रह्मचारि बारबार ही बखान की। दई अशीश गंग तौ प्रसन्नपाय जानकी ॥ कह्यो कृपालु तौ सखाहि भौन आपु जाइयो। तबै नि-षाद नाथ जोरिहाथ यों सुनाइयो ॥ जहाँ लगापु जाइहौ तहाँलु हौं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पठायकै। फिरौं बनाय पर्णशाल शासनापु पायकै॥ बिलोकि ता सनेह राम लीन बोलि साथही। चले गणेश शंभु ध्याय नाय गंग माथही॥ सखा सबंधु राम सीय पाय बीच बासही। लख्यो प्रभात जायकै कृपाल तीर्थराजही॥ कहौं प्रभावपुंज क्यों बखानि तीर्थ-राजको। लह्यो प्रमोद पेखि राम जासु राजसाजको॥ तहाँ त्रिबेनि न्हाय राम पूजि चन्द्रभालही। दिये बुलाय विप्रवृन्द दानमान जालही॥ चले सवेग राम आय भारद्वाज आश्रमै। सुने मुनीश हीय भो प्रमोदजाल तासमै॥ किये प्रणाम रामहीं मुनीश धाय लाइयो। दिये अशीश भूरिही प्रमोद ना समाइयो॥ सुबूझि कूशलात शुभ्र आनि आसनै दिये। सप्रेम पूजि भांति भूरि पूर्ण भावसों किये॥ दिये सुधा समान स्वाद कंद मूल लायकै। सखा सबन्धु राम सीय भे प्रसन्न खायकै॥

दो० परम प्रसन्न बिलोकि पुनि कृपासिंधु सुख ऐन।
भरद्वाज मुनिराज तब बोले अति मृदु बैन॥

सवैया॥ आजु भयो सिधि काज सबै तप तीरथ त्याग समाधि लियेको। योग विराग सुसिद्धि सबैफल आजु लह्यो जप दान दियेको॥ त्यों भगवन्त भयो सफलाजु सबैसुख साधनसाज कि-येको। राम तुम्हैं अवलोकत आजु भयो परिपूरण लाहु जियेको॥

दो० अब कृपाल करिकै कृपा म्वहिं बर दीजै येहु।
ज्यहि पदपंकज रावरे उपजै सहज सनेहु॥

छंदत्रोटक॥ जबलौं जन आपु न होय सही। तबलौं सुख स्वप्न न जीव लही॥ सुनि राम लह्यो सुख पुंज हिये। मुनिकी पुनि अ-स्तुति भूरि किये॥ तुम आदर जासु मुनीश करो। बड़ सोइ सबै गुणग्रामभरो॥ त्यहि अवसर प्रागनिवासि जिते। तहँ आवत भे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुधि पाय तिते ॥ अति आनँद प्रेम उमंग युते। अवलोकन का-
शलराज सुते ॥ सबसों रघुबीर प्रणाम किये। लहि लोचनलाहु
मुदित्त हिये ॥ बहुभाँतिन आशिरबाद दिये। धरि राघव रूप अ-
नूप हिये ॥ गवने गृह आनँदजाल लही। सुखमा रघुबीर सराहतही॥
तब निशि जानि तहाँ रघुबीरा। किय बिश्राम हरण भवभीरा ॥
प्रातकाल उठि भाग नहाई। सखाअनुजसह सिय रघुराई ॥
आयसुलहि करि मुनिहिंप्रणामा। चले बनहिं सानँद श्रीरामा ॥
ज्यहि मग निसरहिं ग्राम किनारो। होहिं मुदित सब देखनहारे ॥
सिय रघुबीर निरखि छबि ऐना। कहहिं एक एकनसों बैना ॥
एक कहहिं सियबदन सोहावत। चन्द्रसमान अली म्वहिं भावत ॥
षोड़श कलनयुक्त निशिराई। सीय बदन सुखमा बहु छाई ॥
शशिमहँ श्याम रेख यक राजै। सियमुखपर लट श्याम बिराजै ॥
शशिहि मृगाङ्क कहत कबिभूपा। यह मृगनैन सुखद मुदरूपा ॥
तापहरत वह यह त्रयतापा। सियमुखशशिसमसखियकथापा ॥
एक सखी सुनि कह मृदुबानी। सियमुख कमलसरिस मैंजानी ॥
अरुण मृदुल अरु गंध बिशेखी। सिय मुख माहिंसकल सोदेखी ॥
कमलसुयशकबिजन मुख गायो। सियमुखसुयशलोकतिहुँछायो ॥
सीत सुवन पंकज जग जानै। यह प्रसिद्ध सीता श्रुतिभानै ॥
उपमा और न सम सरि आवै। सियमुखकमलसरिसम्वहिंभावै ॥
सुनि पुनि सखी एक कह बाता। सियमुखसम न चंद जलजाता ॥
कमल मंदनिशि दिन निशिराई। दुहुन राहु हिमि शत्रु सदाई ॥
सिय मुख दुवन कतहुँ कउ नाहीं। करि बिचारि देखहु मन माहीं ॥
त्यहिते चन्द कमल सम नाही। सियमुख सरिस सियैमुखआही ॥
यहि मिस सियमुखसुछबिबखानी। भईं प्रेम बश सकल सयानी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रभु सिय लषण देखि छबि खानी। बड़भागी सब आपुहि जानी॥
पुरजन रहे देखि ठगि ठाऊँ। सकहिं न बूझि नावँ अरुगाऊँ॥
जे कउ वृद्ध रहे बुधिवाना। रहा मरम कछु प्रथमहिं जाना॥
मन अनुमानि गये ते जानी। यइ सिय राम लषण छबिखानी॥
आदिहिते सब कथा सुनाये। पितु आयसु ये बनहिसिधाये॥
सुनि दुख भयो हृदय सब केहीं। राजहि रानिहि दूषण देहीं॥

सवैया॥ त्यहि औसर आवत एक भयो तहँ तापस बेष बिरक्त किये। लखि रामहि दण्डप्रणामकियो सुउठाय हृदै प्रभु लायलिये॥ पुनि लच्छमण पायँन लागि पर्यो सिय पायँन पूरण प्रेम हिये। मिलि फेरि निषादहि सादर सो अवलोकि रह्यो प्रभु चित्त दिये॥

दो० तापस केर प्रसंग यह पर्यो अचानक आय।
ताहि बरणि पुनि कहतहौं सोई कथा सुहाय॥

सवैया॥ ग्राम बधू यक एकन सों कहतीं नृप बालक देखि सुहाये। भाग बड़ो भगवन्त तिन्हैं जिनके गृह ये सुत सुंदर जाये॥ कोमल गात किशोर महा प्रति अंग अनंग प्रभा बहु छाये। ते पितु मातु कहो सखिहैं किमि जे बन बालक ऐस पठाये॥

दो० मग लोगन इमि देत सुख कृपासिंधु मति धीर।
सखा लषण सिय सहित प्रभु आये यमुना तीर॥

यमुना उतरि सखहि रघुबीरा। बिदा कीन गवनेउ धरि धीरा॥
प्रभु सिय लषण समेत बहोरी। यमुनहिंकिय प्रणाम कर जोरी॥
चले बिपिन सानँद रघुराई। कृपासिंधु भक्तन सुखदाई॥
मारग जात पथिक बहु मिलहीं। कहहिं देखि मृदु मूरति तिनहीं॥

सवैया॥ सुंदररूप अनूपबने सब राज सुलक्षण अङ्ग तुम्हारे। काननपंथ कठोर महा करि केहरि वृन्द न जाहिं निहारे॥ संग

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लिये सुकुमारि प्रिया पदत्राण न हैं मग कंटक भारे। होत यही अति शोचहिये लखि ज्योतिष झूँठ सुभाय हमारे॥

बहुरि बिचारि कहहिं कछुकाला। गये आपु पुनि होब भुवाला॥
यहि बिधि पंथ सबहिं सुख देता। जाहिं रामसिय लषणसमेता॥
ज्यहिपुर प्रविशि चलेप्रभुजाहीं। त्यहिपुर सरिस अमरपुरनाहीं॥
जे सिय राम लषण छबि देखे। ते जग पुरय पुंज करिलेखे॥
ग्रामसमीप निकरि ज्यहि जाहीं। कहहिं देखि यक एकन पाहीं॥
आजु अबहिं यहि मारग जाता। सखि द्वै पथिकदीख सुखदाता॥

कवित्त॥ आगे सोहैं सांवरे बरन गौर पाछे नेकु लीन्हें सुकुमारि नारि प्यारि यक संग में। सहज सुहाये मुनि वेषहैं बनाये कटि तूनको लगाये धारि पानहीं न पग में॥ कंजदल लोचनबिशाल मुखचंद चारु सूखमा अपार सम ऊपमा न जग में। भाग्यवन्त कहौं छबिकैसे कै बखानि मुख देखे द्वैपथिक जात आली आजु मग में॥ किये मुनिवेष साथ लिये सुपुनीत बाम आजु द्वै पथिक याहि मारग सिधायगे। लघु लघु वैस छबि बैस ना त्रिलोक हेरि सुखमै सुछबिमग मगमै सुछायगे॥ भाग्यवन्त कहौं गति कैसे सो बखानि जिन आपने स्वरूप अग जग लौ लोभायगे। पाये मैंन आछी भांति देखन सुमुखचंद मोहनीसी डारिचित्त बित्तको चोरायगे॥

दो० सुनि इमि बानी नारि नर चले बिलोकन धाय।
कछुक दूरि आगे लखे जात सुपथ द्वउ भाय॥
बोली यक सखि एक सों देखु अली द्वउ भ्रात।
सुन्दर रूप अनूपबर नारि सहित मग जात॥

कवित्त॥ देखुरी पथिक द्वैक जात ये सुभाय बाट सूखमा नि-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धान रूप शीलके अगारहैं। किये मुनिवेष पाणि लियेहैं धनुष बान कसेहैं निषंग काम कोटि जैतवारहैं ॥ सोहै संग नारि एक अति सुकुमारि चारु शोभित शृंगार बिनु हार भूमिभार हैं। भाग्यवन्त कार सुख दुखके हरनहार अतिशय उदार काहू नृपके कुमारहैं ॥ सुन्दर सलोने घन सोनेके बरण चारु मंजुल मधुर मृदु मूरति उदार हैं। बीच दीप्ति दामिनीसि भामिनी प्रकाशमान सुकृत सनेह शील सुखमाके सारहैं ॥ भाग्यवन्त रूप में सुवार कोटि कामरति आनँद अगार नैन चैन दैनहार हैं। रहै न सँभार तन देखत अपार छबि आली ये अनूप काहू भूपके कुमारहैं ॥ सवैया ॥ नवपंकज लोचन चारु बने भृकुटी जनु काम कमान लसैं। करकंज शरासन बान गहे छबि अंग अनंगन भूरिबसैं ॥ लिय संग सुभामिनि दामिनि सी अवलोकत जो रति मान नसैं। भगवन्त प्रभा किमि गायकहौं युग मूरति वै चित सों न खसैं ॥ तनु श्यामल गौर किशोर अबै मुनि बेष किये शुभ शीश जटा। करकंज शिलीमुख चाप गहे सु निषंगकसे वर लंक तटा ॥ मुख पूरण चन्द्रप्रकाश मनो तकि हारत कोटिक मैन भटा। भगवन्त बखान करौं छबि क्यों लखि रूप भये नरनारि कटा ॥ सजनी धनिहै वह ग्राम जहाँ सुखधाम सुबास किये नितये। धनिहैं त्यहि ग्राम गली भलिवै बिहरे बसु याम सखी जितये ॥ धनि वै नरनारि सुभूतल में सब भाँति सदैव जिन्हें हितये। हमहूं अब धन्य भई सबहैं भगवन्त त्रिरूप इन्हेंचितये ॥ कबित्त ॥ आली एक बोलीबैन सुनी मैं ये बात कान कहौं सो बखानि ताहि सुनि चित्त आड़िले। येहैं राजपुत्र जात कानन सुतपकाज बनिता समेत पेखि वेषहूते ताड़िले ॥ पालि पितु बैन चले क्षितिको हरनभार परै जो न सांच खनि औनि मोहिं गाड़िले।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भाग्यवन्त नामहै लषण रामचन्द्र चारु कौशलेश चक्रवर्ति भूपके हैं लाड़िले ॥ चतुरंसा छन्द ॥ सुनि त्यहि बैना। भरिजल नैना ॥ बदयक आली। परम बिहाली ॥ कवित्त ॥ श्याम गौरगात अति कोमल किशोर वैसु माधुरी उमंग अंग अंग में सुछाये हैं। जनु रतिनाथ युत रति ऋतुनाथ साथ सुन्दर अनूप वेष मुनिको बनाये हैं ॥ प्राणनकेप्राण जगजीवन के जीवनय सूखमा समृद्धि कोटि कामभा लजाये हैं। भाग्यवन्त कैसे पितु मातुते कठिन जिन ऐसे सुखधाम पुत्र कानन पठाये हैं ॥ रानिहू अयानि भूरि कीन जो न बूझि बात पाहनौते पुंजसो कठोरहीय तासुहै। राजहू न जान्य हू अकाज काज आपनो सुधारिबे बिचारजे कुबैन कान जासुहै ॥ रूप शीलधाम कोटिकामभासु जेतबार ईनके बिछोह पाय लोग क्यों सुपासुहै। भाग्यवन्त आंखिनै में राखिबे के योग हैंय दीन्ह कौन भाँतितेसु इन्हें बनबासुहै ॥ सवैया ॥ अति सुन्दररूप नखशिख लों समहेरिन है उपमा जगद्वै। सुखसागर नागर आगरहैं छबिदायक मोद सुभायनस्वै ॥ पितु मातु कठोर अहैं किमि ते पठये असि मूरति काननज्वै। भगवन्त हृदै सुहमेश बसौ अवधेशके वेश य बालकद्वै ॥ मृदु पंकज पाँय नहीं पनहीं बन पन्थ महा दुखदायकज्वै। सुकुमार कुमार अपार अबै कबहूं न पर्‌यो जिनको श्रमद्वै ॥ चलिहैं किमितेसु कठोरमही अवलोकिय शोचरह्यो सखिद्वै। भगवन्त हृदय नितमोंसु बसैं अवधेशके बेश य बालकद्वै ॥ सुखधाम अनूपम मूरति ये इनको सखि का बनबास चहा। बनजान इन्हें बरमांगतमें वहि रानि कठोर हृदय न दहा ॥ अवलोकिय काननजात सबै कहि हैं हमलोग बिचारि कहा। वहि राज समाज विषे भगवन्त कहा नर चातुरद्वै न रहा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यहिप्रकार सब नर अरुनारी। समुझि समुझिमन होहिं दुखारी॥
कहहिं एक एकन समुझाई। लेहु निरखि छबि नयन अघाई॥
प्रेम विवश देखहिं सब शोभा। रूप अपार नयन मन लोभा॥
यकटक चितवत सँग सब लागे। चले जाहिं तनमन अनुरागे॥
कउ यक देखि छाँह सुखदाई। देहिं मृदुल तरुपात बिछाई॥
कहहिं सप्रेम जोरि युग हाथा। क्षणयक बिलँबिजाहु इतनाथा॥
मारगश्रम निवारि प्रभु लीजै। पुनि कृपाल जस भावै कीजै॥
तबलगिकउयकजल भरिलायो। अँचइयप्रभु मृदुबचन सुनायो॥

दो॰ जानि प्रीति सुनि बचन मृदु बटछाया भलि देखि।
सीताहि श्रमित बिलोकि अति रामकृपाल बिशेखि॥

क्षण यक बिलँबिगये त्यहि ठामा। सीता लषण सहित सुखधामा॥
भये मुदित सब नर अरुनारी। दुखितमीन जिमि लहि बहुवारी॥
चितवहिं सब सादर चितलाये। प्रेम बिबश तन सुधि बिसराये॥
छबि अपार नहिं बरणि सिराई। रतिशतकोटि मदन बलि जाई॥

सवैया॥ सुंदर श्यामल गौर कलेवर मोहनरूप मनोहर जोरी। पंकजनैन झुकी भृकुटी कलकाम कमानहुँकी गति तोरी॥ शीश जटा मुनिवेष किये धनु पाणिलिये कर त्यों बय थोरी। क्यों भगवन्त बखान करौं रतिनाथहुकै मति भै लखि भोरी॥

राम लषण सिय छबि अवलोकी। यकटक रहे नयनपट रोकी॥
पुरतिय धरि धीरज मनमाहीं। सिय समीप सादर चलिजाहीं॥
करि प्रणाम पायँन शिर नाई। कहहिं सप्रेम बचन रुख पाई॥

सवैया॥ श्यामतमालसो गात मनोहर कोटिक मैन लजावनहारे। पंकज लोचन बाहु बिशाल सुपाणि शरासन शायकधारे॥ त्यों भगवन्त बिलोकनि बंक चितै लिय चित्त सुचोरि हमारे।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पूँछति राजकुमारि तुम्हैं कहियो सखि को वय आहिं तुम्हारे॥

दो० ग्रामबधुन के बचन सुनि मृदु मंजुल सुखऐन।
सकुचि सप्रेम सुभाय पुनि बोली सिय मृदु बैन॥

गौर शरीर सुभग सुकुमारे। ते लघु देवर अहैं हमारे॥
पुनि पिय ओर चितै सुखपाई। कह्यो स्वपति सिय सयनबुझाई॥
सुनि हरषीं अति सकल सयानी। पुनि सप्रेम बोलीं मृदुबानी॥
धाम कहाँ कोशलपुर हेरे। काके सुत दशरथ नृपकेरे॥
जात कहाँ इत बनहिं सिधाये। कारण क्यहि पितु शासनपाये॥
भई बिकल सुनि सकल सयानी। धन्य धन्य पुनि आपुहिजानी॥
बार बार सिय पायँन लागी। कहहिं सप्रेम बचन अनुरागी॥

सवैया॥ राजकुमारि कबौ यहि मारग आउब जो फिरि आ-
नँद खानी। तौ भगवन्त कृपाकरिकै पुनि दर्शन देव सुसेवकिमानी॥
हैं हम लायक कोइ नहीं दिशि आपनि हेरि सुप्रेम पिछानी। दी-
नदयाल दया न तज्यो सब भाँतिन मोहिं सुआपन जानी॥

दो० सुनि सप्रेम तिनके बचन हृदय प्रीति पहिंचानि।
बहुप्रकार धीरज दिये कहि कहि सिय प्रियबानि॥

गीतिकाछंद॥ तब जानि प्रभु रुख लषण लोगन विपिन मग
पूँछत भयो। सुनि नारिनर भय सकल ब्याकुल मलिन मन आ-
नँद गयो॥ मन समुझि कर्म प्रभाव अपने हृदय पुनि धीरजकिये।
भगवन्त सादर शोधि मारग सुगम तिन तब कहि दिये॥

तब सिय लषण सहित रघुबीरा। चले बिपिन सानँद मतिधीरा॥
फेरे सबहि बचन मृदुभाखी। चले भवन रामहिं उररास्वी॥
बिरह विषाद अधिक मन माहीं। कहत परसपर इमि सब जाहीं॥

कुण्डलिया॥ जानि न जाय बिरञ्चि गति निपट निठुर चित

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जौन। भल अनभल भावै ज्वई बिन बिचार कर तौन ॥ बिन बि-
चारकर तौन रूख सुरतरु ज्यहि कीन्हा। सागर कीन्ह्यो खार शशि
हि अकलंक जु दीन्हा ॥ दीन्हा करि ज्यहि कञ्ज सहित कण्टक
मृदु खानी। नीच धनिक बड़ रंक जाय बिधि गति नहिं जानी॥
दीन्हे बिधि जो पै इन्हें दुखदायक बनबास। तौ कत कीन्हे श्रम
बिपुल रचिरचि भोग बिलास ॥ रचिरचि भोग बिलास फिरहिं ये
बिनुपद त्राना। नाहक कृत गज बाजि यान बिधि बाहननाना ॥
ये पौढ़हिं कुश डासि बादि मृदु सेजहि कीन्हे। बृथा रच्यो गृहबास
इनहिं तरुतर जो दीन्हे॥ जो पै ये बन बिचरि नित कन्द मूलफल
खाहिं। तौ बिधि अशन सुधादि बहु बादि रचे जगमाहिं ॥ बादि
रचे जगमाहिं फिरत बनपट ये धारे। भूषण बसन अनूप बृथा
बिरचे बिधि सारे ॥ सारे सुख जगमाहिं बादि बिधि कीन्हे ता पै।
मनमोहन सुखधाम इनहिं दीन्हे बन जोपै ॥

दो० एक कहहिं ये सुठि सुभग आपु लीन अवतार।
अद्भुत रूप अनूप ये बिरचे नहिं करतार॥
देखहु खोजि त्रिलोक सब सुर नर नाग समेत।
सचराचर नरनारि महँ को अस प्रभा निकेत ॥

यहि बिधिसबमनकरहिं बिचारा। कहि न जाय उर प्रेम अपारा॥
राम लषण सिय कृपा निकेता। मगबासिन यहिबिधिसुखदेता॥
जाहिं चले बन सहज सुभाये। निज शोभा रति मदन लजाये॥
ज्यहिमग जाहिं निकरिद्वउभाई। त्यहि मग रहत मोद बहुछाई ॥
खगमृग बृन्द निरखि चकिजाहीं। यकटक रहत देह सुधि नाहीं ॥
नगर नगर अस आनँद ब्राता। सीता सहित निरखि द्वउभ्राता ॥
बिनुपदत्राण निरखि मग लोगू। कहत न ये रहैं कानन योगू ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पाइ अजोपि इन्हें असभाखै । तौ धरि हृदय कमल महँ राखै ॥
जे कउ तिनहिं न देखन पावहिं । सुनि स्वरूपते पाछे धावहिं ॥
दौरि निरखि छबि आनँद भरिकै । फिरहिं भवन शोभा उरधरिकै ॥
अबलरहहिं कर मलि पछिताई । सुनि छबि हृदय न प्रेम समाई ॥
सीता लषण सहित सुरनाहू । देत सबहिं मग लोचन लाहू ॥
अति सुकुमार चले मग जाहीं । श्रमकण छाय रहे मुख माहीं ॥
सहज सनेह पतिहिं ऋजु जानी । बूझत प्रभुहिं सीय मृदुबानी ॥

सवैया ॥ सिय पूँछति प्राणप्रियापति सों वह कानन केतिक दूरि अबै । प्रभु आपु पयान किये जहँको तजि सुन्दर भोग बिलास सबै ॥ क्षण एक बिलम्ब करौ कतहूँ तकि पंथ परै तरु छाँह जबै । रज झारि बयारि सु कैमुख पै चलिहौं प्रभु आयसु पाय तबै ॥ राजिवलोचन राम प्रभू पियके सुनि कोमल बैन सुहाये । आरत बन्धु कृपालय नेह सँभारत बारि बिलोचन छाये ॥ प्रेम सों पोषि कह्यो अबहीं बन दूरि धरौ धृति भीरु सुभाये । यों भगवन्त बुझाय चितै पिय ओर चले मृग नैन लजाये ॥

कछुक दूरि लखि छाँह गँभीरा । क्षणयकबिलँबि गये मतिधीरा ॥
समाचार पुर लोगन पाये । तजि तजिकामधाम सबधाये ॥
राम लषण सिय रूप निहारी । पाय नयनफल होहिं सुखारी ॥
कहहिं धन्य ते पितु अरु माता । जिन जन्मे सुत ये सुखदाता ॥
आजु धन्य बड़भाग हमारा । जो भरि नयनन इनहिं निहारा ॥
मगबासी यहिविधि नरनारी । निरखिनिरखि सब होहिंसुखारी ॥
तब तहँ राम भीर बड़ि जाना । पुनिउठिकीन्हे विपिनपयाना ॥
फिरे मुदित गृह लोग लुगाई । करत परस्पर राम बड़ाई ॥

कुण्डलिया ॥ आगे प्रभु पाछे लषण मध्य सीय सुख धाम ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ब्रह्म जीवके बीच में जनु माया अभिराम ॥ जनु माया अभिराम शिवाशिव गणपति कैधौं। कैसह शची जयंत चले सँग सुरपति लैधौं॥ लैधौं सँग रति मैननाथ ऋतु जात सुभागे। सीता लषण समेत जात कैधौं प्रभु आगे॥ गीतिका छन्द॥ सिय राम पंथ चरित्र पावन मोद प्रद मंगलमहा। नहिं जात सुखयक बरणि सुख मे छाय बन मारग रहा॥ सिय सहित सुन्दर पथिक द्वउ सत भाय जिन देखे भले। ते धन्य बिनु श्रम अगम भवभय पार दुख दारुण दले॥ भगवन्त वह छबि अजहुँ जाके हृदय स्वप्नेहु आवई। श्री राम धाम सुजाय जो पथ कबहुँ क्वउ मुनि पावई॥

दो० यहि प्रकार बिहरत बिपिन मग बासिन सुख देत।
बाल्मीकि मुनि आश्रमहि आये कृपा निकेत॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहाविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे श्रीरामचन्द्रप्रतिनिषादवार्त्तापंथचरित्रप्रभुसीतालषणसहित बाल्मीकिमुनिआश्रमप्राप्तिवर्णनोनांषष्ठोऽध्यायः ६॥

दो० भवनिधिअगमअपार कहँ सुगमनाव ज्यहि नाम।
जनक सुता रघुनन्दनहि पुनि पुनि करौं प्रणाम॥
राम दीख मुनि आश्रमहि शोभा अमित अनूप।
सीता लषण समेत अति पाये सुख सुरभूप॥
सुनि रघुबर आगमन तब आये मिलन मुनीश।
प्रभु प्रणाम कीन्ह्योनिरखि मुनिवर दीन अशीश॥
अति सप्रेम मुनि रघुबरहि लीन्हे हृदय लगाय।
निरखि राम मुख चन्द्र छबि हर्ष न हृदय समाय॥
पुनि निज आश्रम लायकै बहुप्रकार सनमानि।
कन्द मूल फल अशन हित दीन्हे मुनिवर आनि॥
प्रभुसिय लषण समेत तब कन्द मूल फल खाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भये मुदित मुनिराज तब दीन्हे आसन लाय ॥
तब करि संपुट करकमल बोले श्रीरघुराज।
आजु सुकृत मम सफल तव दर्शन ते मुनिराज ॥
वर्ष चतुर्दश मोहिं प्रभु दीन पिता बनबास।
सो अब सुथल बताइये जहँ मैं करौं निवास ॥
सुनि मुनि रघुपति वचन मृदु बोले बचन सहेतु।
कसन कहौ तुम राम अस कृतपालन श्रुतिसेतु ॥
तव चरित्र अद्भुत अमित अद्भुत रूप तुम्हार।
अनुपम अलख अनादि ज्यहि वेद न पावतपार ॥
विधि हरिशंकर कौतुकी कौतुक जक्त अपार।
त्रिभुवन पति रघुबंश मणि त्यहि तुम देखनहार ॥
तेऊ निज बल बुद्धि तव मर्म सकैं नहिं पाय।
जानै सो भगवन्त वह ज्यहि तुम देहु जनाय ॥
तुम कहँ जानै जान सों तुमहीं सम ह्वैजाय।
ज्यों मलया सँग काष्ठ लहि होत मलय सुखदाय ॥
ते तुम सुरमुनि संतहित लागि धरेउ नररूप।
जड़ मोहन सज्जन सुखद करहु सुचरित अनूप ॥
पूछेउ म्वहिं निज रहन हित कहउँ सुनहुँ सो ठाम।
जहाँ लषण सीता सहित बसहु सदा श्रीराम ॥

छंद त्रोटक ॥ जिनके श्रुति सिंधु समान परे। यशपावन तौ सरिजालभरे ॥ कबहूँ परसो नहिं पूरभरौ। तिनके हृदि मंदिर रूर करौ ॥ युग लोचन चातृक जे सुकिये। धृत दर्शन बारिद चाह हिये ॥ सरिसागर बारि सुनिंदत जे। लहि बिंदु स्वरूप अनंदित जे॥ तिनके हृदिवेस्मि प्रकाशभरौ। सिय सानुज राम निवास करौ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जिनके मन मान न मोह मदा। तिनके मन धाम करौ सुसदा॥ प्रिय संत अनंत जिन्हैं नितही। सम पेखत जे सु हिताहितही॥ नित भोजन आपु उच्छिष्टकरैं। पटभूषण अर्पि तुम्हैं सुधरैं॥ शिर नावहिं देखि सु बिप्रगुरै। करिये तिनके शुभथान उरै॥ पदतीर्थ पयान करैं जिनके। मन मंदिर रामबसौ तिनके॥ करहीकर पूजन राम सदा। तजि आपु भरोस न आन यदा॥ तुमतेधिक जानि गुरै सुहृदै। सनमानि सुसेवन कृत्य सदै॥ जननी सम जे परनारि तकैं। बदबैन सुसत्य बृथा न बकैं॥ बच मानस कर्म सदै जिनके। गति तौ उरराम बसौ तिनके॥

दो॰ सबप्रकार ज्यहि आपु सों मन बच कर्म सनेह।
राम लषण सीता सहित करहु तासु उरगेह॥
यहि प्रकार मुनि राम कहँ बहुत बताये ऐन।
पुनि सप्रेम श्रीरामसन बोले मुनि मृदुबैन॥
सुनहुराम अब कहउँ मैं आश्रम समै समान।
चित्रकूट गिरि सुखद अति करहु तहाँ शुभथान॥
अत्रि आदि मुनिवर जहाँ बसि तप करहिं अपार।
पावन सरि कानन सुभग फल बाँछित दातार॥
भलेहि नाथ कहि मुदित मन सीय सहित द्वउभाय।
चले तुरत पैं सरितबर कीन्हे मज्जन आय॥

छन्द॥ चित्रकूट कियबास राम सुनि देवन पाये। धरि धरि कोल किरात बेष तहवाँ सब आये॥ रचे परण तृणशाल सुभग युग बरणि न जाहीं। सीता लषण समेत राम राजत तिन माँहीं॥ जनुरति ऋतुपति मदन युत मुदित बिपिन बसि तप करत। भगवन्त कहैं किमि समय सुख चित्रकूट आनँद भरत॥ रोलाछंद॥ बरषि सुमन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुरवृन्द हरषि जैं जैं बहुभाखी। गमने निज निज धाम हृदय सिय रामहिंराखी॥ समाचार सुनि सकल अत्रि आदिक मुनिवृन्दा।आये तहँ सानँद सुछवि देखन सुखकन्दा॥ प्रभु प्रणाम उठि कीन दीन आशिष सब काहू।राम लषण सियरूप निरखि लहि लोचनलाहू॥ भये मुदित मुनिवृन्द राम बहु विधि सनमानी। किये विदा सानंद सब कहि कहि मृदुबानी॥ सुनि रघुबर आगमन मुदित सब कोल किराता। कन्द मूल फल भूरि चले लै भरिभरि पाता॥ आये तहँ सानंद भेंट दै प्रभुहिं जुहारी। निरखि निरखि सियराम रूप छबि होहिं सुखारी॥ जानि प्रीति बहु भांति तिनहिं रघुपति सनमानी। प्रभु प्रसन्न अवलोकि कहैं सादर मृदुबानी॥ सवैया॥ नाथ सनाथ भये सबहैं हम आपु सुपङ्कज पांय निहारे। कोशलनाथ कृपालत-वागमना जु भये बड़ भाग हमारे॥ बास कियो भल जानि यहाँ रहबै सब काल सुआपु सुखारे। नाथ न आयसु देत सक्यो हमसे-वकहैं सकुटुम्ब तुम्हारे॥

दो० सुनि सप्रेम तिनके बचन रघुपति राजिवनैन।
परितोषे बहुविधि सबहिं कहि सप्रेम मृदु बैन॥
बिदा किये पुनि सबहिं प्रभु चले नाय पद माथ।
आये निज निज भवन सब कहत रामगुण गाथ॥
यहिप्रकार कानन सुभग सिय समेत द्वउ भाय।
बसहिं परम आनंदयुत सुर नर मुनि सुखदाय॥

सवैया॥ जादिन ते करुणा करिकै सिय संयुत राम बसे बन आई। तादिन ते सब जीव सुखी अति होत भयो बन मंगलदाई॥ आनँद पूरि रह्यो सब ठाम सुजाहिं जहाँ जहँ दूनहुँ भाई। क्यों भ-गवन्त बखान करौं वहि कानन जाल रह्यो छबिछाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सोहहिं अतिवृक्षनकी पांती। फल प्रसून पल्लव बहु भांती॥
ललित लतान बितान सुहाये। बिहँगवृन्द तिन महँ छबिछाये॥
शीतल मंद सुगन्ध बयारी। चलत सुभाय ताप त्रयहारी॥
फूले सरन सरोज अपारा। अलिगण करहिं मुदित गुंजारा॥
खग अनेक बहु बानी बोलैं। सुनत सुख मन धीर न डोलैं॥
करि हरि कपि बृक कोल कुरंगा। बैर बिहाइ फिरहिं यकसंगा॥
राम कृपा भय काहुहिं नाहीं। सुखी सकल बनचर बनमाहीं॥
कहौं प्रभाव बहुत किमि गाई। जहाँ बास कीन्ह्यों प्रभु आई॥

दो० गिरि कानन सर सरित बर जावत त्रिभुवन माहि।
चित्रकूट के भागको सब मन रहे सराहि॥

यहि बिधि सीयसहित द्वउभाई। बसहिंबिपिन त्रिभुवनसुखदाई॥
मन बच कर्म जानि निजदेवहिं। लषण राम पद पंकज सेवहिं॥
सुखी परम प्रभु सँग बैदेही। करत न सुरति मातु पितुकेही॥
कहहिं राम बहु कथा पुनीता। सादर सुनहिं लषण अरुसीता॥

दो० चित्रकूट यहि बिधि सुभग सिय समेत द्वउ भाय।
परणशाल राजहिं मुदित शोभा कहि नहिं जाय॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहनम्बरदारवमांत्मजभगवन्तासिंहविरचितेभाक्तिशिरोमणिग्रन्थे श्रीरामचन्द्राचित्रकूटविलासवर्णनोनांसप्तमोध्यायः ७॥

दो० बरदायक बरदायकन बरदायक सुखधाम।
जनकसुता रघुवीरपद शिरधरि करौं प्रणाम॥
चिटकूट ज्यहिविधि रहे सियसमेत द्वउभाय।
सो चरित्र पावनपरम कह्यों कछुक मैं गाय॥
अब सुमन्त ज्यहिविधिगयो फेरि अवध दुखमानि।
सो चरित्र संक्षेप मैं सादर कहौं बखानि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रोलाछन्द ॥ लवट्यो प्रभुहि पठाय भवन निज जबहि निषादा। देख्यो सचिवहि आय परे महि बिकल बिषादा ॥ रटत राम सिय राम देखि दुखभयो निषादे। समुझाये बहुभाँति सचिव अब तजहु बिषादै ॥ बहुप्रकारदै धीर यान बरबस बैठाई। रामबिरह दुखदीन सचिव रथहाँकि न जाई ॥ चलत न हय हिंहिनात बिकल दिशि दक्षिणदेखा। बाजिदशा अवलोकि भयो दुख गुहहिं विशेषी ॥

दो० तब दीन्हे करि साथ निज सेवक चारि बुलाय।
हाँकि रथहि ते अवधपुर चले सुमन्त ल्यवाय ॥
बहुविधि शोच सुमन्तउर करमींजै पछिताय।
रामहि विपिन पठाय पुर जाब कवन मुहलाय ॥
पंचराचत यह अधमतनु आखिर रहि न निदान।
कस न लहेउ जग सुयशवर बिछुरत श्रीभगवान ॥
पुरजन मोहिं बिलोकि जब धायपूछिहैं आय।
काह कहब मैं तिनहिं तब आयों विपिन पठाय ॥

सवैया॥ मातुसबै दुखदीन महा अवलोकि हमैं पुछिहैं जबआई॥ कौन सुआननते कहबै तब कौन सँदेश तिन्हे सुखदाई ॥ आयउँ मैं कुशलात घरे वन सानुज राम ससीय पठाई। पूँछिहि जो त्यहि उत्तरदेब सुलेब यही यश औधहि जाई ॥

दो० पूँछिहि मोहिं बिलोकि जब राउ महादुख दीन।
कहिहौं का तब जासुकर जिवन रामआधीन ॥

सो० यहिविधि करत बिषाद तमसातट आयो तुरत।
कीन्हे बिदा निषाद फिरे पायँपरि मन दुखित ॥

सवैया ॥ बसहानि गलानि सुमन्त महा सकुचै पुर पैठत माहिं हिये। कहिजाय न तासु दशातनकी जनु ब्राह्मण गोवध जाल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

किये ॥ तरुकेतर बैठि बितायदिनै भइ साँझ सुऔसर जानिलिये।
भगवन्त घरीयुग रातिगये चुपके रथलै पुरपाँवदिये ॥

दो० माधव कृष्ण सुबाण तिथि गये निशारधयाम।
आय राखि रथ द्वार नृप रह्योजाइ छपि धाम ॥
समाचार पुरजन सुनत धाये भूपति द्वार।
रामरहित अवलोकि रथ भय सब बिकल अपार ॥

सुनि सुमन्त आगमन अवासू। भईं सब बिकल परम रनिवासू ॥
लाग्यो भवन भयानक कैसे। प्रेत निवास करत जहँ तैसे ॥
बिकल सकल त्यहि पूँछै लीन्हा। सचिव शोकबश उतर न दीन्हा ॥
पुनि सुमंत भूपति पहँ गयऊ। नृपगतिदेखिअधिकदुखभयऊ ॥

दो० राम बिरह ब्याकुलनृपति पर्‌यो धरणि यहिभांति।
सुरपुर ते जनु भूमि पै खसि नृप पर्‌यो ययाति ॥

नृप ययाति कै गति भै जैसी। करि संक्षेप कहौं कछु तैसी ॥
यकसै एक यज्ञ उन कीन्हा। यही देह सुरपुर लै लीन्हा ॥
तब हरि निजदुख गुरुहिं सुनाये। सुनत बृहस्पति युक्ति बताये ॥
धरि द्विज रूप शक्र तहँ गयऊ। नृप ययाति ते बूझत भयऊ ॥
आपु कीन का पुण्य अपारा। ज्यहिसदेह यहि लोकसिधारा ॥
सुनि ययाति मुख बरणय लीना। तुरतहिं पुण्य भईं सब क्षीना ॥
पुण्यहीन महि गिर्‌यो ययाती। नृपदशरथगति भै त्यहिभांती ॥

दो० भूप मनोरथ अमरपद भूमि मनोरथ बाम।
बरणन करि मुख धर्म निज पर्‌यो भूमि परिणाम ॥

जाय सुमंत चरण शिरनावा। देखि भूप उठि हृदय लगावा ॥
अतिसनेह पूँछत नृपतेही। कहु सुमंत कहँ रामसनेही ॥
कहाँ लषण कहँ सिय सुकुमारी। पूँछत राउ नयन भरिबारी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सखा कुशल कहु रघुपति केरी। गये बनहिं की आन्यहु फेरी ॥
कहिनि सँदेश राम कछु तोहीं। सपदिसुनाउ सचिव सो मोहीं ॥
राजदेन कहि बनहिं पठाये। हरष विषाद न कछु मन लाये ॥
अस सुत गये रहे जो प्राना। तौ म्वहिंसम को पापनिधाना ॥
बेगि सखा स्वइ करहु उपाई। राम लषण सिय देहि देखाई ॥

सवैया ॥ धारि सुधीर सुमंत हृदै नृप सों करजोरि कह्यो मृदु बानी। राजशिरोमणि चक्रवती तुम धीर धुरन्धर पण्डितज्ञानी ॥ सेवहु साधु समाज सदा नृप कीरति पावन तौ जगभानी। त्यों भगवन्त बिचारि हिये नृप धीर धरों समया अनुमानी ॥

दो॰ जन्ममरण बिछुरन मिलन हानि लाभ सुखशोग।
नाथ होत सब साथही कहत वेद बुध लोग ॥

असनृप समुझि शोक परिहरहू। समय बिचारि सु धीरज धरहू ॥
प्रथम कीन तमसातट बासा। दुसरे दिन गय सुरसरिपासा ॥
तिसरे दिन उठि होत सकारे। लय बट पय शिर जटा सँवारे ॥
सीता लषण सहित रघुवीरा। चढ़ेनाव लखि मोहिं अधीरा ॥

चौपैया छंद ॥ लखि मोहिं अधीरा धरि उरधीरा कह्यो वचन रघुराई। पितुसन हुतिमोरी तुम करजोरी करब बिनय शिरनाई ॥ चिंता ममलाई करिय न राई म्वहिंमुद कृपा तुम्हारी। आयसु प्रतिपाली फिरिहौं हाली तजि अशोच सुखकारी ॥ जननिन समुझाई धीर धराई बिनय भाँति बहुकीन्ह्यो। गुरुसन पुनिजाई पद शिरनाई कहि सँदेश यह दीन्ह्यो ॥ स्वइ करब उपाई ज्यहि दुखराई मम लगि तात न पावें। पुनि कहब सु जाई यह समुझाई भरत नगर जब आवैं। लहि राज अनूपा बर पदभूपा तजब नीति नहिं भाई। परजहि प्रतिपाल्यो अनय न चाल्यो सेयहु सम सब भाई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यहिविधि रघुनायक जनसुखदायक कह्यो मोहिं समुझाई । केवट तबपाई रुख रघुराई पारहि नावचलाई ॥

यहिबिधि राम लषण सियसंगा। चले नावचढ़ि पारहि गंगा॥
मैं लखि नैन जियत फिरिआयो। म्वहिंसम पापवन्तको जायो॥
सुनतपस्यो महिबिकलभुवालू। मणिबिहीनजिमिब्याकुलब्यालू॥
समयशोक किमिकहौं बखानी। सुमिरि सुमिरि सबरोवहिं रानी॥

दो॰ राममातु धरिधीर उर बोली बचन गँभीर।
नाथधरिय मनधीर तौ फिरि मिलिहैं रघुबीर॥

सुनि नृप चितयो आँखि उघारी। तलफत मीनलह्यो जनुबारी॥
उठे बोलि कहँ राम हमारे। कहँ सीता कहँ लक्षिमण प्यारे॥
बारबार इमि कहि नरनाहू। भयो अधिक उर दारुणदाहू॥
त्यहि अवसरकर शोकअपारा। को असधीर जो वरणैपारा॥

दो॰ अन्धीअन्धा शापकी तब सुधि हृदयसुकीन।
कौशल्यासन हाल सो सब नृप वरणय लीन॥

तापसान्ध अन्धी विख्याता। सरवन के ते हैं पितुमाता॥
सरवन तिनहिं तृषितजियजानी। सरयूतट गय आनन पानी॥
बोरयो जबहिं कमण्डल जाई। सो रव कछुक भूप सुनिपाई॥
चीन्ह्योनहिं निशि नृपकरिजाना। त्यहि भ्रमते नृपमारयो बाना॥
लागत शर सरवन मरिगयऊ। तबतिन नृपहि शापअसदयऊ॥
हमहिं शोक दीन्ह्यो सो पैहौ। पुत्रबिरह तुमहूं मरिजैहौ॥
इति इतिहास भूप सुधिआनी। कौशल्यासन कह्यो बखानी॥
बहुत बढ़ाय कह्यों मैं नाहीं। बिदित कथा अध्यातम माहीं॥
यह अपराध बहुत मैं कीन्हा। उदय पाप सोई अब चीन्हा॥
कहि अस बिकलपस्यो नरनाथा। धृक धृक जीवन बिनु रघुनाथा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हाय हाय कहि कहि सियरामा। तनु तजिगयो भूप सुरधामा॥

दो॰ लखि लागीं रोवन सकल रानी हति शिरपानि।
भूपरूप गुण तेज बल शील सुभाव बखानि॥
बिलपहिं दासी दास सब पुरजन परिजन लोग।
पर्‍यो रुदन घरघर अवध भूपमरणके शोग॥
होत प्रात मुनिआयकै सबकर शोक मिटाय।
नृपतनु राखि सुयानकरि लीन्हे दूत बुलाय॥
कह्यो बेगि तुम जायकै लावहु भरतहि बोलि।
भूपमरणकर हाल यह कह्यो कतहुँ जनि खोलि॥
यहै कह्यो पठये तुमहिं गुरुबुलाय द्वउभाय।
सुनि मुनिवरके बचनबर चले दूत तुर धाय॥

पहुँचे दूत भरत पहँ जाई। गुरुनिदेश सुनि दूनौ भाई॥
गमने तुरत शोच अधिकाई। पुरसमीप पहुँचे जब आई॥
लगेहोन अशकुन बहुभाँती। खर श्रृगाल रवकरहिं कुभाँती॥
मिलहिंलोगकछुकुशलनकहहीं। करि प्रणाम निजमारगगहहीं॥
केकयसुता सुन्यो सुत आवत। उठी तुरत उर चाव बढ़ावत॥

सवैया॥ केकयनंदिनि मंद महासुत आवत जानि उठीहरषाई। कंचनथार सवाँरि सुआरति मंगल बस्तु भरे समुदाई॥ द्वारहि आय मिली भरतै करि आरति पुंज प्रमोद बढ़ाई। त्यों भगवन्त सुभेंटि भली बिधि बारहिंबार सुमंदिरलाई॥

दो॰ भरत दुखित परिवार लखि लहत न मनमें चैन।
सुतहि सशोच बिलोकि तब बोली केकइ बैन॥

बन्धुछन्द॥ पूँछति केकइ पुत्रहि बाता। खैरि अहै मम नैहर ताता॥ भरत सबै कहि खैरि सुनाई। बूझेउ फेरि इहाँ कुशलाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मुक्तकदामछन्द ॥ कहाँ कहु बेगि अहै मम तात। कहाँ कहु मातु सबै कुशलात ॥ कहाँ कहु राम सिया सुखदाय । कहाँ कहु लक्ष्मण प्रीतम भाय ॥ कमलछन्द ॥ सुनत सुवन बयन । ठन्यसि कुमति फयन ॥ सारूछन्द ॥ नैन नीर ढारि । बोलि चैन मारि ॥

कवित्त ॥ राज काज साज सब सहित कुशल क्षेम सकल प्रकार तात बात मैं सँवाखऊं । भई है सहाय मम मंथरा परमपीव देखि जो नशात काज आपने सँभाखऊं ॥ मांगि राज हेत तव कंटक उखारि सब थोरिक सिवात बिधि बीचही बिगाखऊ। पाये न बिलोकन महीप पुत्र राज तव त्यागि तनु आप सुरलोकही सिधाखऊ ॥ सुनत भरत भये सानुज बिकल भूरि परेमहि मुर्छित सँभारना सुगातही। तलफत मीन जनु पीन बिनु दीन अति हाय हाय हाय कहि रहे टेरि तातही ॥ गयो सौंपि रामही न तात गहि पाणि मोहिं पायों मैं न देखन नयन तोहिं जातही । भाग्यवन्त धारि उर धीरज सँभारि उठि पूंछत सप्रेम बारबार पुनि मातही ॥ तोमरछन्द ॥ क्यहि हेतु गे मरि तात। म्वहिं बेगि सो कहु मात॥ सुनि भरतके इमि बैन। कह मन्दधी दुख दैन ॥

दो० देवासुर संग्राम ते त्यहि दिन लगे जुकीन।
सो करनी सब आपनी कुटिल कुमति कहि दीन ॥

गीतिकाछन्द ॥ सुनि राम सिय बन गमन भरतहि बिसरि पितु मरिबो गयो । गिरि परेउ मुर्छित भूमि तलफत हृदय दुख दारुण भयो ॥ म्वहिं लागि सब सुख त्यागि निज सिय राम बन मारग गहे । अनुमानि मन सब हेतु आपन थकित धरि मौनहि रहे ॥ मोदकछन्द ॥ ब्याकुल देखि सुतै समुझावत। मानहुँ लोन जरेम लगावत॥ तात महीप न शोचन योगहि। पुण्य बिढै फल कीन्हेउ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भोगहि ॥ सवैया ॥ जग रीतिहै जीवन मृत्यु सदा त्यहिते नृप लागि न शोच धरौ। नहिं होतहै आपन कीन कछू सुत होत स्वई जुबिरञ्चि करौ ॥ भगवन्त हिये अनुमानि यही धरि धीरज शोच तजौ सगरौ। ससमाज नृपायसु राज करौ सुप्रजा परिवारक शोक हरौ ॥ रथोद्धताछन्द ॥ राज कीजिय सु यों जबै कह्यो। सो सुने भरतको हृदै दह्यो॥ भेति ब्याकुल सँभार ना रही। फेरि धारि धृति बैन यों कही ॥ कवित्त ॥ जो पै तव चित्त बीच रही यों कुमति नीच दीन्हे क्यों न मीचु मोहिं जन्मतहि बावरी। दीये कुल नाश करि एकही सुबार तयँ पस्यो सूझि काह तोहिं कीन्हे जो कुदाँवरी ॥ कीन्हेसि तु ऐस जैस करी है न कोई जग पापिनि प्रतीति तोरि कीन्ही किमि रावरी। ऐसो बर मांगते खसी न महि जीह तव परे भि मुख मैंन भयो उर घावरी ॥ सवैया ॥ हरि बुद्धि लई बिधि अंत समय नृप बात न लीन बिचारि हिये। रघुनंदनसे सुत जाहि बनै इति बैनत्वया ज्यहि कान किये ॥ अब तोहिं कहौं बहु भांति कहा तैं तौ सब काज बनाय लिये। बन लच्छमण राम ससीय पठै पति मारि हमै चहै राज दिये ॥ मारत नाँह न नेकु डरी बर मांगि बनै सियराम पठाई। कौन सों प्रेत पिशाचिनि है कहँकी नृप बामभई अब आई॥ जो त्वहिं राम अहित्त लगे कहु सत्य कठोर हिये दुखदाई। जोहसि सोहसि मूँदि मुखै उठि आँखिन ओट तु बैठहि जाई॥

दो॰ त्यहि अवसर कुबरी तहाँ आई सजि सब गात।
लखि सक्रोध उठि शत्रुहन हनि मारी यकलात॥

कवित्त ॥ लागत चरण चोट गिरी सो धरनि जाय कूबर गो टूटि फूटि फाटि गो कपारहै। गये मुख टूटि दंत दलित अधर बीच खंडित सुजीह जोर चली रक्त धारहै ॥ हाय हाय हाय कहि रोवत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुकारि दैव करत सुनीक फल पायों मैं ब्यकारहै। सुनि शत्रु आरि धारि केशन घसीटि पीटि डारी तन तासु करि दुर्गति अपारहै॥

दो० भरत दयानिधि देखि तब दीन्हें ताहि छोड़ाय॥
कौशल्या के भवन पुनि आये चलि द्वउ भाय॥

पंकज बाटिका छन्द॥ राम जननि गति जाय लख्यो जब। शोक बिकल द्वउ भाय भये तब॥ सवैया॥ पहिने पट अंग मलीन महा बपु गौर अतीव सुश्याम भयो। कृशगात गयो रहि अस्ति मई हत श्रीमुख जाल उदासि छयो॥ दुखभार सँभार न कारिसकै रघुबीर बियोग त्रिताप तयो। जनु कल्पलता बर कानन में छबि छाय रही सुतुषार हयो॥

राम मातु जब भरतहिं देखी। उर उपजा अनुराग विशेखी॥
लगी उठन महि गिरी झँवाई। भरतहिं देखि बहुरि उठिधाई॥
पुनि गिरि परी अजिर महँमाता। निरखि रोय दीन्हे द्वउ भ्राता॥
भरत उठाय चरण शिर नाये। तबहिं मातु गहि हृदयलगाये॥
नयनन नीर भरे द्वउ भाई। समय बिषाद बरणिनहिं जाई॥
कौशल्या तब धीरज लाई। बहु प्रकार भरतहिं समुझाई॥
अँचल आंसु पोंछि पुनि रानी। कहत भरत सों इमि मृदुबानी॥
तुम बिन तात मोर यह हाला। उठि न सकौं तनुपरमबिहाला॥
राम लषण सिय बनहिं सिधाये। करिमुनि वेष पयादेहिं पाँये॥
राम बिरह भूपति तनु त्यागी। सुरपुर गयो आपु बड़ भागी॥
मैं न गइउँ सँग तज्यउँ न प्राना। को पापिनि जग मोहिंसमाना॥
मातु बचन सुनि भरत सभाई। भये बिकल तन दशा भुलाई॥
रोवहिं बिकल सकल रनिवासू। कहि न जाय जसभयो हरासू॥
बोले भरत धीर धरि बाता। बृथाजगत जनम्योम्वहिंमाता॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सवैया॥ केकइ क्यों जनमी जगमांझ महादुखदाइनि पापमई है। जोपय सो जनमी जगआनि तुकाद्यन ह्वै निज बांझगई है॥ बंश कलंकित द्रोहमई अघरूप जुजन्मत मोहिंभई है। जोपि रहै करिबो असताहि तो काहेन डास्यसि होत हई है॥ मोसमको जग पापमई ज्यहि लागिभई गति तौ असिमाई। तात पयान किये सुर लोक ससीयगये बन दूनहुँ भाई॥ केवल मैंहिं अनर्थक मूलसबै उतपात भयो म्वहिं लाई। जन्म बृथा जग मोर भयो ज्यहि लागि सबै दुख दारुण पाई॥

दो॰ धिक धिक उदधि अभाग में औगुण अयश अगार।
ममपाछे सियराम बन सहिहैं बिपति अपार॥

सुनि मृदु बचन राम महतारी। बोली हृदय धीर धरि भारी॥
तात जाउँ बलि समय बिचारी। धीरज धरहु धीर धुरधारी॥
मोर अभाग न काहुहि दोषू। तात मातपर करिय न रोषू॥
होनहार सुत जो कछु रहेऊ। कालपाय सब होत सो भयऊ॥
भयउ बाम बिधि उदय अभागू। तात सकल मम कर्मन लागू॥
सुनि दुखभरी मातु मुख बानी। कहत भरतकरि सम्पुट पानी॥

दो॰ जो अघमारे मातु पितु गाय बिप्र गुरु होय।
मातु मोर मत होय तौ देवै बिधि म्वहिं सोय॥

रोला छन्द॥ जे मारैं शिशु बामगाँव बन आगि लगावैं। चलैं वेद प्रतिकूल साधु सुरसंत सतावैं॥ जेहरिहरपद त्यागि भजैं नित भूत पिशाचा। नहिं सुहाय हरि सुयश कहैं मुख सत्य न बाचा॥ बिषदै मारैं मित्र भूपउर दया न आनै। कपटी कुटिल कलाप पाप परबदन बखानै॥ तिनहिं पाप जो होइ देउसो मोहिं बिधाता॥ मत हमार लवलेश होय जो यामें माता॥ जे निन्दक श्रुति शास्त्र

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भेद हरिजनमें लावत। परधन परतिय काज लाज तजि निशि दिन धावत॥ देहिं विप्र गुरु शोक मातु पितु चरण न सेवैं। करैं न तीरथ बर्त बिनाहरि अर्पण जेवैं॥ लोभी लम्पट चोर मांस मदिरा जे खाहीं। नितउठि ठानैं रारि साधुसंगति नहिं जाहीं॥ होय तिनहिं जो पाप देउ मोकहँ बिधि सोई। जो जननी यहि माहिं मोर तनकौ मत होई॥

दो० कर्म बचन मन छाँड़ि छल जिनहिं न हरिपद नेहु।
तिनकै गति म्वहिं देहु विधि जो जानौं मत येहु॥

गीतिका छन्द॥ सुनि भरतके इमि बैन मृदु शुचि सरल सुठि सांचे सदै। भरि नीर नैनन जननि पुनि पुनि कहत धरि धीरज हृदै॥ तुम तात करिय न शपथ तुम कहँ प्राणसम प्रिय रामहैं। रघुबरहिं तुम प्रिय प्राणसम सुत कोउकाहु न खामहैं॥

दो० मातुमते मत तातत्व कहै जो लघु मति कोइ।
शुभगति सुयश सुधर्म सुख स्वप्नेहुँ लहै न सोइ॥

छन्द॥ कहि बचन अस पुनि मातु भरतहिं पाणि गहिउर लायऊ। अनुरागबश सुत स्रवतथनपय नीर नैनन छायऊ॥ यहि भाँति बिलपत रैनि बीती प्रात मुनिवर आयऊ। उपदेश बहु बिधि देइ भरतहि सबन धीर धरायऊ॥

दो० गुरु बशिष्ठ आयसु भरत उठे करन पितु काज।
बोलि सचिव सेवक अनुज कह्यो सजहु सबसाज॥

छंद॥ तब वेद रीति न्हवाय नृप तनु बिबिध गंध लगायकै। सुन्दर बिमान बनाय सजि त्यहि माहिं नृप पौढ़ायकै॥ करि बिनय राखीं मातु सब पुनि सरयुतीरहि ल्यायकै। चंदन अगर बहु भार आये अमित गंध भँगायकै॥ बिरचे चिता भलि भाँति जनु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सोपान स्वर्ग सुहावनी। यहि भाँति कीन्हीं दाह क्रिय तहँ भरत सब मनभावनी॥

दो० अवध पूर्व चौकोश पै घाट बिल्व हरि जानि।
तहँ अदग्ध महि शोधिकै दाह क्रिया किय आनि॥

छप्पै॥ दाह क्रिया करि सकल न्हाय तिलअंजलि दीन्हें। शोधि सुमृति श्रुति शास्त्र सविधि दशगात्रहि कीन्हें॥ भय बिशुद्ध बहुभाँति बोलि बिप्रन दिय दाना। धेनु बाजि गज अन्न बसन भूषण धननाना॥ बहुभाँति द्विजन सनमान करि दिये दान अभिलाखसों। पितु हेत भरत करनी जुकिय कहि न जाय मुखलाख सों॥ बरवैछंद॥ माधव शुक्ल पंचमी चंद्रसुबार। जानि सुदिन मुनि गये भूप दरबार॥ पुरजन परिजन सचिवन सकल बुलाय। राजसभा महँ बैठे सब मिलि जाय॥ तब तहँ पठये बोलि भरत दुउभाय। आवत भये तुरत गुरु आयसु पाय॥ निज समीप बैठारे मुनि गहिपानि। पुनि बुलाय मुनि पठई तहँ सब रानि॥

दो० तब बशिष्ठ मुनि भरतसन सावकाश सब जानि।
धर्मनीति मैं बचन मृदु कहत प्रेम रससानि॥
कही प्रथम मुनि केकई कीन जो कठिन कुदाव।
राम लषण सिय पठय बन दीन्हेसि सबहि कुघाव॥
पुनि नृप सत्य सुधर्म व्रत कीन मुनीश बखान।
ज्यहिं निबाहि निज प्रेम प्रण तृण सम त्यागे प्रान॥

सवैया॥ शोच न कीजिय भूप हितै ज्यहिं आपन पूरण प्रेम कियो है। राम बियोग कृशानु महा तृण सों धरि जो निज प्राण दियो है॥ भोग बिलास कलाप किये लखि जाहि सिहात सुरेश हियो है। त्यों भगवन्त रह्यो यशछाय मनो शशि शर्द प्रकाश

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वियो है ॥ कवित्त ॥ शोचिय महीप सो न नीति में प्रवीन जौन शोचिये सो बिप्र जाहि बेदको न ज्ञानहै। शोचिय सो वैश्य धन-वान है कृपण जौन शोचिये सो शूद्रकार बिप्र अपमानहै ॥ शोचिय सो नारि पतिबंचक कुटिल जौन शोचिये सो बटु तजि ब्रत रत आनहै। भाग्यवन्त सोई सब भाँति है सुशोचनीय जाके नहिं प्रान प्रीव भक्ति भगवानहै ॥ सवैया ॥ शोचइ योग न कोशलराउ सुजासु प्रभाव तिहूँपुरछायो। जा गुनगाथ बखानकरैं हरि शंकर ब्रह्म पुराननगायो॥ तातें पिता जस आपु भये तस है नहिं होन न ह्वैकहुँ आयो।त्यों भगवन्त सुभागबली अवधेशसमान नहीं कोउजायो॥

दो॰ ताते तात न कीजिये शोच कछू मन माहिं।
होनहार जो होत है होत टरै सो नाहिं ॥

॥ सवैया ॥ केकइ क्रूर कठोरमहा त्यहि काहकहौं नहिं जात कही है। लाय कुबुद्धिमई पुर आगि प्रचंड सबै नर नारि दही है ॥ सानुज सीय पठैबन राम कलंक बिधौपन आपु लही है। त्यों भगवंत न जाय कही बिधिकी बिधितातिकठोर सही है॥ राम स्वभाव न जाय कह्यो पितु आयसु जेतजि भूषणसारे। बल्कल चीर सँवारि तुरंत उठे कछु मानस खेद न धारे॥ बारहिं बार बुझायसबै पितु पंकज पायँ पुनीत जुहारे। धर्म्म धुरन्धर धीरनि लै पितु आयसु कानन राम सिधारे॥

दो॰ सुनहु भरत भूपहि वचन प्रिया न प्रिय निजप्रान।
ताते तात सुकीजिये ताके बचन प्रमान ॥

रोलाछंद ॥ ज्यहि रघुबर हित लागि तजे तृणसम निजप्राना। करहु तासुफुर बैन धर्म्म इति वेद बखाना ॥ तुमहिं राज नृप दीन ताहि कीजे सुखमानी। यहिसम धर्म न आन पुत्र पालै पितुबानी॥

दो॰ परशुराम पितु शासनहि कीन्हे बध निज मात।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तिनको यशपावन बिशद जग सब बरणत जात ॥

हरिपदछंद ॥ शरमिष्ठा लघु रानि नृपालै अधिक प्रिया जिय जानी। शुक्राचार्य पिता अपने सों कह्यो बड़ी सुरजानी ॥ दय कुशाप तिन भूप ययातिहि तुरत वृद्ध करि दीन्हे। बहुविधि बिनै कीन जब भूपति तब अस आयसु कीन्हे ॥ माँगौ जाय पुत्र अपने सों युवाअवस्था राई। सुनि माँग्यो महिपाल सबन सों काहुन देन सुनाई ॥ पाँचव पुत्र छोट पुरुनामे दय निज यौवन दयऊ। तब नृप कीन भोग बहु भाँतिन त्यहि अघ अयश न भयऊ ॥

ताते बिनु बिचार पितु बानी। पालिय परमधर्म जिय जानी ॥
अस बिचारि पितु आयसु करहू। पालहु प्रजहि शोक परिहरहू ॥
राम मातु कह पुलकित गाता। तात कान करिये गुरु बाता ॥
भूप अमरपुर रघुपति बनमा। तुम इमि धरत तात डर मनमा ॥
अवध अमित उत्पात बिचारहु। जानि बाम बिधि धीरज धारहु ॥
सादर गुरु आयसु अनुसरहू। करहु राज शोचहि परिहरहू ॥

सवैया ॥ तजि शोचसबै मन धीरजकै गुरु आयसु सादर शीश धरौ। प्रतिपालनकै परिवार प्रजा सबको यह शंकट शोच हरौ ॥ पितु आयसु दूषण है न तुम्हैं बन राम सिया सुनि मोदभरौ। अवलम्बन तात सबै तुमहीं कुसमै जिय जानि सँभार करौ ॥

दो० मातु बचन सुनि भरतके चली धार युग नैन।
धरि धीरज कर जोरि तब बोले अति मृदु बैन ॥

सवैया ॥ दीन हमैं उपदेश भलो गुरु जाहि किये सब मोरिभलाई। तापर आयसु मातु भयो सबके पुनि याहि मनै मतभाई ॥ मातु पिता गुरुबैन तजे अघभूरि परै शिर धर्म नशाई। यद्यपि जानतहौं यह मैं जिय तद्यपि उत्तर देउँ ढिठाई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राम लषण सिय बनहिं सिधाये। पितु सुरपुर निज प्राणपठाये ॥
अस उतपात भयो ममकाजू। त्यहिपर कहौ करन म्वहिंराजू ॥
यहि महँ हित तुम्हारका होई। सब मिलि देहुराज म्वहिं जोई ॥
मोरधर्म प्रभुपद सेवकाई। ज्यहिमहँ सब बिधि मोरिभलाई॥
मातु कुटिलपन सो हरिलीन्हा। मोहिं अयश दुखदारुण दीन्हा॥
अब उपाय कछु मोहिं न भावै। यहै एक मनमें दृढ़आवै ॥
बिन रघुपति पद पद्मनिहारे। जाय न जियकी जरनि हमारे ॥

कबित्त ॥ जाय बिनु चीरतन भूषण शृँगारजाल जाय बिनु बिरति बिचार ब्रह्मज्ञान की। जायहै सुभोग भूरि सरुज शरीर माहिं जाय जपयोग बिनुभक्ति भगवानकी ॥ जाय बिनु जीव तनु सुंदर प्रकाशमान जाय बिनु बारिशोभ संकुल घटानकी। जायहै सकल मोर तैसही सुभाग्यवन्त देखे बिनु दायक अराम राम जानकी ॥

दो० बिनुदेखे रघुबीर पद मिटै न हियको वेहु।
यह विचारि भलचाहि मम सब म्वहिं आयसु देहु ॥
होतप्रात ज्यहिं रामपहँ जाउँ सकल भयत्यागि।
रामचन्द्र मुख चन्द्रबिनु बुझै न हियकी आगि ॥
म्वहिं समान को पापरत रहित भाग गतलाज।
ज्यहि कारण सिय रामबन गये त्यागि सुखराज ॥
अबकछु मोहिं न सूझई यहै एक बिश्वास।
शरणागतबत्सल सदय जाउँ रामके पास ॥

सवैया॥शरणागतबत्सलराम सदै शरणागत देखत छोहकरैंगे। जानतहौं निज स्वामि सुभाव कबौं न हृदै मम द्रोह धरैंगे ॥ मैं शिशु सेवक नीचसदै प्रभु आपनजानि सुप्रेम भरैंगे। त्यों भगवन्त भरोस हमैं करि हैं सुकृपा जब पाँय परैं गे ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ यह भरोस जिय आनिकै होतप्रात युत बन्धु।
जाबजहाँ सीता सहित राम लषण सुखसिंधु॥
राम बिरह यामिनि अँधियारी। नृप सब रानि कुमतितमभारी॥
रह्यो छाय कछु परत न जोई। पुरजन मुर्छिगये सब सोई॥
लषण सीयकर बिरह बिशाला। गरजत स्वइ बृक व्याघ्रकराला॥
तारागण मुनि करहिं प्रकाशा। सघनतिमिर निशिहोइ न नाशा॥
भरत बचन लखि भानु समाना। उठेजागि सब जानि बिहाना॥
सबके मन सुखभयो अपारा। कहहिं भरत भल मंत्र बिचारा॥
सो॰ भरत मंत्र भलकीन कहहिं लोग सब मुदितमन।
ज्यहिं अवलम्बन दीन दुखसागर बूड़त सबहिं॥
दो॰ करिप्रणाम मुनिवर चरण पाय सुभरत नियोग।
गवने तब निज निज भवन मुदित सकल पुरलोग॥
राम दरशहित अति अनुरागे। चलनसाज साजन सब लागे॥
परमानन्द नगर सब कोई। जनु अहिलह्यो गईमणि खोई॥
सबहिंन रथ गज बाजि सँवारा। चित्रकूट कहँ भये तयारा॥
भरत जाइ गृह जहँ सब माता। कह्यो रामपहँ चलिय प्रभाता॥
सुनि रनिवास न हर्ष समाती। जागत बीतिगई सबराती॥
प्रातकाल उठि भरत प्रवीना। बोलि सचिव सेवक सबलीना॥
कह्यो तुरँग रथ नाग सवाँरहु। चित्रकूट कहँ बेगि सिधारहु॥
सुनत बचन सब सहित उमंगा। सजे तुरत रथ नाग तुरंगा॥
दो॰ कह्यो सचिवसन भरत तब लेहु सुतिलक समाज।
बिपिन जाइ रघुनन्दनहि देवैं मुनिवर राज॥
यहिप्रकार सब साज सजाई। प्रथम चले रथ चढ़ि मुनिराई॥
त्यहि पाछे गवने द्विजबृन्दा। जनु बहु वेष धरे श्रुति छन्दा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

त्यहि पाछे सब पुर नर नारी। गवने निज निज यान सँवारी॥
शिविकाबिपुलसाजि छबिखानी। तिनचढ़ि गवनकीन सबरानी॥
त्यहि पाछे दोउ अवधदुलारे। घर पुर द्वार राखि रखवारे॥
बिनु पग पनहीं बनहिं सिधाये। सिय रघुबीर चरण मनु लाये॥

सवैया॥ सियराम बियोग भयो कृशगात समात न शोच कलाप हिये। नहिं पाँयनहू पगत्रान धरे शुभ चीर विभूषण त्याग किये॥ भगवंत हृदै परिपूरण प्रेम सुचित्त कृपाकर पाँय दिये। किय सानुज आपु पयान बनै सँग मातु सबैपुर लोग लिये॥

दो॰ भरत चरित सँभरत भरत हृदि मुद भभरत पाप।
सरसतिरति रघुपतिचरण झरसति पुनिनत्रिताप॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहनम्बरदारवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितभक्तिशिरोमणिग्रंथेसुमंतअयोध्यागमननृपतनुत्यागभरतचित्रकूटगमनवर्णनोनामःष्टमोऽध्यायः ८॥

दो॰ राम लषण श्रीजानकी भरत सहित रिपुहंत।
चरणकमल बंदन करत शीश नाइ भगवंत॥
माधव मास सुपाख सित तिथि सप्तमी सुलीन।
बुद्ध पुनर्बसु जानि भल भरत गवन बनकीन॥

छप्पै॥ समुझि राम सिय विपिन भरत सानुज अनुरागे। जात पयादेहि पांय निरखि बाहन सब त्यागे॥ राम मातु लखि जाय निकट बोली मृदुबैना। तात जाइ बलि मातु रथहि चढ़िये सुखऐना॥ सुनि मातु बचन सानुज भरत सादर भये सवार रथ। सिय राम चरण पंकज सुमिरि सबहि गहे कानन सुपथ॥ दिन प्रथम वास तमसाके तीर। किये भरत जाय सब सहित भीर॥ करि द्वितियबार गोमति निवास। दिन तृतिय जाय रहे सई पास॥

दो॰ होत प्रात सब भीर युत कीन्हे भरत पयान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कछुक दूरि चलि आय पुनि शृंगवेरु नियरान ॥
समाचार यह सुनेउ जब आवत भरत निषाद।
लाग्यो करनबिचार मन उपजेउ अधिक बिषाद ॥
भरत विपिन कारण कवन आजुसाजि दलजाहिं।
हमैंजानि असपरत कछु अहै कपट मनमाहिं ॥

सवैया ॥ पहिले मिसु मातु पठाय वनै अबसाजि समाज चले दउभाई। बन सानुज रामहि मारिकरौं पुरआय अकंटक राज सुहाई ॥ यहहोत न जोपि हृदै उनके कतलीन सुसंगयती कटकाई। नहिं भारतकीन भली यहबात चढ़े दलसाजि कुऔसरपाई ॥ नाग सुरासुर माहिंजिते बरवीरजुरे सबलै निजसैना। बुद्धिवलायन भूरि करैं भट जे रणपाछिल पाउँधरैना ॥ ते भगवन्त न वोड़िसकैं रघुनन्दन बाणचलैं जबपैना। तौ असको जग वीरअहै ज्वइ जीतिसकै रण राजिवनैना ॥

दो० तदपि कीन अनुचित नहीं भरतजानि यहबात।
कटुक निम्बतरु लागहीं कबहुँ कि मीठेपात ॥
अस फसाद मनमें समुझि कह्यो बोलि गुहज्ञाति।
होहु सजग धारहु सकल अस्त्रशस्त्र बहुभाँति ॥
तरणि बाँस हथबाँस सब बोरिघाट धरिलेहु।
करहु समर सम्मुख सरित जियत न उतरनदेहु ॥

कबित्त ॥ रामकाज जूझिये सुभट ठानि रारि आजु हानिहै न लाभपूरि देखिये विचारिकै। सम्मुख समर देवसरितीर स्वामिकाज लेहौं तनुत्यागि यश लोक दशचारिकै॥ मैंहौं लघुसेवक भरत राम भायपै सुदेहौं अघवाय आजु लोहेघाव मारिकै। दीजे करि फौज बिनु वीरन सुभट ढूंढ़ि धारिये न पाँव नेकु पाछेको पछारिकै ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० यहिविधि सबहि उछाहकरि पुनि निषादपतिआपु।
कह्योबोलि सेवक सपदि ल्याउ झिलिम शरचापु॥

कवित्त॥ केवट समाज पाय स्वामीकी रजाय सब उठे हरषाय एक एकन प्रचारहीं। सुमिरि सप्रेम रामनामही सुभट बाँधि लंक मैं सुत्रोण पाणि चापबाण धारहीं॥ कुण्डि शिरधारि पैन्हि झीलिम सुतनमाहिं फरसारुबाँस शूल सेल्हन सुधारहीं। भाग्यवन्त वीर यों सुसाजि कै समरसाज आनँद सों आय गुहरावत जुहारहीं॥

दो० निरखि वीर लायक सकल सनमाने पति भील।
कह्यो आजु मम काजबड़ सुभट न लायो ढील॥
सुनत बचन बोले सुभट नाथ धीर मनलाउ।
रामकृपा जीतब समर धरब न पाछे पाउ॥

तोमरछन्द॥ अवलोकि वीर समाज। कह हर्षि यों गुहराज। अब बार नाहक लाउ। चट ढोल युद्ध बजाउ॥

दो० ऐस्यहि कह्यो निषादपति निरखत सुभट अनीक।
त्यहि अवसर बाईंदिशा भई अचानक छींक॥
सो विचारि कह बूढ़यक शकुन सोहावनआहि।
भरतहिं मिलिये जाय तुम ह्वैहै विग्रह नाहि॥

कवित्त॥उत्तरदिशामें छींकहोय जो कलहकार औ दिशि इशान धन कोटिको बढ़ावई। पूरुबसुछींक मित्र आपनो मिलावै आनि दिशि अगनेय ताहि मृत्युको बुलावई॥दक्षिण कुछींक हानिकरै धन धान्यहू कि नैऋत दिशामें ऋद्धि सिद्धिको जनावई। भाग्यवन्त पश्चिम अशन दानिमिष्ट चारु बायव्यदिशामें उच्च बैठकको पावई॥

दो० केवट मुख उत्तर रह्यो भइ बायें जो छीक।
तौ पश्चिम बायव्य की है दिशि दोऊ नीक॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सवैया ॥ छींक सुमंगल धाम अहै सुविचार कियो कछु बिग्रह नाहीं । संग लिये पुर लोग सबै रघुनाथहिं भरत मनावन जाहीं ॥ सो मम बैन प्रतीत करौ तुम जाय मिलौ चलिकै उनपाहीं ॥ साहस कर्म करी नहिं कोइ करी सो बिचार करी मनमाहीं ।

दो॰ सुनि निषादपति हरषि कह कहत बूढ़ भलि बात ।
बिनु बूझे सहसा करै सो पाछे पछितात ॥

अस मनसमुझि मुदितगुहराजा । तुरत साजि सब भेंट समाजा ॥
खगमृग विविध बसन धन मीना । कंद मूल फल सुरसरि पीना ॥
मिलन साज सब सजि गुहनाथा । चलेउ मिलन लै पुरजनसाथा ॥
जाय प्रथम मुनि पद शिरनावा । पाइ अशीश भरत पहँ धावा ॥
आवत देखि भरत रथ त्यागी । चलेउ जानि रघुबर अनुरागी ॥
केवट जाति गावँ निज नामा । कहि पुनिभरतहिकीन प्रणामा ॥
करत प्रणाम भरत उर लाये । अतिप्रिय मनहुँ लषणकहँ पाये ॥
निरखि देव नभ बरषहिं फूला । जयजय करहिं परम जनुकूला ॥

सवैया ॥ लोकहु वेद सबै बिधि नीच निषाद छुये तनजा परछाई । होय न सो बिनु मार्जन शुद्ध कह्यो इमि वेद पुराणन गाई ॥ भेंटत ताहि प्रफुल्लित प्रेम सुअंक भरे रघुनन्दन भाई । राम को किंकर ह्वै भगवन्त लह्यो नहिंको जग जाल बड़ाई ॥

दो॰ मिलि सप्रेम केवट भरत पूँछी कुशल सुभाय ।
कह्यो नाथ मम कुशल सब देखि तुम्हारे पाय ॥
सब भांतिन अति नीच मैं अधम सुकरमन बाम ।
जबते प्रभु आपन कियो भयों सुमंगल धाम ॥
देखि प्रीति रिपुहन बहुरि मिले ताहि उरलाय ।
पुनि केवट रानिन सकल मुदित जुहारेउ जाय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पाइ अशीश मुदित गुह नाहू। पुनि सप्रेम भेंटेउ सब काहू॥
देखि सुभाव सहित अनुरागा। पुरजन तासु सराहत भागा॥
धन्य धन्य यह सब सुखधामा। भेंटेउ जाहि लाइ उर रामा॥
तब निषाद बहु बिनय सुनाई। सादर सबकहँ चल्यउ ल्यवाई॥
आये सब सुरसरि के तीरा। भये मुदितलखि धवलसुनीरा॥
करि मज्जन माँगहिं बर येहू। नित नव अधिक रामपद नेहू॥
तब गुह समय सरिससुखदायक। दीन बास जोजन ज्यहि लायक॥
सब सुपास करि सबै बहोरी। बहुबिधि बिनयकीन करजोरी॥

दो० राम सखहि तब बोलिकै भरत साथ निज लीन।
गये तुरत चलि रैनि जहँ सैन राम सिय कीन॥
कुश साथरी बिलोकि कै भये बिकल मतिधीर।
करि प्रणाम लोचन सजल बोले बचन गँभीर॥
धिक् धिक् अधम अभाग मैं पापार्णव दुखमूल।
रामलषणसिय मोहिं लगि सहतबिपिन बहुशूल॥

सवैया॥ जे सिय राम सबै सुखधाम सकै कहि को तन सुंदरताई। मातु पितै प्रिय प्राण समान सुशील कृपाल सबै सुखदाई॥ गावत वेद पुराण जिन्हें भगवन्त रह्यो यश लोकन छाई। नाहि न कान सुने दुख जे अब ते महि सोवत दर्भ डसाई॥

दो० लषणलाल सम भाय सुठि भयो न त्रिभुवनकाहु।
ममकारण ते बन बसत सहत दुसह दुखदाहु॥
धिक्धिक् मोहिं कुमातु युत अयशमूल अघधाम।
फटि न अवनि प्रविस्यों कस न होत राम ते बाम॥

छप्पै॥ सुनिसप्रेम मृदुबैन कहत कर जोरि निषादू। जानि बाम बिधि नाथ तजौ मन सकल बिषादू॥ तुम रामहिं प्रिय प्राण प्राण

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रिय राम तुम्हारे। धरहु धीर अस जानि हृदय तजि शोचन सारे॥
सुनि सखा बचन धरिधीर उर आये थल सुमिरत प्रभुइ। रघुबीरगुणन
बरणत भयो भोर लाग उतरण सभुइ॥

उतरि देवसरि करि अस्नाना। कीनसबहिं मन मुदित पयाना॥
भरत सबन्धु पयादेहि जाहीं। देखि सुसेवक मन सकुचाहीं॥
सुमिरत राम सीय लवलाये। तिसरे पहर प्रयागहि आये॥
सादर सबहिन मज्जन कीन्हा। अमित दान महिदेवन दीन्हा॥
करि प्रणाम माँगहिं बर येहू। बढ़ै राम सिय चरण सनेहू॥
तब कर कमल जोरि मृदुबानी। बोले भरत प्रेम रस सानी॥

दो० सकल काम दायक अक्षत तीरथराज सुजान।
दानि शिरोमणि आजु म्वहिं दीजे यह बरदान॥

सवैया॥ अर्थ न धर्म न काम चहौं निरबाणहुकी कछु चाह
नहीं है। ऋद्धिहु सिद्धिकी वृद्धि नहीं नहिं भोग बिलासन चाह-
त ही है॥ आठहु याम यहै बच मानस कर्म हृदय अभिलाष सही
है। श्रीरघुबीर पदाब्जन में सरसै नित प्रीति सुदेहु यही है॥

दो० भरत बचन सति सरल सुनि भई त्रिवेणी बानि।
रामहिं प्रिय तुम प्राणसम त्यागहु तात गलानि॥

सो० बेणि बचन सुखदाय सुनत भरत हरषे हृदय।
पुनि सादरद्धउभाय भरद्धाज आश्रम गये॥

कीन्ह प्रणाम मुनिहिं शिरनाई। मुनिवर धाय लिये उरलाई॥
दै अशीश आसन बैठाये। बोले मुनि तव बचन सुहाये॥
तात भरत जनि करहु गलानी। हमसबचुके प्रथम सुधिजानी॥
तुम रामहिं प्रिय प्राण समाना। मत तुम्हार जो कहै अयाना॥
पितु आयसु करत्यहु जो राजू। देत न दूषण चतुर समाजू॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यह भल कीन हमारे भाये। सहित समाज इहां जो आये॥
राम प्रेम मूरति तुम ताता। भक्त जनन कहँ आनँद दाता॥
आजु उदित भइ सुकृत हमारी। भरिलोचन जो तुमहिं निहारी॥

दो० सुनि मुनिवर के बचन वर भरत हृदय धरिधीर।
पुलकगात बोले बचन सुमिरि राम रघुबीर॥

सवैया॥ नाथ न मोहिं पिताकर शोच न शोच हमैं जगपोच कहावै। नाहिन शोक नशैपरलोक अधर्म्म परै शिर धर्म नशावै॥ दारुणदाह यहै हिय एक न जाय सह्यो नित सोतन तावै। कारण मोहिं सियारघुबीर गये बनबास पयादेहिं पाँवै॥

दो० यह कुरोग दारुण दुखद भयोआय तनमाहिं।
त्यहिकर औषध शोधि मैं देखेउँ है कहुँ नाहिं॥
कुटिल केकई मोहिंलगि ठाटेसि यह सबठाट।
ज्यहिं सबकर सुख छीनिकै घालेसि बारहबाट॥
मोहं दैन्य भयंहास क्षुध तृष हानि गलानि।
मृत्युं क्षोभव्यथां कीर्ति द्विदश बाट दुखजानि॥
यह कुरोग नाशै जबहिं फिरिआवैं रघुराय।
बसै अवध सानन्द तब नाहिं न आन उपाय॥

भरत बचन सुनि सहज सोहाये। सहित सभा मुनि मन सुखपाये॥
कहमुनितातशोचजनिकीजिहि। प्रभुहिंबिलोकतसबदुखछीजिहि॥
पुनि मुनि सकलभांतिसुखदीन्हा। भरत निवास रैनि तहँ कीन्हा॥
प्रात न्हाय मुनिपद शिरनाई। कीन गमन हित आशिष पाई॥
सुमिरत राम लषण सिय शोभा। चले सकल दरशन मनलोभा॥
भरत नेम व्रत प्रेम सुहावन। बरणि न जाइ राम पदपावन॥

त्रोटकछंद॥ रसना रटि रामहिं राम रहे। मन रूप प्रभा दृढ़

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्यान गहे॥ श्रुति राम कथै अभिराम दिये। चरिताद्भुत चारु हृदै सुलिये॥ बशप्रेम सँभार सुगात नही। डग डोलि परै पग जात मही॥ कहि राम सिया जब श्वाशभरें। द्रुम पाहनहूं सुनि द्रैसुपरें॥ झरि पंथ प्रसूनन देवसभा। जय जैति कहें लखि भूरिप्रभा॥ भरतै बहुभाँति सराहिरहे। धनि धन्य महीभल जन्मलहे॥ हरिपद छंद॥ भरत प्रभाव देखि सुरराजै भयो शोच मनमाहीं। जात मनावन भरत रामको भली बात यह नाहीं॥ जाय कह्यो तुरतै हरि गुरु सों करहु यतन प्रभुसोई। भरत जाहिं पुर लौटि आपने रामहिं भेट न होई॥ राम सुभक्त प्रेम बश संतत भरत प्रेम निधिआहीं। फिरि हैं अवशि काज सब नशिहैं बनिहै फिरि कछु नाहीं॥

दो॰ सुनि बोल्यौ सुरगुरु बिहँसि हरिहरिगो तव ज्ञान।
माया पति जनसों करन चाहत छल अज्ञान॥
हरिद्रोही उबरै बरुकु हरिजन द्रोही नाहि।
भक्त बैर भगवान के क्रोधानल जरिजाहि॥
ताते सुरपति कीजिये भरत चरण अनुराग।
भरत भक्तमणि जानि कै करिय कुटिल पन त्याग॥

यहिबिधि सुरगुरु कहि समुझावा। सुनि सुरेश मन धीरज आवा॥
बरषि सुमन करि भरत बड़ाई। जय जय कहहिं देब समुदाई॥
करि मगबास भरतयुत भीरा। आवत भये यमुन के तीरा॥
रामबरण लखि श्यामल बारी। प्रेममगन सब भये सुखारी॥
त्यहिनिशिबसितहँसहितसहाये। होतप्रात सब उतरि नहाये॥
करिप्रणाम यमुनहिं शिरनाई। चले भरत सब सहित सहाई॥
सानुज राम सखहिं सँग लीन्हें। राजसमाज अग्र सब कीन्हें॥
रामचरण पंकज चितुलागा। चलेजाहिं उमगत अनुरागा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० सहज वेष पदत्राण नहिं मानसमलिन विशेखि।
मगबासी नर नारि इमि कहहिं परस्पर देखि॥

सवैया॥ का द्वउ लक्ष्मण रामअहैं सजनी यहिबाट गयेरहैं जोई। वै बपुरूप सुरंगवही समशील सनेह सुचालहु सोई॥ त्यों भगवन्त बिलोकनि बोलनि वैसहि भेदपरै नहिं कोई। औरमिलान मिल्यो सबहै पै सँदेह यहै मनमें यकहोई॥ वेषनहीं इनको तसहै जसदीख उन्हैं सखिजात गली है। वै सुखपुंज प्रमोद भरे लिय संग हते निज नारिभली है॥ ये न प्रसन्न सुखेदलिये इन सङ्गअनी चतुरङ्ग चली है। त्यों भगवन्त ये भेदन सों मनहोत कछूक सँदेह अली है॥ त्रोटक छंद॥ इति चातुरता सुनि तासु भली। हरषीं मन माँहिं सबै सु अली॥ बहु भाँतिन ताहि सराहि रही। सखि दूसरि तौ सब हाल कही॥ ज्यहि भाँतिन काज अकाज भयो। रघुनन्द बनै तजि राज गयो॥ अब जात मनावन रामहिं ये। पुरलोग सबै सँग मातु लिये॥

दो० सुनि प्रसंग साँचो सकल भरतहिं बहुत सराहि।
कहहिं दैव असि आपदा क्यहु शिर डारै नाहि॥

त्रोटक छन्द॥ यक तौ छुटि सुन्दरराज गयो। दुसरे पितु मर्ण अकाज भयो॥ तिसरे बन राम सिया गवने। उतपात कहै सखि को कवने॥

दो० एक कहहिं ये मृदुल सुठि सुंदर परम उदार।
केकइ जन्म न योग बिधि कीन्हे सब अविचार॥

सवैया॥ एक कहैं यह कीन सबै बिधि जो हमरे सखि दाहिन आजै। लोकहु वेद बिहीन कहां हम नीच त्रियाकुत खोटनकाजै॥ बास कुदेश कुठाँव हमैं यह दुर्लभ दर्शभयो सुख साजै। ज्यों भग-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वन्त मिल्यो बिधि योग सुसिंघलबासिन्ह तीरथ राजै॥ तन्वीछंद॥
याविधि सों एकन प्रति यक बातैं करती बिबिधि बिधि अली हैं।
जावत जौनेपुर नगर क्निारे बिच जौनिन जवनि गली है॥ दे-
खतही भर्त छबि मँगन होवै सब जानि जनम सफली है। मांगहिं
याही बर बिधिहि करैं ये नितही मम हृदय थली है॥

सो० यहि बिधि सहित समाज धर्म धुरन्धर बन्धु दोउ।
मगन प्रेम रघुराज जाहिं चले सुमिरत हरिहिं॥
पथिकमिलहिं बहुजात तिनहिं बूझि रघुबरखबरि।
शिथिल होहिं दोउभ्रात राम स्वभाव बिचारिकै॥
सगुण होहिं सुखधाम जानि सुहावन मन हरष।
अवशिमिलहिं सियराम असिप्रतीति सबकेहृदय।

दो० तब निषाद पति भरतसन कह्यो देखिये नाथ।
शैल शिरोमणि है वही जहाँ बसे रघुनाथ॥

हरिगीतिका छन्द॥ सुनि सत्य केवट बैन सबहिंन परम आ-
नन्द पायऊ। अति प्रेम बारहिंबार कामदगिरिहिं लखि शिर ना-
यऊ॥ त्यहि समय भरतहि प्रेम जस कहि शेष पार न पायऊ।
भगवन्त ते धनि धन्य जे सियराम पद रति लायऊ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहबिरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेभरत
समाजसहितचित्रकूटनिकटआगमनवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९॥

दो० भवनिधि तारकपोत दृढ़ बिदित भूरि गुणगाथ।
चरण कमल सियरामके बन्दौं महि धरि माथ॥
राम प्रेम बारिध मगन भरत समेत समाज।
उभयकोसचलि बासकिय जानि अस्तदिनराज॥
भोर भये उठि लोग सब चले सुमिरि रघुराय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राम दरश की लालसा रही सबन उर छाय ॥

कुंडलिया ॥ जागे उत रजनी बिगत रघुपति जक्क निवाश। स्वप्न बिलोक्यउ सीयंनिशि लागी करन प्रकाश ॥ लागी करन प्रकाश भरतजनु सहित सहाये। प्रभु बियोग त्रयताप तप्त व्याकुल चलि आये ॥ आये सकल मलीन दुसह दुख दाहन दागे। दीख सासु विधि आन कहत सिय स्वप्नहिं जागे ॥

सो० सीय स्वप्न सुनिराम भये शोचबश शोचहर।
सजलनैन सुखधाम बोले शुचिमन अनुजसन ॥
तातस्वप्न इति जोइ मम बिचार फल नीकनहिं।
चहत सुनावन कोइ दुखदायक मानहुँ बचन ॥

दो० पुनिप्रभु मज्जनकरि शिवहिं पूजिसुबन्धु समेत।
सहित सकल मुनि मण्डली बैठे कृपा निकेत ॥

कबित्त ॥ बंदि सुर साधु मुनि मण्डली सबैठि राम देख्यो दिशि उत्तरै जुशशिशाही उठायकै। छायोनभ धूरि भूरि व्याकुल बिहंग मृग छपे जाल आनि प्रभु आश्रम परायकै ॥ भाग्यवन्त उठे अवलोकि श्रीकृपाल आपु कारण है काह चित्त चकित बनायकै। तौलागि किरात कोल बैसिन ते दौरि दौरि कहे सब समाचार प्रभु सन आयकै ॥

भरत आगमन सुनि भव मोचन। प्रेम बिबश आये भरि लोचन ॥
समुझि बचन पितु बन्धु सनेहू। भये शोचवश कृपा सुगेहू ॥
बहुरि बिचारि ठीक मन धारे। भरत साधु पुनि कहे हमारे ॥
धर्म्म नीति तजिकहब न आना। भरत भक्तमणि परम सुजाना ॥
लषण राम मन दुख अनुमानी। बोले बचन जोरि युगपानी ॥
नाथ बिना पूँछे कछु बाता। कहउँ क्षमा करबै जन त्राता ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जेवश बिषयादिवसनिशि धावहिं। ते बिधि योग जु वैभवपावहिं ॥
ते वश मोह छाँड़ि शठनीती। चहत जनाव निजहि यहरीती ॥
यद्यपि भरत रहे बड़साधू। प्रभु पद पंकज प्रेम अगाधू ॥

दो० ल्यउ आजुलहि राजपद त्यागि धर्म्म निज जौन।
जानितुम्हैं अकसर बिपिन किये बिजयहित गौन ॥

सवैया॥ ठानि कुमंत्र सु साजिदलै बन जानि अकेल तुम्हैं दोउ भाई। आवत भे चलि काजयही हति रामहिं राज अकंटक राई॥ जो यह बात न होत हिये चलते कतलै सँग तौ कटकाई। त्यों भगवन्त न दोष उन्हैं लहि राजहि को न उठै बउराई॥

दो० बेनु नहुष शशि अमर पति सहसबाहु तिरशंकु।
काको नाहिंन राज मद दीन्ह्यो कलुप कलंकु॥

बेनु भूप उर नृप मद पैठो। सो आपहि ईश्वर बनि बैठो॥
विप्रशाप सो भयो बिनासा। विदित भागवत में इतिहासा॥
नहुष नह्यो रथ में द्विजवृंदा। चल्योशचिहिभोगनचढ़िमंदा॥
भयो सर्प सो विप्रन शापा। मदवश सह्यो दुसह दुखआपा॥
शशिगुरुबृस्पति तिय सँगभोगा। कीनविवश मद काम अयोगा॥
इन्द्र अहल्यासन रति ठाना। भई सहसभग जग सबजाना॥
सहस बाहु जमदग्नि कि गाई। मदवश बरबस लीन छड़ाई॥
डारेसि मारि ऋषिहि करि कोहा। बंश सनाश भयो इति द्रोहा॥
भूप त्रिशंकु द्रोह गुरु ठाना। भयचंडाल तिनहिं जगजाना॥
बहुत कहाँ लगि कहौं गनाई। क्यहि न राजमद मरदेउ भाई॥
यह तौ कीन भरत भरि नीती। ऋपुऋण राखनचहिय न रीती॥

दो० एक कीन नहिं भरत भल राम शकृत बन मानि।
आये चढ़ि लैदल त्रिपुल खउ परिहैं अबजानि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अस कहि लषण सक्रोध ह्वै नाय राम पद भाल।
सत्य सहज बोले बचन करि मुख अम्बक लाल॥
नाथ हमारे हित भरत कीन्हें बहुत उपाय।
अब लगि गमखाये रहे अब न सहा सहिजाय॥

ताते नाथ कहौं तुम पाहीं। भरतहिं आजु समरके माहीं॥
सहित बन्धु अरु सकलो सैना। डरिहौं मारि सु एक बचैना॥
राम बिरोध हाल जस होई। देउँ बताइ उन्हें सब सोई॥
कीन्हेनि जस अब पैहहिं तैसा। जसकछुबइअलहिअफलबैसा॥

सवैया॥ ज्यों मृगराज दलै गजराज खगेश यथा अहिवृन्द सँहारौं। लेइ लपेटि लवा जिमिबाज तथा गहिदेखत भूमि पछारौं॥ त्योंभगवन्त गुमान सबै उनको चकचूरकै धूरमें डारौं। जो पै सहाँय करैं शत शंकर तौ रण आजु प्रचारिकै मारौं॥

दो० देखिय रज लघुहै परम खउ परि चरण प्रहार।
चढ़त शीश गमखायँ किमि हैं हम राजकुमार॥

जबहिं लषण इमि बचन बखाने। सकल लोक लोकप डरपाने॥
भई गगन तब गिरा उदारा। ऐसहि है बल तात तुम्हारा॥

सवैया॥ तात प्रताप प्रभाव त्वयाबल ऐसहिहै कोउ जानि सकैना। पै बुधिवंतन रीतियही सुबिचार बिना कछुकाज करैना॥ जे सहसा करिकै पछिताहिं कहैं बुधवेद सु ते बुधहैंना। यों भगवंत सु देव गिरा सुनि लक्ष्मणही सकुचे त्यहि ठैना॥

तब सिय राम लषण सनमानी। प्रीति सहित प्रभु बोले बानी॥
कही तात तुम जो नय सोई। पै न राजमद भरतहि होई॥
भरत सरिस जगतीतल माहीं। शुचि सेवक मम दूसर नाहीं॥
बिधि हरि हर पद जोवै पावैं। तबहुँ न नृप मद मनमें लावैं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कुं० होवै बरु घृत बारि ते तरणिहि तम मकुलाय ।
गोपद जल बूड़हिं घटज सुरतिहि सिंधु समाय ॥
सुरतिहि सिंधु समाय श्रवै हिमिकर बरु आगी ।
भरत हृदय नहिं भूलि कबहुँ नृपकर मदजागी ॥
जागी कबहुँ न कुमति सुयश अघ संचित खोवै ।
लषण शपथ तव सत्य भरत मन द्वैत न होवै ॥

गगनांगनाछंद ॥ भरत सरिस शुचि भाय काहुको बिधि नहिं दीनहै । गुण औगुण मिश्रित जक्त सकल ज्यहिं कीनहै ॥ भरत हंस गहि क्षीर गुणन औगुण जल तजि दिये । भगवन्त सुयश उज्जल जगत अपन जिन करिलिये ॥

यहिबिधि कहत भरत गुणगाथा । प्रेम पयोधि मगन रघुनाथा ॥
गगन मगन सुर बरषहिं फूला । जय जय करहिं परम अनुकूला ॥

नाराचछंद ॥ इतै नहाय भर्त्त पै सरित्तसा समाजही । सबै थैं-भाय तत्र साथलै निषादराजही ॥ चले सबंधु आपु तत्र यत्र राम जानकी । सुकर्तही कुतर्कनै अनेकनै बिधानकी ॥ श्रिराम सीयनाम सो सुश्रौण माहिं सुन्तही । बिचारि मोहिं मामते न जाहिं चालि अन्तही ॥ मते कुमातु जानि जो कहैं सुमोहिं थोरही । निवाजि चूक आदरैं जु मानि आपु ओरही ॥ तजैं मलीन जानि मानिदास जो सुआदरैं । सबै प्रकार हौं उन्हैंक भाव जोहि सो करैं ॥ सरभ-छंद ॥ यहिविधि भरत गुनत मनमनही । चलत सुभग सुधि तनक न तनही ॥ निरखि भरत के तब असि गतिही । गयउ बिसरि तन सुधि गुहपतिही ॥ पंकजवाटिका छंद ॥ लागि सगुन शुभ होन अपारन । केवट पति गुनि सो बदकारन ॥ मल्लिकाछंद ॥ शोच जाइ मोद सोहि । फेरि अंत खेदहोहि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० सुनि केवट बाणी भरत कीन हृदय विश्वास ।
नियराने तब आइकै प्रभु आश्रम के पास ॥

॥ सवैया ॥ केवट तौ चढ़ि ऊंच शिलै यक हाथ उठाय कहै समुझाई । देखहु नाथ सुबृक्षनवै जुविशाल मनोहर देत तकाई ॥ पाकरि जम्बु रसाल तमाल सुतामधि मैं वट दिव्यसुहाई । ताहि तरे भगवन्त अनूप सुझावनि पावनि राघव छाई ॥ छाँह यदा विशदा उमदा सुखदा सुसदा रस एकरहाई । ताहि बटैतर सीय निजै कर वेदि रची बर मञ्जु सुहाई ॥ बैठहिं आइ जहाँ मुनि बृन्द कहैं इतिहास पुरानन गाई । सादर सों भगवन्त सुनैं तहँ बैठि ससीय सहूनहुँ भाई ॥ भूरि लसै तुलसी तरुतत्र कहूं सिय जू कहुँ लच्मण लाये । फूलि प्रसून रहे रँग रंग अभंग प्रभा सु अनंग लजाये ॥ क्यों भगवन्त कहौं छवि सो अवलोकत लेतजु चित्त चुराये । कोशलपाल कृपाल तहां सरि पैस्वनि तीर कुटी सु बनाये ॥ दोधक छन्द ॥ केवटके सुनि बैन सु ऐसे । देख्यउ भरत सुबृक्षन जैसे ॥ प्रेम उमंग युगाक्षन बारी । बिह्वल गात न जात सँभारी ॥ बारहिं बार प्रणाम सु करतै । बेगिचले हृदयानँद भरतै ॥ भाग्यसुवन्त प्रणै किमि लेषै । गम्य सुयत्र न शारद शेषै ॥ गीतिका छन्द ॥ सिय रामपद अंकुत मनोहर निरखि अतिसुख पावहीं । मानहुं लह्यो निधिरंक बारहिं बार रज शिर लावहीं ॥ कहिजात नहिं गति अकथ रघुपति मिलन सम भव चावहीं । अवलोकि खग मृग जीवजड़ वश प्रेम तन बिसरावहीं ॥ बरषैं सुमन सुरबृन्द हरषित निरखि नभ जै जै कही । भगवन्त राघव प्रेम जलनिधि भरत पूरण है सही ॥

दो० भरत बिलोक्योउ दूरि ते सिय समेत द्वउ बीर ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करि प्रणाम लोचन सजल पुलकितअंगअधीर ॥

सवैया ॥ श्यामल गौर मनोहर मंजुल बाहु बिशाल उरायत सोहे। शीशजटा सरसीरुह लोचन आननकी उपमा नाहिं टोहे ॥ बल्कल चीर निषंग कसे धनुबाणधरे कर देखत मोहे। सीय समेत बिराजत आसन दूरिहिते छबि भारत जोहे ॥ कवित्त ॥ कीन्हें मुनि वेष रति कामकीधौं रामसीय सूखमा अपार पेखि प्रेमहीय बर्तही। बल्कल बसन तूण कटिमें कसन बान धनुकी लसनि पानि भानि सो न पर्तही ॥ श्यामतन सुन्दर जटाकेजूट शीशपै सु बाम भाग जानकी प्रकाश जाल कर्तही। भाग्यवन्त वेदिकापै राजहीं समुनि वृन्द देखतै सुशोभ ख्याल भूल्योगात भर्तही ॥ सवैया ॥ कहिपाहि सुपाहि हरे रघुनंद सुदण्डसों भूतल धायगिरे। सुनि प्रेम अधीर उठे रघुबीर सुधीर सँभार न गात करे ॥ कहुँ तीर निषंग सुचापकहूं कहुं अंगन के पट छूटिपरे। भगवन्त उमंगत प्रेम हृदै रघुनंद सु अंकहि धाय भरे ॥

पुनि पुनि भरतहिं भेंटि कृपाला। मेटे बिषम बिरह उरशाला ॥
फिरिफिरि भरत परत प्रभुपायन। समय सनेहबरणि सो जायन ॥
गदगद बचन कहत कर जोरे। क्षमहु नाथ अब अवगुण मोरे ॥
जै भगवन्त प्रणत प्रति पालक। जै सुज्ञात उर अन्तर हालक ॥

हरिगीतिका छंद॥ जै अमलचंद दुचंद आनँद कंद आनन सुख प्रदं। जैदिव्य भास्करपुंज हाँस्कर तव सुहाँस्कर मुदसदं ॥ जै प्रणतपाल कृपाल कोशलपाल जन रक्षक नितं। जै अखिल कारण करण तारण तरण प्रति पक्षक जितं॥ जै सुलभ दुर्लभ दरन दुर्मति रमति सचराचर ध्रुवं। जै प्रकृति पार अपार श्रुति यश नेति नेतिहि नित ब्रुवं ॥ जै शुद्ध सचित रूप सद्गुण निलय सुर मुनि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वंदितं। जै सत्य व्रतमद्वैत निर्गुण त्रिगुण कृत निज छंदितं ॥

दो० जयजय जय रघुबंश मणि जय प्रभु पूरण काम।
करहु कृपा जन जानि निज कृपासिंधु श्रीराम ॥

भरत बिनै सुनि इमि रघुबीरा। भये प्रेमवश परम अधीरा ॥
पुनि प्रभु भरत लाय उर लीन्हें। कहि मृदुबचन सुधीरजदीन्हें ॥
भरत रामके मिलनि सुहाई। कहत शेष शारद सकुचाई ॥
सो मैं कहौं कवन बिधि गाई। जलनिधिउल्लचिकिसूतिनपाई ॥
जै जै करहिं गगन सुर बृन्दा। जै कृपाल जै राम मुकुन्दा ॥
पुनि रिपुहनहिं मिले रघुराई। प्रेम प्रमोद बरणि नहिं जाई ॥
बहुरि राम केवट उर लाये। भेंटत अति सनेह सचुपाये ॥
भरतहिं मिले लषण सह मोदा। लीन उठाय भरत निज गोदा ॥
पुनि लच्मण भेंटे लघुभ्राते। अधिक सनेह प्रेम भर गाते ॥
बहुरि लषण उमगत अहलादा। धाय लाय उरलिये निषादा ॥

गीतिका छन्द ॥ पुनि मुदित दूनौंभाय बन्दे सकल मुनिगण जायकै। भय मुदित सानुज भरत अभिमत शुभ सुआशिष पाय कै ॥ पुनि हरषि दूनौंभाय सिय पद पद्मरज माथे धरी। भगवंत दीन्हीं सीय आशिष मनहिंमन आनँद भरी ॥

सो० जानिसीय अनुकूल आदिशक्ति त्रिभुवनजननि।
मिटी सकल उर शूल भये मुदित सानुज भरत ॥

दो० तब केवट करजोरि कै कह्यो सुनिय रघुनाथ।
मातु सकल पुरजन विकल आये मुनिवर साथ ॥

गुरु आगमन श्रवण सुनि पाये। तुरतहिं राम तहां चलिआये ॥
कीन्ह प्रणाम गुरुहिं दउभाई। धाइ लीन मुनि हृदय लगाई ॥
पुनि कृपाल दुख दोष निकंदन। अनुज सहित भेंटे द्विजवृंदन ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जानि लोग आरत सुर नाहू। क्षणमहँ मिलत भये सबकाहू ॥
रही हृदय जाके रुचि जैसी। कीन्हीं प्रभु पूरण त्यहिं तैसी ॥
यह न बड़ी रघुबीर बड़ाई। सचराचर व्यापक श्रुति गाई ॥
धन्य धन्य ते नर बड़भागी। जे सियराम चरण अनुरागी ॥

दो० पुनि प्रभु देखीं मातु सब आरत परम बिहाल।
कैकेइहि भेंटे प्रथम सादर राम कृपाल ॥

गीतिकाछंद ॥ परिपायँ करि बहुविनय जननिहिं बिबिध बिधि धीरजदिये। पुनि मिले मातनसकल रघुपति तपति उर शीतलकिये ॥ भेंटे सुमित्रहि जाय पुनि प्रभु लायउर जननी लिये। भगवन्त मानहुँ लहेउ संपति रंक अति आनँद हिये ॥

दो० कौशल्याके चरण पुनि परे जाय द्वउभाय।
तन पुलकित लोचन सजल लीन लाय उरलाय ॥

तोटकछंद ॥ त्यहि औसर केर बिषाद महा। कबि क्यों कथ धीरन धीरबहा ॥ मिलि मातन राम समुद्र बलै। गुरुसों कह धारिय पावँ थलै ॥ मुनिराज सुआयसु पाय तबै। उतरे सुजहाँ तहँ लोग सबै ॥ गुरु मंत्रि द्विजाम्बन संग लिये। शुभ आश्रम राम पयान किये ॥ मुनिराज पगै सिय आनिपरी। शुभ आशिष पाय प्रमोद भरी ॥ पुनि विप्रतिया गुरु नारि सहा। सिय बन्दि सु आशिर्बाद लहा ॥ पुनि सासुन सीय मिली सबही। अवलोकि दशा दुख दून लही ॥ तिनहूं लखि सीतहिं शोक क्रिये। वश प्रेम लगाय हृदै सु लिये ॥ सिय बारहिंबार सु पाँयपरी। सब सासुन भेंटत प्रेमभरी ॥ तिन सीतहि दीन अशीश यही। रहिहौ सु सुहाग भरी नितही ॥

दो० तब बशिष्ठ मुनि धीर धरि रानिन कह्यो बुझाय।
बैठि जाहु गईं बैठि सब मुनिवर आयसु पाय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तोमरछंद ॥ तब बोलियों मुनिराय। सुनिये सबै चितलाय॥ ब्यवहार लौकिक कूठ। भल ताहि जो रहरूठ॥ पुनि गाइयो सुख दात। परमार्थ की कछु बात॥ कहि फेरि मर्ण भुवाल। सुनिराम भो दुखजाल॥ दोधकछंद॥ कारण मर्ण पिता निज नेहू। जानि दुखाति लहे सुखगेहू॥ भूरि बिलाप करैं सबरानी। शोक समाज न जाय बखानी॥ शशिवदनाछंद॥ तबमुनिनाथा। कहिबहु गाथा॥ रघुकुलनाथा। श्रुतिबरमाथा॥ बहुसमुझाये। सहितसहा ये॥ सुरसरिन्हाये। पुनिथलआये॥ त्यहिदिनझारी। नरअरुनारी॥ रहि बिनुबारी। ब्रतबरधारी॥ भयबिनुसारा। मुनिजुउचारा॥ स्वइ सबकारा। प्रभुसुखसारा॥ तारकछंद॥ करितात क्रिया जस वेद बखानी। भय शुद्ध जु शुद्ध सदा श्रुतिबानी॥ सुखसिंधु परात्पर ब्रह्म सुशीला। निज भक्त हितार्थ कृताद्भुत लीला॥

दो॰ लीला अद्भुत रामकी जानै बिरला कोइ।
ज्यहि जाने लीलाअपर जात आपही खोइ॥

कवित्त॥ पायकै शरीर दिव्य मानवान चेतु चित्त वित्तही के हेत नित्त धाव धाम धामहै। वेद शास्त्र वाक्यको नमानितैं प्रतीत नीच विषयाहि कीच बीच मग्न आठ याम है॥ भाग्यवन्त कौल कै बेकौल हीन हीन बुद्धि शुद्धिकै कृतांत लोक शोक मैं जुआम है। ऊमर तमाम कै बेकामरे निकाम अब सीय रामनाम क्यों न ध्यावसि हराम है॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे भरतचित्रकूटआगमनश्रीराममिलापवर्णनोनामदशमोऽध्यायः १०॥

हरिपद छंद॥ सुमिरत जाको नाम कामतरु काम सकल मन पाते हैं। गावत गुण गण बिमल जासुके सब दुख दोष नसाते हैं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आदि अंत कोउ जानि न पावत श्रुति ज्यहि नेति बताते हैं। भाग्यवंत स्वइ राम सियाके सादर हम शिर नाते हैं॥ भक्तहेत मानुष तनुधारे किये कलुष कुलिहाते हैं। सुन्दर श्याम गौर छबि आगर सबहीके मन भाते हैं॥ कहँ लगि कहौं भरे गुण पूरण नारदादि यशगाते हैं। भाग्यवन्त स्वइ रामसियाके सादर हम शिरनाते हैं॥

कौशलपुर बासी नर नारी। चित्रकूट सब रहहिं सुखारी॥
करहिं नेम ब्रत संयम नाना। दिनप्रतिदेहिंबिबिधबिधिदाना॥
ज्येष्ठकृष्ण द्वितिया शुभ जानी। बोले प्रभु गुरुसन मृदुबानी॥

सवैया॥ नाथ दुखी पुरलोग सबै अति मूल फलादिक अम्बु अहारी। सानुज भर्त समंत्रिन मातन जात न सन्मुख मोहिं निहारी॥ बीतत मोहिं मनो पल कल्प सु आपु इहां पितु स्वर्ग सिधारी। सो अब आपु समेत सबै पुर धारिय पावँ सबै हितकारी॥

कहमुनिसुनहु भानुकुल नायक। कसनकहहुअसतुमसबलायक॥
ये सब लोग दुसह दुख ताये। भये सुखी तुम दरशन पाये॥
ताते कछु दिन दीजै रहना। फिरि सब करिहैं तुम्हरे कहना॥
सुनि गुरु बचन भले प्रभु भाषा। लगेरहन सब युत अभिलाषा॥

छंद त्रिभंगी॥ पावन पय पानी गुण गण खानी कृतमलहानी सुखकारी। ज्यहि देखत भागै कलुष सु जागै सुकृत बिरागै भव-बारी॥ तिहुँ काल नहाहीं सब त्यहि माहीं हरष समाहीं सुखसाथै। भरि नैन निहारी होहिं सुखारी छबि अति भारी रघुनाथै॥ रघुपति गिरि कानन सब दुख भानन सुयश पुरानन ज्यहि गायो। देखन त्यहि जावैं लखि सुख पावैं शीश नवावैं मन भायो॥ झरना बहु झरहीं खग रव करहीं मृग गण चरहीं स्वच्छन्दै। तरु बिबिध समूले युत फल फूले लखि अनुकूले सुख बृन्दै॥ सरसिज बहु बरनै बिक

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सित सरनै कवि किमि बरनै छबि ताकी। गुंजहिं बहु भृंगा अगि-णित रंगा सहित उमंगा रस छाकी॥ बहु कोल किराता भरि भरि पाता शुचि सुखदाता मधुमेवा। गुण स्वाद बखानी सबहिन आनी देहिं सुजानी सहसेवा॥ बहु मोल सोदेहीं तेनहिं लेहीं फेरत देहीं दूहाई। कहहिं सुबानी तुष्टतज्ञानी प्रीति पिछानी सूहाई॥ तुम सुकृत रासी अवध निवासी सुखसुबिलासी स्वामिमया। हम पापपरायन तव सुखदायन दरशन पायन रामदया॥ तुम पाहुनप्यारे बनपगधारे हमहिं सुधारे सुखदानी। अब कृपाकरीजे दलफल लीजै सकुच न कीजै जनजानी॥ हम आप कँगाला औरन पाला तुमहिं कृपाला देव कहा। सियराम कृपाते भय दुखहाते मनन समाते मोदमहा॥ सुनि वचनसुहाये सब सुखपाये लै सु सिधाये फल मूला। भय परम सुखारे बनचर सारे तिनहिं बिचारे अनुकूला॥ यहि विधि प्रभुपासा सहित हुलासा करहिं निवासा सब लोगा। इच्छा मनमाहीं भवन न जाहीं इहैं रहाहीं सुखयोगा॥ सानंद कृपालै सब सुखआलै जन प्रतिपालै छबि ऐना। बसुयाम बिलोकी होहिं बिशोकी स्वामि त्रिलोकी भरि नैना॥ ते धन्यसुभागा जिन अनुरागा प्रभुसन लागा जगमाहीं। भगवन्त सुताके हित पटुताके लोक त्रिताके समनाहीं॥

दो॰ सिय सादर सबसासु निज करि सेवा वश कीन।
देखि प्रेम सुखपाय तिन सिखभल आशिष दीन॥
सबके मन संशय यहै प्रभु फिरिहैं कै नाहिं।
भरतकोटि बिधि तर्कना करत रहे मनमाहिं॥
होत प्रात मज्जन सुकरि बंदे प्रभुपद जाय।
तेहि अवसर श्रीभरतको पठये ऋषयबोलाय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तोमरछंद ॥ मुनि पायँ शीश नवाय । गे बैठि आयसु पाय ॥ द्विज मंत्रिआदिक ज्ञानि। बटुरे सभासद आनि ॥ तत्र भाषि योहिं बशिष्ठ । सुनिये सबै जन श्रृष्ठ ॥ वशिष्ठ सवैया ॥ धर्म धुरीन दिवाकर वंश दिवाकर आकर ज्ञान सुजानू । पालक संतत सेतु श्रुती सतिसंध कृपालय नीतिनिधानू ॥ मातु पिता गुरु बैन सदारत आरतके हित जीवन प्रानू। रामरजाय किये सबको भल भाषत आपन मैं अनुमानू ॥ मंगल मूल हरै भवशूल प्रदानँदकंद सुमारगएकू। भाव सबै सुख शोभमई कल श्रीरघुनंदन को अभिषेकू ॥ त्यों भगवंत सुरामहिको रुख राख्यहि राहत धर्म अनेकू । जाबिधि औध चलैं रघुबीर करौं सु उपाय कहौ सविवेकू ॥ नयमालिनी छन्द ॥ सुनि मुनिकी पुनीतवरबानी । धरम विनीत स्वार्थमय सानी ॥ उतर न देत काहु बनिआवा । तब उठि आप भरत शिरनावा ॥ भरत कवित्त ॥ भानुवंश चारुमें उदार भये भूप भूरि एकन सों एक त्यों सरसहोत आवते । जन्महीके हेतु पितु मातुकृत कर्म जैस वैसही सुदेत विधि घटिना बढ़ावते ॥ भाग्यवंत राउरि अशीष सो प्रसिद्ध्यो सुदलितिन दोषदुख सुखको सजावते । छेकिगति विधिकी सुटेकी निजटेक जौन मोसे मतिमंदन सों बूझत उपावते ॥

दो० बैवस्वत मनु पुत्र हित यज्ञ किये सुखदानि ।
रानि वाक्य मुनिवर कृपा जन्मी कन्या आनि ॥
देखि सुता को भूप निज मनमें दुख बहुकीन ।
तब मुनि आशिरबाद दै कन्यहि सुत करि दीन ॥
सोई सुत यकबार चलि गयो सुयक बन माहिं ।
तहाँ शाप शिव पूर्ष को नारि होइ जो जाहिं ॥
ह्वैगो कन्या पुत्र स्वइ कह बशिष्ठ विधि पाहिं ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मम अशीश यह सुतरहा करिहौं फिरि सुत याहिं॥
कह ब्रह्मा तव टेक सुत रहीमास यह षष्ठ।
षष्ठमास रहि नारि पुनि लीन्हे मानि बशिष्ठ॥
इति जु टेक टेकी कठिन सके न बिधि हर टारि।
ते म्वहिं पूँछत मंत्र अब यह हतभाग्य हमारि॥

बशिष्ठ दोहा॥

राम कृपा जापर करहिं ताहि सुलभ सब तात।
रामबिमुखसिधिस्वप्न नहिं सुगमहु अगमलखात॥

अहीर छंद॥ हौं सकुचत मन तात। भाषत कछु यकबात॥ जे नर जग बुधि ब्रात। अर्थ तजहिं सब जात॥ सादर तुम द्वउभाय। जाहु बिपिन सुखपाय॥ देइय पलटि सुधाम। लच्मण युत सिय राम॥ भरत सवैया॥ कानन बासकरौं भरि जन्म कहौं मुनि राज सु सत्य बखानी। मोहिं सुपास वियो सम याहि न भाषतहौं कछुकैन सयानी॥ त्यों भगवन्त तुम्हैं सरवज्ञ सुजान सजानकि राम सुजानी। जोफुर आपु कहौ सु कृपाकरि कीजिय नाथ प्रमाण सुबानी॥ सुनत भरतकै सरल सुबानी। सभासहित हरषे मुनि ज्ञानी॥ निज अनुकूल भरत मुनिपाये। युत समाज रघुबर पहँ आये॥ करि दण्डवत मुनिहि रघुबीरा। आसन दीन धर्मधुर धीरा॥ मुनि निदेश बैठे सब लोगा। निरखि राम बिसरे सब सोगा॥

बशिष्ठ सवैया॥ सुनिये सुखधाम सु राम कृपाल सदाजन-पाल स्वछन्द चरौ। गुणज्ञान निधान सुजान शिरोमणि धार्मिक पंथ अनै न धरौ॥ भगवन्त सुजान गती सबकी सचराचर ब्याप्त सुभाय ढरौ। हित भारत मातु सु लोगनको ज्यहि भाँतिहुवै सु उपाय करौ॥ राम कवित्त॥ रावरेही हाथहै उपाय सब नाथ हित रावरेही

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रुखराखे सबहीक जानिये। होइ जोकृपाल अब आयसु प्रथम मोहिं सत्यहौं कहत ताहि माथे निज मानिये ॥ भाग्यवन्त फेरि ज्यहि होइहै रजाय जस करिहै सु भांति सब सेवा सुख दानिये। सुख में अमल कीर्त्ति चन्द ते दुचन्द तासु गुरुके बचन जो प्रमाण हीय आनिये ॥

वशिष्ठ दोहा ॥

राम कह्यो सो सत्य सब यहै धर्म्म मतसार।
पै सनेह शुचि भरतको त्यहि नहिं कीन बिचार ॥

सवैया ॥ ताहित बारहिबार कहौं बश भारत भक्तिभई मति मोरी। मोमत राखिकरौ रुचि भारत सो शुभ राउरि बात न थोरी ॥ सादर कान बिनै करि भर्त बिचार करौ मन ताहि बहोरी। त्यों भगवन्त किह्यो मतलोक सुसाधु नृपौ नय धर्म निचोरी ॥ हरिगीतिकाछंद ॥ अनुराग गुरु अति भरतपर अवलोकि प्रभु सुखमान्यऊ। अत्यन्त धर्म धुरीण भरतहि दास निज शुचि जान्यऊ ॥ पदपद्म शीशनवाय सादर पाणि पंकज जोरिकै। बोले मनोहर बचन मंजुल प्रेमरस मय बोरिकै ॥ राम सवैया ॥ राउरि सत्त सुसत्य कहौं न त्रिलोक भयो जस भारत भाई। भाग्यबली भगवन्त स्वई गुरु सेवक जो तजि मान बड़ाई ॥ राउर जापर यों अनुराग सुभागसकै त्यहि को जगगाई। सोइ किये भल जो कहैं भारत यों कहि राम रहे अरगाई ॥

वशिष्ठ दोहा

तात भरत सब सकुचतजि निज मनकी रुचिजौन।
कृपासिंधु रघुबीर सन कहहु मुदित मन तौन ॥

सुनि गुरु बचन राम रुखजानी। भयउठि ठाढ़ जोरि युगपानी ॥
सजल नयन अति पुलकशरीरा। गदगद बचन कहत धरिधीरा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जो मुनिनाथ कह्यो स्वइ ठीका। कहब काह यहि ते मैं नीका॥

भरत सवैया॥ जानत स्वामि सुभावहि मैं अपराधिहु पै कृत क्रोध कबौना। मोपर भूरि सनेह कृपासु लख्यो रिस खेलत खेल समौना॥ बारव्यहि ते न तज्यों सँग स्वामि सु कीन्ह्यनि भंग कबौ मनहौंना। मैं प्रभुरीति कृपा जिय जोहि सुहारव्यहु खेल जितावहिं तौना॥ मैंहुँ सनेह सकोच लिये समुहें प्रभु केसु कह्यो कछुबैनन। दर्शन तृप्त न आजु लगे बढ़ि प्रेम पियास रही युग नैनन॥ त्यों प्रतिकूल बिरञ्चि भयो सुसक्यो सहिमोर दुलार सुखैनन। डारि दिये मिसमातु कुबीच बिचारत सो चित धारत चैनन॥ छप्पै॥ यहौ कहत नहिं लहत आजु म्वहिं बाम बिधाता। निज बिचार भवकौन साधु शुचि मंगलदाता॥ मैं सुठि सुंदर साधु मातु मतिमंद बतावों। यह बड़दोष सराहि आपु परदोष लगावों॥ कहुँ फरत शालिकोदव बिटप सर संबुक भवमुक्त कहु। भगवन्त भजन भगवन्त बिनु सुख कि जीव क्यहुँ युक्तिलहु॥

दो० काहुहि दोषन क्लेशकछु यह मम उदित अभाग।
बिनु समुझे कटु बचन कहि दीन्ह्यों जननिहिंलाग॥
करि बिचार सब भाँति निज देख्यों हृदयमँझार।
सीयराम तजि आन कहुँ हित नहिं होइ हमार॥

सवैया॥ सतिभाव कहौं छल छाँड़ि सबै प्रभु जानत हौ तुम झूठसही। तनु त्यागनकै नृप पूर किये प्रण प्रेम सुकीरति पुंजलही॥ जननीकृत केवल कूमति है यहि माहिं कछू त्यहि लाभ नहीं। अवलोकि सुमातु न जाहिं सबै इतिजाल अनर्थक मूलमहीं॥ कबित्त॥ करि मुनि बेष राम सीय सालषण आपु गये बन-बास दास कान सुनि पाई है। अति सुकुमार पदत्राणहू न प्यादे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पायँ शंकर भवानी साखि रह्यौं याही घाई है ॥ बहुरि बिलोकि कै निषादको सनेह चारु कुलिश कठोर उर सो न दरकाई है । सोई निज नैनन बिलोक्यो सब आनि अब जीवतहि जीव जड़ सबहि सहाई हैं ॥ सवैया ॥ देखि जिन्हैं मग साँपिनि बीछि तजैं विष तामस तीक्षण ताई । त्यों भगवन्त सुशील सुभाव करै जिनकी सब लोक बड़ाई ॥ ते रघुनन्दन लक्ष्मण सीय लगे अनहित्त सुजाहिं बनाई । तासु तनय तजिकै दुखदारुण दैव कहौं अब काहि सहाई ॥ मालीछन्द ॥ सुनि ऐसे बचन भरत सुभाय के । चली धार जल नैन रघुराय के ॥ दबिगे सभाके जन दुखभारहे । पर्‍यो कमलके बन ज्यों तुषारहे ॥ मुनि बशिष्ठ उपदेश बहु भाँति सों । भगवन्त कीन्हि सबहिन शांति सों ॥ राम मोदकछन्द ॥ तात गलानि हृदय जनि मानहु । जीव गती वश ईश सुजानहु ॥ तिनिहु काल त्रिभूवनमें सत । पुण्ययशी तुमसों नहिं मोमत ॥ कूटिलता तुम पै उर आनत । लोकहु सापरलोकहु भानत ॥ दोष धरैं जननी जड़ तेइनि । नाहिं न साधु सभा जिन सेइनि ॥

दो० साधु संग जिन कीन भल तिनको तौ मत एहु ।
केकेई परहित अयश लिय त्यहि दोषन देहु ॥

तात नाम तुम्हरो लय लोका । ह्वैहैं नर भवबन्ध बिशोका ॥
सुमिरत तुमहिं तात जग माहीं । सत्य कहौं कछु दुर्लभ नाहीं ॥
तुम गलानि मानहु जनि कोई । रहत न बैर प्रीति कहुँ गोई ॥
निजहितअहितजानि पशुलेहीं । गुण ज्ञानादि भरी नर देहीं ॥

सवैया ॥ काह करौं असमञ्जसहीय सुजानहुँ तात भलीबिधि तोहीं । प्राण दिये प्रण लागि महीप सुराख्यउ सत्य तज्यो ज्यहि मोहीं ॥ शोच बड़ो तिन मेटत बैन सकोच लया त्यहि सों अधि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोही। त्यों भगवन्तदियो गुरु आयसु तात कहौं करिहैं सत्तिवोही॥

सो० राम बचन सुख मूल सुनत सभा हरषी सकल।
मिटी मलिन मन शूल भरत हृदय आनँद परम॥

भरत राम सम्वाद सुहावा। सुनि अमरन मनसंशयआवा॥
राम सुभक्त विवश श्रुति बानी। फिरहिं न होइ काज सुरहानी॥
बहुरि बिचारि धीर मन आना। परहित निरत सुभक्त सुजाना॥
भरत धर्मधुर फुर प्रभु दासा। करिहैं कसन धर्म परकासा॥
अस बिचारि सब सुर अनुरागे। भरत चरण मन सुमिरण लागे॥
कह सुरगुरु सुनु सुरपति बैना। कीन्हेउ मन्त्र सकल सुख ऐना॥
मन बच कर्म देखि जन सेवा। तुष्टत त्यहि परतर प्रभु देवा॥
भरत राम द्वउ एक न भेदा। अस मन समुझि तजहुसबखेदा॥

दो० अन्तरयामी रामप्रभु जानि सुरन मतयेहु।
भये शोचवश वचन पितु उतइत बन्धु सनेहु॥

पुनि सब अमर भरतकी शरणा। तिन्हकरशोकअबशिघ्रहिंहरणा॥
तबहिं भरत निज मन अनुसारा। परेउ आइ सब मम शिरभारा॥
कहउँ फिरन तौ अनय अधर्मा। बिनु प्रभु काहकरब मैं धरमा॥
करि कुतर्क बहु मन दृढ़आना। प्रभुआज्ञा आपन कल्याना॥
उठि सप्रेम धरि प्रभुपद माथा। बोले भरत जोरि युग हाथा॥

दो० कृपा वारिधर दीनहित विरद विदित तनजोहि।
कहहु कृपाकरि नाथ अब काह कहावहु मोहि॥

मैं निजमुख का कहौं बखानी। सबविधिते मम बुद्धिहेरानी॥
उदय अभाग करमफल पाका। चाखब सुखयुत दुखरस ताका॥
प्रभु सरवज्ञ कृपाल सुजाना। ज्यहिविधिहोइ सकलकल्याना॥
स्वइ कृपाल अब करहु उपाऊ। जनहित सकुच न राखबकाऊ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सवैया ॥ जान शिरोमणि जानसबै मन स्वारथ स्वामि फिरे सबहीको। ईश अनीशन के जगदीश सुबीसविसे किय आयसु नीको ॥ है यह स्वारथहू परमारथ सारु शृंगारु भलो सुगतीको। सोइकरो करि नाथकृपा हित दास सकोच परै नहिं जीको ॥

दो० नाथ सुनिय यक विनय अब करब उचित मतजौन।
तिलकसाज आन्योसकल करियसफल प्रभुतौन॥

सवैया ॥ पठई म्वहिं सानुज देवबनै रहि कीजिय आपु सनाथ सबै। नतु फेरिय बन्धु द्विधामचलौं सँग मैं बन आयसु होइ अबै ॥ नहिं जाहिं बनै तिहुँभाय फिरौं सहसीय कृपालय खूबफबै। भगवन्त प्रसन्नहुवै मनज्यों स्वइ कीजिय नाथ निबाहतबै ॥ देवदियो सब भार हमैं शिर धर्मविचार कछू म्वहिं नाहिन। स्वारथहीलिय बात कहौं सब चेतरहै चित आरतमाहिंन ॥ मैं अघ अवगुण धाम सराहत स्वामि सुसाधु गन्यो कछु ताहिंन। नाथ स्वईमत भाव हमैं मन स्वामिसकोच लहै ज्यहि नाहिंन ॥

दो० भरतवचन शुचि सरल मृदु पूरण प्रेम गँभीर।
सुनि रहिगे चुपसाधि सब सहितसभा रघुवीर ॥

त्यहि अवसर मिथिलाधिप दूता। आये तहाँ सुनत विधिपूता ॥
लीनबोलि शिरआइ नवाये। रामहिलखि तिन अतिदुखपाये ॥

वशिष्ठ दोहा ॥

हे चरचातुर रुचिर चिर कहियो वचन सुवेश।
सहित समाज सुराज सब कुशल भूपमिथिलेश ॥

चतुरंसा छन्द ॥ सुनि मुनिबैना। भरि जलनैना ॥ करि पुट हाथा। धरि पग माथा॥ सकुच समाई। कहत दुखाई ॥ दूत सवैया॥ मुनि बूझब राउर सादर स्वै कुशलात प्रदात कि बातभई। नतु कौ-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शलनाथहि साथचली कुशलात सबै मुनिनाथ गई ॥ मिथिलायुत औध विशेषि भयो सुअनाथ सबै जगतापतई । भगवन्त न जानि परै सुगती जलजासन की सब रीति नई ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेचित्रकूट जनकदूतआगमनवर्णनोनामैकादशोऽध्यायः ११ ॥

कुण्डलिया ॥ जाके गुणगण अगम अति पावत निगम न पार । परब्रह्म परमातमा निर्गुण गुणआगार ॥ निर्गुण गुण आगार सुलभ सेवत भव भञ्जन । रघुकुल मणि अवतार सुखद सज्जन जन रञ्जन ॥ रञ्जन सुर मुनि मनुज शरण कछु अगम न ताके । बंदत पद भगवन्त नमत बिधि हरिहर जाके ॥

दो० पुनि धरि धीरज जनकचर, नाय सुमुनि पद भाल ।
कह्यो कृपाकरि नाथ अब सुनिये मम नृप हाल ॥

दूत भुजंगप्रयात छंद ॥ गये राम आरण्य ताही बिशोकै । तजे प्राण भूपाल गे देवलोकै ॥ सुसुन्तै समाचार तिर्हूति राजा । भये शोक आकुल्लते सासमाजा ॥ करी जो सुता भूप कैकैकि करणी । सुसुन्तै पस्यो राउ ब्याकुल्ल धरणी ॥ दियो राज भरतै बनै राम खेद्यो । यवानी मनो भूपही बाण छेद्यो ॥ पुनःधारिधीर्य्यापु हीमै बिचारी । पठाये चतुरचार औधै सुचारी ॥ गये दूत लाये समाचार सुन्तै । पयाना इतै भूप कीन्हें तुरन्तै ॥ न कीन्हें मगै बास आये प्रयागै । पठाये हमैं आजु प्रातै सुआगै ॥

दो० खबरि लेन पठये हमैं सो पाये मुनि नाथ ।
देहु बिदा अब जाहिं हम नाये कहि अस माथ ॥
बोलि छ सात किरात तब दीन्हें करि तिन साथ ।
चले दूत तिरहूतिपहिं नाय सुमुनि पद माथ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आवत सुन्यो जनक नृप जबहीं। आगे चले लेन प्रभु तबहीं॥
पुरजन परिजन अनुज समेता। युत गुरु गुरजन कृपानिकेता॥
कामदगिरि जब दीख बिरागी। चल्यो प्रणाम करत रथत्यागी॥
पंथ जनित श्रम काहु न रेजा। मन प्रथमै रघुपति पहिं भेजा॥
आये निकट देखि अनुरागे। जहँ तहँ मिलन परस्पर लागे॥

हरिगीतिका छंद॥ लागे परस्पर मिलन सादर प्रेम परिपूरण हिये। मिथिलेश बंदे जाय मुनिजन ऋषिन प्रभु बंदन किये॥ पुनि राम सानुज जनक नृप पद पद्म शीश नवायऊ। भगवन्त मिलि अति प्रेम सबहिन शुभ सुआश्रम लायऊ॥ सवैया॥ बिलपैं दउ राज समाज मिले नहिं काहुहिं ज्ञान बिराग रहा। गुण रूप सुशील सराहि महीपति शोच सबै बश शोक महा॥ दय दोष सरोष कहै सब कै यह बाम बिरञ्चि सुकीन कहा। भगवन्त सु देखि बिदेह दशा मुनि सिद्ध बिरक्तन धीर बहा॥

दो० तब सब लोगन मुनिबरन दीन्हें बहु उपदेश।
कह बशिष्ठ मिथिलाधिपहिं धीरज धरिय नरेश॥

सवैया॥ जाकर ज्ञान प्रभाकर ज्यों सु उदै भव घोर निशाहि नशाई। बैन समूह लसैं किरणैं शुकसे मुनि पद्म विकासहिपाई॥ ताहिकि कौन्यहु कालकबौं ममता मद मोह सकै नियराई। त्यों भगवन्त अचर्य नहीं सिय राम सनेह कि है य बड़ाई॥ सिय राम सनेह मई ज्यहि देह सराहत ताहि सदा सबकै। भगवन्त सु साधु समाजनमैं बड़ पावत भावत आदरस्वै॥ जप योग बिराग सु ज्ञान जितो बिनु रामसनेह बृथा कृतज्वै। प्रण रोपि कहौं नहिं कामकई हरि प्रेम बिना हरिसों बड़है॥

दो० कोटि इन्द्र सम सुखसदन कोटि काम छवि देह।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कह भगवन्त सोतुच्छ सब बिनु सिय रामसनेह ॥
बहुतभाँति मिथिलाधिपहि कहिमुनि धीरजदीन।
रामघाट तब जायकै सबहिन मज्जन कीन ॥
मुनि आयसु जहँतहँ सकल उतरे सुथल बिचारि।
त्यहि बासर बिनु बारिही रहे सुयों नर नारि ॥

होत प्रात सब लोग नहाने। कोलकिरात खबरि असजाने ॥
कंदमूल फल बिबिध प्रकारा। लावत भये अपारन भारा ॥

सवैया ॥ श्रीरघुबीर प्रताप कलाप सु पाय भयो बन मंगल दायक। दानि सबै मन काम भये गिरि देखत जो दुख जाल नशायक ॥ वृक्ष सबै फल फूल सराजत डोलत बाय सुभाय सुहायक। त्यों भगवन्त प्रभाव महाबन क्यों सु कहौं जहँ श्री रघुनायक ॥

दो॰ कन्दमूल फल सकल स्वइ सबहिं पठै मुनि दीन।
अर्पिअर्पि हरि हरि सुमिरि सबहिनभोजनकीन ॥

छप्पैछंद ॥ यहि बिधिगत दिन चारि निरखि रामहिं नरनारी। रहहिं सुखी सब काल सदन सुख सुरति बिसारी ॥ दुहुँ समाज रुचि यहै फिरब प्रभु बिनु भल नाहीं। सुरपुर कोटि सुपास राम सिय सँग बन माहीं ॥ तजि लषण राम सिय धामसुख भाव सदनसुख मन जिनहि। त्यहि सम न हानि जगजानि कछु बाम सकलबिधि बिधि तिनहि ॥ सवैया ॥ पूरुब कर्म्म किये कछु नेक प्रभावहि सों तनु मानुष पायो। सो लहि जो नकरी हरिभक्ति वृथा बश मोह सु बैस बितायो ॥ छांड़ि सबै छलकाय गिरा मन जो नहिं राम सों नेह बढ़ायो। सोभगवन्त सु देखु बिचारि जिये जगनाहक नाहकजायो ॥ इन्द्रबज्राछंद ॥ ताही समय में सियजू कि माई। भेजी सुदासी यक तत्र आई॥ सो देखि गैली सयकाश जानी। आई सबै तत्रबी-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देह रानी ॥ श्रीराम मैया सनमानि बानी । दीन्हासनै लै समया समानी ॥ बैठीं सबै प्रेम गंभीर भीनी । बोली सुनैना बचनै प्रवीनी ॥ सुनैना सवैया ॥ बाम बिरञ्चिकिहै बुधि बाम जु कोरत फेनहिं पय पविटाँकी । जन्म बिवाह उछाह कहां वह सुक्खमहा दय कीन अचाकी ॥ डारि कहां अब आनि दिये यह दुःख रहीगति एकन बाकी । जानिन जाय कहौं सुकहा भगवन्त सबै उलटीगति ताकी ॥

दो० देखहु बिष बायस बिपुल अमिय हंस यकनाम ।
तातै वहिबिधि बामकी सबै अहैगति बाम ॥

सुमित्रा सवैया ॥ बिपरीत सबैबिधिकी गति है सु बिचित्र महा नहिं जानिपरै । लघुबालक ज्यों बुधि भोरि सदा रचि खेल बिगारत फेरितरै ॥ क्षणमें सृजि लोक अनेकनत्यों प्रतिपालनकै सु बहोरिहरै । भगवन्त स्वछन्द करै सबसों मनभावत काहुन नेकुडरै ॥ कौशल्या कबित्त ॥ काहूको न दोष निज कर्महीको रोष सब अतिशै करालगति कर्मकी सुजानिकै । ताही अनुकूल बिधि चातुर सुदेत फल घटिना बढ़ाय दुख सुख लाभ हानिकै ॥ ईशहीं रजाय शीशज।निये सकलजीव शोचियेन बादि यों अनादि रीति मानिकै । शोचियै जुदेबिहित आपने कि हानि जानि जीवन मरण भूप बातहीय आनिकै ॥ सुनैना दोहा ॥

देबि सत्य बानीत्वया कसन कहौ असजानि ।
सुकृतकोश अवधेशबर तिनकी तुम पटरानि ॥

कौशल्या चौपाई ॥

राम लषण सिय काननजाहीं । सोभल सबहिं काल तिहुँ माहीं ॥
मोहिं भरत कर शोच बिशेखी । राम प्रेम मूरति उन देखी ॥
भरत सुभाउ शील गुण करणी । सकहिं न शेष सहसमुख बरणी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जब तब असम्वहिं नृपतिबखान्यो। यहिकुल दीपभरत जियजान्यो॥

दो० जैसे कनक कसौटिका कसे खुलत गुणतासु।
तैसे समया पायकै पुरुष परखिये आसु॥
भरत सरिस भरतै भयो उपमा कतहुँ न एकु।
ऐसेहु दुख अवसरजु निज त्यागे नहीं बिबेकु॥
सुनि पुनीत सुबिनीत मृदु कौशल्याकी बानि।
प्रेम मगन बिह्वल परम भईं शिथिल सबरानि॥

तब धरिधीर राम महतारी। बोली बचन प्रेम उरभारी॥
सुनहु देबि प्रिय जनक नरेशू। तुमहिं देइ किमि कउ उपदेशू॥
अवसर पाइ भूपसन बानी। कहब देबि निज ओर बखानी॥
भरत जाहिंबन लषण न जाहीं। परैठीक जो नृप मनमाहीं॥

कौशल्या सवैया॥ तौ भलि यत्न बिचारि करौम्वहिं शोच बड़ो यक भारतहीको। गूढ़ सनेह अहै उनकेमन लागत मोहिं रहे नहिं नीको॥ त्यों भगवन्त सुसत्य कहों मिथिलेशि तुम्हें निज भावत जीको। श्रीरघुबीर बिना भरतै सुख लागत लोकसबै मन फीको॥

सुमित्रा नराचिकाछंद॥हे श्रीबिदेह भामिनी॥गै दण्डद्वैकयामिनी॥
राम जननि तब कह्यो सप्रीती। अब थल जाहु रैनि बहुबीती॥
म्वहिं गति ईश कि भूप सहाई। ठनत न मन कछु और उपाई॥
सुनि सप्रेम कौशल्या बैना। बंदिचरण तब कह्यो सुनैना॥

सुनैना चामरछन्द॥ मोहिं सो उचितयों बिनय सुआपु स्वामिनी। रामचन्द्र मातु कौशलेश प्रीव भामिनी॥ स्वामिनै सुभाव यों सुनीचह्वक आदरै। अग्नि धूम्र अद्रि ज्यों तृणादि शीश पै धरै॥ रावरे सुअंग योग बिश्व माहिंको हई। भानुकी सहायता कतौं सुदीप सोहई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० कर्म बचन मन छाँड़ि छल सेवक आपु नरेश।
देविसहायक रावरे गिरिजा शम्भु हमेश ॥

नाराचछन्द ॥ श्रीराम जाय काननै सवाँरि देवकाजही। बहोरि आय करि हैं अडोल अवध राजही ॥ नृदेव नाग पायकै सुराम बाहनै बलै। सुखी स्वछन्द बासिहैं समस्त आपनैथलै ॥

दो० यह सब तिरहुतिराय सों याज्ञबल्क्य मुनि गाय।
हों राख्यो सुनि मुनि बचन देवि वृथा नहिं जाय ॥

अस कहि पुनिपुनि पायँनलागी। सियहित बिनयकीनअनुरागी ॥
आयसु पाय सहित संग सीता। चली सराहत प्रेम पुनीता ॥

दो० आयसुथल परिजन प्रियहि मिली सीय जसयोग।
तापस बेष बिलोकि सिय भये बिकल सब लोग ॥

इत बशिष्ठ मुनि पाय निदेशू। आवत भये थलहि मिथिलेशू ॥
सियहि बिलोकि लीन उरलाई। अति अनुराग न हृदय समाई ॥
भये बिकल लोमश इवराया। उपज्यउ ज्ञान मिटी भ्रममाया ॥
एक समय लोमश अभिलाषा। नर नारायण ते अस भाषा ॥
देखन हम चाहत तव माया। सो दिखाय दीजै करि दाया ॥
सुनि प्रगट्यो निज माया गाढ़ी। उमग्यो सिंधुचल्यो जल बाढ़ी ॥
गई बूड़ि महि पारन पाथा। बूड़त तरत बहे मुनि नाथा ॥
यहि बिधि बहत प्रयागहिआयो। जहाँ अक्षयबट रहेउ सुहायो ॥
जस जस बारिध जल उपराता। तस तस वृक्ष सो बाढ़त जाता ॥
बिकल चढ़े मुनि तापर धाई। तहाँ देखि अस कौतुक पाई ॥
पत्ता पर यक बालक सोवत। सो भगवान चकित मुनि जोवत ॥
ताकी मुनि अवलम्बन पावा। है कउ अपर धीर मन आवा ॥
मिटी प्रलय पुनि बच्यो मुनीशा। हरि मायाहि नवायो शीशा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० हरिमाया अतिशय प्रबल पाय सकै को पार।
जाके बश नट प्लवँग इव नाचत सब संसार॥
फँस्यो न मोहम जनक मति व्यापि न बिषै बयारि।
यह सिय राम सनेहको प्रबल प्रताप विचारि॥
जनक सवैया॥ पुत्रि पवित्र किये कुल दोउ इतै निमिराज उतै रघुकोरी। त्यों भगवन्त सुख्यारखो यश जाहिर उज्वल तव चहुँ-ओरी॥ जीति लिये सरि देवनकी यह कीरति रूप सुता सरि तोरी। प्रापति है सब लोकन मैं करि भेदन सो बिधि अण्ड करोरी॥
दो० गंगाजीके अवनि पै तीनि बड़े थल आहिं।
हरद्वार अरु प्रागपुनि गंगासागर माहिं॥
सुरसरिरूपा कीर्त्ति तव बिपुल बड़े थल भ्राज।
भाग्यवंत सब लोक मैं जहँ जहँ सन्त समाज॥
सुनिपितुवचन सु सत्यशुचि सियसकुचीमनमाहिं।
कहि न सकतमनगुनतनिशि बसबइहांभलनाहिं॥
लखि रुख नृप रानी सियहि बार बार उरलाय।
बिदाकीन सनमानि अति चलीथलहि शिरनाय॥
सीय मातु तव अवसर पाई। नृपसन कह्यो भरत गतिगाई॥
कौशल्या जसि भरत बड़ाई। कीन पतिहि सोसकल सुनाई॥
सुनि मिथिलाधिप भरत प्रभावा। पुलक शरीर नैन जल छावा॥
सुनहु प्रिया तव सत्य सुबानी। भरत प्रभाव न परत बखानी॥
मैं अनुमान कीन बहु भाँती। भरत सुभाव शील गुणपाँती॥
जानि न जाहिंअमित अवगाहा। विथकित बुद्धि लहै नहिंथाहा॥
शारद शेष अगम शिव बेदै। जानि को सकै अपर उन भेदै॥
भरत चरित बरणत सुनु रानी। बिनुश्रमलहहिं परमपदप्रानी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धन्य धन्य तिनकर बड़ भागा । जिन्हके भरतचरण अनुरागा ॥
भरत भक्त मन बच अरु करणी । भक्त प्रभाव अमित बर बरणी ॥

दो० भरत जाहिं बन फिरहिं गृह लषण भली यहबात ।
पै रघुबर अरु भरतकी प्रीति जानि नहिं जात ॥
जो आयसु रघुपति करब मेटिहहिं भरत न ताहि ।
ताते शोच सनेह बश करिय न प्रिय मन माँहि ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहयर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे जनकसुनैनासम्वादेभरतगुणवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

दो० ररु ररु रामैं रामरे मार मोर मैं मारि ।
रमु रमु रामैं राम मैं रोमैं रोम मुरारि ॥
यहि बिधि जनक सुनैनिका भरत रामगुण व्रात ।
सहित प्रीति बर्णनकरत बिगत निशाभइ प्रात ॥
तब सबहिन मज्जन किये पूजे जो ज्यहि इष्ट ।
गे नहाय रघुबीर तहँ मज्जत जहाँ बशिष्ट ॥

रामछप्पै ॥ नाथ सकलपुर लोग भरत सानुज महतारी । व्याकुल शोक सनेह बिपुल बन माहिं दुखारी ॥ लीन्हे सकल समाज साज सँग जनक नरेशू । भये बहुत दिन रहत सहत बन माहिं कलेशू ॥ मुनि नाथ परमहित सबहिं कर साथ हाथ रौरयहि अहै । भगवन्त उचित जस होय कछु करिय स्वई सब शिरसहै ॥ बशिष्ठ चकोरछंद ॥ नरक समान सबै सुखसाज द्विराज समाज तुम्हैं बिनु राम । सो सुखकर्म सुधर्म्म सबै जरिजाउ सुभाउ जहाँ नहिंराम ॥ योग कुयोग सु ज्ञान अज्ञान वृथा जहि प्रेम प्रधाननराम । त्यों भगवन्त सदा ध्रग ताहि न प्राण प्रिया ज्यहि हैं सियराम ॥

दो० तुम बिनु संतत सहतदुख लहत सुखहि तुमपाय ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जानतहौ गति सबहिकी ज्यहि जसभाय कुभाय ॥

तोटकछंद॥ तव आयसु राम सबै शिरहै। तुमपै सबकी गति जाहिरहै॥ अब आश्रम जाइ अराम खुदै। करिहौं रुचि राउरि मैं समुदै॥

दो० करि प्रणाम निज आश्रमहिं गये जबहिं रघुनाथ।
तब धरिधीर बिदेह पै आवत भे मुनि नाथ॥

बशिष्ठ तोमरछंद॥ मिथिलेशजी महराज। करिये स्वई अब काज॥ ज्यहि धर्मसा सबकेर। सब भाँति हो हित ढेर॥

दो० मुनि बशिष्ठके बचन इमि सुनि बिदेह महराज।
करि बिचार मन भरत पहँ आये सहित समाज॥

जनक दोहा॥

तात भरत तुम रामकर जानहु शील सुभाय।
ताते जो आयसु करहु कीजिय स्वई उपाय॥

भरत सवैया॥ सब भाँति महीप बड़े सु हितू गुरु मातु पिता सम आपु अहौ। गुणज्ञान निधान सुजान महा पुनि कौशिक आदि मुनीशजहौ॥ भगवन्त सुयोंथल बूझब मोहिं न शोभित आपु बिचारि कहौ। शिशु सेवक जानिजु आयसु मोहिं करौ स्वइ सादर शीशलहौं॥ तोटकछंद॥ श्रुति शास्त्र पुराण पुकारिकहैं। अति सेवक धर्म कठोर अहैं॥ प्रभु धर्महिं स्वार्थ बिरोध महा। रत बैरहि प्रेम प्रबोध कहा॥

सो० पराधीन म्वहिं जानि पालिराम रुख धर्म ब्रत।
करहु प्रेम पहिंचानि सबकर हित सम्मत सबहि॥
सुनत भरत के बैन सहित सभा मिथिलाधिपति।
पुलकगात जल नैन लगे सराहन भरत कहँ॥

पुनि मुनि भूपति भरत समेता। सचिवसाधु द्विजसकलसचेता॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गये जहां राजत रघुबीरा । बट तरुतर वर छाँह गँभीरा ॥
सुरन हृदय भय भा अधिकाई । सुमिरि शारदहिं तुरत बुलाई ॥
कहेनि भरत मतिफेरहु माता । करिछलहोहु बिबुध कुलत्राता ॥
सुनि कहदेबि शक्ति म्वहिंनाहीं । सकउँ प्रवेशि भरत मतिमाहीं ॥
भरत हृदय निवसत रघुराया । तहँ नहिं चलिहि सुरहु छलमाया ॥
यहि बिधि सुरन सीख बहुदेली । त्रिधिलोकहिं शारद तब गेली ॥
सुर उपाय नहिं चले खरोसे । रहे शोचि मन भरत भरोसे ॥
राम सबहिं बहुबिधि सनमानी । आसन दीन सबै समजानी ॥
निरखि राम सिय अद्भुत शोभा । भये प्रेमबश सब मन लोभा ॥

वशिष्ठ दोहा ॥

हे रघुबर कुलद्युमणि मणि सत्यसंध सुखगेहु ।
मत हमार याही सकल करें जो आयसु देहु ॥

राम सवैया ॥ बिद्य सुमानसभा ज्यहि मैं मुनिराजसु आपु अहौ मिथिलेशू । तामधि मैं शिशु सेवक नाथकहौं सु कहा सब भांति भदेशू ॥ ज्ञान निधान सुजान मुनीश महीपति आपु जु देहु निदेशू । सोइकरौं भगवन्त अबै न डरौं पुनि आयसु भंग नरेशू ॥

सुनि प्रभु बचन सरल सुखसाने । मुनि मिथिलेश मनहिं सकुचाने ॥
उतर न आव बिकल भयभारी । रहेभरत मुख सकल निहारी ॥

दो० जानि कुअवसर भरत तब हृदय सनेह सँभारि ।
बिंध्याचल गिरिबढ़त जिमि लीन्ह्यउ घटजनिवारि ॥

बिंध्या मुनि कर शिष्य सुभागा । एक समय सो बाढ़न लागा ॥
मुनि अवलोकि कीनअनुमाना । लेइहिढांकि अवशि यहभाना ॥
अस बिचारि तहँ गे मुनिनाथा । कीनप्रणाम सो धरिमहिमाथा ॥
दै अशीश अस कह मुनिराऊ । जबतक मैं न अत्र पुनिआऊ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तब तक परे रहौ तुम ऐसे। आजु लगे सो पौढ़ा वैसे॥
तैसेहि राम प्रताप तमारी। अवरोधक निज नेह बिचारी॥
बढ़त खैंचि उर अन्तर माहीं। राखेउ गुप्त प्रगट सो नाहीं॥

दो० जैसे पृथिवी कनकदृग हरिलै गयो चुराय।
है बराह अज नासिका बधि तेहि थप्यो धराय॥
शोक रूप हिरण्याक्ष त्यों गोये सुमति धराह।
उत्पति ह्वै बिधि भरत ते तुरत विवेक बराह॥
मारि कनकदृग शोक मै मति महि तुरतउधारि।
करि प्रणाम सिय राम पद बोले भरत बिचारि॥

भरत रोलाछंद॥ नाथ मातु पितु स्वामि सुहृद गुरु पूज्य हमारे। सबप्रकार तुम राम प्रणतपालक हितकारे॥ मैं बश मोह अबूझ मेटि प्रभुकै बरबानी। आयउँ सहित समाज इहां अति ढीठहि ठानी॥ सोकृपाल नहिं कोह तनक मनमें निज कीन्हा। साधुसभा महँ नाथ मोहिं आदर अति दीन्हा॥ राउरि रीति सु ऐसि बिदित जग वेद बखाने। को कृपालु बिनु आपु दास जियकी रुचिजाने॥ क्षमि सब गुनह हमार नाथ अब आयसु करहू। बहुत कहौं प्रभु काहस्वई शिर सादर धरहू॥ सवैया॥ प्रभु पंकज पायँन सौंह किये रुचि जागत सोवत की सुकहौं। फलचारि बिहाय सु छांड़ि छलै मनमें कछु काम न आनचहौं॥ बसुयाम सुस्वामि पदाब्जन की करि सेव सनेह म मग्नरहौं। भगवन्त जु आयसु नाथकरौ स्वइ सादर मैं निज शीशलहौं॥

दो० असकहि भरत सप्रेमउठि परेधाय प्रभुपाय।
समय सनेह अपारसो कहि न जाय सुखगाय॥

गीतिका छंद॥ श्रीराम सुनि शुचि भरत की बर बिनय सुख

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पूरणहियें। सनमानि प्रभु गहिपाणि ढिग बैठाय अति आदरलिये॥ रघुराज साधु समाजनृप मुनिराज लखि आनँदभिये। लागे सराहन भरत रघुबर भक्ति भल भायप प्रिये॥

राम भरतकै प्रीति निहारी। सुरपति डरि उचाट शिरडारी॥
भरत जनक मंत्री मुनिराजा। औरहु साधु सचेत समाजा॥
इनहि बिहाइ लागि सबकेरे। बिकल लोग सुरमाया प्रेरे॥
मन न शांति क्षण बनक्षण घरमा। रुचिन कहत कउ काहुहि मरमा॥
यकटक चितवहिं सब सुरत्राता। बारि बिलोचन पुलकित गाता॥
भरत प्रभाउ सकै को गाई। कहत शेष शारद सकुचाई॥

कवित्त॥ प्रीतिनय बिनय प्रतीति प्यारु भायपन पावत न पार शेष औरन कि गायना। जाकी बरभक्ति लवलेशहू बिलोकि आपु मगन बिदेह भयो प्रेमही समायना॥ भाग्यवंत गावत सुनत सत्यभाव जासु राम सीयपायँ रति काके सरसायना। कीन्ह्यो अनुमान तिहुँलोकनमें आनमन भयो है न होन कहुँ भारत सोभायना॥ तोटकछन्द॥गति देखि सुऐसि सबै जनकी। प्रभुजान सुजानि गये मनकी॥ शुभ धर्मधुरीन सुधीर ह्वदै। सतिसन्ध कृपाल सुशील सदै॥

दो० समय समान सुबानि मृदु सुनत श्रवण सुखदाय।
भरतहि निरखि सप्रेम तब बोले श्रीरघुराय॥
जानत तुम सबविधि अहो तात तरणि कुलरीति।
आपन मोर बिचारि भल काहु कहै जसनीति॥
तात भरत भूपति बिना बात हमारी भृष्ठ।
रही यथा प्रथमै रही केवल कृपा वशिष्ठ॥
नतरु प्रजा परिवार प्रिय मोहिं सहित पुरलोग।
सहत्यो विषम बिषाद सब लखि नृपमरण अयोग॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हम तुमरक्षक दिशिद्वऊ है प्रसाद गुरुदेव।
ताते निधरक हूजिये मानि तात मत येव॥
सवैया॥ भ्वहिं आयसु तात किये बनको दिय राजसमाज तुम्हैं
सुसबै। स्त्रइ कीजिय आजु हमौ तुमहूं हित मानिरहै कुलधर्म तबै॥
जग जीवनलाहु लह्यो भलसो करते पितुआयसु जो न दबै। ज्यहि
खण्डितहोइ न तातगिरा स्वइ तातकिये तब मोहिं फबै॥
सुनि प्रभुवचन नाइ पदमाथा। बोले भरत जोरि युगहाथा॥
उतरदेउँ प्रभु करौं ढिठाई। क्षमब जानि सेवक लघुभाई॥
पितु आयसु पालिय सुखमानी। परम धर्म यह वेद बखानी॥
पै पितुहोइ नारि बश जोई। सन्निपात अरु बातुल होई॥
सेवत मदहि कुपथ नितत्राले। ऐसे पितुकर वचन न पाले॥
समुझि उचित कीजै भगवाना। तुम सर्वज्ञ कृपाल सुजाना॥
भरतसुजान रामरुख जाना। मन्दाकिनी तीर प्रणठाना॥
दो० लैकर जल संकल्पपढ़ि जो नहिं फिरिहैं राम।
तौ तृणसम तनु आपनो देहौं तजि यहिठाम॥
तनमन अरपित भरत निहारी। तब सुरसरि तिय वेष सुधारी॥
चन्द्रबदनि शुभ पंकज नैनी। सकल सुभग तनु कोकिलबैनी॥
सन्मुख बैठि भरत सुखरूपा। लगीं देन उपदेश अनूपा॥
दो० हे रामानुज रामप्रिय हे सुबुद्धि बलबीर।
प्रणकीन्ह्यो अब तासुकर सुनु बिवेक मतिधीर॥
राम सच्चिदानन्द स्वरूपा। आदि नरादि अखिलसुरभूपा॥
ब्रह्मादिक ज्यहि पार न पावैं। नेति नेति निगमागम गावैं॥
ताहि न सुत भ्राताकरि मानौ। सर्वोपरि त्रिभुवनपति जानौ॥
विधि हरिहर कारणकर जोई। परब्रह्म परमात्मा सोई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

निज इच्छा भूतल तनुधारी। जनपालन खलगण अघहारी॥
चले बिपिन सुरकाज सुधारन। गोद्विज सन्त धरणि उद्धारन॥
दशमुख सुर नर मुनि दुखदाता। जात बधनहित त्यहि सुरत्राता॥
ताहि मारि प्रभु करि सब काजू। आय अवधपुर करिहहिं राजू॥
राज बैठि देहहिं सुख भूरी। त्रिभुवन रही सुयश भरि पूरी॥
ताते तात हठहि जनि करहू। उठहु राम आयसु शिर धरहू॥
दो० यहिविधि अमित प्रबोध करि भई अदृश तब गंग।
भरत हृदय सुनि शिख सुखद परमानन्द उमंग॥
चरण कमल रघुबीरके परे भरत तब धाय।
करजोरे बिनती करत प्रेम न हृदय समाय॥

भरत सवैया॥ जय प्रभु पालन देवधरा मुनि संतनके दुखवृन्द निवारन। शील समूह उजागर नागर आगर बुद्धि गुणाकर पारन॥ छोह सकोह न द्रोह जरा जग मंगल काज सुसाज सवांरन। राजिव लोचन राम कृपा भगवन्त करौ जनदीन उधारन॥ मैं सह दोष अदोष सदा प्रभु आपु उदार सुस्वामि अतूल्यो। देखि सुभाउ सुराउरको लखि आपनि ओर हिये शर हूल्यो॥ नाथ कृपा किय आपु यथा अब त्योंहिं हमेश रह्यो अनुकूल्यो। त्यों भगवन्त सुजानि हमें पदपङ्कज दास न सूरति भूल्यो॥
दो० अब कृपाल म्वहिं करि कृपा सो अवलम्बन देव।
अवधि अब्धि ज्यहिपार प्रभुपावों करि त्यहि सेव॥

मालिनीछन्द॥ दिनकर कुलकेतू सत्य संकल्प यस्या। सुजन मुद प्रदाता बिश्व आश्रै सुतस्या॥ अगम निगम बानी नेतियः नित्य गायो। भरतहि स्वइ स्वामी प्रेमसा अंकलायो॥ बहु बिधि करि बोधै पाँवरी पायँ दीन्हे। सुखयुत हरि भ्रातैं धारि माथै

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुलीन्हे ॥ सुखनिधि भगवन्तै देखि देवालि हर्षे । जयजय करि भूपै भूरि पुष्पानिवर्षे ॥ उपेन्द्रवज्राछन्द ॥ श्रिरामचन्द्रै पदपीठ पाई । मुदातिभर्तैं नहिंही समाई ॥ प्रजा निशानै जनु त्रात हेतू । किये द्विजामीक भवाब्धि सेतू ॥ सनेह बन्धू शुभ रत्न सोई । सुता सुसंपुट्ट खराउ देई ॥ सुभाय जीवै हित रक्ष कर्नैं । सुनाम रामादिय ढैक बर्नैं ॥ दिनेश कुल्धाम सुमध्य जाके । सुकर्म मै सोधन पूर्ण ताके ॥ कपाट दोऊ पदपीठ वेशू । दिये सुरक्षा हित राघवेशू ॥ श्रिराम सेवा मय धर्म जोई । युगाक्षताके पदपीठ दोई ॥

दो० चरणपीठ रघुबीरके पाय भरत सुखधाम ।
असं सुख मन मानहु भवन रहे लपण सिय राम ॥

सवैया ॥ सन्तोष अपार भयो भरतै दुख दोष सबै तनदूरिगयो ।
लखि सन्मुख स्वामि प्रसन्न हिये जनु गूँगहि बानि प्रसाद भयो ॥
करजोरि बिनय बहु भांतिन कै पुनि पङ्कज पाँयन शीश नयो ।
जगजीवन लाहु लह्यो भगवन्त भयो सुखज्यों प्रभुसाथ लयो ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहबर्मात्मज भगवन्तसिंहविरचिते भक्तिशिरोमणिग्रन्थेऽयोध्याकाण्डेभरतपुरगमनहेतुप्रभुआज्ञावर्णनोनामत्रिदशोऽध्यायः १३ ॥

दो० सीताराम कृपायतन सकल सुमंगल धाम ।
चरण कमल कर जोरिकै पुनि पुनि करौं प्रणाम ॥

तब कर जोरि भरत मृदुबानी । बोले प्रभु गुरु आयसु मानी ॥
तव अभिषेक हेत रघुनाथा । आन्यउ सकल सुतीरथ पाथा ॥
त्यहि कहँ जवन रजायसु होई । करौं नाथ मैं सादर सोई ॥
अवर एक अभिलाष विशेखी । चित्रकूट बन आवउँ देखी ॥
सुनि प्रभु कहा जाहु किनताता । आवहुदेखि बिपिन सुखदाता ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मुनि अत्रै आयसु जहँ होई। तीरथ जल थल राखेउ सोई॥
पाइ निदेश मुदित द्वउ बीरा। आये मुनि अत्री के तीरा॥
कीन प्रणाम चरण शिरनाई। मुनि बर आशिष दीनसुहाई॥
करि आदर समीप बैठाये। तब मुनि ते अस भरतसुनाये॥

भरत दोहा॥

सकल सुतीर्थन केर यह है अति पावन पाथ।
याहि राखिये कवन थल कहिये श्री मुनि नाथ॥

अत्रि दोहा॥

कामद गिरि पश्चिम निकट है अति सुन्दर कूप।
तामें यह तीरथ सलिल राखिय परम अनूप॥
मुनि समेत द्वउ बन्धु पुनि सुभग कूप तट जाय।
मुनि शासन सादर भरत कीन्ही स्वई उपाय॥
मुनि बहु महिमा कूपकी भरतहिं कह्यो सुनाय।
भरतकूप यहि आजु ते कहिहैं सब सुखदाय॥

सवैया॥ यह कूप अनूप पवित्र महा महिमा मुख क्यों कवि गाय कहै। यहि मज्जन प्रेम सनेम लिये सप्रयास बिना अघ पुञ्ज दहै॥ मन काय गिरा तन पावन है सब तीर्थनको फल त्यों सु लहै। भगवन्त कृपा सिय राघवकी यह कूप महा सुखरूप अहै॥
त्रोटक छंद॥ महिमा इमि कूप बखानतही। गय राजत राम कृपाल जही॥ प्रभु सों मुनि अत्रि सुनाय कहा। वहि तीरथ पुण्य प्रभाव महा॥

दो० भोर भये मंदाकिनिहि करि मज्जन द्वउ भाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रामचन्द्र गुरु अत्रि को सादर आयसु पाय॥
चले अटन रघुबर बिपिन युत समाज द्वउ भ्रात।
निरखि बिपिन शोभा अमित हृदय न हर्षसमात॥

चंचरीक॥ राजत बन अति बिशाल सोहहिं द्रुम सुखदशाल वेष्टित नव लता जाल मंजुल छबिछाई। बोलत खग सहित चाय डोलत शुभ त्रिविध वाय परसत सुखप्रद सदाय संचित दुखहाई॥ फूले शुभ कमलताल गुञ्जत बहु भ्रमरमाल पीवत रस बस निहाल संकुल सुख छाके। बिहरत मृगगण स्वछन्द नाचत कल केकि वृंद उमगत अतिशय अनंद निरखत सुखमाके॥ मंदाकिनि सरित पास कीन्हें मुनिजन निवास संतत जहँ सब सुपास सुमिरत रघु-बीरै। कामदगिरि बर बिशाल देखत दुख दहत जाल राजत जहँ नित कृपाल भंजन भव भीरै॥ शारद शिव निगम शेष संतत मिलि करहिं लेख पावहिं नहिं लिखि अशेष कानन प्रभुताई। सानुज जहँ सीयराम राजत सुख सुछबि धाम सुमिरत भगवन्त नाम कीरति कल गाई॥ कुण्डलिया॥ भरत पांच दिन माहिं सब देखे बिपिन मँझाय। ज्येठ कृष्ण त्रैदशि दिवस बोले प्रभु-सन जाय॥ बोले प्रभुसन जाय देहु अब मोहिं रजाई। सेवहुँ अवधहिजाइ अवधिभरि श्रीरघुराई॥ श्रीरघुबीरकृपाल हृदै जन दोष न धारत। भरतहि लीन लगाय धायउर प्रेम सँभारत॥ राम वचन त्रोटकछंद॥ सुनि तातहृदै मम बातधरौ। कछु राजस धर्म बखानकरौं॥ कबहूं नहिं झूठ बखानकरै। बरु संकट कोटिक आनि परै॥ निज मंत्रिहि राखय मूढ़नहीं। दैकै पुनि फेरि नले कबहीं॥ अनजान कि वस्तु न भोगकरै। सब सों हितमान न बैरधरै॥ दुख देइ न मित्रहि आपु निजै। कबहूं नहिं भूलि सताव द्विजै॥ रिपु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

र्मी बिसवास करै न कबौ । मदमांस कुभोग बिहाइ सबौ ॥ नहिं काहुहिं देइ वृथाहि सजा । समपुत्र नितै प्रतिपाल प्रजा ॥ परनारि बिलोकय मातुसमा । परद्रव्य मनो विषपुंज जमा ॥ नहिं मोह न द्रोह न कोहहिये । मनखैंचिरहै हरिओरदिये ॥ सतसंगतिकै उरभक्ति धरै । भगवंत सो भक्त विचारकरै ॥ हरि कीरति कान सुनै नितही । कुल पूजनपाठ सुदै चितही ॥ रिपु सों रणरोर जु आनिपरै । नहिं गुप्त सुमंत्र प्रसिद्धकरै ॥ कवि कोविद सज्जन मान सभू । कटुबैन कहै मुखसों न कभू ॥ जप संयम ध्यान सुवर्त करैं । श्रद्धानिज मार्फिक धर्मसरै ॥ नृप चातुर जौन चलै यगती । त्यहि लाग कबौ नहिं दोष रती ॥

दो० यहि बिधि रघुपति भरतकहँ करिप्रबोध समुझाय ।
कहेउ मानिमम बचनअब सेवहु अवधहि जाय ॥

सुनि रघुबीर बचन अभिरामा । पुनिपुनि भरत कीनपरणामा ॥
भरतहि राम लीन उर लाई । प्रेम पयोधि मग्न द्वउभाई ॥
बारहिबार भेंटि धरि धीरा । पुनि रिपुहनहि मिले रघुबीरा ॥
लषण भरत रिपुहन तिहुँभाई । भेंटे परम सनेह बढ़ाई ॥
जननिन सकल भेंटि रघुनाथा । जाइ जनक पद नायउमाथा ॥
करि बहु विनय चरण शिरनाई । गुरु पद पद्म परे द्वउभाई ॥
पाइ अशीश मुदित रघुनायक । मिलेसबहिजोजनज्यहिलायक ॥
सानुज भरत सु मुनिगण बन्दे । शुभआशिषलहि परमअनन्दे ॥
पुनि सिय चरण धूरिधरि शीशा । चले मुदितमन पाइअशीशा ॥
पुनि सिय सासुन सकलजुहारी । लहि अशीश मन भईसुखारी ॥

दो० यहि बिधि सबहिन भेंटिमिलि रामरजायसु पाय ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कीन गवन अवधहि भवन रामचरण चितलाय ॥
सबहि पठै रघुबीर पुनि कीन्हे बिदा निषाद।
अनुज जानकी सहितथल फिरे सहर्ष बिषाद ॥

कवित्त ॥ सानुज ससीयराम सुखमै सपूर्णकाम बैठिकै सुपर्ण धाम भंजन सकोचनै। प्रिया परिवारके वियोगहि सँभारि उर रहे बिलखाय सो सुभायवश शोचनै ॥ कायमन बचन प्रतीति प्रीति प्रेमचारु श्रीमुख सुगाय बारबार कंज लोचनै। भाग्यवंत भारत सुभायको सुभाव शील गुनतसप्रेम भवफंदन विमोचनै ॥

दो० सुरन देखि रघुबीर को शील सनेह सुभाव।
जयजयकरि बरषहिंसुमन बिगत शोचमनचाव ॥

इतै भरत सब संग सहाये। चौथे दिन कौशलपुर आये ॥
जनक चारि दिनकरि तहँबासा। सबबिधि सबहि बसाइसुपासा ॥
कीनगवन निज पुर महिपाला। उर धरि सिय रघुबीर कृपाला ॥
रामचंद्र सिय दर्शन लागी। अवधलोग सबअतिअनुरागी ॥
लगे करन जप तप ब्रत दाना। ज्यहिबिधिमिलहिंरामभगवाना॥
भरत कह्यो रिपुहनहिं बुलाई। करेहुसकल जननिन सेवकाई ॥
आपु मातु गुरु आयसु पाई। नन्दिग्राम रहे तब आई ॥
करि मुनिवेष बिषय सुख त्यागी। लगेकरन तप कठिन सुभागी ॥
सिंहासन पदपीठ पधारी। मन बच क्रम सेवा अनुसारी ॥

सवैया ॥ सुरराज सिहातहैं औध कि राज धनै सुनिकै धनराज लजे। अस बैभव पुंज सुप्राप्ति जहाँ बिधि आपु सबै सुख आनि सजे ॥ पुर तासु बसैं इमिभर्त यथा तजि भृंग सु चम्पक बागमजे।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बच मानस कर्म सुभूषण भोग सबै मन सों तृण तूरितजे॥ रघुबीर के बंधु सुप्राण प्रिया पुनि भक्तशिरोमणि वेदबकै। गुणमंदिर सुन्दर ज्ञानमई यशगावत शारद शेषथकै॥ भगवन्त सदा प्रभु सन्मुख जे दिशितारज भूलि कबौंनतकै। सिय रामसनेह पयोनिधि भर्त बिषै तिनको करि काहसकै॥

दो० भरत कथा अकथा अमित मुनिन मथा नहिं पार।
तदपि यथा बुधि मैं तथा बरण्यो ग्रंथ मँझार॥
जे गावहिं यह प्रेम युत भरत चरित सुख रूप।
राम कृपा भगवन्त पुनि ते न परहिं भवकूप॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहाविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे अयोध्याकाण्डेभरतचरितवर्णनोनामचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

इतिअयोध्याकाण्डसमाप्तम्॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भक्तिशिरोमणि आरण्यकाण्ड।

कवित्त॥

धर्म्म द्रुममूल भव शूल के हरणहार लीन्हे हैं त्रिशूल पाणि शत्रु दल दालिया। लोचन त्रिलाल भाल धारे शशि कण्ठ काल-कूट ग्रीव मुण्डमाल शीश गंग कालिया॥ रीझत सुभाय फल फूलही को पाय दान देत ना अघाय भव भूतराय जालिया। भाग्यवन्त दासनके त्रासन हरणहार ह्वै सो उदार नौमि शंकर कपालिया॥ सवैया॥ श्यामल गौर मनोहर मंजुल आनँद कंद सुपूरण कामैं। पङ्कज नैन झुकी भृकुटी शिर जूट जटास्य प्रभा सुख धामैं॥ पाणि शरासन बाण कसे कटितूण लसैं बन मारग तामैं। कै पुटपाणि प्रणाम करौं भगवन्त सदा सिय लक्ष्मण रामैं॥

दो॰ श्रीगुरुचरण प्रणाम करि सिय रघुबीर मनाय।
जरा मरण भवभय हरणि कहौं कथा शुभगाय॥
सुनहु शिवा सुन्दर कछुक बरण्यो भरत चरित्र।
अब पुनि श्रीरघुबीरको बरणौं चरित बिचित्र॥
रुद्रवर्ष अरु रुद्रही मास और दिन बीश।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चित्रकूट सुख जूट इति बास कीन जगदीश॥
एकबार रघुबीरको लक्ष्मण आयसु पाय।
सुरभित सुमन सुबीनि बहु लाये बनते जाय॥
तिन्हके भूषण बिबिध बिधि निजकर राम बनाय।
पहिराये श्रीजानकिहि शोभा बरणि न जाय॥
तैस्यहि निजकर जानकी रचि भूषण बहु भांति।
पहिराये श्रीराम तन बरणि न सो छबि जाति॥
फटिकशिला सुन्दर परम दायक मन अभिराम।
बैठे प्रभु सीता सहित लाजहिं लखि रतिकाम॥
शीतल मंद सुगंध बर डोलत त्रिबिध सुबाउ।
चहुँ दिशि सुन्दर द्रुमनपर रहे बिहँग करि चाउ॥
इन्द्र सुवन लखि मोहबश भरम्यो दुखद अभाग।
समुझि मनुज देखन चह्यो प्रभुबल ह्वैके काग॥
सिय पद चोंच प्रहार करि चल्यो भागि मतिमंद।
निरखि रुधिर शर सुमन सजि मास्यो रघुकुल चंद॥

कुण्डलिया॥ मास्यो प्रभु शर कोपिके चल्यो भागि बशत्रास। भ्रमि आयो सब लोक त्यहि बाण न छोड़्यो पास॥ बाण न छोड़्यो पास रहन काहुइ नहिं दीन्ह्यो। व्याकुल भय दुख दीन मिल्यो नारद सिख लीन्ह्यो॥ नारद सिख लहि जाइ राम पहँ त्राहि पुकास्यो। त्याग्यो करि यक नैन कृपाकरि ताहि न मास्यो॥

सवैया॥ बश मोहकियो खल द्रोहमहा करिबो बध तासु उचित्त रहे। प्रभु छाँड़िदियो करि भूरि कृपा न रह्यो अपराध सुयोग्यस है॥ भगवन्तकहौ तिहुँलोक बियो रघुबीरसों कौन कृपालुअहै। असजानि स्वभाव कृपामयसो शरणागत राम कि क्योंनगहै॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राग बसन्त॥ यहिभाँति रामबसि चित्रकूट। किय चरित चारु श्रुति सुखद जूट॥ अनुमान पुनि मनकीन राम। बनिभीर रहिहैं विदित धाम॥ तत्र बिदामाँगि सब मुनिनतेसु। किय मुदित गवन रविकुलदिनेसु॥

दो॰ मुनी अत्रिआश्रम जहाँ तहँ आये श्रीराम।
सीता अनुजसमेत प्रभु कीन्हे दण्डप्रणाम॥
मुनिवर धाय उठाय तब लीन्हे हृदयलगाय।
निरखि राममुख चन्द्रछबि मनबांछित फलपाय॥
आसनवर बैठारि तब करि पूजन सनमानि।
कन्दमूलफल अशनहित दिये रामकहँ आनि॥
नखशिखछबि रघुवीरकै निरखि सुमुनि सुखमानि।
लगे करन अस्तुति मुदित जोरि जलज युगपानि॥

हरिगीतिका छन्द॥ जय रामनौमिकृपाल कोशलपाल त्रिभुवननायकं। सुखधाम अति अभिराम पूरणकाम जनमन भायकं॥ नवनील नीरज चारु लोचन शीलसिन्धु उजागरं। आजान भुज परिपूर्ण विक्रम अमित वैभव नागरं॥ धृत रुचिर शायक चाप तरकस बैरि दलबल गंजनं। निःकाम श्यामस्वरूप सुन्दर भक्तवत्सल रंजनं॥ब्रह्मादि सुरपद कमलसेवित असमशर अरि वन्दितं। अति शुद्ध विग्रह बोधमय मुनि सन्तसज्जनरंजितं॥ तव चरण पंकज मूल जेनर भजत तजि मदकामही। भवसिन्धु घोर पतंति ते नहिं देत प्रभु निजधामही॥ तुम एक अद्भुत अमित ईश्वर जगतगुरु जनपालनं। भवसिन्धु दुर्गम मथन मन्दर प्रबल खलदल दालनं॥ रवि बंश हंस प्रशंस रघुपति भूमिजापति पावनं। शिवचाप खण्डि अखण्ड कीरति लोकतीनि सुछावनं॥ भगवन्त सानुज शक्तिसह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नित नौमि करुणा कीजिये। निजभक्ति भक्तन सुखद रघुपति जानि जन म्वहिं दीजिये ॥

दो० सुनि मुनिविनय सप्रेम तब हरषे मन अति राम।
अनसूयाके चरण पुनि कीन्ही सीय प्रणाम ॥

मिलिसप्रेम सीतहि मुनिनारी। आशिरवाद दीन सुखकारी ॥
अति आदर समीप बैठारी। भूषण वसन अनूप निकारी ॥
जे नित नवल रहत छविधामा। पहिराये सीतहि मुनिवामा ॥
पुनि सप्रेम ऋषिनारि पुनीता। बोली सुनु स्वामिनि जगसीता ॥
कहौं कछुक तिय धर्म सुहावा। निगमागम पुराण जसगावा ॥
नारि देव केवल पतिमानै। पतितजि स्वपनेहु अपरनजानै ॥
जननी जनक बन्धुहित जेते। अल्प सुखहि दायक सब तेते ॥
पंच वर्षलौं जननी सेवै। लालन पालन करि सुखदेवै ॥
पिता बरष दशलौं जसचाही। भोजन बसन देतहै वाही ॥
पुनि बिवाहि दायजु कछुदेई। करि त्यहि विदासु फुरसतिलेई ॥
पर्ब त्योहार भ्रात तहँ जावै। किंचित धनदै फिरि पुनिआवै ॥
जन्मप्रयन्त सकल सुखताही। देत नाह मोसिर जसजाही ॥
ताते अधम नारि है सोई। मनवचक्रम पति सेव न जोई ॥

कुंडलिया ॥ पावै पतिकरि नारिजो अंध बधिर अति दीन। वृद्ध रोगवश जड़अधन क्रोधी निपट मलीन ॥ क्रोधी निपट मलीन सहैदुख ताकेसाथा। तदपि न हेरै भूलि नारि दिशि और न नाथा ॥ नाथहिं जो असपाइ तासु अपमान करावै। नानाबिधि सो जाय सदन यमके दुखपावै ॥

दो० चारिभांति जग पतिब्रता बरणत नारी बेद।
उत्तम मध्यम नीच लघु कहौं सबन के भेद ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सवैया ॥ न.हहि रङ्ग रँगी. जु रहै बच मानस कर्म्म भजै पति जोई। औरन ओर न भूलितकै बिभु प्रापति शक्रसमान जु होई॥ स्वप्नेहु जानन सो मनमें जगतीतल पूरुष आनहु कोई। यों भगवन्त गहै दृढ़धर्म पतिव्रत नारि है उत्तमसोई॥ आपन स्वामि गनै करि स्वामि बिचारत यों परकन्त निहारी। वृद्धहि तात युवा सम भ्रात सुवैलघु पेखत पुत्र बिचारी॥ और कुभाव हिये न धरै पति सेवकरै निज धर्म सँभारी। यों भगवन्त सुरीति जिन्हैं नित भाषत सो श्रुति मध्यम नारी॥ परपूरुष सुंदर देखतही ह्रयजात सकाम है बामज्वई। निज धर्म्म कि हानि बिचारि हिये कुलकी मरयाद सुजानि स्वई॥ रहती बचि है परपी रतिते करती अपराध न और कई। भगवन्त बखानत बेदरहे यहिरीति जु नारि निकृष्ट स्वई॥ देखि जिन्हैं परनाहन को चित चौगुन चाहभई रतिठानै। पै न मिल्यो त्यहि औसर शून्य सुत्रास कछू गुरु लोगन मानै॥ कारण याहि करै व्यभिचार न राखत पै मन कामकलानै। सोइहै नीच महाधम नारि सुलक्षण ये श्रुति शास्त्र बखानै॥

दो० निजपति सों छल ठानि कै परपति में रतजौन।
रौरव नरक सुकल्पशत परै नारि ध्रुव तौन॥
पतिव्रत धर्म जु छांड़िछल गहै नारि दृढ़ जोइ।
बिनुश्रम पावै परमपद कहत बेद बुधलोइ॥
तुमहिं प्राणसम प्रियसतत सुनु सीता भगवान।
जग उपदेशन हेतु यह कीन्ह्यों कथा बखान॥
अनसूया के बचन सुनि जनकसुता सुखपाय।
बारहिंबार प्रणाम किय चरणकमल शिरनाय॥

छप्पै॥ तब मुनिते प्रभु कह्यो नाथ अब आयसु देहू। जाउँ अ-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

परखन देव तजब जन जानि न नेहू ॥ सुनि बोले ऋषिराज राम अस काहुन कहहू । तुम सरवज्ञ सुजान सर्वगति जानत अहहू ॥ प्रभु कृपासिंधु सज्जन सुखद सेवत सब सुख पाइये । सुखधाम राम क्यहिभांति में कहउँ स्वामि बन जाइये ॥ सोरठा॥बारबार शिरनाय करि प्रणाम मुनि पद कमल । सीय सहित दउभाय चले बिपिन भंजन बिपति ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे आरण्यकाण्डे जयंतनेत्रभंगप्रभुअत्रिमुनिसमागमअनसूयापातिव्रतधर्म वर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दो० श्रीरघुपति पद पद्मको पुनि पुनि करौं प्रणाम ।
जिनकी कृपा कटाक्षते सिद्धि होत सब काम ॥

सीता लषण सहित रघुराई । चलेविपिन मुनि आयसु पाई ॥
सुन्दर श्याम गौर सुखधामा । निरखि होहिं परिपूरण कामा ॥
रामहिं चलत कठिन मग देखी । भइ कोमलमहि आपु बिशेखी ॥
गिरि कानन मग देहिं सुहाये । रहहिं मेघ छाया नभ छाये ॥
यहि बिधि राम जाहिं सुख पागे । मिलाबिराध असुर यक आगे ॥
अतिबिशालतनु बरणि न जाई । प्रभुहि बिलोकि चला सोधाई ॥
अतिरिस लाग कहन कटु बैना । तब मारचो प्रभु सुनि शरपैना ॥

दो० लागत शरतनु तजि भयो दिव्यरूप ततकाल ।
देखि दुखी निज धाम त्यहि दीन्ह्यो राम कृपाल ॥

छंदतोटक ॥ पुनि सानुज रामसियाहि लये । शरभंग ऋष्याश्रम जात भये ॥ लखि रामप्रभा मुनि मोद भरे । कर जोरि बिनै बहु भाँति करे ॥ तुम नाथ अनाथन नाथहितै । किये भूरि कृपादृग कोर चितै ॥ अब जाहु न आन कहूँ तबलौं । तनु त्यागि तुम्हें न मिलौं जबलौं ॥ जप योग मखादिक जौन किये । प्रभुको दयभक्ति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बरे सु लिये ॥ इमि जोरि चिता चित प्रेम भिये। सिय लक्ष्मण राम सुधारि हिये ॥ तनु जारत योग सु अग्नि भयो। सिय राम कृपा करि धामदयो ॥ सवैया ॥ शरभंगहिं रामदियो निजधाम बिलोकि सबै मुनि मोदभरे। बहु भाँति प्रशंसि सुनाय बिनै त्रयरूप अनूप हृदय सुधरे ॥ सुर सानँद व्योम विमान चढ़े जय जयति पुकारत फूलझरे। भगवन्त कृपा सियराम सबै मगबासिनके सबकाजसरे॥

पुनि आगे गवने सुखकन्दा। मिलहिं अनेक मुनिनके वृन्दा॥
भेंटि भेंटि सबही सुख देता। जाहिं चले प्रभु कृपानिकेता॥
अस्थिअमितलखिबिपिनकृपाला। बूझे मुनिन कहेतिन हाला॥
नाथ निशाचर अति दुखदाई। लीन्हे बिपुल मुनिन कहँखाई॥
सुनि है दुखित राम प्रणकीना। करिहौं धरणि निशाचर हीना॥
सुनि प्रण भये मुदित बनबासी। चले राम सुखधाम निवासी॥
रहे जहां जहँ मुनि सु प्रवीना। तहँतहँ जाइ सबन सुख दीना॥

दो० मुनि अगस्त्यकर शिष्यबर नाम सुतीक्षण जाम।
कर्म बचन मन रामरति प्रभु आवत सुनि कान॥

छंद हरिगीतिका॥ धायो मनोरथ करत बहु बिधि सपदि सुख पूरण हियो। अवलोकिहौं इन जाय नैनन रूप ज्यहि सम नहिं बियो॥ अति पुलक निर्भर प्रेम तन मन सुरति सब बिसराइकै। फिरि जात पाछे कबहुँ आगे करत नृति गुण गाइकै॥ अवलोकि प्रभु अति प्रीति मुनि उर प्रगट निजरूपहि किये। ज्यहि पाय मुनि है सुथिर मग महँ बैठ मन मूरति दिये॥ छंदनाराच॥ तबै श्रिराम धायकै मुनीश पासको गये। थके जगाय जाग सो न चित्त ध्यानमों दये॥ लिये दुराय राम सो स्वरूप भूपको तबै। दिये दिखाय चौभुजी स्वमूर्ति हीय मैं जबै॥ लख्यो मुनीश हीय मैं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जबै न राम रूपस्वै। उठ्यो बिकल्ल बेगि ज्यों फणीश मन्त्रि जायख्वै॥ बिलोकि ठाढ़ि अग्र रामचंद्र सीय लच्छमणै। भयो प्रमोद पुञ्ज तौ प्रगट्टही सुतीक्षणै॥ कियो प्रणाम धाय तौ श्रिराम हीय लायऊ। सप्रेम भेंटि बारबार मोद पुञ्ज छायऊ॥ चतुरंसाछंद॥ तब मुनि नाथा। करिपुट हाथा॥ बिनय सुनाई। प्रभुहिं लिवाई॥ निजथल आये। अरचि सुभाये॥ प्रभु छबि देखी। हरषि विशेखी॥ करन सुलागे। बिनय सुभागे॥

दो॰ जै रघुबर जै जानकी जै लच्छमण सुखधाम।
जै प्रभु त्रिभुवन पति सुखद प्रणतपाल शुभनाम॥

रोला छंद॥ नौमि राम सुखधाम तामरस श्यामशरीरं। नौमि मुकुट शिर केश वेश परिधन मुनि चीरं॥ नौमि चाप शर पाणि लसत कटि तट तूणीरं। नौमि सदा सर्वज्ञ शमन संसृत रणधीरं॥ नौमि गहन घन मोह दहन बर बृहद करालं। नौमि सुखद सुर संत प्रणत प्रतिपाल कृपालं॥ नौमि रजनिचर बृन्द करिन दालन मृगराजं। नौमि सदा जन त्रातु शमन भव भय खगबाजं॥ नौमि अरुण जलजाक्ष सुभग संताप विनाशं। नौमि भुजाक्ष चकोर सुखद विधु बदन प्रकाशं॥ नौमि ईश काशीश मानसर हीयमरालं। नौमि सुबाहु ससेन दलन उर बाहु बिशालं॥ नौमि सकल संशयक सर्प ग्रासक उरगादं। नौमि कुतर्क कुपीर शमन उर बिषम बिषादं॥ नौमि हरण महिभार शरण प्रतिपालक रामं। नौमि सदा मम त्रातु कृपा पूरण सुखधामं॥ नौमि सगुण गुण रहित बिषम सम रूप अनूपं। नौमि गिरा गुणज्ञानपरेपरमात्मा रूपं॥ नौमि अखिल अनवद्य अनघ अल्ल अमल अपारं। नौमि राम राजेन्द्र शमन कलिकलुष बिकारं॥ नौमि भक्तप्रद भव्य कल्पतरु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तारणनामं। नौमि क्रोध मद लोभ हरण मोहादि सकामं॥ नौमि निरंतर नित्य निरत नयनागर रामं। नौमि भानुकुल केतु सेतु भवनिधि छवि धामं॥ नौमि अतुल भुज तेज बिपुल बलधाम अजीतं। नौमि अनाथन नाथ सुयश श्रुति गाव पुनीतं॥ नौमि धर्म बरबर्म सुखद गुणग्राम अपारं। नौमि नौमि मम त्रातु सदा सिय राम उदारं॥ कबित्त॥ बिस्तृत प्रताप पुंज पावन त्रिलोक यश कीरति उदार कलगाय सुख भीजिये। दीनबन्धु साहेब समर्थ चित्त कारुणीक कृपया कटाक्षकै सुदास दुःख छीजिये॥ बीरद गँभीर भवभीरको हरणहार कौशल कुमार सो सँभार चित्त कीजिये। भाग्यबन्त जानि जन जानकीश जानमणि भावनी सुभव मोहिं भक्ति निज दीजिये॥

दो० औरहु यक प्रभु करि कृपा पूरण कीजै आस।
सिय समेत दउ बन्धु मम हृदय करहु नितबास॥

सुनि मुनि बिनय राम सुख पाई। एवमस्तु कहि पद शिरनाई॥
मुनि समेत पुनि चले सुभाये। कुम्भजऋषि आश्रम जहँआये॥
जाय सुतीक्षण गुरु पहँ आगे। करि प्रणाम बोले अनुरागे॥

सवैया॥ नाथ जिनहिं नित ध्यावतहौ निशिबासर सादर ध्यानहि लाये। जासु प्रभाव प्रसिद्ध महा यश पावन बेद पुराणन गाये॥ सानुज सीय समेत जिन्हैं भगवन्त हृदय निज शंभु बसाये। कोशलराज कुमार स्वई मुनिराज मिलै हित राउर आये॥ छप्पै॥ सुनत सुतीक्षण बैन हरषि कुम्भज उठिधाये। निरखि राम छबिधाम जलज लोचन जल छाये॥ सीता अनुज समेत परे प्रभु चरणन्ह जाई। अति सप्रेम ऋषिराज लिये गहि हृदय लगाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुनि पूँछि कुशल सादर प्रभुहि आसन बर बैठायकै। करि बि-
बिध भांति पूजन ऋषय मुदित जन्म फल पायकै॥
तब प्रभु कह्यो सुनहु मुनिराया। देहु सोमन्त्र हमहिं करि दाया॥
हतौं जाहि सुर मुनि दुखदाता। सुनि मुसकाय कह्यो मुनिबाता॥
तुम समर्थ सर्वज्ञ कृपाला। जानतहौ सबही कर हाला॥
मैं तव चरण कमल अनुगामी। देउँ कवन मत तुम कहँ स्वामी॥
जानि दास निज मान बढ़ावा। प्रणतपाल यश बेदन गावा॥
भक्ति आपनी सब सुखदायक। देहु कृपा करि म्वहिं रघुनायक॥
सो स्थान कहौं अब गाई। सीता सहित बसौ जहँ जाई॥
गोदावरी निकट अति पावन। पंचबटी आश्रम मन भावन॥
तहँ बसि राम सबहिं सुख भेंटौ। करिबन स्वच्छ शापपुनि मेटौ॥

कुण्डलिया॥ दण्डक नृप यकबार तहँ शुक्रसुता सन आय।
बरबस कीन्ह्यो भोग मुनि दीन्ह्यो शाप रिसाय॥ दीन्ह्यो शाप
रिसाय नृपहि तव राज्य समेता। सात दिवस के माहिं दहै यह
कानन जेता॥ जेता बन भयो भस्म हरहु स्वइ शाप अखण्डक।
राम बसहु तहँ जाय करहु पावन बन दण्डक॥

सुनि अगस्त्य आयसु शिरनाई। चले ससीय मुदित दोउ भाई॥
आगे मिल्यउ गीधपति जाई। बहुबिधि तिनसन प्रीति बढ़ाई॥
गोदावरी दीख प्रभु जाई। पंचबटी सुन्दर सुखदाई॥
तहँ रचि पर्णकुटी अभिरामा। कीन निवास लषण सियरामा॥
राम लषण सिय पद परिपावन। मिटी शाप बन भयो सुहावन॥
मुनि तापस सुर सिद्ध उदासी। भये सुखी सब कै भय नासी॥
खग मृग रहहिं सकल सुख पूरे। बिगत बैर बिचरहिं बनरूरे॥
बनसुखमा अति बरणि न जाई। जहँ सिय राम लषण रहे आई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सवैया ॥ आय रहे जबते द्वउ भाय भयो तबते बन मंगल दा-
यक। पुंज प्रमोद छयो सब ठौर करैं धुनि कोकिल कीर सुहायक॥
नेकु नहीं मन त्रासक्यहूँ सब नाश भये खल वृन्द सतायक। क्यों
भगवन्त कहौं छबि गाय न लोक तिहूँ उपमा त्यहि लायक॥

दो॰ जग पालन घालन असुर रघुलालन छबि ऐन।
आय रहे भगवन्त जहँ को छबि बरणै बैन॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेआर
ण्यकाण्डेविराधवधशरभंगकथाअगस्त्यसमागमप्रभुपंचवटीबास
वर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

दो॰ रंजन सुरसज्जन सुखद भवभंजन महिभार।
भाग्यवन्त सिय रामपद बन्दौं सब सुखसार॥

सवैया ॥ पंचबटी गुणग्रामजटी सुखपुंजपटी परि दुःखलुटी है।
शुभ्रछटी बरमुक्तिनटी नित नृत्यठटी नवशोभजुटी है॥ पापघटी
परितापहटी भवदापकटी लखि लाहुलुटी है। भागपुटी भगवन्त
छुटी लखि पञ्चबटी प्रभु पर्णकुटी है॥ कबित्त ॥ कैधौं ज्ञानभक्ति औ
विराग बपु धारे आपु कैधौं विधिभारती ससुत आपु राजते। कैधौं
त्रिपुरारि संग गिरिजा गणेशधारि कैधौं ऋतुनाथ युत रतिमैन
भ्राजते॥ कैधौं परमार्थ अरु योगयुत प्रीतिआपु कैधौं वीर शान्त
औ शृँगार सुखसाजते। भाग्यवन्त कैधौं कूर्म शेष सुरधेनु आपु
कैधौं सहसीय राम लच्मण विराजते॥

दो॰ एकबार श्रीरामपद लषणलाल शिरनाय।
अतिसप्रेम करजोरिकै बोले बचन सुभाय॥
हे समर्थ सरवज्ञ प्रभु कृपासिन्धु गुणखानि।
मैं पूंछौं कछु आपुसों कहिये निजजन जानि॥

गीतिका छन्द॥ क्यहि कहत ज्ञान विराग काको कौन माया गा-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इये। का भेद ईश्वर जीवसों सद्ग्रन्थ वेद बताइये॥ है भक्ति कौन अनूप जाकहँ करत तवपद पाइये। ज्यहिजाय संशय सुनत मोकहँ नाथकहि समुझाइये॥ त्रोटकछन्द॥ कहिये सुनु तातहै ज्ञान वही। जहँ एकहु बातको माननही॥ समदृष्टि चराचर माहिं करै। यक ब्रह्ममयी सब देखिपरै॥ त्रिभंगी छन्द॥ सुनु तातसुभागी अति अनुरागी परमविरागी ताहि कही। जो तृणसम तीनों गुणतजि दीनो सिद्धिन कीनो चाहनही॥ पुनि मैं अरु मोरा तैं अरु तोरा जहँलगि जोरा नातजितो। गो गोचर द्वारे मनसि विचारे जहँलगि पारै देखि तितो॥ माया सबजानौ मन अनुमानौ अपर बखानौ भेदतदा। प्रथमें यक विद्या द्वितिय अविद्या परम निषिद्या वेदवदा॥ जाके वश परिकै हरिहि बिसरिकै कुकरम करिकै होत दुखी। विद्या भलिभावै जो जगजावै हरिहि मिलावै जीवसुखी॥ पुनि ईश्वर सोई समरथ जोई सबपर होई स्वामिज्वई। माया अरु ईशै आपु अनीशै रूप न दीसै जीवस्वई॥ पुनि भक्तिहमारी परमपियारी जन हितकारी तात सुनो। निज तंत्र सदासो सब सुखदासो करत प्रकासो ज्ञानगुनो॥ सो मिलत न तौलौं द्रवत न जौलौं सन्त अतौलौं ज्ञानमई। त्यहिकरन उपाई कहउ सुभाई सुनु चितलाई कान दई॥ प्रथमै द्विजपाँयन प्रीति सुहायन करै सदायन भायसती। त्यहिकर फललागे विषय विरागे भव निशिजागे शुद्धमती॥ तव त्यहि ममचरणन सब दुखहरणन उपज अवरनन प्रीतिनई। श्रवणादिक नवधा भक्तिके पवधा तव सुख सवधा करनठई॥ सुन्दर ममलीला सुनि सुखशीला ह्वै गिलगीला प्रेमपगें। गुणग्राम हमारे गुणहि सँभारे ते अतिप्यारे मोहिंलगें॥

दो॰ कर्मवचन मन छांड़िछल सेवै सन्तसुजान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सत्यकहौं त्वहि तातते प्रिय म्वहिं प्राणसमान॥

संत महातम अमित अनूपा। कहिन सकैं शारद अहिभूपा॥
जिनके दरश किये अघमूला। होयँ शमन जिमि पावक तूला॥
पूरुब पुण्यभाग जब जागै। तब मन संत चरण महँलागै॥
करै सदा जो संतन सेवा। ताके वश संतत सब देवा॥
धन्य संत जे तजि सबकामा। रटहिं नाम सहरति बसुयामा॥
ईश्वररूप तिनहिं करिजानौ। तिनके चरण सदा उर आनौ॥

हरि गीतिका छंद॥ तजि कामजे बसुयाम ध्यावहिं नाम पावन मन किये। ते धन्य संतत संत ईश्वर देहधरि आपुहि लिये॥ सब जक्क पावन करण कारण नित्यते भूमें अटैं। भगवन्त जनके मेटि संकट ठाट ते सुखकी ठटैं॥

दो० सन्त बचन रबिकर सरिस जाके हृदय प्रकाश।
मोह अबिद्या घोरतम करत सो बेगि बिनाश॥

सवैया॥ सन्तन के गुणग्राम अनन्त न पावत अन्त अनन्त बखानत। औगुण औरनके न गनैं गुण तासु सप्रेम सदै उर आनत॥ जोपिकरै अपकार कऊ उपकारहि तासु हिये करि मानत। याबिधि सन्तनको भगवन्त सदा श्रुति ब्रह्म समानहि भानत॥

दो० धन्य सन्त निर हेत जे करैं अपरको काज।
ज्यों कपास दुख भूरि सहि राखत औरन लाज॥

संत चरण रज जो शिरलावै। उपजै ज्ञान भक्ति ममपावै॥
जप तप तीरथ धर्म अचारू। योग यज्ञ ब्रत नेम बिचारू॥
वेद पुराण पढ़ै बहुभांती। कथै ज्ञान चाहै दिन राती॥
संत चरण बिनु किये सनेहू। बादितात सर्वस सुतु येहू॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कीन्हें बिनु संतन पद नाता। पाव न भक्ति मोरि सुनु ताता॥
संतन बिबश सदा में कैसे। हाथ ख्यलार चंग रहै जैसे॥
संत बचन जो मानै सांचा। ताको सुयश लोक तिहुं मांचा॥
पापरूप प्राणी किन होई। संत संग पावै गति सोई॥
अस प्रभाव संतन कर भाई। शेष गणेश सकैं नहिं गाई॥
सकृत प्रणाम किये जिन केरे। पाप ताप नहिं आवत नेरे॥
जिनहिं संत पद प्रेम अभंगा। होहिं सकल तिन्ह के दुख भंगा॥
प्राण समान संत म्वहिं प्यारे। होत नहीं क्षण एकहु न्यारे॥
यथा कलेवर संग सदाहीं। रहत बास कीन्हें परिछाहीं॥
जिमि सनेह पय मांझ निवासा। भानु किरण महँ यथा प्रकासा॥
वेतस मध्य यथा द्विजराजा। आखर में जिमि अर्थ बिराजा॥
तिमि मम बास संत ढिग अहई। रक्षा करत चक्र नित रहई॥
संतनते मोंते नहिं भेदा। देवै तात उनहिं जो खेदा॥
निंदा करै किधौं उपहासा। सहित कुटुम्ब करौं त्यहि नासा॥
रौरव नरक बासते पावैं। जे संतन कहँ भूलि सतावैं॥
संत बिरोध किये तिहुँ लोका। पाव न तात कतहुँ सो ओका॥
ज्यों झख बैर अम्बु सों ठानै। करै तासु को रक्षा प्रानै॥
मम अपराध करै जो कोई। करौं क्षमा में चाहै सोई॥
भक्त द्रोह जो मनहिं बिचारैं। ताकहँ चक्र मोर संहारै॥
अस प्रण मोर भक्त हित लागी। सो न बचै पुनि त्रिभुवन भागी॥

सो० संत कृपा बिनु तात मोहिं न पावै कोटि बिधि।
संतन सों भल नात ताते संतत कीजिये॥
राम बचन सुखदाय परम मनोहर नीतिमय

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुनि लक्ष्मण सुख पाय बार बार बन्दे चरण ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेआरण्य
काण्डेलक्ष्मणप्रतिप्रभुज्ञानवैराग्यभक्तिवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

दो० राम लषण श्रीजानकी चरण कमल सुखधाम।
भाग्यवन्त कर जोरिकै पुनि पुनि करौं प्रणाम ॥

मोदक छंद ॥यों कुछ काल ब्यतीत भये जब। शूर्पणखा दश कंध ष्वसा तब ॥ दुष्ट महा बिकराल भयावनि। निश्चर बंश कुठारि नशावनि ॥ जाइ तहां लखि कै भगवानहिं। बेधि गई उर काम के बानहिं ॥ धारि सुरूप चलायकै नैनन। बोलत भै भरि चातुरि बैनन ॥ सवैया ॥ सुन्दर श्यामल गौर मनोहर आनन पूरण चंद्र कलाहौ। देखतही चित मोहि लियो भगवन्त सबै सुखमाके थला हौ॥शीश जटा शर चाप गहे कर भावत बीर बड़े प्रबलाहौ। बैठि निशंक महाबन में तुम को कहौ संग लिये अबलाहौ ॥ चक्रवती दशरत्थ महीपति कौशलनाथ के हैं हम जाये। राम सुलक्ष्मण नामन संयुत आयसु दै यह तात पठाये ॥ जाय बनै सब मारिकै राकस पालहु जे मुनिवृन्द सुहाये।त्वैं कहु को हसि आपन हाल सुहाल निजै हम देत बताये ॥ चंचरीक छंद ॥ लंकनाथ दशास्य की म्वहिं जानिये भगिनी सही। जासुहै ठकुराइ तीनिहुँलोक मानहुँ जो कही ॥ है न पूरुष आन ज्यों तुम नारिहू सम ना हमौ। ताहि ते सुकुमारि हौं अस जानि मो संगमें रमौ ॥

दो० कह्यो नीक सो भामिनी पै कहि सुनो हमारि।
लषण कुमारे जाउ तहँ है मेरे यह नारि ॥

तोमर छंद ॥ सुनि बैन सो सति मानि। तिनसों कही अस-आनि ॥ सवैया ॥ राम सहोदर आनँद कोदर हेरहु मो दिशि नैन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उठाई। मैं अनुजा दशकंधरकी तिहुँलोक में जाकरि है ठकुराई॥ राजकुमार रमौ सँग मोहिं करौ पतिनी पति ह्वै मनभाई। जासों लहौ भगवन्त सबै सुख सम्पति सिद्धि समृद्धि बड़ाई॥

कह लच्मण सुनु भामिनि बाता। वैहैं भूप सबनि के त्राता॥ म्यहिं सेवकहिं बरे का पैहौ। चेरी ह्वै उपहास करैहौ॥ ताते उनहिंन पास सिधावो। जाते सुयश लोक तिहुँ पावो॥ सुनि सो गई जहां रघुबीरा। पुनि पठ्ये प्रभु लच्मण तीरा॥

तोटक छंद॥ लखि लच्मण ताहि सक्रोध कही। त्वहिं आवति लाज निलज्जि नही॥ त्वहिंको जग पूरुष जौन बरै। तृणसो निज लाजहिं तोरि धरै॥ बरवै छंद॥ समुझि हास अति व्यंकट रूप बनाय। दौरी मुख पसारि गइ सिया डेराय॥ तब सयनहिं प्रभु लषणहिं दीन बुझाय। ज्यहि विधि सो बरवैमें तुलसी गाय॥ तब लच्मण तुरतै त्यहि नासा कान। लीन काटि भइ व्याकुल मानि गलान॥ चलि खरदूषण पै गइ ठान्यसि फैन। सुनि उठिधाये तुरतै ते सजि सैन॥ गीतिका छंद॥ सजि सैन निश्चर निकर धाये सपर्ब गिरि कज्जल मनौं। धृत अस्त्र शस्त्र अनेक आयुध बिबिध बाहन को गनौं॥ अति होत असगुन अमित ते नहिं गनत मृतुवश राकसा। बाजत अनेक जुझाउ बाजन गरजिं तर्जहिं बाकसा॥ कोउ कहत मारहु पकरि दोउन ललित लै ललना लियो। इमि कहत धाये सुभट सबदल अग्रसुपनखहि कियो॥

दो० धूरि पूरि अम्बर निरखि कह अनुजै रघुबीर।
लै सीतहि गिरि कंदरहि जाहु सजग रह्यो बीर॥
प्रभु आयसु लच्मण गये लै सीतहि गिरि खोह।
तब लगि रिपुदल सन्मुखै आइगयो अति कोह॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छप्पै ॥ तब रघुपति मन बिहँसि कठिन कोदण्ड चढ़ायो। बांधि जटा शिर जूट कमरकसि तूण लगायो ॥ करशा चाप सुधारि दुव-नदल सन्मुख देख्यो। ज्यों केहरि करि झुंड निरखि मन हरष बिशे-ख्यो ॥ गयमोहि निरखि सबराम छबि सकत न निशिचर डारिशर। तब निकट बोलि मंत्रिहि बिकल कहतभयो अस बचन खर ॥ ये कोऊ नृप सुवन भुवन भूषण छबिऐना। असि शोभाभरि जन्म कतहुँ हम दीख न नैना ॥ यद्यपि किहिनि कसूरभूरि पर बद्ध न लायक। ताते कहियोजाय देहिं निजनारि सुहायक॥ दैनारि जि-यत द्वउभाय ज्यहि जाहिं भवन निज मानिसुख। नतु मारि गरद म्यलिहौं दुहुन परेआइ ममकालमुख॥ सचिवन्ह प्रभुसों जाय बात सब बरणन कीन्ह्यो। सुनि मुसकाने राम तिनहिं अस उत्तरदी-न्ह्यो ॥ हमक्षत्री मृगयार्थ फिरत बनमें नहिं डरते। तुमसे खल मल राशि खोजि मृगगण संहरते ॥ रिपु प्रबल देखि नहिंडरत हम लरत जुरण कालौ मिलहि। नहिं होइ जुबल घरजाहु फिरि भागेन पर करनहिं ढिलहि ॥ दूतन प्रभुके बैन जाय निजनाथ सुनायो। खर दूषण त्रिशिरादि सुनत अति क्रोध बढ़ायो ॥ बोले तब ललकारि सुभट सब सन्मुख धावहु। नृप बलकन द्वउ बांधि मारिमहि गर्द मि-लावहु ॥ सुनिचले धाय निशिचर सकल प्रभुपर हाहाकारकय। शर शक्ति शूल तोमर परिघ नानाबिधि हथियारलय ॥ कुंडलिया ॥ तब रघुपति टंकोरिधनु कीन्ह्यों शब्द अपार। सुनि सब निशिचर भे बधिर गिरि गिरिगे हथियार ॥ गिरिगिरिगे हथियार सक्यो काहुन संभा-री। सावधानह्वै सकल बहुरि धाये तमचारी॥ तमचारिन दलकोपि चल्यो आयुध बहु बरषति। तिलसमान सो काटि बाण निज छांड़े रघुपति ॥ भुजंगप्रयात छन्द ॥ चलेराम नाराच संग्रामछाये। मनो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुंज व्यालालि फुंकारिधाये ॥ गये रेलि कै पेलि फौजै बिडारी । लगे अंगकाटे भगे रैनिचारी ॥ तबै कोपियों भाय तीनौं पुकारे । जुसंग्राम ते पाँव पाछेकधारे ॥ करौं बद्धमैंही स्वहस्ताजुताको । फिरे ठानिकै मर्ण दै बीर हांको ॥ लिये अस्त्र शस्त्रादि नानाहथ्यारे । लगे कोपि श्रीराम सौं हैं प्रहारे ॥ तिन्हैजानि क्रुद्धाति श्रीरामसांचे । सुसंधानि शारंग छांड़े नराचै ॥ लगे ते बिखण्डै सुराराति अंगे । परेरुंड जैजैति बोलैं उमंगे ॥ कटैं ग्रीवबाहैं हृदे लंकपावैं । बिनामुंड कै रुंड भूमाहिं धावैं ॥ लगेबाण चिक्कार कोई मचावै । कई मुंड बायेमुखै खान धावै ॥ कई काहरैं भूमिपै घावखाये । कई बाहु लैचाप नाराच धाये ॥ कित्यो तौ लिये कंक औ काक खाहीं । कित्यो नोचि जम्बूक भागैंहुहाहीं ॥ सजैं खप्परै भूत प्रेतापिशाचैं । पिये योगिनी रक्तको मस्त नाचैं ॥ लिये भूरि बैताल भट्टौंकपालैं । बजावैं उठावैं तरङ्गानि तालैं ॥ प्रचण्डाति नाराच श्री रामकेरे । बिखण्डैं भुजामुंड आराति घेरे ॥ जहाँ के तहाँ ते दशौ ओरपाटे । बचैवीर ना भागि बे अंग काटे ॥ लिये गीध अंतावरी व्योम जावैं । गहे ताहि भूमैं पिशाचापु धावैं ॥ उड़ावैं पतंगैं मनोबाल लीने । करैं जाल कल्लोल आनन्द भीने ॥ बिलोके निजै सैन बेहाल ज्योंहीं । बढ़े कोपि खर्दूषणादी सु त्योंहीं ॥ गहे अस्त्र शस्त्रादि नानाप्रकारे । कृपासिंधु पैवार एकै प्रहारे ॥ तिन्हें काटि श्रीराम संग्राम कोपी । सुनाराच दीन्हे दलै शत्रु तोपी ॥

दो० दश दश शर रिपुनायकन तब मारे रघुबीर ।
परतभूमि पुनि उठि लरत मरत न ते अतिधीर ॥
सहस चतुर्दश राकसा एक राम सुख ऐन ।
देखि देव डरपत सकल परत न मनमें चैन ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सभय देव करुणा निधि चीन्हे। रामरूप सब कटकहि कीन्हे॥
एकहि एक धाय धरिमारा। क्षण महँ सकल भये संहारा॥
राम राम कहि तजेंनि शरीरा। भये मुक्त ते सब रणधीरा॥
देखि चरित हरषे सुर झारी। बरषिसुमन जै जयति पुकारी॥
सीता सहित लषण तब आये। प्रभु पद पद्म हरषि शिर नाये॥
निरखि राम छबि भये सुखारे। तब रघुपति निज ढिग बैठारे॥

दो॰ पंचवटी श्री राम बसि नित नव चरित अपार।
करत जाहि गावत सुनत पावत नर भव पार॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेआरण्यकाण्डखरदूषणत्रिशिरादिवधवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

छप्पै॥ छबि समुद्र परधाम बिरज निर्गुण गुणरासी। परमातम परब्रह्म अखिल उर अंतरबासी॥ बिधि हरि हर पदवंद्य प्रणत प्रतिपाल कृपालं। रञ्जन सुर मुनि मनुज दनुज कुल काल करालं॥ जय सकल भुवन पालन करण शरणागत संकट कदन। भाग्यवन्त बन्दन करौं रघुबंश बिभूषण सुख सदन॥

दो॰ खरदूषण त्रिशिरादि को देखी जबै बिनास।
शूर्पणखा तब भागिकै गई रावण पास॥

सो॰ मनहुँ मौत बिकराल निश्चर कुल केरी कुमति।
गई भवन दशभाल खरदूषण त्रिशिरादि भखि॥
सभा मध्य परि जाय करि बिलाप बोली तमकि।
तोहिं न सूझत भाय सबलशत्रु शिरपर चढ्यो॥

कुंडलिया॥ भूली सुधि पुर देश की करै पान मदअन्ध। मेरी गति यह ह्वैगई तोहिं जियत दशकन्ध॥ तोहिं जियत दशकन्ध लाज सब ह्वैगै भङ्गा। निरखसि नैन पसारि भरे शोणित मम अङ्गा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अङ्गन भंग निहारि पीर त्वहि तनक न हूली। रढ़त चढ़ी शिर मौत खबरि तोको सब भूली ॥ बोल्यो सुनि दशमुख सरुष कहु क्यहि त्रास न मोरि। ज्यहि श्रुति नासा काटि यह कीन्हीं दुर्गति तोरि॥ कीन्हीं दुर्गतितोरि कहै क्यों सपदि न हाला। को अस प्रबल त्रिलोक आयपहुँच्यो क्यहिकाला॥ कालहुको डरडारि श्रवण नासा तव छोली। कहु कहु काकेकर्म सुनत शुरपणखा बोली। ॥ कबित्त ॥ आये बनदे वन कुमार कौशलेश द्वैक सुंदर उदार कोटिमारभा लजावना। भाग्यवन्त चारु सूकुमार बीरबाणयत पौरुष प्रतापपुंज पारहै प्रभावना ॥ मारे खलबृन्दन अनन्द मुनि छन्द बास टारे डर देवन पुकारे यश पावना। काटे श्रुति नाकते सुडाटे खरदूषणादि मारिकै सदल औनिपाटे तिन रावना॥ सवैया॥ ते यक संगलिये नवनारि निहारत जो सचराचर मोहै। रंभरमा रति भारति गौरि मलीन प्रभाद्युति दामिनि को है॥ कोटिन चंदप्रभा मुखपुंज अनूपम रूप विरञ्चि रचो है। क्यों भगवन्त प्रशंसकरौं गुणसागरि रूप उजागरि सोहै॥ कबित्त॥ भाईतीय साथमैं सुभाईती न साथमैं सुभाईती न साथहैं सुगति दीन भाई है। राखी श्रुतिनाकको न राखी श्रुतिनाकको न राखी श्रुतिनाक दिगनाकतौ सुहाई है॥ राखेआपु बैरिन न राखी आपु बैरिनको बानोबान खंडन सुबान हेरिआई है। एरे मन्द रौना तोहिं सूभितौ परौना तिन्हैं जान्यसु नरौना काल तेरेहाल पाई है॥

दो० खरदूषण त्रिशिरादिको सुन्यो जबहिं सो घात।
अतिरिस ब्यापी दशमुखहिं उठेसकल जरिगात॥

शूरपणखहिं तब बिबिध प्रबोधी। गयो भवन रावण मनशोधी॥
तीनिलोक सुर नर मुनिमाहीं। मम सेवक सरि दूसर नाहीं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मो सम प्रबल सुभट खर दूषण। तिनहिं बधैको बिनु जगभूषण॥
जो अवतरेउ जगतपति आई। तौकरि बैर तरौं भव जाई॥
तामस देह भजन किमि करिहौं। हरिपद बिमुख नरकमहँ परिहौं॥
निज परलोकहि जो न बनायो। धृग धृग ताहि बृथाजगजायो॥
जो नृप तनय कऊ बलभारी। तौ हरिहौं तिय द्वउ रणमारी॥

दो॰ अस बिचारि मन रावण चल्यो जहाँ मारीचु।
ज्यों पतंग दिशि दीपकहिं चल्योधाय बशमीचु॥

स्वागता छन्द॥ राम सीय इतत्रोलय लीना। राजपुत्रि सुनिये सुप्रबीना॥ मैं सुकीन चहतो नर लीला। भूमिभार हर आनँद शीला॥ सो शुभाग्नि करिये तुम बासा। जावतारि गण होहिं न नासा॥ प्राणनाथ मुखकै सुनिबानी। हर्षिसीय तब अग्निसमानी॥ राखि तत्र वैसे निज छाया। जानिजाय नहिं रामकि माया॥

दो॰ रावण उत मारीचको जाय नवायो भाल।
मनउदास त्यहि देखिकै पूँछेउ कहु निजहाल॥

द्वै तपसी दण्डकबन आये। शूर्पणखाहि कुरूप बनाये॥
खरदूषण त्रिशिरादिक मारे। चौदह सहस न एक उबारे॥
सो तुम करहु सहाय हमारी। कपट कुरंग होहु छलकारी॥
ज्यहिते मैं उन तिय हरिआनौं। तौ तुम्हार बहुबिधि गुणमानौं॥

दो॰ सुनत बचन मारीच तब कहा सुनहु दशशीश।
तिनहिं न जान्यहु नर निपट भवभंजनजगदीश॥

सवैया॥ राखन गे मुनियज्ञ जबै म्वहिं शायक ते फरको बिन मार्‍यो। आयउँ सो शतयोजन अत्र सुताड़क मारि सुबाहुहिं जार्‍यो॥ भूप सभा धनु शंभु दल्यो भृगुनायकको जिन गर्व उतार्‍यो। नाश किये खरदूषण जो भगवन्त न मानुष ताहि बिचार्‍यो॥ पूरण

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ब्रह्म चराचर जो धृत मानुष देह महारण शूरो। जाहि न पावत पार पुराण बखानत वेदहुको मनमूरो॥ त्यों भगवन्त सुमानि मयाशिष अंतरते छलता गहि तूरो। जाहु घरै कुल खैरि बिचारि सुतासु वि-रोध परी नहिंपूरो॥ तोमरछंद॥ सुनि कोपि रावण नीच। कहबैन डाटि मरीच॥ म्वहिं देत ज्यों गुरुज्ञान। भट कौन मोहिं समान॥ नाराचछंद॥ तबै मरीच हीय में बिचार यों दृढ़ायऊ। उभै प्रकार मौतको सुब्योंत चालि आयऊ॥ इतै जुज्वाब देउँ तौ दशास्य मूढ़ मारि है। उतै श्रिराम बाण छूटि प्राण ना उबारि है॥ निरै सुहाथ अस्य औसि वैसि जाव धामको। मरौं सुहाथ रामके करौं दशास्य कामको॥

दो० अस बिचारि मारीच मन सुमिरि राम रघुनाथ।
परम प्रेम हरषित हृदै चल्यो दशानन साथ॥
ज्यहि कारण मुनि योगिजन करत अनेक उपाय।
स्वइ प्रभु आजु बिलोकिहौं इन नैननते जाय॥
जासु क्रोध निर्वाणप्रद करण अवश बशभक्ति।
नैन सफल करिहौं निरखि सोई प्रभु सहशक्ति॥

पंचबटी बैठे रघुबीरा। सीता अनुज सहित मतिधीरा॥
कहहिं राम कछु कथा पुनीता। सादर सुनहिं लषण अरुसीता॥
रावण संग लिये मारीचा। ताही बन आवा मतिनीचा॥
कनक कुरंग जटित मणिनाना। भा मारीच न जाय बखाना॥
त्यहि थल कपट कुरँग स्वइआवा। देखि सुभग सीता मनभावा॥
कह प्रभु सों हरषित मृदुबैना। यह मृग नाथ परम छबि ऐना॥
मिलत गहे जो पालन लायक। मारयहु होइ चर्म सुखदायक॥
प्रिया बचन सुनि आगम जानी। उठे राम गहि शरधनु पानी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ लषणहिं सौंपि बिदेहजहि आपु शरासन साजि।
मृगपाछे धाये तुरत चल्यउ देखि सो भाजि॥

सवैया॥ सुन्दर श्याम सरोरुह लोचन मोचन पाप सुकीरति छायो। आगम वेद पुराण बखानत नेति न शंकर ध्यानहिं पायो॥ पूरण ब्रह्म जदादि न अंत अनंत सुसंत महातम गायो। सो भगवन्त शरासन साजि कपट्ट कुरंग के संग सिधायो॥

पुनि पुनि चितवत प्रभुचितदीन्हे। मुनि मखके रखवारे चीन्हे॥
कबहुँ जाय दुरि पुनि प्रगटावै। कबहुँ घेर परिकट निकटावै॥
यहिबिधि सो जब दूरि सिधारा। तब रघुबीर ताकि शरमारा॥
परेउ धरणि महि धरहि पुकारी। हरुये सुमिरि राम दुखहारी॥
तौ त्यहि दीन राम निजधामा। लै मृगचर्म फिरे अभिरामा॥
तासु शब्द इत सिय सुनिपाई। बोली लक्ष्मण ते दुखराई॥
हे देवर तुम बेगि सिधारो। प्रभुहि परेउ कछु संकट भारो॥
मृग न होइ यह निशिचर कोई। दीन्हेउप्रभुहि बिपिन दुखसोई॥

सो॰ लषण कह्यो सुनु माउ दुख दायक प्रभुको कवन।
सौंपिगये किमि जांउ स्वामि रजायसु भंगकरि॥

सवैया॥ रामहिं जीतनहार न है कउ कालहु आनि जुरै रण जोई। देव अदेव सबै लरि हारहिं पावहिंगे पर पार न सोई॥ राम न आरत बैन कहैं कहु डारिय मातु सु शोचन खोई। त्योंभगवन्त सु मानु प्रतीति न रामहिं संकट दायक कोई॥

तब सिय कही परुष कछु बाणी। उठे लषण गहि शर धनुपाणी॥
चाप कोर ते चहुँ दिशि रेखा। खैंचि सौंपि बनदेवन शेषा॥
जो नाँघै सो दहै तुरंता। चले नायाशिर सियहि अनंता॥
रावण सून बीच तब पावा। यतीरूप धरि सियढिगआवा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

याच्यो भीख सुनत बैदेही। लगी देन फल मूल सु तेही॥
बोला पुनि सो कपट प्रवीना। बँधी भीख मैं कतहुँ न लीना॥

दो० भावी बश सिय रेख तजि बाहर निकसी ज्योहिं।
करि प्रणाम बैठारिरथ चल्यउगगनपथ त्योहिं॥
इतउतचितवतचकितचित जान्योसियदशशीश।
करि पुकार बिलखाइ कह हाइ हाइ जगदीश॥

सवैया॥ हा सुख भूरि गयो बन दूरि कुरंग के संग अनंग लजावन। लेहु न क्यों सुधि दीनदयाल दिवाकर बंश दिवाकर पावन॥ आरतभंजन नाम प्रसिद्ध सु आरति मोरि हरौ मनभावन। त्यों भगवन्त छड़ावहु बेगि हरेम्वहिं जात लिये खल रावन॥ हाय सु लक्ष्मण दोष न तव फल पायउँ सो भल रोष जु कीन्ह्यो। सोक्षमि शेष सुधावहु रेख जु नाँघत डारि त्वयाडर दीन्ह्यो॥ ज्यों सुरभीसुर गोमर पानि परी परपानि सुत्यों म्वहिं चीन्ह्यो। छोरहु कै छलक्षुद्र हमैं हरि रावन देव सतावन लीन्ह्यो॥

दो० सीता केर बिलाप सुनि सचराचर सब जीव।
भये बिकल भूली सबहि तनमन सुधि बुधिहीव॥

छंद हरिपद॥ गृद्धराज रघुराज प्रियाको आरत रव सुनिपायो। राम राम कहि ताहि प्रचारत गगन पंथ धुकिधायो॥ ज्यों छूटे पविशक्र गिरिनपै मारुत बेग लजायो। त्यों करि क्रुद्ध गृद्ध अति आतुर जहँ रावण तहँ आयो॥ कवित्त॥ रे रे दुष्टरावण निलज्ज राजपत्निचोर लंपट लबार क्षुद्र राव मद्यखोरमै। बाहुबीश शीशदश ईशके अशीश खीस जैहें बिसौबीश जगदीश कोप घोरमै॥ जाहि ढीलि जानकी सुजानकी कुशल चाहि मान किन मानतजि जानकीश मो रमै। नातो करिहातो बिश्वनातो सब ठाढ़होहिं भागुरे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

न भागुहत आयो काल तोरमै ॥ चोंचन बिदारि अंग पोचहि प-छारि औनि औनिजै सुराखि थल ताहि फेरि डाय्यऊ । पौरुख प्र-बल पूरि दोहुन बिरचि युद्ध रामके प्रभाव पावँ गृद्धको न हाय्यऊ॥ मारिकै बिकल चोट चंगुलन चूरकरि मुकुट कोदण्ड पाणि आयु-धन छाँट्यऊ । भाग्यवन्त फेरि उठि रावण सक्रुद्धवीर काढ़िकै कृपानपैन पंखतासु काट्यऊ ॥ तोटकछन्द ॥ कटि पंखगिर्‍यो खग रुण्डमही । मुखसों करुणानिधि रामकही ॥ धनि गृद्धजु रामहि काजलर्‍यो । नहिं जीवत जानकि त्यागकर्‍यो॥ मुनि सिद्ध सराहत ध्यानअड़े । भगवन्त जटायुके भागबड़े ॥ दोधक छन्द ॥ रावणलै सियभाग सभीता । भूरि विलापकरै नभ सीता ॥ पर्वतपै सिय कीशनहेरी । दीनसुडारि पटै हरि टेरी ॥

दो० यहिविधि रावण जानकी हरि लैगयो पराय ।
विपिन अशोक अशोकतरु तरलै राख्यसिजाय ॥

बोला तब सियसों अनुरागी । करहु न शोच नरनके लागी ॥
उनमें कछु प्रभाव नहिं भूरी । मैं समुझत उनको करिधूरी ॥
दिहिनि खेदि घरते पितु माता । भरमतफिरत विपिनद्वउभ्राता ॥
नहिं जानी क्यहि करम प्रभावा । तुमकरि नाह नरनको पावा ॥
अब जाग्यउ तव भाग सुसीता । जो आइउ हमरे सँगप्रीता ॥
देखहु मोर प्रभाव अपारा । मोसम प्रबल न कउ संसारा ॥
मोरकहा जो करु हितमानी । तौतुव चेरिकरौं सब रानी ॥
यहिविधि खलबहुसिखवनदीन्हा । पै सिय कान न सो कछु कीन्हा ॥

दो० ज्यों पत्थरमें काँचको खण्ड प्रहारै कोय ।
ताहि न व्यापै चोट पुनि चूर आपुही होय ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेआरण्यकाण्डेमायासीताहरणवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० जाको नाम सुध्यावतै अशुभौ शुभ सब होत।
भाग्यवन्त स्वइ राम सिय बन्दौं भवनिधि पोत॥

गये लषण जहँ राजिवनैना। अनुजै लखि बोले प्रभुबैना॥
तात बात कीन्हेउ भलिनाहीं। आयहु छोड़ि सीय बनमाहीं॥
परत जानि म्वहिं अशकुनदेखी। काहुहि खल सियहरेउ विशेखी॥
कह्यो लषण कछु मोर न दोषा। पठयो हठि स्वामिनि करि रोषा॥
तब सबन्धु चलि आश्रम आये। शून्यकुटी नहिं सीतहि पाये॥
भये विकल जस पूरुष कामी। नरइव चरित करत जगस्वामी॥
चले सियहि खोजत द्वउबीरा। गिरिसर खग मृग बन द्रुमतीरा॥

इन्द्रबज्रा छन्द॥ हे हे खगाली मृगभृङ्गश्रेनी। देख्यो सु सीता मृगमंजुनैनी॥ हे हे सुसीता मम प्राणप्यारी। गैली कहाँको ह्वय मोहिं न्यारी॥ जौने सनेहै तजि आर्य्यगेहू। आई हमारे सँग तौन नेहू॥ कीन्ह्योकहा सो ज्यहि आजुमोहीं। दीशौ न सीता कृत खोजतोहीं॥ कैसे व्यथा मो सहिजात तोपै। हे हे सुप्रीता प्रगटौन जोपै॥ मैंतो सुकीन्ह्यो कहनै तुम्हारे। गौन्यो तुरन्तै मृगहेम मारे॥ क्राहे सुप्यारी अब कोहकीन्ह्यो। जो बीच वनमें तजि मोहिंदीन्ह्यो॥ ऐसेहि श्रीराम विलापकरते। आयो जहाँ गृद्धपरा कहरते॥ शोचै सकोचै मन दुःखदाग्यो। मेरे न एकौ कछु हाथलाग्यो॥ हरिगीतिका छन्द॥ लाग्यो न मेरेहाथ एकहु बीति बपु बादिहिं गयो। जिमि कल्पबेलि सुजन्मि कानन उपजि दवँ दाहत भयो॥ बरबस निशाचरनाथलैगो हठि न सीतहिं राख्यऊ। देख्यउ न मरतहु राम छवि सियसुधि न प्रभुसन भाख्यऊ॥ योहीं जटायू कर मींजि शोचै। मोसों अभागी भव कौन पोचै॥ ताही समै सो द्वउबंधु आये। देखे सु गीधै जल नैन छाये॥ छाये बिलोचन बारि गीधहिं गोदकरि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राघव लिये। अति प्रेम सींचे सलिल अश्रुन मनहुँ जल आधो दिये॥ हे लषण गीधहिं मिलत बनमें मरण पितु नहिं जान्यऊ। सहि सक्यउ सो विधि कठिन नहिं बड़पक्ष आजु सु भान्यऊ॥ बोल्यो जटायू तब धीर धारी। कीन्हीं दशास्या गति या हमारी॥ सी तै सु लैगो दिशि दक्षिणै को। राख्यों सु प्राणै तव दर्शनै को॥ छंद॥ तव दरश लागि सु प्राण राख्यों चलन अब चाहत सही। कह राम राखहु तात तनु अतिधीर मन डोल्यो नही॥ अवलोकि प्रभु मुख चंद्रछबि बर बचन गीध सुनाइहौ। यहि भूंठ जीवन लागि रघुपति समय धोख न लाइहौं॥ दुर्घट्ट जाको है नाम अंतै। पैहौं कहां फेरि सुभागवंतै॥ जानौ सुभावै प्रभु आपु नीके। पालौ नतै मेटि बिकारही के॥ हियके बिकारन मेटि रघुपति प्रणत प्रतिपालय लियो। शुभकर्म हीन मलीन म्वहिं पितु आपने पटतर दियो॥ जो त्रिजग योनि कुजाति गृद्ध सु खाय परआमिष जियो। भगवन्त आज समाज सुकृतिन मोहिं सब ऊपर कियो॥ बाणी सुकानै मुख नाम रूरो। रूपै सु चाखौं चख मोद पूरो॥ मोसों सुभागी जग कौन जायो। जाको सुअंकै निज रामलायो॥ लाये सुअंकहि कहत रघुपति तात कछु दिन जीजिये। अवलोकि सेवा सुवन मोकहँ तात को सुख दीजिये॥ रहि दिव्य देह सुइच्छया जग मरण जीवन लीजिये। दै दरश हरि हर सुयश गाय कृतार्थ सबको कीजिये॥ श्रीरामबाणी सुनि आस्यहेरी। बोल्यो जटायू मृदुबैन फेरी॥ मेरे सुमर्बै सम फल्लचारी। हावै जु राघो कहियो बिचारी॥

दो० सुनि प्रभु बचन जटायुके मौन न उत्तर दीन।
भाग्यवंत रघुबीर सम को कृपालु परबीन॥

पुनि कृपालु बोले मृदुबानी। तात सकल तुम सुकृत किखानी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

परहित चहेउ तात तुम तासू। पायउ फल मुनि दुर्लभ आसू॥
जाहु धाम मम त्यागि शरीरा। देउँ कहा तुम्हरे सब तीरा॥
सीता हरण पितासन जाई। कहेउ न तात सुनत दुख पाई॥
राउर पुण्य प्रताप सुभागी। दहिहौं शत्रु बिलम्ब न लागी॥
कुल समेत सुर सभा हवाला। कही आइ आपै दशभाला॥
सुनि प्रभु बचन गीध हरषाना। ह्वैकै तुरत रूप भगवाना॥
करि करपुट अस्तुति अनुसारी। जै जै जै रघुबंश खरारी॥

त्रोटकछंद॥ जय राम कृपा सुख धामहरे। परमातम पूरण ब्रह्म परे॥ नवनीरद गात प्रकाशमई। प्रति अंग प्रभा बहु कामछई॥ अरुणाम्बुज लोचन चारुमुखं। अवलोकनि हारण दासदुखं॥ भुजदंड प्रलम्ब प्रचण्ड नितं। करशायक चापधरं अजितं॥ ज्यहि पावत पार न वेद बकैं। गुण गावत शारद शेष थकैं॥ ज्यहि आदिहु अंत सुमध्य नही। सम दृष्टि चराचर व्याप्त मही॥ भव भञ्जन रञ्जन दिव्य निते। प्रणतारति मोचन भक्त हिते॥ करुणाकरि सो चितते न खसौ। भगवन्त हृदय प्रभु नित्त बसौ॥ गीतिका छंद॥ यहि भांति अस्तुति गीध करि हरिभक्ति अबिरल पायकै। हरिधाम गो अभिराम हर्षित राम पद शिर नायकै॥ रघुबीर तासु क्रियापुकर पितु सरिस कीन बनायकै। भगवन्त ऐसे प्रभुहिं काहेन भजसि मनचित लायकै॥

गृद्ध क्रिया करि पुनि द्वउ भाई। चले सियहि खोजत सब ठांई॥
मिलेउ कबंध असुर तहँ रहेऊ। द्वउजन खैंचि खान जब चहेऊ॥
तब रघुबीर कीन त्यहि घाता। कहेसिसकलनिजशापकिबाता॥
मैं प्रभु पूरुब को गन्धर्बा। विद्या रूप रहौं अति गर्बा॥
दुर्बासा की हांसी कीन्हा। तिनतबकोपिशापम्वहिंदीन्हा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होसि जाय राक्षस कुरूपा। तव उद्धार हाथ सुरभूपा॥
भयउँ असुर अति करौं उपद्रै। मारेउ इन्द्र कोपि तब बज्रै॥
गयउ शीश तब पेट समाई। व्याकुल गिरेउँ धरणिपर आई॥
पुनि बश दयाकीन सुरनाहैं। योजन भरि मम लम्बी बाहैं॥
बाहँन बीच परै जो आई। खाउँ ताहि नहिं आन उपाई॥
यहिबिधि कहि निज कथा सुनाई। राम कृपा आपनि गति पाई॥
पुनि प्रभु चले अनुजयुत आगे। शवरी कै सुधि करि अनुरागे॥
ज्यहि त्यहि पूँछत राजिवनैना। क्यहिबन बसत शवरिसुखऐना॥
जासु भक्ति सुनि श्रवण बिशेखी। कल न परत म्वहिंकबधौं देखी॥

दो॰ यहां प्रात शवरी उठी फरके शुभ सब अंग।
सगुन सुहावन देखि मन परमानंद उमंग॥
करत मनोरथ बिबिध बिध पुलक प्रफुल्लित गात।
आजु हमारे आइहैं राम लषण द्वउ भ्रात॥

कवित्त॥ ऐहैं घर मेरे आजु पाहुने लषण राम प्राणन अधार सो निहारि सुक्ख पाइहौं। पूजित अजादि सुर शङ्कर सरोज पायँ प्रेमसों पखारि पूजि हीय सों लगाइहौं॥ जासु छबि देखिबेभिलापन मरत देव सोई छबि आजु इन नैनन बसाइहौं। भाग्यवन्त पाय कै गरीबको निवाजबान रामसो सुभाय सब लाहुनै अघाइहौं॥ झारि तृण झोपड़ै सुबारि भरि कुंभधारि दोनन सँवारि भरि धरे फल आनिकै। खन भौनजावै खन द्वारको सिधावै खनखन झाँकि आवै पंथ भूपर सुपानिकै॥ खन अनुरागै तनमन प्रेम पागै खन चूनन सुलागै फल फूलन सुजानिकै। भाग्यवन्त राघव सबंधु आपु गये आय शावरी के भौन प्रेम प्रण पहिचानिकै॥ शावरी बिलोकि छबि साँवरी मगन प्रेम धायकै सरोज पायँ जाय भई लागती।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रेमपट पाँवड़े अर्घ देत आँसुनै सुआश्रमै ल्यवायलाय मोदपुंज पागती॥ धोयकै चरण चारु आसनै पधारि दिव्य दोनन सुआनि फल दीन्हे अनुरागती। भाग्यवन्त सानुजै श्रिराम सो सराहि खात शावरी कि भागिको न भागि जगजागती॥

दो० जो प्रभु पूरण ब्रह्मपर शिवको अगम लखात।
स्वइप्रभु शवरीसों मुदित माँगि माँगि फलखात॥
धन्य धन्य भगवन्त जग शवरी को बड़भाग।
ऋषि आश्रमन बिहाय ज्यहि खाये प्रभुफलशाग॥

करि फल अशन अँचै रघुवीरा। उठे हरषि भंजन भवभीरा॥
तब करजोरि शवरि मृदुबानी। बोली सुनहुँ राम सुखदानी॥
मैं योषित शुभ कर्मन हीना। पापपरायन कुटिल मलीना॥
प्रभु करि कृपा लीन अपनाई। करौं कवनविधि बिनय बड़ाई॥
कह रघुपति भामिनि जगमाहीं। तो कहँ कछु दुर्लभ है नाहीं॥
भक्तिमोरि तैं हृदय दृढ़ाई। ताते मुनि दुर्लभगति पाई॥

दो० अबकहु सीतासुधि सुखद जो पाये कहुँहोय।
पंपासर प्रभुजाउ तहँ कहिहि सुगर सुधिजोय॥
असकहि प्रभुपद पद्मकरि बारहिंबार प्रणाम।
योगअग्नि तनु त्यागिकै गई रामके धाम॥
निजकर प्रभु ताकी क्रिया कीन्हीं मातु समान।
भाग्यवन्तअसस्वामितजि कहहुभजैक्यहिआन॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे आरण्यकाण्डेजटायुउद्धरणशवरीकथावर्णनोनामषष्ठमोऽध्यायः६॥

कुण्डलिया॥ पूरण ब्रह्मप्रकाशमय निराकार निरखेद। अज अलेख अविकार ज्यहि पार न पावत वेद॥ पारनपावत वेद श्रमित

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सहसानन गाई। करुणासिन्धु कृपाल स्वई भक्तनहित आई॥ आइ धर्यो नरदेह दलन भवभय दलकूरन। भाग्यवन्त प्रणमामि राम रघुपति प्रणपूरन॥

दो० शवरिहिं सुथल पठाइकै राम लषण द्वउबन्धु।
चले बहुरि खोजत सियहि नरकेहरि वलसिन्धु॥
दुख सुखरहित सु एकरस गुणसागर सुखधाम।
बिरहीइव विलपत विकल गये पंपसर राम॥
सन्तहृदय निर्मल यथा पूरण जल त्यहि माहिं।
बांधेघाट सुचारि वर कहत बनै छबि नाहिं॥

हरिपद छन्द॥ फूलेताल कमल बहुभाँतिन भ्रमरमाल गुंजारैं। बोलत चक्रवाक खग संकुल सुनत ध्यान मुनिटारैं॥ चारिहुदिशि बनबाग सुहावन मनभावन तरुफूले। डोलत त्रिविध वायु सुख-दायक बोलत खग अनुकूले॥ मुनिगण विपुल कुटी तहँ छाये बसहिं सदा अनुरागे। देखि राम सुखधाम सरोवर सहित अनुज सुखपागे॥

दो० करि मज्जन सज्जन सुखद तरुछाया भलिदेखि।
अनुजसहित बैठे तहाँ राम कृपाल विशेखि॥
सुरमुनि सकल सुपाय सुधि आये जहँ रघुराय।
नानाविधि करि करि विनय गये भवन शिरनाय॥
नारदमुनि ताही समय करत रामगुण गान।
प्रेममगन आये तहाँ राजत जहँ भगवान॥

करत प्रणाम राम उर लाये। पूंछि कुशल आसन बैठाये॥
बहुविधिमुनिहि विनयप्रभुकीन्हा। तब नारद अस बोलय लीन्हा॥

सवैया॥ कोशलराज कुमार उदार अपार सदा यशवेद पुकारे।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दीनदयाल शिरोमणिस्वामि प्रसिद्ध सदा जनके हितकारे ॥ देहु यहैबर मांगतहौं रघुवीर सबैगति जाननहारे। रामबड़ो सब नामनमें भगवंत बसौउर नितहमारे ॥

सुनि मुनि बचन राम सुखपाये। एवमस्तु कहि हृदय लगाये॥
पुनि करजोरि मधुर मृदुबानी। बोले मुनि प्रसन्न प्रभु जानी ॥

सवैया ॥ प्रेरयउराम जबै निज मायहि मोह्यउ मोहिं तबै जग-तारन। चाह्यउँ मैं सुविवाह करै प्रभु दीन करै नहिं सो क्यहिकारन॥ सो प्रभु खेद बुझायकहौ ज्यहि होय हृदै मम खेद निवारन। राजिवलोचन राम तुम्हें बिन देखिय और न दाससँभारन॥ रोलाछंद॥ मुनिबोले रघुनाथ नाथ जेभक्त हमारे। भजहिं मोहिं वसुयाम काम तजि प्राण पियारे ॥ करौं सदा तेहित्रातु यथा बालक महतारी। लेत अनल अहिगहत शिशुहिं लखिधाय निवारी॥ प्रौढ़ भयेसोइ बाल प्रिया मातहिं बरुआछे। पै नहिं तैसी बात रही जैसी कछुपाछे ॥ तिमि प्रियज्ञानी भक्त मोहिं शिशु प्रौढ़समाना। दासअमानी प्रीव यथा बालक अनजाना ॥ ज्ञानिहि निजबल रहत अमानिहि केवल मेरा। काम क्रोध रिपु प्रबल दुहुन पै करतदेरा ॥

दो० अस बिचारि जे विदुषवर भजहिं मोहिं निजशक्ति।
पायहु ज्ञान सुजानपर तजत न मेरी भक्ति॥

सो० काम क्रोध मद लोभ प्रबल मोह सेना सकल।
माया मै तिय शोभ तिनमहँ अति दारुण दुखद॥

सवैया ॥ श्रीमुनिराज पुराणकहैं श्रुतिसंतनको सतमत्त यहीहै। मोहमई घन काननको सुखदायकनारि बसंत सही है ॥ त्यों भगवंत जपादिक नेम जलाश्रय पूरण पुंज मही है। ताहि विशोषत नारि सु है ऋतु ग्रीषम राखत नाम नही है ॥ कामरु क्रोध मदा-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दिक मत्सर भेकनको मुद संकुलदाई। है बरषाऋतु नारिसही दुरवासनकूमुद को समुदाई॥ दायकहै मुदशर्द यथा सरसीरुह बृन्द सुधर्म्म सुहाई। देति तिन्हैं दुखदारुण त्यों प्रमदाहिमि ह्वै मतिमन्द सदाई॥

दो० नारि शिशिरऋतु पाइकै पलुहै ममतु जवास।
कलुष उलूकन को सदा निशिसम देत सुपास॥
बुधि विवेक बलशील झख लहि सनेह जलमाहिं।
बनशीसम बेधत तुरत नारि कहत बुध आहिं॥

सवैया॥ औगुणमूल सदै प्रतिशूल करै प्रतिकूल सुधर्म्म न चीन्ह्यो। नारिसनेह महा बनमें परि भूलि सुपंथनके दुख लीन्ह्यो॥ त्यों भगवंत कहै सदग्रन्थ कलंकन नारि मतो क्यहि दीन्ह्यो। सोइ मुनिराज बिचारि तुम्हैं विष पीवत देखि निवारण कीन्ह्यो॥

दो० रामचन्द्रके बचन सुनि मुनि नारद सुख पाय।
ब्रह्म भवन गवने मुदित बार बार शिर नाय॥
रामसरिस तिहुंलोकमें को कृपालु निरहेतु।
ताते सब छल छांड़िकै भजहु रामकरि चेतु॥

कुंडलिया॥ नाहीं ह्वै करार कछु या तनको क्षणएक। ताते भज सियरामको भाजिले सहित बिबेक॥ भजिले सहित बिबेक गये समया नहिं पैहै। चौरासी दुखदेखि हाथ मलिमलि पछितैहै॥ पछितैहै बहुभांति समुझु अबहीं मनमाहीं। भाग्यवंत बिनुराम हितू आपन कोउ नाहीं॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेआरण्यकाण्डेपंचसप्तश्रीरघुनंदननारदसमागमवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७॥
इतिआरण्यकाण्डसमाप्तम्॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भक्तिशिरोमणि किष्किन्धाकाण्ड।

दोहा ॥

गुरु गणेश गिरिजा हरहि सुमिरि राम सिय ध्याय।
किष्किंधा शुभ काण्ड अब कहौं सकल सुखदाय॥

सवैया॥ सत्य सुशील दया गुण सागर आगर नीति प्रणै प्रति पालक। रञ्जन साधु महीसुर सज्जन भञ्जन बैरिन दुष्टन घालक॥ भक्त शिरोमणि बीर बली शरणागत पाल सदै दुखदालक। ध्यावतहैं भगवन्त तुम्हैं जन जानि द्रवो सुसमीर के बालक॥

दो० नारद मुनि हरिभक्ति जब पाइ गये पितु धाम।
तब सानुज आगे बहुरि चले विपिन श्रीराम॥
ऋष्यमूक पर्वत निकट जब दरशे द्वउ भाय।
लखि सुग्रीव सभीत ह्वै कह हनुमन्त बुलाय॥
अति सुन्दर द्वै पुरुष ये रूप शील बल गेहु।
आवत सो धरि बटु बपुष जाइ मर्म तुम लेहु॥

सो० सुनि सुकण्ठ के बैन पवन तनय धरि विप्र तनु।
जाय निकट छबिऐन माथ नाय बोले बचन॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सभय देव करुणा निधि चीन्हे। रामरूप सब कटकहि कीन्हे ॥
एकहि एक धाय धरिमारा। क्षण महँ सकल भये संहारा ॥
राम राम कहि तजेनि शरीरा। भये मुक्त ते सब रणधीरा ॥
देखि चरित हरषे सुर भारी। बरषिसुमन जै जयति पुकारी ॥
सीता सहित लषण तब आये। प्रभु पद पद्म हरषि शिर नाये ॥
निरखि राम छवि भये सुखारे। तब रघुपति निज ढिग बैठारे ॥

दो० पंचवटी श्री राम बसि नित नव चरित अपार।
करत जाहि गावत सुनत पावत नर भव पार ॥

इति श्री मदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेआरण्यकाण्डखरदूषणत्रिशिरादिवधवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

छप्पै ॥ छवि समुद्र परधाम बिरज निर्गुण गुणरासी। परमातम परब्रह्म अखिल उर अंतरवासी ॥ बिधि हरि हर पदवंद्य प्रणत प्रतिपाल कृपालं। रञ्जन सुर मुनि मनुज दनुज कुल काल करालं ॥ जय सकल भुवन पालन करण शरणागत संकट कदन। भाग्यवन्त बन्दन करौं रघुबंश बिभूषण सुख सदन ॥

दो० खरदूषण त्रिशिरादि को देखी जबै बिनास।
शूर्पणखा तब भागिकै गई रावणा पास ॥

सो० मनहुँ मौत बिकराल निश्चर कुल केरी कुमति।
गई भवन दशभाल खर दूषण त्रिशिरादि भखि ॥
सभा मध्य परि जाय करि बिलाप बोली तमकि।
तोहिं न सूझत भाय सबलशत्रु शिरपर चढ़यो ॥

कुंडलिया ॥ भूली सुधि पुर देश की करे पान मदअन्ध। मेरी गति यह ह्वैगई तोहिं जियत दशकन्ध ॥ तोहिं जियत दशकन्ध लाज सब ह्वैगै भङ्ग। निरखसि नैन पसारि भरे शोणित मम अङ्ग ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अङ्गन भंग निहारि पीर त्वहि तनक न हूली। रढ़त चढ़ी शिर मौत खबरि तोको सब भूली ॥ बोल्यो सुनि दशमुख सरुष कहु क्यहि त्रास न मोरि। ज्यहि श्रुति नासा काटि यह कीन्हीं दुर्गति तोरि॥ कीन्हीं दुर्गतितोरि कहै क्यों सपदि न हाला। को अस प्रबल त्रिलोक आयपहुँच्यो क्यहि काला॥ कालहुको डरडारि श्रवण नासा तव छोली। कहु कहु काकेकर्म सुनत शुरपणखा बोली ॥ कबित्त ॥ आये बनदेखन कुमार कौशलेश द्वैक सुंदर उदार कोटिमारभा लजावना। भाग्यवन्त चारु सूकुमार बीरबाणयत पौरुख प्रतापपुंज पारहै प्रभावना ॥ मारे खलबृन्दन अनन्द मुनि छन्द बास डारे डर देवन पुकारे यश पावना। काटे श्रुति नाकते सुडाटे खरदूषणादि मारिकै सदल औनिपाटे तिन रावना ॥ सवैया ॥ ते यक संगलिये नवनारि निहारत जो सचराचर मोहै। रंभ रमा रति भारति गौरि मलीन प्रभाद्युति दामिनि कोहै ॥ कोटिन चंदप्रभा मुखपुंज अनूपम रूप बिरञ्चि रचोहै। क्यों भगवन्त प्रशंसकरौं गुणसागरि रूप उजागरि सोहै ॥ कबित्त ॥ भाईतीय साथमैं सुभाईती न साथमैं सुभाईती न साथहैं सुगति दीन भाई है। राखी श्रुतिनाकको न राखी श्रुतिनाकको न राखी श्रुतिनाक दिगनाकतौ सुहाई है॥ राखेआपु बैरिन न राखी आपु बैरिनको बानोबान खंडन सुबान हेरिआई है। एरे मन्द रौना तोहिं सूझितौ परौना तिन्हैं जान्यसु नरौना काल तेरेहाल पाई है ॥

दो० खरदूषण त्रिशिरादिको सुन्यो जबहिं सो घात।
अतिरिस ब्यापी दशमुखहिं उठेसकल जरिगात ॥

शूरपणखहिं तब बिबिध प्रबोधी। गयो भवन रावण मनशोधी ॥
तीनिलोक सुर नर मुनिमाहीं। मम सेवक सरि दूसर नाहीं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मो सम प्रबल सुभट खर दूषण। तिनहिं बधैको बिनु जगभूषण॥
जो अवतरेउ जगतपति आई। तौकरि बैर तरौं भव जाई॥
तामस देह भजन किमि करिहौं। हरिपद बिमुख नरकमहँ परिहौं॥
निज परलोकहि जो न बनायो। धृग धृग ताहि बृथाजगजायो॥
जो नृप तनय कऊ बलभारी। तौ हरिहौं तिय द्वउ रणमारी॥

दो० अस बिचारि मन रावण चल्यो जहाँ मारीचु।
ज्यों पतंग दिशि दीपकहिं चल्योधाय बशमीचु॥

स्वागता छन्द॥ राम सीय इतबोलय लीना। राजपुत्रि सुनिये सुप्रबीना॥ मैं सुकीन चहतो नर लीला। भूमिभार हर आनँद शीला॥ सो शुभाग्नि करिये तुम बासा। जावतारि गण होहिं न नासा॥ प्राणनाथ मुखकै सुनिबानी। हर्षिसीय तब अग्निसमानी॥ राखि तत्र वैसे निज छाया। जानिजाय नहिं रामकि माया॥

दो० रावण उत मारीचको जाय नवायो भाल।
मनउदास त्यहि देखिकै पूँछेउ कहु निजहाल॥

द्वै तपसी दण्डकबन आये। शूर्पणखाहि कुरूप बनाये॥
खरदूषण त्रिशिरादिक मारे। चौदह सहस न एक उबारे॥
सो तुम करहु सहाय हमारी। कपट कुरंग होहु छलकारी॥
ज्यहिते मैं उन तिय हरिआनौं। तौ तुम्हार बहुबिधि गुणमानौं॥

दो० सुनत बचन मारीच तब कहा सुनहु दशशीश।
तिनहिं न जान्यहु नर निपट भवभंजनजगदीश॥

सवैया॥ राखन गे मुनियज्ञ जबै म्वहिं शायक ते फरको बिन मारयो। आयउँ सो शतयोजन अत्र सुताड़क मारि सुबाहुहिं जारयो॥ भूप सभा धनु शंभु दल्यो भृगुनायकको जिन गर्व उतारयो। नाश किये खरदूषण जो भगवन्त न मानुष ताहि बिचारयो॥ पूरण

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ब्रह्म चराचर जो धृत मानुष देह महारण शूरो। जाहि न पावत पार पुराण बखानत वेदहुको मनसूरो॥ त्यों भगवन्त सुमानि मयाशिष अंतरते छलता गहि तूरो। जाहु घरै कुल खैरि बिचारि सुतासु बिरोध परी नहिंपूरो॥ तोमरछंद॥ सुनि कोपि रावण नीच। कहबैन डाटि मरीच॥ म्वहिं देत ज्यों गुरुज्ञान। भट कौन मोहिं समान॥ नाराचछंद॥ तबै मरीच हीय मैं बिचार यों दृढ़ायऊ। उभै प्रकार मौतको सुब्योंत चालि आयऊ॥ इतै जुज्वाब देउँ तौ दशास्य मूढ़ मारि है। उतै श्रिराम बाण छूटि प्राण ना उबारि है॥ निरै सुहाथ अस्य औसि बैसि जाव धामको। मरौं सुहाथ रामके करौं दशास्य कामको॥

दो० अस बिचारि मारीच मन सुमिरि राम रघुनाथ।
परम प्रेम हरषित हृदै चल्यो दशानन साथ॥
ज्यहि कारण मुनि योगिजन करत अनेक उपाय।
स्वइ प्रभु आजु बिलोकिहौं इन नैननते जाय॥
जासु क्रोध निर्वाणप्रद करण अवश बशभक्ति।
नैन सफल करिहौं निरखि सोई प्रभु सहशक्ति॥

पंचबटी बैठे रघुबीरा। सीता अनुज सहित मतिधीरा॥
कहहिं राम कछु कथा पुनीता। सादर सुनहिं लषण अरुसीता॥
रावण संग लिये मारीचा। ताही बन आवा मतिनीचा॥
कनक कुरंग जटित मणिनाना। भा मारीच न जाय बखाना॥
त्यहि थल कपट कुरँग स्वइआवा। देखि सुभग सीता मनभावा॥
कह प्रभु सों हरषित मृदुबैना। यह मृग नाथ परम छबि ऐना॥
मिलत गहे जो पालन लायक। मारयहु होइ चर्म सुखदायक॥
प्रिया बचन सुनि आगम जानी। उठे राम गहि शरधनु पानी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ लषणहिं सौंपि विदेहजहि आपु शरासन साजि।
मृगपाछे धाये तुरत चल्यउ देखि सो भाजि॥

सवैया॥ सुन्दर श्याम सरोरुह लोचन मोचन पाप सुकीरति छायो। आगम वेद पुराण बखानत नेति न शंकर ध्यानहिं पायो॥ पूरण ब्रह्म जदादि न अंत अनंत सुसंत महातम गायो। सो भगवन्त शरासन साजि कपट्ट कुरंग के संग सिधायो॥

पुनि पुनि चितवत प्रभुचितदीन्हे। मुनि मखके रखवारे चीन्हे॥
कबहुँ जाय दूरि पुनि प्रगटावै। कबहुँ घेर परिकट निकटावै॥
यहिविधि सो जब दूरि सिधारा। तब रघुबीर ताकि शरमारा॥
परेउ धरणि महि धरहि पुकारी। हरुये सुमिरि राम दुखहारी॥
तौ त्यहि दीन राम निजधामा। लै मृगचर्म फिरे अभिरामा॥
तासु शब्द इत सिय सुनिपाई। बोली लक्ष्मण ते दुखराई॥
हे देवर तुम बेगि सिधारो। प्रभुहि परेउ कछु संकट भारो॥
मृग न होइ यह निशिचर कोई। दीन्हेउप्रभुहि बिपिन दुखसोई॥

सो॰ लषण कह्यो सुनु माउ दुख दायक प्रभुको कवन।
सौंपिगये किमि जांउ स्वामि रजायसु भंगकरि॥

सवैया॥ रामहिं जीतनहार न है कउ कालहु आनि जुरै रण जोई। देव अदेव सबै लरि हारहिं पावहिंगे पर पार न सोई॥ राम न आरत बैन कहैं कहु डारिय मातु सु शोचन खोई। त्यौंभगवन्त सु मानु प्रतीति न रामहिं संकट दायक कोई॥

तब सिय कही परुष कछु बाणी। उठे लषण गहि शर धनुपाणी॥
चाप कोर ते चहुँ दिशि रेखा। खैंचि सौंपि बनदेवन शेषा॥
जो नाँघै सो दहै तुरंता। चले नायशिर सियहि अनंता॥
रावण सून बीच तब पावा। यतीरूप धरि सियढिगआवा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

याच्यो भीख सुनत बैदेही। लगी देन फल मूल सु तेही॥
बोला पुनि सो कपट प्रवीना। बँधी भीख मैं कतहुँ न लीना॥
दो० भावी बश सिय रेख तजि बाहर निकसी ज्योंहिं।
करि प्रणाम बैठारिरथ चल्यउगगनपथ त्योंहिं॥
इतउतचितवतचकितचित जान्येसियदशशीश।
करि पुकार बिलखाइ कह हाइ हाइ जगदीश॥
सवैया॥ हा सुख भूरि गयो बन दूरि कुरंग के संग अनंग लजावन। लेहु न क्यों सुधि दीनदयाल दिवाकर बंश दिवाकर पावन॥ आरतभंजन नाम प्रसिद्ध सु आरति मोरि हरौ मनभावन। त्यों भगवन्त छुड़ावहु बेगि हरेम्वहिं जात लिये खल रावन॥ हाय सु लच्मण दोष न तत्र फल पायउँ सो भल रोष जु कीन्ह्यो। सोक्षमि शेष सुधावहु रेख जु नाँघत डारि त्वयाडर दीन्ह्यो॥ ज्यों सुरभीसुर गोमर पानि परी परपानि सु त्यों म्वहिं चीन्ह्यो। छोरहु कै छलक्षुद्र हमैं हरि रावन देव सतावन लीन्ह्यो॥
दो० सीता केर बिलाप सुनि सचराचर सब जीव।
भये बिकल भूली सबहि तनमन सुधि बुधिहीव॥
छंद हरिपद॥ गृद्धराज रघुराज प्रियाको आरत रव सुनिपायो। राम राम कहि ताहि प्रचारत गगन पंथ धुकिधायो॥ ज्यों छूटे पविशक्र गिरिनपै मारुत बेग लजायो। त्यों करि क्रुद्ध गृद्ध अति आतुर जहँ रावण तहँ आयो॥ कवित्त॥ रे रे दुष्टरावण निलज्ज राजपतिचोर लंपट लबार क्षुद्र राव मद्यखोरमै। बाहुबीश शीशदश ईशके अशीश खीस जैहैं बिसौबीश जगदीश कोप घोरमै॥ जाहि ढीलि जानकी सुजानकी कुशल चाहि मान किन मानतजि जानकीश मो रमै। नातो करिहातो बिश्वनातो सब ठाढ़होहिं भागुरे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

न भागुहत आयो काल तोरमै ॥ चोंचन बिदारि अंग पोचहि प-छारि औनि औनिजै सुराखि थल ताहि फेरि डाव्यऊ। पौरुख प्र-बल पूरि दोहुन बिरचि युद्ध रामके प्रभाव पावँ गृद्धको न हाव्यऊ॥ मारिकै बिकल चोट चंगुलन चूरकरि मुकुट कोदण्ड पाणि आयु-धन छाँट्यऊ। भाग्यवन्त फेरि उठि रावण सक्रुद्धवीर काढ़िकै कृपानपैन पंखतासु काट्यऊ ॥ तोटकछन्द ॥ कटि पंखगिर्‌यो खग रुण्डमही। मुखसों करुणानिधि रामकही ॥ धनि गृद्धजु रामहि काजलर्‌यो। नहिं जीवत जानकि त्यागकर्‌यो॥ मुनि सिद्ध सराहत ध्यानअड़े। भगवन्त जटायुके भागबड़े ॥ दोधक छन्द ॥ रावणलै सियभाग सभीता। भूरि विलापकरै नभ सीता ॥ पर्वतपै सिय कीशनहेरी। दीनसुडारि पटै हरि टेरी ॥

दो० यहिविधि रावण जानकी हरिलैगयो पराय।
विपिन अशोक अशोकतरु तरलै राख्यसिजाय॥

बोला तब सियसों अनुरागी। करहु न शोच नरनके लागी ॥
उनमें कछु प्रभाव नहिं भूरी। मैं समुझत उनको करिधूरी ॥
दिहिनि खेदि घरते पितु माता। भरमतफिरत विपिनद्वउभ्राता॥
नहिं जानी क्यहि करम प्रभावा। तुमकरि नाह नरनको पावा ॥
अब जाग्यउ तव भाग सुसीता। जो आइउ हमरे सँगप्रीता ॥
देखहु मोर प्रभाव अपारा। मोसम प्रबल न कउ संसारा ॥
मेरकहा जो करु हितमानी। तौतुव चेरिकरौं सब रानी ॥
यहिविधि खलबहुसिखवनदीन्हा। पै सिय कान न सो कछु कीन्हा॥

दो० ज्यों पत्थरमें काँचको खण्ड प्रहारै कोय।
ताहि न व्यापै चोट पुनि चूर आपुही होय ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेआरण्य काण्डेमायासीताहरणवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो॰ जाको नाम सुध्यावतै अशुभौ शुभ सब होत।
भाग्यवन्त स्वइ राम सिय बन्दौं भवनिधि पोत ॥

गये लषण जहँ राजिवनैना। अनुजै लखि बोले प्रभुबैना ॥ तात बात कीन्हेउ भलिनाहीं। आयहु छोड़ि सीय बनमाहीं ॥ परत जानि म्वहिं अशकुनदेखी। काहुहि खल सियहरेउ विशेखी ॥ कह्यो लषण कछु मोर न दोषा। पठयो हठि स्वामिनि करि रोषा ॥ तब सबन्धु चलि आश्रम आये। शून्यकुटी नहिं सीतहि पाये ॥ भये विकल जस पूरुष कामी। नरइव चरित करत जगस्वामी ॥ चले सियहि खोजत द्वउबीरा। गिरिसर खग मृग बन द्रुमतीरा ॥

इन्द्रवज्रा छन्द ॥ हेहे खगाली मृगभृङ्गश्रेनी। देख्यो सु सीता मृगमंजुनैनी ॥ हेहे सुसीता मम प्राणप्यारी। गैली कहाँको द्वय मोहिं न्यारी ॥ जौने सनेहै तजि आर्य्यगेहू। आई हमारे सँग तौन नेहू ॥ कीन्ह्योकहा सो ज्यहि आजुमोहीं। दीशौ न सीता कृत खोजतोहीं ॥ कैसे व्यथा मो सहिजात तोपै। हेहे सुप्रीता प्रगटौन जोपै ॥ मैंतौ सुकीन्ह्यो कहनै तुम्हारे। गौन्यो तुरन्तै मृगहेम मारै ॥ काहे सुप्यारी अब कोहकीन्ह्यो। जो बीच बनमें तजि मोहिंदीन्ह्यो ॥ ऐसेहि श्रीराम विलापकरतै। आयो जहाँ गृद्धपरा कहरतै ॥ शोचै सकोचै मन दुःखदाग्यो। मेरे न एकौ कछु हाथलाग्यो ॥ हरिगीतिका छन्द ॥ लाग्यो न मेरेहाथ एकहु बीति बपु बादिहिं गयो। जिमि कल्पबेलि सुजन्मि कानन उपजि दव दाहत भयो ॥ बरबस निशाचरनाथलैगो हठि न सीतहिं राख्यऊ। देख्यउ न मरतहु राम छवि सियसुधि न प्रभुसन भाख्यऊ ॥ योहीं जटायू कर मींजि शोचै। मोसों अभागी भव कौन पोचै ॥ ताही समै सो द्वउबंधु आये। देखे सु गीधै जल नैन छाये ॥ छाये विलोचन बारि गीधहिं गोदकरि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राघव लिये। अति प्रेम सींचे सलिल अश्रुन मनहुँ जल आधो दिये॥ हे लषण गीधहिं मिलत बनमें मरण पितु नहिं जान्यऊ। सहि सक्यउ सो बिधि कठिन नहिं बड़पक्ष आजु सु मान्यऊ॥ बोल्यो जटायू तब धीर धारी। कीन्हीं दशास्या गति या हमारी॥ सी तैं सु लैगो दिशि दक्षिणै को। राख्यों सु प्राणै तव दर्शनै को॥ छंद॥ तव दरश लागि सु प्राण राख्यों चलन अब चाहत सही। कह राम राखहु तात तनु अतिधीर मन डोल्यो नही॥ अवलोकि प्रभु मुख चंद्रछबि बर बचन गीध सुनाइहौ। यहि झूंठ जीवन लागि रघुपति समय धोख न लाइहौं॥ दुर्घट्ट जाको है नाम अंतै। पैहौं कहां फेरि सुभागवंतै॥ जानौ सुभावै प्रभु आपु नीकै। पालौ नतै मेटि बिकारही के॥ हियके बिकारन मेटि रघुपति प्रणत प्रतिपालय लियो। शुभकर्म हीन मलीन म्वहिं पितु आपने पटतर दियो॥ जो त्रिजग योनि कुजाति गृध्द सुखाय परआमिष जियो। भगवन्त आज समाज सुकृतिन मोहिं सब ऊपर कियो॥ बाणी सुकानै मुख नाम रूरो। रूपै सु चाखौं चख मोद पूरो॥ मोसों सुभागी जग कौन जायो। जाको सुअंकै निज रामलायो॥ लाये सुअंकहि कहत रघुपति तात कछु दिन जीजिये। अवलोकि सेवा सुवन मोकहँ तात को सुख दीजिये॥ रहि दिव्य देह सुइच्छया जग मरण जीवन लीजिये। दै दरश हरि हर सुयश गाय कृतार्थ सबको कीजिये॥ श्रीरामबाणी सुनि आस्यहेरी। बोल्यो जटायू मृदुबैन फेरी॥ मेरे सुमबैं सम फल्लचारी। हांवैं जु राघो कहियो बिचारी॥

दो० सुनि प्रभु बचन जटायुके मौन न उत्तर दीन।
भाग्यवंत रघुबीर सम को कृपालु परबीन॥

पुनि कृपालु बोले मृदुबानी। तात सकल तुम सुकृत कि खानी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

परहित चहेउ तात तुम तासू। पायउ फल मुनि दुर्लभ आसू॥
जाहु धाम मम त्यागि शरीरा। देउँ कहा तुम्हरे सब तीरा॥
सीता हरण पितासन जाई। कहेउ न तात सुनत दुख पाई॥
राउर पुण्य प्रताप सुआगी। दहिहौं शत्रु बिलम्ब न लागी॥
कुल समेत सुर सभा हवाला। कही आइ आपै दशभाला॥
सुनि प्रभु बचन गीध हरषाना। ह्वैकै तुरत रूप भगवाना॥
करि करपुट अस्तुति अनुसारी। जै जै जै रघुबंश खरारी॥

त्रोटकछंद॥ जय राम कृपा सुख धामहरे। परमातम पूरण ब्रह्म परे॥ नवनीरद गात प्रकाशमई। प्रति अंग प्रभा बहु कामछई॥ अरुणाम्बुज लोचन चारुमुखं। अवलोकनि हारण दासदुखं॥ भुजदंड प्रलम्ब प्रचण्ड नितं। कर शायक चापधरं अजितं॥ ज्यहि पावत पार न वेद बकैं। गुण गावत शारद शेष थकैं॥ ज्यहि आदिहु अंत सुमध्य नही। सम दृष्टि चराचर व्याप्त मही॥ भव भञ्जन रञ्जन दिव्य निते। प्रणतारति मोचन भक्त हिते॥ करुणाकरि सो चितते न खसौ। भगवन्त हृदय प्रभु नित्त बसौ॥ गीतिका छंद॥ यहि भांति अस्तुति गीध करि हरिभक्ति अबिरल पायकै। हरिधाम गो अभिराम हर्षित राम पद शिर नायकै॥ रघुबीर तासु क्रियापुकर पितु सरिस कीन बनायकै। भगवन्त ऐसे प्रभुहिं काहेन भजसि मनचित लायकै॥

गृद्ध क्रिया करि पुनि द्वउ भाई। चले सियहि खोजत सब ठांई॥
मिलेउ कबंध असुर तहँ रहेऊ। द्वउजन खैंचि खान जब चहेऊ॥
तब रघुबीर कीन त्यहि घाता। कहेसि सकल निज शाप कि बाता॥
मैं प्रभु पूरुब को गन्धर्बा। विद्या रूप रहौं अति गर्बा॥
दुर्बासा की हांसी कीन्हा। तिन तब कोपि शाप म्वहिं दीन्हा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होसि जाय राक्षस कुरूपा। तव उद्धार हाथ सुरभूपा॥
भयउँ असुर अति करौं उपद्रे। मारेउ इन्द्र कोपि तब बज्रे॥
गयउ शीश तब पेट समाई। व्याकुल गिरेउँ धरणिपर आई॥
पुनि बश दयाकीन सुरनाहैं। योजन भरि मम लम्बी बाहैं॥
बाहँन बीच परै जो आई। खाउँ ताहि नहिं आन उपाई॥
यहिबिधि कहिनिज कथा सुनाई। राम कृपा आपनि गति पाई॥
पुनि प्रभु चले अनुजयुत आगे। शवरी कै सुधि करि अनुरागे॥
ज्यहि त्यहि पूँछत राजिवनैना। क्यहिवन बसत शवरिसुखऐना॥
जासु भक्ति सुनि श्रवण बिशेखी। कल न परत म्वहिंकबधौं देखी॥

दो० यहां प्रात शवरी उठी फरके शुभ सब अंग।
सगुन सुहावन देखि मन परमानंद उमंग॥
करत मनोरथ बिबिध बिध पुलक प्रफुल्लित गात।
आजु हमारे आइहैं राम लषण द्वउ भ्रात॥

कवित्त॥ ऐहैं घर मेरे आजु पाहुने लषण राम प्राणन अधार सो निहारि सुक्ख पाइहौं। पूजित अजादि सुर शङ्कर सरोज पायँ प्रेमसों पखारि पूजि हीय सों लगाइहौं॥ जासु छवि देखिबेभिलाषन मरत देव सोई छवि आजु इन नैनन बसाइहौं। भाग्यवन्त पाय के गरीबको निवाजबान रामस्रो सुभाय सब लाहुने अघाइहौं॥ झारि तृण झोपड़े सुबारि भरि कुंभधारि दोनन सँवारि भरि धरे फल आनिकै। खन भौनजावै खन द्वारको सिधावै खनखन झाँकि आवै पंथ भूपर सुपानिकै॥ खन अनुरागे तनमन प्रेम पागे खन चूनन सुलागै फल फूलन सुजानिकै। भाग्यवन्त राघव सबंधु आपु गये आय शावरीके भौन प्रेम प्रण पहिचानिकै॥ शावरी बिलोकि छवि साँवरी मगन प्रेम धायकै सरोज पायँ जाय भई लागती।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रेमपट पाँवड़े अरघ देत आँसुनै सु आश्रमै ल्यवायलाय मोदपुंज पागती॥ धोयकै चरण चारु आसनै पधारि दिव्य दोनन सुआनि फल दीन्हे अनुरागती। भाग्यवन्त सानुजै श्रिराम सो सराहि खात शावरी कि भागिको न भागि जगजागती॥

दो० जो प्रभु पूरण ब्रह्मपर शिवको अगम लखात।
स्वइप्रभु शवरीसों मुदित माँगि माँगि फलखात॥
धन्य धन्य भगवन्त जग शवरी को बड़भाग।
ऋषि आश्रमन बिहाय ज्यहि खाये प्रभुफलशाग॥

करि फल अशन अँचै रघुबीरा। उठे हरषि भंजन भवभीरा॥
तब करजोरि शबरि मृदुबानी। बोली सुनहुँ राम सुखदानी॥
मैं योषित शुभ कर्मन हीना। पापपरायन कुटिल मलीना॥
प्रभु करि कृपा लीन अपनाई। करौं कवनविधि बिनय बड़ाई॥
कह रघुपति भामिनि जगमाहीं। तो कहँ कछु दुर्लभ है नाहीं॥
भक्तिमोरि तैं हृदय दृढ़ाई। ताते मुनि दुर्लभगति पाई॥

दो० अबकछु सीतासुधि सुखद जो पाये कहुँहोय।
पंपासर प्रभुजाउ तहँ कहिहि सुगर सुधिजोय॥
असकहि प्रभुपद पद्मकरि बारहिंबार प्रणाम।
योगअग्नि तनु त्यागिकै गई रामके धाम॥
निजकर प्रभु ताकी क्रिया कीन्हीं मातु समान।
भाग्यवन्तअसस्वामितजि कहहुभजैक्यहिआन॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे आरण्यकाण्डेजटायुउद्धरणशवरीकथावर्णनोनामषष्ठमोऽध्यायः ६॥

कुण्डलिया॥ पूरण ब्रह्मप्रकाशमय निराकार निरखेद। अज अलेख अविकार ज्यहि पार न पावत वेद॥ पारनपावत वेद श्रमित

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सहसानन गाई। करुणासिन्धु कृपाल स्वई भक्तनहित आई॥ आइ धस्यो नरदेह दलन भवभय दलकूरन। भाग्यवन्त प्रणमामि राम रघुपति प्रणपूरन॥

दो॰ शवरिहिं सुथल पठाइकै राम लषण दउबन्धु।
चले बहुरि खोजत सियहि नरकेहरि बलसिन्धु॥
दुख सुखरहित सु एकरस गुणसागर सुखधाम।
बिरहीइव विलपत विकल गये पंपसर राम॥
सन्तहृदय निर्मल यथा पूरण जल त्यहि माहिं।
बांधेघाट सुचारि वर कहत बनै छबि नाहिं॥

हरिपद छन्द॥ फूलेताल कमल बहुभाँतिन भ्रमरमाल गुंजारैं। बोलत चक्रवाक खग संकुल सुनत ध्यान मुनिटारैं॥ चारिहुदिशि बनबाग सुहावन मनभावन तरुफूले। डोलत त्रिविध वायु सुखदायक बोलत खग अनुकूले॥ मुनिगण विपुल कुटी तहँ छाये बसहिं सदा अनुरागे। देखि राम सुखधाम सरोवर सहित अनुज सुखपागे॥

दो॰ करि मज्जन सज्जन सुखद तरुछाया भलिदेखि।
अनुजसहित बैठे तहाँ राम कृपाल विशेखि॥
सुरमुनि सकल सुपाय सुधि आये जहँ रघुराय।
नानाविधि करि करि विनय गये भवन शिरनाय॥
नारदमुनि ताही समय करत रामगुण गान।
प्रेममगन आये तहाँ राजत जहँ भगवान॥

करत प्रणाम राम उर लाये। पूंछि कुशल आसन बैठाये॥
बहुबिधिमुनिहि विनयप्रभुकीन्हा। तब नारद अस बोलय लीन्हा॥

सवैया॥ कोशलराज कुमार उदार अपार सदा यशवेद पुकारे।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दीनदयाल शिरोमणिस्वामि प्रसिद्ध सदा जनके हितकारे॥ देहु यहैवर मांगतहौं रघुबीर सबैगति जाननहारे। रामबड़ो सब नामनमें भगवंत बसौउर नित्तहमारे॥

सुनि मुनि बचन राम सुखपाये। एवमस्तु कहि हृदय लगाये॥ पुनि करजोरि मधुर मृदुबानी। बोले मुनि प्रसन्न प्रभु जानी॥

सवैया॥ प्रेरयउराम जबै निज मायहि मोह्यउ मोहिं तबै जग-तारन। चाह्यउँ मैं सुविवाह करै प्रभु दीन करै नहिं सो क्यहिकारन॥ सो प्रभु भेद बुझायकहौ ज्यहि होय हृदै मम खेद निवारन। राजि-वलोचन राम तुम्हैं बिन देखिय और न दास सँभारन॥ रोलाछंद॥ सुनिबोले रघुनाथ नाथ जेभक्त हमारे। भजहिं मोहिं वसुयाम काम तजि प्राण पियारे॥ करौं सदा तेहित्रातु यथा बालक महतारी। लेत अनल अहिगहत शिशुहिं लखिधाय निवारी॥ प्रौढ़ भयेसोइ बाल प्रिया मातहिं बरुआछे। पै नहिं तैसी बात रही जैसी कछुपा-छे॥ तिमि प्रियज्ञानी भक्त मोहिं शिशु प्रौढ़समाना। दासअमानी प्रीव यथा बालक अनजाना॥ ज्ञानिहि निजबल रहत अमानिहि केवल मेरा। काम क्रोध रिपु प्रबल दुहुन पै करतदरेरा॥

दो॰ अस बिचारि जे विदुषवर भजहिं मोहिं निजशक्ति।
पायहु ज्ञान सुजानपर तजत न मेरी भक्ति॥

सो॰ काम क्रोध मद लोभ प्रबल मोह सेना सकल।
माया मै तिय शोभ तिनमहँ अति दारुण दुखद॥

सवैया॥ श्रीमुनिराज पुराणकहैं श्रुतिसंतनको सतमत्त यहीहै। मोहमई घन काननको सुखदायकनारि बसंत सही है॥ त्यों भग-वंत जपादिक नेम जलाश्रय पूरण पुंज मही है। ताहि विशोषत नारि सु है ऋतु ग्रीषम राखत नाम नही है॥ कामरु क्रोध मदा-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दिक मत्सर भेकनको मुद संकुलदाई। है बरषाऋतु नारिसही दुर-वासनकूमुद को समुदाई॥ दायकहै मुदशर्द यथा सरसीरुह बृन्द सुधर्म्म सुहाई। देति तिन्हैं दुखदारुण त्यों प्रमदाहिमि ह्वै मति-मन्द सदाई॥

दो० नारि शिशिरऋतु पाइकै पलुहै ममतु जवास।
कलुष उलूकन को सदा निशिसम देत सुपास॥
बुधि विवेक बलशील भख लहि सनेह जलमाहिं।
बनशीसम बेधत तुरत नारि कहत बुध आहिं॥

सवैया॥ औगुणमूल सदै प्रतिशूल करै प्रतिकूल सुधर्म्म न चीन्ह्यो। नारिसनेह महा बनमें परि भूलि सुपंथनके दुख लीन्ह्यो॥ त्यों भगवंत कहै सदग्रन्थ कलंकन नारि मतो क्यहि दीन्ह्यो। सोइ मुनिराज बिचारि तुम्हैं विष पीवत देखि निवारण कीन्ह्यो॥

दो० रामचन्द्रके बचन सुनि मुनि नारद सुख पाय।
ब्रह्म भवन गवने मुदित बार बार शिर नाय॥
रामसरिस तिहुंलोकमें को कृपालु निरहेतु।
ताते सब छल छांड़िकै भजहु रामकरि चेतु॥

कुंडलिया॥ नाहीं ह्वै करार कछु या तनको क्षणएक। ताते भज सियरामको भजिले सहित बिबेक॥ भजिले सहित बिबेक गये समया नहिं पैहै। चौरासी दुखदेखि हाथ मलिमलि पछितैहै॥ पछितैहै बहुभांति समुझु अबहीं मनमाहीं। भाग्यवंत बिनुराम हितू आपन कोउ नाहीं॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेआरण्यकाण्डेपंपातटश्रीरघुनंदननारदसमागमवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७॥

इतिश्रीआरण्यकाण्डसमाप्तम्॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भक्तिशिरोमणि किष्किन्धाकाण्ड।

दोहा ॥

गुरु गणेश गिरिजा हरहि सुमिरि राम सिय ध्याय।
किष्किंधा शुभ काण्ड अब कहौं सकल सुखदाय ॥

सवैया ॥ सत्य सुशील दया गुण सागर आगर नीति प्रणै प्रति पालक। रञ्जन साधु महीसुर सज्जन भञ्जन बैरिन दुष्टन घालक ॥ भक्त शिरोमणि वीर बली शरणागत पाल सदै दुखदालक। ध्यावतहैं भगवन्त तुम्हैं जन जानि द्रवो सुसमीर के बालक ॥

दो० नारद मुनि हरिभक्ति जब पाइ गये पितु धाम।
तब सानुज आगे बहुरि चले विपिन श्रीराम ॥
ऋष्यमूक पर्वत निकट जब दरशे द्वउ भाय।
लखि सुग्रीव सभीत है कह हनुमन्त बुलाय ॥
अति सुन्दर द्वै पुरुष ये रूप शील बल गेहु।
आवत सो धरि बटु बपुष जाइ मर्म तुम लेहु ॥

सो० सुनि सुकण्ठ के बैन पवन तनय धरि विप्र तनु।
जाय निकट छबि ऐन माथ नाय बोले बचन ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सवैया॥ श्यामल गौर मनोहर मंजुल कोमलगात सुभाय सुहाये। बीर सुधीर लजावन मैन सुखैन सुक्षत्रिय रूप बनाये॥ कारण कौन फिरौ बनमें हिमि मारुत घाम रहे तन ताये। सो भगवंत कहौ प्रभु आपु कहां त्यनि आवत कौनके जाये॥ श्रीदशरत्थ के पुत्र उभै हम राम सुलक्ष्मण नाम हमारो। आयसु तात चले बन को सँग सुन्दरि नारि रहीं मनहारो॥ सो हरि निशिचर लीन यहां हम खोजत ताहिन शोध न पारो। विप्र कहौ अब राबरे कौन हौ काज कहा बन मांझ तुम्हारो॥

दो० सुनि प्रभु बचन बिचारि निज बालपनाके नाथ।
परेउ चरण अति प्रेमबश पवनतनय धरि माथ॥
तब रघुबीर उठाय कै लाये हृदय सप्रीत।
परम प्रेम पोषे कपिहि कहि मृदु बचन बिनीत॥

कवित्त॥ नाथ कीशनाथ यहि शैलपै करत बास रावरो सो दास ताहि गति है न आनकी। बन्धु त्रास ब्याकुल कृपाल कै सुप्रीति ताहि कीजिये निवाज लाज राखिये सुबानकी॥ भाग्यवन्त पायकै सुसिद्धि काज वानरेश आपहू सुसाधि काज मानिये प्रमानकी। बोलि कीश संकुल पठाय देश देशनै सुदेइगो मिलाय खोज रावरेहि जानकी॥

दो० यों कहि सादर बन्धु द्वउ लीन्हें पीठि चढ़ाय।
लाये जहँ सुग्रीव लखि परे चरण तल धाय॥
सूर सुवन दशरथ सुवन जातवेद दै बीच।
पावन परम सुहावनी कीन्ही प्रीति अबीच॥

तब सौमित्र कही सब बाता। ज्यहिबिधिबनहिंचलेजनत्राता॥
सियगति सुनि भूषण पटआनी। दीन प्रभुहिं सुग्रीव सुजानी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हृदयलाय अति शोचहिकीन्हा। कहिसुकंठ बहु धीरज दीन्हा॥
नाथ करहु जनि शोचहि भारी। मिलिहैं तुमहिं विदेह कुमारी॥
दो० सखा तिहारे बचन सुनि. भयो शोच मम नास।
कहु कारण अब आपनो क्यों कृत बन में बास॥
मैं अरु बालि नाथ द्वउ भाई। भै उत्पति जिमि कहौं सुनाई॥
ब्रह्मा आँसु बुंद ते जायो। रिच्छराज कपि एक कहायो॥
मज्जत सो सर एक मँझारी। ह्वैगो तुरत दिव्य तनु नारी॥
देखि इन्द्र मोहित मन हरेऊ। खस्यो बीज कच ऊपर परेऊ॥
त्यहि ते भयो बालि कपि बीरा। मम उत्पति सुनिये रघुबीरा॥
रविकर बीज खस्यो त्यहि ग्रीवा। ताते मैं प्रगट्यों सुग्रीवा॥
रिच्छराज पुनि वैसहि भयऊ। बानररूप प्रथम जिमि रहेऊ॥
तब ताको बिरञ्चि सुत जानी। किष्किन्धा दीन्हीं रजधानी॥
दुन्दुभि और मयावी नामा। मय सुत असुर रहे बलधामा॥
प्रथमहिं बालि दुन्दुभी मारा। मायावी स्वइ बैर सँभारा॥
अर्धराति पुर आइ हमारे। बालिहि युद्ध हेत ललकारे॥
धायो बालि महूँ सँग धारा। भागि पैठ गिरि गुहा मँझारा॥
म्वहिंबदि बालि अवधि पखवारा। मासदिवसलगि किहेउँनिहारा॥
निकस्यो रुधिरमृतक त्यहिजानी। आयों भवन भीति मन मानी॥
मंत्रिन्ह पुर भूपति बिनु चीन्हा। बरबस राजतिलकम्वहिंदीन्हा॥
दो० ताहिनिधन करि बालिपुनि आयोमोहिं बिलोकि।
धाम बामधन छीनि म्वहिं खेदेउ बहुबिधि ठोंकि॥
ताके डर रघुबंश मणि फिरेउँ विकल सब ठाँय।
ऋषि मतंगकी शाप बश इहाँ न सोसक आय॥
॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ जबै दुन्दुभी शत्रुको बालि मार्‌यो। दियो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

फेंकि लै वाहि सो अत्र पाख्यो ॥ ऋषै देखिकै कोपि यों शाप दीन्ह्यो। ह्वै भस्म आवै इहाँ जौन कीन्ह्यो ॥ सवैया ॥ सुनि सेवक को दुख दीनदयाल सभीतन पाल कृपाल सही। फरके भुजदण्ड प्रचण्ड उभै अवलोकि सुकण्ठहि कोपि कही ॥ मरिहौं शर एकहि बालि बली। बिन औगुण जो उर तोर दही। बचिहैं नहिं प्राण सु सत्य कहौं शरणागत जो बिधि शम्भु गही ॥ कबित्त ॥ होय दुख दुखित सुमित्र दुख देखि जोन पातक बिलोकि ताहि दृग न निहारिये। आप दुख मेरु को समान रज लेखियत मित्र दुख रजको सुमेरु ज्यों सिहारिये ॥ काय मन बचन प्रतीति प्रीति मित्र मैंन जानिये कुमित्र ताहि दुखदैं बिचारिये। भाग्यवंत जाके मनसाँचो न सनेह तौन मित्रन किमित्रता में मित्र खाक डारिये ॥ भाषै सत्यसार को न राखै छल चित्तलेश औगुण दुरायगुण मित्रहि प्रचारिये। देवत निशङ्क ह्वय लेवत सु बस्तु ताहि जेंवत जेंवाय गुह्य वक्ति प्रक्ष कारिये ॥ आपद के काल करैं सौगुन सनेह जाल बलमैं सदैव तासु हितही बिचारिये। भाग्यवन्त भाषत पुराण वेद ग्रन्थमाल ऐसे शुचि मित्रन पै प्राण वारि डारिये ॥

दो० सेवक शठ भूपति कृपण कपटी मित्र कुनारि।
दुख दायक नित जानिये शूल सरिस ये चारि ॥
सखा हमारो पाय बल त्यागौ शोच समाज।
सब प्रकार मैं काल्हिही करिहौं तेरो काज ॥

सवैया ॥ बालि महाबल शालि अहै त्यहि मारनहार न दूसर कोई। दुन्दुभि अस्थि समूह ढहै शर एकहि बेधय तालय जोई ॥ त्यों भगवन्त सु बात यहू बलअर्द्ध लहै रिपु सन्मुख होई। राघवजी इति काजसरै बर बालिहि मारिसकै भट सोई ॥ गीतिका छन्द ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जब बालि मार्यो दुन्दुभी सुनि शक्रमन मुद मानिकै। फल ताल
पठयें सात नारद हाथ दीन्हे आनिकै॥ इन खात ह्वैहै अजर अमरहु
बालि मन सुख छायऊ। धरि न्हान लाग्यो उरग यक तहँ आइ सा-
तहु खायऊ ॥ लखि बालि कह तरुताल जामहिं सात तव तनु
फारिहै। सुनि भुजग बोल्यो तोहिं मारिहि मोहिं जौन उबारिहै॥

दो० सर्पाकृत रघुबंशमणि सप्तताल स्वइ जान।
को अस सुभट त्रिलोक महँ बेधिसकै यक बान॥
कह प्रभु मोहिं देखाइयो कहाँ ह्वैं सो तार।
बेधौं एकहि बाणही नेकु न लावौं बार॥

त्रोटक छंद॥ रघुबीर जबै यह बात कही। शुभ ग्रीव भयो लय
जात तही॥ दशधूह जु दुन्दुभि अस्थि रहे। पद अंगुठ बाम श्रि-
रामढहे॥ दश योजन पैं स्वइ जायगिरे। शर एकहि तालन बेधि
फिरे॥ गत शाप भुजंग प्रमोद भरे। गवन्यो कहि जै रघुबीर हरे॥

दो० जो निज माया प्रबल करि बेधे सब जग गात।
सात ताल बेधन कहा ताको है बड़ि बात॥

सवैया॥ राम प्रभाव बिलोकि महा मनमोद भयो शुभ कंठहि
भारी। भै परतीत सु बालि बधे हित दूरिगई दुचिता चितसारी॥
बारहि बार गहे पदपंकज पूरण प्रेम बिलोचन बारी। नाथ अडोल
भयों अब मैं भगवन्त कृपा रघुनन्द तुम्हारी॥ संपति पुंज प्रिया
परिवार पसार जितो जग कारण मोहै। शत्रु न मित्र दुखौ सुखहू
सब स्वारथ ना परमारथ कोहै॥ ये सब रामहिं भक्तिके बाधक हित्त
न आपनके जग जोहै। त्योंभगवन्त बिहाय सबै यक राखिहौं नेह
सु रावरे सोहै॥

सो० बालि परम हित मोर ज्यहि प्रसाद भंजन बिपति।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोशल राजकिशोर मिल्योमोहिं करुणा भवन ॥
दो० सखा कह्यो सो सत्य सब पैबच मृषा न मम।
गिरिजा नटमरकट सरिस सबहि नचावत राम ॥

भुजङ्गप्रयात छन्द ॥ तबै बोलि श्रीराम सुग्रीवसाथै। चलेसाजि शारंग नाराच हाथै ॥ पठायो सुकंठै पुकास्यो सो बाली। सुसुन्तै चल्यो कोपिकै वीरहाली ॥ परीपायँ तौ बालिके नारि तारा। मिल्योजाय सुग्रीव रामै उदारा॥ तिन्हैं बैरकै नाथ ना पार पैहौ। रहौ मानि क्योंजाय प्राणैगँवैहौ ॥ कह्यो बालि है लाभ दूनों प्रकारै। प्रिया शोच ऐसे समय तू न धारै ॥ छन्द नाराच ॥ चल्यो सवेग भाखियों विलोकि भानुजातही। भिरे उभै सक्रुद्ध बालि मारि मुष्टि भ्रातही॥ कियो विहाल भूरिसो सुकंठ हारि भाग्यऊ। प्रहार मुष्टि बालिको समान बज्रलाग्यऊ॥ कह्यो कृपालु मैं जु बालि बन्धुमोन आरि है। स्वरूप एक बन्धु द्वौ सुभेद हौं न मारि है॥ कृपासु दृष्टि हेरि फेरि पाणिमेलि मालही। पठाइयो बहोरि दैबलै विशाल जालही ॥ लग्योसुहोन युद्ध क्रुद्ध बीर दोय भावते। श्रिरामओट वृक्ष हेरि चोट क्यों बचावते॥ जबै श्रिराम जानि यों सुकंठ हीय हास्यऊ। द्रुमाड़ बाणताकि बालि हीयमांझ मास्यऊ॥ पस्यो बिकल्ल बीरभूमि झूमि खाय घावही। उठ्यो बहोरि ठाढ़ अग्र देखि राम चावही ॥ श्रिरामश्याम रूपको सुधारिहीय फेरिकै। कह्यो कठोर बैन बालि राम ओर हेरिकै ॥ सवैया ॥ रामप्रभाव अपार सुन्यो तव देख्यों कर्म्म किरातन केरो। व्यापक ब्रह्म चराचर में समदृष्टि सदा सब काहुहि हेरो ॥ है नहिं अप्रिय कोउ तुम्हैं रस एक सदा श्रुतिसन्त निवेरो। सो भगवंत कहौ प्रभु क्यों हित मानि सुकंठ कियो बधमेरो ॥ हैंहम निर्बल केर सदाहित मानिनको गहि मान बिदारी। तैं अभिमान

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भशोकपिकुंजर नारि सिखावन कानन धारी ॥ बन्धुबधू प्रियनारि किये शठ कौनहै पातकि तोसम भारी । त्यों भगवंत विचारु भले शरणागत पाल है बानि हमारी ॥ त्रोटकछंद ॥ अजहूं प्रभुमें युत पापसही । गति अन्तसमय ज्यहि आपरही ॥ कहि नामयदा भव पार लहैं । अवलोकत सो किमि पापरहें ॥ बंधुछन्द ॥ राम कह्यो तब राखहु प्राना । बोलेउ बालि सुनौभगवाना ॥ जाहित यत्नकरैं मुनि नाना । सेवत जीव लहैं निरबाना ॥ दीनदयाल कृपा सुख राशी । पूरणब्रह्म अजय अविनाशी ॥ सो रघुबीर खड़ो मम आगे । राखउँ प्राण कहा सुख लागे ॥

दो० को अस मूरुख मंदमति कहियो राम सुजान ।
जो शठ सुरतरु काटिकै रूंधै बबुर अजान ॥

सवैया ॥ नाथ मैं मांगतहौं करजोरि कृपाकरि एक यहै बरदेहू । जन्म जहां जेहि योनि विषे वश कर्म लहौं गुरु नीचन गेहू ॥ और न है अभिलाष कछू भगवंत तहां तहँ चाहत येहू । राघवजी तव पंकजपायँन सेव बढ़ै नव नित्त सनेहू ॥

दो० अंगद मेरो पुत्र यह है मोसम बलवान ।
ताहि आपनो दास प्रभु कीजै कृपानिधान ॥
अस कहि रामहिं राखिउर बालि गयो हरिधाम ।
गिरिजा श्रीरघुबीर सो को कृपाल विनु काम ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेकिष्किंधाकाण्डेश्रीरामचन्द्रसुग्रीवमित्रताबालिबधवर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दो० रामचरण आश्रित करण संसृत सागर पार ।
भाग्यवंत बंदौं चरण पुनि पुनि पवन कुमार ॥

बरवै छंद॥बालि मरण सुनि ब्याकुल सब पुरलोग । धाये तहँ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लखि तारा उर अति शोग॥ बहुबिधि रोवत जोवत मुख भरतार। छूटे केश न रहि तन बसन सँभार॥ सवैया॥ मैं सिख देत रहिउँ गृह सूरि कहा बश काल न सो श्रुति आन्यो। पूरणब्रह्म चराचर नाथ तिन्हैं वश मान है मानव मान्यो॥ त्यागि सबै बुधि चातुरता धुकि धाय सु बैरहि राम सों ठान्यो। पायो कियो फल आपन कंत भयो अब अंत अनंतहि जान्यो॥ लीला छंद॥ ताराको बिकल जानि। बोले प्रभु कमलपानि॥ कबित्त॥ बायू व्योम पावक स-क्षोणि बारिपञ्च ये सुतत्त्व मैं शरीर जो प्रगट ताहि जोवती। जीव जो सुनित्य भृत्य ईशको न नाश तासु आसुके बिचार जागु राग रैनि सोवती॥ मीलन बियोग दुःख सुख सो समान जानि मोहही बिहाय क्यों न मैल भ्रम धोवती। भाग्यवंत आलुही सुज्ञान त्यागि शोच पोच बस्तुही अनित्य लागि बादि क्यों तु रोवती॥ पद्धरी छंद॥ सुनि राम बैन बर मारतंड। गयो तिमिर ज्ञान प्रगट्यो अखं-ड॥ कीन्ही प्रणाम पद पद्म लागि। लीन्ही सुभक्ति बर परम मांगि॥ तब सुकण्ठ प्रभु कहे सप्रीती। मृतक कर्म कीन्हें जसि रीती॥ राम कह्यो अनुजहिं पुर जाई। सुग्रीवहिं नृप करो बजाई॥ तुरतहिं लषण चले पुर आये। नगर लोग द्विज वृन्द बुलाये॥ सुगरहिं दीन राज सजि साजू। बालि तनय कीन्हें युवराजू॥

सवैया॥ राम गरीब निवाज सदै शरणागत पालक पुंज प्रभा-ऊ। जो बिन काज द्रवें जनपै बिरदावलि वेद पुराणन गाऊ॥ त्यों भगवन्त सनेह लिये जग को न सराहत शील सुभाऊ। राम सो कौन कृपाल बियो जिन कीन सुकण्ठहिं रङ्क ते राऊ॥

पुनि सुकंठ सँग लिये अनन्ता। आये जहँ राजत भगवन्ता॥ सुग्रीवहिं प्रभु निकट बुलाई। राजनीति बहु भांति सिखाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कुंडलिया॥ पाल्यो प्रजहिं समान सुत सुजनन को सुखदेव। दण्ड करब दुष्टन प्रबल देश कोश सुधि लेव॥ देश कोश सुधि लेव शत्रु पै करब न दाया। धर्म धस्यो दृढ़ ताकि कस्यो सँग मित्र-न माया॥ मानि मयासिख सत्य कुपथ कबहूँ नहिं चाल्यो। भाग्यवन्त श्रुतिरीति समुझि सन्तत प्रतिपाल्यो॥

सो० अब सुनु सखा सुजान जाहु भवन अंगदसहित।
करेहु राजकल्यान भूल्यो जनि मम काजही॥
मैं इत गिरिपरछाय बरषाभरि रहिहौं निकट।
बर्ष चतुर्दशतांय पुर न जाउँ आयसु जनक॥
सुनि सुकंठधरि चैल करि प्रणाम गवने भवन।
राम प्रवर्षणशैल आय बासकीन्हे हरषि॥
राम रहनहित आय प्रथमहिं देवन गिरिगुहा।
राखे रुचिर बनाय मनभायक सन्तत सुखद॥

त्रोटक छन्द॥ बन राघव आयरहे जबते। प्रद आनँदपुंज भयो तबते॥ द्रुम भाँतिन भाँति सुफूलि फले। खगबृन्दसु बोलत बोल भले। अलिगुंजत पुंज प्रमोदपगे॥ अवलोकि प्रभा मनमैन ठगे॥ मुनिसिद्ध सदेव प्रसन्नहिये। खगभृंग कुरंग सुवेपकिये॥ प्रभु सेवहिं सादर शुद्धहिये। वसुयाम श्रिराम सनेहलिये। रघुनाथ कहैं बहुभाँति कथा अनुजै नृपनीति सुभक्ति यथा॥

दो० बरषाऋतु सुन्दर सुखद देखहु तात सुजान।
घनघमण्डि जनु यामिनी रविपै कीन पयान॥

कवित्त॥ घेरे नभ संकुल घमण्डि घनघोर जोर गर्जितर्जि घूमड़ि अँधेरीराति छैरही। कोपकरि यामिनी सुसाजिकै समूह सैन धाई जनु भानुपै गराजि हाँक दै रही॥ भाग्यवन्त वारिधनु इन्द्र ही

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तड़ितआसि बारिबुन्द बाणनकि बृष्टिजालह्वैरही। भागिगो सुभानु ह्वै सशंक पाय जैत रैन चैन सो निशंक त्यों सुखैनराज कैरही॥ आयो है मनोज साजि सैन चतुरंग संग कीन्ह्यो है निशंक जगडे-रहि सचावनै। श्यामल ससेत पीत रक्तन घटाके जाल दीन्हे हैं बितान तानि मंजुल सुहावनै॥ चंचल चमाक तड़िताके फहरात ध्वज दुंदुभी सो देतघन गर्ज घहरावनै। भाग्यवंत गावत बिरद बंदि मोरपीक धायो है मदनकोपि बिरही सतावनै॥ घेर्‌यो गिरि वृन्दन शतक्रधौं सुसाजि सैन बारिबुंद बाणभरि भूतल भरतुहै। मारै ताकि बज्रकहू डारत तड़पि गाज धावन से मोर गांव गांवन फिरतुहै॥ भाग्यवंत गावत सुयश चारु कोकिला सुमेघनकी गर्ज द्वार नौबति भरतुहै। तानि द्रुम बेलिन बितान त्यों सुजैति रिपु पाय कै अचलआपु राजही करतुहै॥ ऊदधि सकोप चढ़्यो भूपर कि साजि सैन दीन्हे करि मुद्रित न खोज महिपाइयो। नदीनद नारसो अपार परे बारिदल कीन्हे शरपंजर सुबाणबुंदछाइयो॥ बाणवसि बिज्जुनाद बीरनकी गर्जघोर मारुत झकोरजोर शोरको मचाइयो। हाहाकारहोत दिशि दशहू न जानिजात कंपमान भूमिगहि सिंधु कैधौं लाइयो॥सवैया॥चहुँओरते घोर छटाउनये घनघेरि कै दामिनि शोभसचै। झकझोरत पौन झकोरनशोर शिखंडि रहे चहुँओर मचै॥ पपिहा पिवपीव रटै न घटै कलकूकनि कोयल तेगगचै। बिरहीजन प्रान सतावन ज्यों ऋतु पावसकोपि चढ़्यो न बचै॥ घहरात घटा घनघोर घिरे तमतोम तमी महि ब्योम मढ़्यो। चमकै चपला चहुँ ओरनतें धुनि दादुरत्यों अतिजोर बढ़्यो॥ बरषै बरबुंदनबारि बहै बरबात डरात न जातकढ़्यो। भगवंत मनो दल साजि सुलै बिरही-न पै पावस कोपि चढ़्यो॥नवपल्लव बेलि प्रसूनलये द्रुमभारन झु-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मत शाखनये। सरितासरनार अपारभरे हरितावनि हेरत चित्तचये॥ चहुँओरते शोर मचाइ रहे गरजैं निशिद्योस घटाउनये। भगवंत अनंदित जीवसबै बरषावत ग्रीषम तापगये॥

दो० बरषाऋतु सुंदर परम सुखदायक सब चित्त।
अर्क जवासा बिरहिनिन दुखप्रद है यह नित्त॥
भयो बिगत बरषा शरद कीन्ह्यो बिश्व प्रकाश।
आयो जनु अवनिहि मिलन सजिसमाजसुखराश॥

किरीट छंद॥ सेतपुशाक समाजसजे नृप आयउ शर्दमिलै महिकारन। खंजन कोक सरोज मनोजग बाजिउठे नृपदूत अपारन॥ चंद्रक छत्र सजै शिरपावस पांवड़े नायदिये नदनारन। दैजगराज प्रणामसुकै गयो पावस कीन सुशर्द पसारन॥ सवैया॥ भूमिअकाश प्रकाशमहा मुदमंगल छायरह्यो सबठैना। चंदअमंदउदै सनक्षत्र सु चांदनिचांड खिलैभलिरैना॥ त्यों भगवंत भयो जल निर्मल पीवत जीव लहै सब चैना। डंकदिये निरशंक अकंटक राज करै नृपशर्द सुहैना॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहबर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेकिष्किन्धाकाण्डेसुग्रीवराजबर्षाशरदऋतुवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

सवैया॥ सुन्दर श्याम तमाल सो गात विशाल भुजा बल जालसुहैना। आनन चन्द प्रभा सुखवृन्द सुआनँदकन्द लजावन मैना॥ शीलनिधान सुजान शिरोमणि पावन पुंज भरे गुणऐना। बन्दतहै भगवन्त सदा जनजानि द्रवो हरि राजिवनैना॥ छप्पै॥ बीत्यो बरषाकाल शरद निर्मलऋतु आयो। मिली न सियसुधि कतहुँ सुरति सुग्रीवभुलायो॥ पाय नारि धन राजकाज भूल्यो मम सोऊ। काल्हिनि देउँ पठाइ बालि थल जानहिं वोऊ॥ गहि पानि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सखा कीन्ह्यों प्रथम आनि ज्ञान स्वइ गमकरौं। तुमजाहु तात स-
मुझाय त्यहि कहौ वेगि कारजसरौं॥

दो॰ प्रभुआयसु लक्ष्मण अकनि चले धारि धनुबान।
सुग्रीवहि इत जाइकै कह्यो बोलि हनुमान॥
जासुकृपा नाशी विपति लह्यो राज धनधाम।
बिषय बिवश स्वइ स्वामिको बिसरयो तुमसबकाम॥

सो॰ सुनि सुग्रीव डराय कह्यो वेगि मारुतसुवन।
पठवहु दूतबुलाय जहँतहँ खोजहिं जाइ सिय॥

तब मारुतसुत दूत बुलाई। दीन्हें जहँतहँ विपुल पठाई॥
रामानुज त्यहि अवसर आये। धनुचढ़ाय भय सबहिं देखाये॥
कीन बिनय बहु बालिकुमारा। अभयबाँह दै लषण निवारा॥
रबिसुत डरे सुनत प्रभुक्रोधा। कह्यो बोलि मारुतसुत योधा॥
तुम तारायुत जाउ तुरन्ता। करि विनती गृहलाउ अनन्ता॥
त्यहि सँगलै हनुमन्त सिधाये। करिबहुविनय मुदित गृहलाये॥
परे सुकंठ चरण शिरराखी। जोरिपाणि अस्तुति बहुभाखी॥
चरणपखारि दीन वर आसन। कह्यो नाथ जनहित का शासन॥
सियसुधि लेनचही कहुँ ताता। करहु सो यत्नबनै ज्यहिबाता॥
तब सबचरित समीरकिशोरा। कह्यो दूत जिमिगे चहुँओरा॥
पुनि सुकंठ मनसहित उमंगा। अंगदादि वानरलै संगा॥
रामानुजहि लीन करि आगे। आये जहँ रघुपति अनुरागे॥

दो॰ कोटिमदन शोभाकदन बदन सदन सुखराम।
देखि सुगर आनँद बगर कीन्ह्यो दण्डप्रणाम॥

पुनि करजोरि रामरुख पाई। बोल्यो मधुरबचन कपिराई॥
तव माया अति प्रबल गोसांई। कीन्हे स्वबश सबहिं बरियाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मैं वानर पशु बिषयनिकेता। मायाबश सुरनर मुनिजेता॥
ज्यहिपर कृपा नाथ तव होई। विषय बन्धते छूटै सोई॥
सुनि रघुवीर परमप्रिय बानी। बैठाये करगहि सनमानी॥
सखाकरहु अब स्वई उपाई। सिय सुधिमिलै जाहि सुखदाई॥
यहिविधि कहत कृपासुखकन्दा। तबलगि आइगये कपिबृन्दा॥
राम चरण पंकज शिरनावहिं। प्रभुहिबिलोकिजन्मफलपावहिं॥
कपिदलप्रबल अमितनहिंलेखा। स्वइ जानै जिन नैनन देखा॥
बूझी कुशल सबहि रघुबीरा। बिश्वरूप व्यापक मति धीरा॥

छप्पै॥ तब बोले सुग्रीव सुनहु मर्कट समुदाई। करहु राम कर काज सियहि खोजहु सब जाई॥ मास दिवस के माहिं अवशि दीन्ह्यो सुधि मोही। अवधि मेटि बिनु खोज आव जो मारौं वोही॥ यहि भाँति पाय शासन हरषि जहँ तहँ चले तुरन्त सब। कपिराज कह्यो पुनि बोलि अस अंगद नल हनुमंत तब॥ सवैया॥ हेनल अंगद बायुतनै तुम ऋक्षपते सब दक्षिण जाहू। सीतहि खोज किह्यो सब ठौर मिलै मग जो जहँ पूँछेहु ताहू॥ त्यों भगवन्त सु काय गिरा मन काज किह्यो प्रभुको स उछाहू। जाहु हृदै धरि राम पदै प्रभु काजक आज तुम्हैं बड़लाहू॥

दो० आयसु पाय कपीश को हर्षि नाय पद शीश।
लै सँग मर्कट भालु बहु चले सुमिरि जगदीश॥

कुंडलिया॥ नायो शिर हनुमान जब तब प्रभु निकट बुलाय। दीन्हे निजकर मुद्रिका दीन्ह्यो सीतहि जाय॥ दीन्ह्यो सीतहि जाय यहै मेरी सहिदानी। आयो फिरि कपि वेगि विरद मम प्रियहि बखानी॥ खानि सुकृत सुखदानि पानि मुँदरी जब पायो। पवन तनय मन हर्षि चल्यो रामहिं शिर नायो॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चले सुभट सब खोजत सीतै। सुमिरि राम भञ्जन भवभीतै॥
गये सघन बन सकल भुलाने। भये तृषित जलबिनु अकुलाने॥
तब हनुमान बिवर यक देखा। गयउ तहाँ लै कपिन अशेखा॥
त्यहि भीतर मन्दिर यक सोहा। बरणिनजाइ देखि मनमोहा॥
त्यहि महँ दीख बैठि यक नारी। तप समूह शोभा अति भारी॥
सबनजाय त्यहि शीशनवाये। पूँछ्यउ सो निजचरित सुनाये॥

दो॰ त्यहि तब कहा कि खाहुफल करहु पान शुचिनीर।
सुनि फलखाय सुपाय जल आये पुनि त्यहितीर॥

चतुरंसाछन्द॥ तब निजहाला। स्वइ तपबाला॥ कह्यसि बखानी। कपिन सुबानी॥ कुण्डलिया॥ हेमानामसु अप्सरा रही एक छबिवान। मयदानव त्यहि देखिकै हरिआन्यो यहि थान॥ हरिआन्यो यहि थान इन्द्रसुनि मार्यो ताही। यहसब विभव विलास बहुरि दीन्ह्यो विधिवाही॥ वाहीकेर निदेशकरौं यहि थलकी क्षेमा। स्वयंप्रभा मम नाम सखी जानौ म्वहिं हेमा॥

दो॰ मैं हौं मनुसावर्ण्य की सुता किह्यों तपवृन्द।
अब जैहौं रघुबीर जहँ कृपासिंधु सुखकन्द॥
तुम अब मूंदहु नैन निज जाहु बिवर तजि बीर।
तजहु शोच पैहौ सियहि धरहु हृदै सब धीर॥

तोटक छंद॥ दृग मूँदि बिलोकहिं फेरि जबै। कपि ठाढ़ समुद्र के तीर सबै। वह राघव पै पुनि जात भई॥ शिरनाय बिनय बहुभांति कई॥ हरिभक्ति अनूपम पाय भली। बदरीबन गै शिर नाय चली॥ इत शोचत कीश खड़े सबहीं। गत औधि न शोध मिल्यो अबहीं॥ कह अंगद तौ सब कीश सुनौ॥ मम मृत्यु भई अब भांति दुनौ॥ सुधि सीय मिली कतहूं न इतै।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कपिराज करी बध जात उतै ॥ अवलोकि दुखी अति बालितनै। कह ऋक्षपते गुनि बात मनै ॥ मोदकछंद ॥ तात गनौ जनि मानुष रामहिं। पूरणब्रह्म सदा सबठामहिं ॥ लीन सुइच्छहि ते अव तारक। गोद्विज देव धरा दुख टारक॥ त्रोटक छंद॥यहिभांति रहे कहि बंदर ते। सम्पाति सुन्यो गिरि कंदरते॥ है बाहेर कीश लख्यो जबहीं। जगदीश अहार दियो घरहीं ॥ अब भक्षण आजु करौं जितये। बहुबार अहार बिना बितये॥ डरपे कपि गीध गिरा सुनिकै। तब अंगद बात कह्यो गुनिकै ॥ सवैया॥ धन्य जटायु समान नहीं कउ रामके काज जु देहहिं त्याग्यो। रावण से भट हारि हिये बल जासु बिचारि लियै लैभाग्यो ॥ जासु क्रिया निज पाणि कियो रघुनायक दिव्य सु कीरति जाग्यो। आपुगयो हरिधाम सबै छल छांड़ि जु रामहिं सों अनुराग्यो ॥

अनुज कथा सुनि इमि बहुभांती। कपिन समीप चल्यो संपाती॥
करि बहु शपथ निकट सो आवा। परम प्रेम सब कहँ शिरनावा॥
जामे पक्ष तिलांजलि दीन्हा। प्रभु प्रभाव बहु बरणन कीन्हा॥
पुनि निज कथा कही सब गाई। जरे पंख ज्यहि बिधि तरुणाई॥
सीता कै सुधि बहुरि सुनाई। पैहहु धीर धरहु मनभाई॥
शत योजन यह सागर जोई। नांघै काज करै भट सोई॥
असकहि गयो जबहिं संपाती। कपिन कियो बिस्मय बहुभांती॥
निज निज बल तब सकलबखाने। पारजान हित सबहिं सकाने॥

कुण्डलिया॥ जावों पार समुद्र मैं कह अंगद सब पाहिं। फिरति बार पर होतहै कछु संशय मनमाहिं॥ कछु संशय मनमाहिं ऋक्षपति कहत हँकारी। रह्यो कहा चुप साधि पवननंदन बलभारी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भारी काज बिचारि शंक मनमें जनि लावो। सुमिरि रामपद कंज पार सागर तुम जावो ॥

दो० जामवंत के बचन सुनि पवनतनय हरषाय।
तुरत हेम गिरि सों अधिक दीन्ह्यो देह बढ़ाय ॥
ऋक्षपते बूझौं तुम्हें करौं कहा अबजाय।
उचित सिखावन होइ जस सो कहियो समुझाय ॥

भुजंगप्रयातछंद ॥ कहौ रावनै सेनसा जाय मारौं। त्रिकूटाद्रि ऊपारि सामुद्र डारौं ॥ कहौ लाय वैदेहि रामै मिलावौं। करौ जो निदेशापु कै सोइ आवौं ॥ कुंडलिया ॥ याही तुम हनुमंत अब करौ लंक में जाय। जनकसुता को देखिकै प्रभुहिं देउ सुधिआय ॥ प्रभुहिं देउ सुधिआय सुनत सजि सैन सिधैहैं। मारि असुर रण जीति जनकतनया सँग लैहैं ॥ लैहैं सुख सब लोक सुयश जागिहि जगमाहीं। भाग्यवंत यश गाय सुफल जीवन सब याहीं ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे

किष्किंधाकाण्डसमाप्तम् त्रितीयोऽध्यायः ३ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भक्तिशिरोमणि सुन्दरकाण्ड ॥

दोहा ॥

बन्दौं श्रीहनुमन्तके चरणकमल शिरनाय ।
जिनकी कृपा कटाक्षते अगमौ सुगम लखाय ॥

कुंडलिया ॥ पायो जब ऋक्षेशको आयसु पवनकुमार । कूदि चढ़्यो भूधर तमकि करि उर प्रभुहिं सँभार ॥ करि उर प्रभुहिं सँभार जबहिं कूद्यो बलवन्ता । मसकि धस्यो महि मेरु गयो शिरचोट अनन्ता ॥ चोट दल्यो उर कूर्म उछलि ऊपर जलआयो । कंपमान सब लोक बिकल दिग्गज डरपायो ॥ कीन्हें जलधि बिचार मन कपिहिं जातपथ देखि । रामचन्द्रको दूत यह ह्वैहै श्रमित बिशेखि ॥ ह्वैहै श्रमित बिशेखि कह्यो मैनाक हँकारी । जाहु उपर उतराय हुवो कीशै श्रमहारी ॥ हरि त्यहि तरत बिलोकि परसि पदपंकज दीन्हें। चल्यो कहत बिश्राम कहाँकारजबिनुकीन्हें ॥ आगे रोंक्यो आयकै सुरसा बदन बढ़ाय । त्यहि आनन ह्वै निकरि कपिचल्यो आशिषापाय ॥ चल्यो आशिषा पाय राहु जननी तहँरहई । करै गगनचर भोग उड़तलखि छाहैं गहई ॥ गहन चहेसि तिमि कपिहि करखि ताहू त्यहिलागे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मारि पवनसुत बीर चल्यो सुमिरत प्रभुआगे ॥ तहिमारि मारुत सुवन गयो समुद वहिपार। तहाँ जाइ देख्यो बिपिन शोभा अति अनपार॥ शोभाअति अनपार सुतरु फूले फलनाना। गुञ्जत मधुकरवृन्द मगन देखत हनुमाना॥ माना मनआनन्द चढ़्यो भूधर भयनाहीं। जापर कृपा श्रिराम सुगम अगमौं सबताहीं॥ लङ्का रावणकी लख्यो पर्व्वततें हनुमान। अति उत्तम शोभाअमित क्यों करिकरौं बखान॥ क्योंकरि करौंबखान परीफौजैं अनगन्ती। शहर कहर की बननि कहैको कहत न बन्ती॥ बन्ती कहत न भूति बसै रावण निरशङ्का। देखत दुःख नशाय बनी कंचनमय लङ्का॥ धारयो मशक समान तब रूप पवनसुत बीर। चल्यो लंकगढ़ बंकको सुमिरि राम रणधीर॥ सुमिरि राम रणधीर चल्यो लखि लंकिनि टोक्यो। सुनत क्रुद्धि बलवन्त झपटि मुष्टिक यक ठोंक्यो॥ ठोंकत सों महिगिरी सत्यबर ब्रह्म बिचारयो। जायकरौ प्रभुकाज नगर निरशंक सिधारयो॥ लंकापुर घर घर सकल ढूंढ़्यो पवनकुमार। कतहुँ न देख्यो जानकी गयो रावणागार॥ गयो रावणागार तक्यो ताको तहँ सोवत। परी न कहुँ सियदृष्टि फिरयो ब्याकुल पुनि जोवत॥ जोवत देख्यो एक भवन उत्तम अतिबंका। रामनाम अंकृत्य सुभग न्यारो सब लंका॥ पुनिलागे निज मनहिं मन हनुमत करन बिचार। जागि बिभीषण कीन तब रामनाम उच्चार॥ रामनाम उच्चार करत कपि सज्जन जान्यों। यासों होइ न हानि करनचाहिय पहिचान्यों॥ आन्यों तब द्विजरूप कहत हरिगुण अनुरागे। सुनत बिभीषण आय हरषि पाँयन पुनि लागे॥ पूँछे तब हनुमन्त सों सकल बिभीषण हाल। कह्योनाम निज बिपिन जिमि आये राम कृपाल॥ आये रामकृपाल जनकतनया जिमि खोई। खोजनहित

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कपिभालु बिपुल पठये प्रभु जोई ॥ जोई हम सब लंकसदन देखे सिय छूँछे। सुनत मगन द्वउ प्रेम बिभीषण पुनि त्यहि पूँछे ॥ कहहु पवनसुत कबहुँ प्रभु मो कहँ जानि अनाथ। करि हैं कृपा कृपायतन दीनबन्धु रघुनाथ ॥ दीनबन्धु रघुनाथ सकल साधन मैं हीना। प्रीति न पंकज पायँ सतत संसृत मनलीना ॥ लीना दृढ़ बिश्वास यहै जानत सब अहहू। मिलैसन्त भगवन्त कृपाबिनु क्यों तुम कहहू ॥ राम सुभाव सुरीति बर सुनहु सखा चितलाय। करहिं सदा निज दासपर प्रेमप्रीति अधिकाय ॥ प्रेमप्रीति अधिकाय कहाँ हम बानर नीचा। कीन्हींकृपा कृपाल सुयश दीन्हें जगबीचा ॥ बीच न राख्यो नेकु कियो आपन कपिराऊ। कहौं कहाँलगि तात सुखद जसराम सुभाऊ ॥ सवैया ॥ श्रीरघुबीर सो दीनदयाल कृपाल बियोकहुँ स्वामि सुहैना। कीनसखा कपि केवटभालु कुचालके रूप रहेअघऐना ॥ यों भगवन्त सुस्वामि सुभावहि जानि सनेह सो जो न भजैना। सो मतिमन्द कुभाग्य जयोजग अन्तसु क्योंहठि नर्क परैना ॥ ऐसेहि कहत श्रिरामगुण मगन प्रेम द्वउगात। कह्यो बिभीषण तब सकल जनकसुता के बात ॥ पवनतनय कह मातुसिय देखनचाहौं बीर। कही बिभीषण युक्ति तब जान जानकी तीर ॥ मारुतसुत धरिरूप स्वइ चल्यो सुमिरि जगत्रातु। बनअशोक जहँ जानकी रहति सकल जगमातु ॥ सवैया ॥ मारुत नन्दन जायलख्यो मिथिलाधिप नन्दिनि राजत जाहीं। कीन प्रणाम मनैमन हेरि सुजात दशा कहि सो सियनाहीं ॥ शीशजटा कृशगात जपै गुणव्रात सुराघवके उरमाहीं। देखिदुखी हनुमन्तभयो दुरिजाय रह्यो तरुपल्लव छाहीं ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तासहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे सुन्दरकांडेश्रीजानकीसमीपहनुमान्प्राप्तवर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः १ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० जासु सुयश तिहुँलोकमें रह्यो व्यापि भगवन्त।
चरणकमल बन्दनकरौं मारुतसुत हनुमन्त॥
त्यहि अवसर रावण तहाँ कीन्हें बिबिध बनाव।
संगलिये बहु तियनको आयो खलकुल राव॥
नानाबिधि सो जानकिहिं कह्योमूढ़ समुझाय।
सामदाम अरुभेद भय बहुबिधि रह्यो देखाय॥

सवैया॥ हे सुठि सुंदरि प्राणप्रिया सिय कान सुबानि करो यह मोरी। मैं बलवंत सुरासुर नाथ प्रसिद्ध न है प्रभुता ममथोरी॥ जौ प्रण पूरण मोर करो यक बार बिलोकहु त्यों मम ओरी। तौ निज रानि मदोदरि आदि सु यावत चेरि करौं सबतोरी॥

दो० सुनि रावण के बचन इमि सुमिरि हृदय भगवान।
तृणधरि ओट बिदेहजा बोली बचन प्रमान॥

छप्पैछंद॥ रे रावण कस कहसि भयो चाहत तव नाशा। करहि कि नलिनि बिकास कतहुँ खद्योत प्रकाशा॥ हरि आने म्वहिं मूढ़ समय सूने प्रभुपाछे। सो फल पैहसि वेगि अधम आपन कृत आछे॥ अब जाहि इहांते उठि सपदि कहौं तोहिं समुझायके। मम बचन बिसीले सर्प त्वहिं डसहिं न जौलगि धायके॥

सुनत बचन रावण रिस ठानी। काढ़ि खड्ग बोला अभिमानी॥
मम अपमान करसि तैं सीता। जानि परत आयू तव बीता॥
अस कहि मूढ़ चला उठि मारन। मयतनया गहि कीन्ह निवारन॥
तब सकोप निशिचरनि बोलाई। कहेसि जानकिहि त्रासहु जाई॥

दो० मास दिवस के माहिं जो कहा न करि है कान।
तौ विशेषि मैं मारिहौं निजकर कठिन कृपान॥

यहि विधि रावण सबसन भाखी। गयो भवन सीतहिं उरराखी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिबिधरूप धरि निशिचरनारी। लगीं देन सीतहि दुखभारी॥
तब त्रिजटा सबहिन समुझावा। कहि निज स्वप्न प्रसंग सुनावा॥
जो निज हित तुम चहहु सयानी। सेवहु सियहि कर्म मनबानी॥

कवित्त॥ बानर भटाकी एक आयो है अचाकी लङ्कजारि छार साकी को न त्रासतासु छाकी है। खंडित भुजाकी बीस मुंडित शिराकी देहनग्न रावणाकी बैठ पृष्ठि गर्दभाकी है॥ ऐसीगति ताकी गौन दक्षिण दिशाकी राजपायो सब वाकी भाय पूरण प्रभाकी है। जै जै सुरहांकी लोक लोकन में जागी भाग्यवंत कीर्त्तिबाँकी रामचंद्र भूमिजाकी है॥

दो॰ यह स्वपना में आपनो सबसों कहौं बिचारि।
झूंठ न सो फुर होइहै अवशिगये दिन चारि॥

छंदचामर॥ तासुबैन श्रूययों भई सभीत राकसी। धाय सीय पाँय धारि छाय मूहँ खाकसी॥ बार बार सीय सो निहोरि पायके क्षमा। यत्र तत्र जातते भई प्रणाम केरमा॥ सीय हीय लीय तौ बिचारि शोच भारि है। मास द्योस बीतते सुरारि मोहिं मारि है॥ भाखि बोलि त्रैजटै उपाय मातु सो करैं। होय भस्म देह मों बिपत्तिजाल ज्यों टरै॥ आर्त बैन सीय के सुश्रूय बोलि त्रैजटा। रामके प्रताप केन शोकसिंधु है पटा॥ पाइये न रैनि अग्नि सीय धीर को धरो। बार बार भाखियो पयान धाम सो करो॥ छंदनाराच॥ बढ़ैसशोच जानकी भयो बिरञ्चि बामहै। मिलैन आगि हेरिये मिटै न शूल मामहै॥ परैं बिलोकि ऋक्ष व्योम जाल ये अँगारसो। न आव भूमि एकहू अभाग या हमारसो॥ शशी सदैव अग्नि ज्यों सुबीरहीन जारतो। सुजानिकै कुभागिमो न आगि आजु डारतो॥ सुनै बिनै सुदीनकी दयालु है अशोक

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तैं। करै सुनाम सत्यमों हरै कलाप शोकतैं॥ समान अग्नि रावरे जुजाल कीशलैनये। करौ सुआगि दै निदान भूरिदुःख मैं तये॥ भयो दुखी सुवायुपुत्र देखि राजपुत्रिका। दियो अँगार डारि ज्यों अशोक ते सुमुद्रिका॥ कुंडलिया॥ ताहि देखि नृपजा हरषि लीन्ह्यो धायउठाय। लागतकर सियरी चकित भई आगिकसिआय॥ भई आगि कसिआय बहुरि मुँदरी तनदेख्यो। लिख्योंश्रिरामोजयति बांचि मन भ्रमित बिशेख्यो॥ भ्रमित बिशेख्यो चीन्हि समुद शोकित मनमाहीं। बारबार हियलाय निरखि पूछत सियताहीं॥ कबित्त॥ प्रीतम पियारी प्राणहीतमदियारी ज्योति जागत तिहारी दीप दीपन में सुंदरी। धार्‌यो है अबालपनही ते रघुनाथ तोहिं बीछुरी सो हेत कौन कीन्हें मन तुंदरी॥ बाउरी न होसितैं सुनाउरी कुशलनाथ छाउरी प्रमोद काटु शोकफांसफुंदरी। जाउँ बलि बेगि सो बताउ मोहिं भाग्यवंत आई यहि ठाउँ क्योंतु नाथ हाथ मुंदरी॥

दो॰ सुनि सिय बचन सुशाखते शाखामृग सुखपाय।
परम मनोहर बचन मृदु बोल्यो प्रेम बढ़ाय॥

हरिगीतिका छन्द॥ सुनु मातु पूषण बंशभूषण भूप दशरथ जानिये। सुत रामलच्मण नाम तिनके तात शासन मानिये॥ आये बिपिनसँग सीय काहुहि हरी खल छल ठानिकै। द्वउ फिरत खोजत बिकल सुधि कछु गृद्ध सोंपुनि जानिकै॥ आये सो पंपासरहि मिलि तहँ सखा सुग्रीवहि किये। सो दीन पठ भूषण मनोहर चीन्हि भय व्याकुल हिये॥ तब जानि बरषा खाय गम अब बोलि कपि संकुल लिये। पठये सु चहुँ दिशि हेत खोजन मोहिं प्रभु मुँदरी दिये॥ यह देहु सीतहि जाय कहि कुशलात मोरि सुनावहू। लय कुशल पुनि सिय प्राणप्रियकी बेगि फिरि तुम आ-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वहू ॥ यहि भाँति श्री रघुबीर कीरति विमल कपि वर्णन किये।
सुनि जनकजा मन मोद संकुल प्रेम परिपूरण हिये॥

दो० चहुँ दिशि चितै श्रि जानकी कह्यो हर्षि मन माहिं।
ज्यहिवरण्यो यह यश अमी सोप्रगटत कसनाहिं॥

सुनि प्रिय बचन पवनसुत बीरा। आयो चलि सीता के तीरा॥
मर्कट रूप देखि महिजाई। बैठी फिरि विस्मय मन छाई॥
कपटरूप बिरचे यह कीशा। आवाछलन मोहिं दशशीशा॥
कह कपि मैं मारुत कर पूता। हनुमत नाम रामकर दूता॥
लायउँ मैं मुँदरी सहिदानी। प्रभुकर केरि मातु फुरबानी॥
कह सीता हरि गुणहिं सुनावै। तब प्रतीति मोरे मन आवै॥

कबित्त॥ करुणाउदार बल वैभव अपार नीति प्रीतिके अगार हार भूवभार ताके हैं। शीलसम शान्ति सुठि सुन्दर कृपायतन दास दुःखदारन विरद वेदहाँके हैं॥ भाग्यवन्त साहब समर्थ सो त्रिलोक जासु जागत सुयशके सुयुग युग शाके हैं। पावै गनि पार गुणगणको अपार नृप कोशलकुमार त्यों उदार बीरबाँके हैं॥

संयुता छन्द॥ सुनि बानियों हनुमानकी। मन सत्यमानि सु जानकी॥ पुनि सीय तासन यों कह्यो। नरसंग बानर क्योंलह्यो॥ हनुमन्त सर्व प्रसंगत्यों। बरण्यो भयो प्रभुसंगज्यों॥ सुनि मानि भू मुत्रपुत्रिका। उरलायलीन सुमुद्रिका॥

दो० बारबार उरलायकै पिय मुद्रिका निहारि।
कहत बचन श्रीजानकी कमलनैन भरिबारि॥

की है यह रवि किरण सुहाई। ममदुख दुसह हरण तमआई॥
की शशिकला सरिस ह्वै न्यारी। आई शीतकरन म्वहिं प्यारी॥
की यह राज्यशिरी सुखदैना। आई जाहि तजी हरि ऐना॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

की नारायण उर सम सोहै। युत शुभअंकन श्रीमनमोहै॥
की निश्चय पठई पियपाती। आई शीतकरन मम छाती॥
की यह प्रतीहारिनी पियकी। आई गति बूझन ममहियकी॥
की सिख मोहिं देनके हेता। पठई त्वहिं इत कृपानिकेता॥

दो० यहिविधि कहि कहि प्रेमयुत पूंछति सियमृदुबैन।
कहसि कुशल किन मुद्रिके सानुज राजिवनैन॥

पुनि कपिसन पूंछति बैदेही। जानि रामपद कमलसनेही॥
तात कुशल प्रभु सहित सुभ्राता। कहहु बेगि सेवक सुखदाता॥
करुणासिन्धु कृपा सुखसागर। दीनबन्धु मृदुचित नयनागर॥
करत कबहुँ सुधि मोरि कृपालय। दीनदयाल प्रणत प्रतिपालय॥

सवैया॥ दीनदयाल कृपा सुखशाल सदै जनपाल सुदायक चैनन। सुन्दर श्याम सरोरुह लोचन मोचन अंग प्रभा शतमैनन॥ त्यों भगवन्त सुतात कबौं कहुँ पैहहिं कानसुने सुखबैनन। ह्वैहहि शीतलगात कबौं वह मूरति मंजु निहारिकै नैनन॥ जासु सनेह सँभारि हियेकरि खण्डन सासु ससूर के बैना। आयन संग बिछोह भयो सो बियोग तजे तनु प्राण अबैना॥ जीवत दुःख अनेकसहेरु दहे तनु पी बिरहागिनि मैना। आयो कछू बनि मोरा। नहीं जन जानि सुधारहिं राजिवनैना॥

दो० सुनि सियबचन समीरसुत सजलनयन धरिधीर।
कह्यो मातु सानुज कुशल प्रभुजनिहोहु अधीर॥
जनरंजन भंजन विपति प्रणतपाल सुखधाम।
तव वियोग संभूत दुख दुखित रहत श्रीराम॥
धरि धीरज सुनु मातु अब प्रभुसँदेश चितलाय।
तव बियोग मोकहँ सकल भये सुखद दुखदाय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सवैया ॥ जादिन ते सुनु प्राणप्रिया म्वहिं तोहिं बिछोह बिरञ्चि कियो है । तादिन ते कलहै न हमैं दुख दारुणदै सुख छीनि लियो है ॥ काह कहौं यह जान न कोउ कहेते घटै दुखनाहिं हियो है । प्रेम को तत्त्व त्वयामम जौन सो जानत मोमन एक प्रियो है ॥

सो० सोई मन सुनु मोर रहत सदा प्रिय पास तव ।
प्रेम प्रीति को डोर जानु सकल यतनेहि महँ ॥
प्रभु सँदेश सुनि सीय मगन प्रेम भूली तनहि ।
सुमिरसुमिर छबिहीय मोचति जललोचनकमल ॥
कह हनुमंत प्रवीन मातु हृदय धीरज धरहु ।
सुमिरि राम हित दीन करुणाकर भंजन बिपति ॥

सवैया ॥ राक्सवृन्द पतंग सबै रघुनायक शायक घोर कृशानू । मातु न कीजिय शोच हृदै धरुधीर जरे खलवृन्दन जानू ॥ होत लहे सुधि जो रघुबीर बिलम्ब न तौ करते फुरमानू । पै अब चाहत होन उदै तम दुष्टन रामको शायकभानू ॥ जो अबहीं मैं जाउँ लेवाइ बनै नहिं बात न रामरजाई । ताहित धीरधरौ कछु रोजमें आवहिंगे कपिलै द्वउभाई ॥ मारि सबै खलवृन्दन को लै जैहहिं मातु तुम्हैं सो लेवाई । त्यों भगवन्त तिहूँ पुर में रहि कीरति पुंज मनोहर छाई ॥

दो० कह सीता सुनु सुतसकल हैंकपि तुमहिं समान ।
क्यों लड़ि पैहैं पार अति यातुधान बलवान ॥

पद्धरी छंद ॥ तब तुरत स्वर्ण पर्व्वत समान । कीन्ह्यो स्वअंग हनुमत सुजान ॥ बिश्वास पूरि सिय मन मँझार । भइ देखि कीश बल बुधि अपार ॥ हनुमंत बहुरि है लघु स्वरूप । बोले सुबैन सिय सों अनूप ॥ सवैया ॥ श्रीरघुबीर प्रताप बड़ो करि देखिय मातुहृदै

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सु विचारै। जासु कृपातृण होइ ज्यों बज्र खगेशहि ब्यालतनै गहि
मारै ॥ खायतिमीर तमीपतिको गिरि हेम मसा गहि आपु उखारै।
त्यों भगवन्त कृपा प्रभुकी कछु बात न सिंधु पिपील निवारै ॥

दो० राम कृपा जापर करहिं ताहि सुगम सब बात।
प्रभुप्रभाव बड़ समुझि मन शंक न कीजिय मात ॥
सुनि कपिबचन बिदेहजहि भयो तोष मनमाहिं।
आशिष दीन्हीं हरषि हिय जानि रामप्रिय ताहिं ॥
अजरअमर शुभ गुणसदन बलनिधान सुतहोहु।
करहिं सदा रघुबंशमणि बहुत तोहिं पर छोहु ॥

छंदहरिगीतिका ॥ बहुकरहिं रघुपति छोह सुनि हनुमान अति
आनँद भयो। तन पुलक निर्भर प्रेम सियपद बार बारहि शिरनयो॥
तव बिदित बिश्व अमोघ आशिष मातु सो मैं पायकै। भगवन्त
अब कृत कृत्य सब बिधि भयउँ पूरण भायकै ॥

दो० अब म्वहिं लागी भूखअति देखि सुफल समुदाय।
कपि बुधिबलअवलोकिसिय कह्योखाहुफलजाय ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे सुंदरकाण्डे
श्रीहनुमान्जानकीसम्वादवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

सो० बन्दौं पद शिरनाय मारुतसुत हनुमन्त के।
ज्यहि सुमिरत दुख जाय भाग्यवंत संतत सुखद ॥

सवैया ॥ सिय आयसुपाय समीरतनै शिर सादरनाय सहर्ष
चल्यो। घननादहु तेधिक बाग प्रिया दशकंधहि सो तहँ जाय
रल्यो ॥ फलखाय उखारन लाग द्रुमै लखि रक्षकबर्जत मारिदल्यो।
कछु भागि बचे ते पुकारयनि जाय दशाननपै सुनि हालहल्यो ॥
पठये भट बोलि दशानन कोपि चले सजिसेन समूह छली। गर-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ज्यो हनुमंत बिलोकि तिन्हैं करि क्रुद्ध सबै क्षणमाहिं दली ॥ ज्वइ भागि बचे अधमारे कछू दशमाथ पुकारयन्हि जायचली । भगवंत न जीतन योगहमैं वह बानरहै अति बीरबली ॥

दो० सुनि रावण करिकोप पुनि पठयो अक्षयकुमार ।
चल्यो बीर रणधीर अति लै सँग सुभट अपार ॥

भुजङ्गप्रयात छंद ॥ बिलोक्यो जबै आवते कीश ताको । चल्यो गर्जिलै वृक्षधै बीरबांको ॥ सुकूद्यो तिन्है मध्य यों ठानिक्रोधा । यथा मेष वृन्दानिमें सिंह योधा ॥ निपाते अक्षेशेष जे रैनिचारी । तिन्हैंलै कछू नाय भूमै पछारी ॥ कछू पाणि सों धारिकै अंगमर्दा । मिलाये कछू मारि कै मींजि गर्दा ॥ पुकारे कछूभागिकै लंकरावै । महाबीर सो कीश ना जीतिजावै ॥

सुनत पुत्र बध रावण क्रोधा । कहेसि बोलि घननादहि योधा ॥
जाहु कपिहि गहिलावहु बांधी । चल्यो सुभटपितु आयसुकांधी ॥
संग सेन बहु सुभट जुझारा । आयो जहँ वानर बरियारा ॥
लखि बजरंग बिटप गहिधावा । तोरेसि रथत्यहि अवनि गिरावा ॥
पुनि सब सुभटन गहिगहिधाई । डारयसि मर्दि मसनकी नाई ॥
पुनि घननादहि भिरेउ प्रचारी । लागे लड़न सुभट द्वउभारी ॥
तब पवनज मुष्टिक यक मारी । परेउ मुर्च्छिमहि बिकलसुरारी ॥
आपु चढ़्यो तरु कूदि बहोरी । जागिकीन त्यहि युक्तिन थोरी ॥
जीति न जाइ पवनसुत योधा । ब्रह्मअस्त्र छांड़ेसि करिक्रोधा ॥
तब हनुमान हृदय अनुमाना । चहियकीन बिधि गिराप्रमाना ॥

दो० ब्रह्मबाण लागत गिरयो दाबि सुभट बहुकीश ।
नागफाँस पुनि बाँधित्यहि लायोजहँ दशशीश ॥

सवैया ॥ हे गिरिराजसुता सुनु सत्य सुजाप्रभुको जपिनाम सुभा-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यो। काटत हैं भवफंदनको नर ज्ञानमई यश वेदनगायो॥ तासु प्रभुको ह्वयदूत कहौ किमि राक्षसके वरबंधन आयो। ताहि न बाँधनहार कऊ प्रभु कारजलागि सो आपु बँधायो॥ त्रिभंगी छन्द॥ देख्योकपि जाई निशिचरराई अति प्रभुताई कौनकहै। करपुट सुरसारे रहत निहारे मुखरुख भारे डरनिरहै॥ गिरि सरिस बिशाला तनु दशभाला लोचनलाला क्रोधभरे। देखत प्रभुताई त्यहि बहुताई कपि नहिंराई शंकधरे॥ कुंडलिया॥ तब रावण कपितन चितै बोला बिहँसि कठोर। रेबानर कहुकौन तैं क्योंमारे सुतमोर॥ क्यों मारे सुतमोर बाटिका जाय उजारे। रक्षक रक्षाहेत तिन्हैं बर्जत संहारे॥ संहारे बहु रजनिचर डारे डर भमतें बितै। कहु कहु काकेबल निडर कह रावण कपितन चितै॥ सुनुरावण परिहरि कपट मैंहौं ताकोदूत। जो सृजि पालत हरत जग जाकोबल अनकूत॥ जाकोबल अनकूत अवध नृप सुवन सलोने। राम लषण शुभनाम भये असि अहै न होने॥ हने असुर चौदह सहस खर दूषण त्रिशिरा सुभट। त्यहि प्रभुको मैं दूतहौं सुनुरावण परिहरि कपट॥ खायोंफल म्वहिंलागि जब सुनुरावण अतिभूख। कपि सुभाव चंचल सदा ताहिते तोरयउँरूख॥ ताहिते तोरयउँ रूख हमैं मारा ज्यहिं वोहीं। मारेउँ मैं त्यहिलागि सुवन बाँध्यउ तव मोहीं॥ मोहिं न सो कछुलाज काज प्रभु चहौं बनायो। परिहरु प्रभुसों बैर मानु यह मोर सिखायो॥ क्यहि कारण आये इहाँ खोजन हित सिय चोर। सीयकौन कन्याजनक जाको यश नहिं थोर॥ जाको यश नहिं थोर स्वयम्बर में ज्यहिं बीचा। रह्यो तुमहुँ अरु बाण भयोतहँवाँ शिरनीचा॥ नीच न सुधि श्रुति नासिका काटि ष्वसा तव किय रिहा। तासु नारिचोरैं लखै यहि कारण आये इहाँ॥ कोहै पठवा तोहिं इत बालिबन्धु सुग्रीव।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बालि कौन बतलाउरे सोई कपि बलसीव॥ सोई कपि बलसीव मासषट जाकी काँखे। रहेसुरति करुतासु बहुरि पौरुष निज भाखे॥ भाखे कटुजनि मूढ़ खोलि बीसौदृग जोहै। ज्यहि मास्यो शरएक बालिशठ तुच्छतु कोहै॥ ताते तजि अभिमान सब सुनुरावण सिख मोर। कृपासिंधु रघुनाथसों बैर न करि भलतोर॥ बैर न करिभल तोर देहिलै सीतहिं जाई। मरसि न ज्यहि बिनमौत चहसि जो कुशल भलाई॥ चाहसि कुशल जो आपु होय कुलखीस न जाते। गहसि रामपद जाय मानि मम शिक्षहिं ताते॥ सवैया॥ कोम्वहिं मारनहार हवे तव कर्महिं को तिनसों फिरि राखे। श्रीरघुबीर कृपा करकी शरणागत तें मुखसों जब भाखे॥ मों शरणाजु त्रिलोक नवों क्यहि जाय न जाय जुतौफल चाखे। श्रीरघुबीरके कोपकिये खल तू न बचे पुनि यत्नन लाखे॥ रेकपि पोच डरै नहिं काहि हमें कहु तें खल तुच्छ कहाहे। आयसु दीन न श्रीरघुराज न तौ करत्यों जस ख्याल चहाहै॥ तोहिं ससेन पछारि अबै डरत्यों गढ़लंक समुद्र महां है। त्यों भगवन्त फलांकमें एक सुलैसिय जात्यउँ राम जहां है॥ पै अब रावण मोर सिखावन तें करुकान चहै भल जोरे। सेवक जासु सुरासुर सर्व्व किये भल बैर न है त्यहि सोरे॥ सो कहि मानु सबेर अबै लय सीतहि पायँपरौ कर जोरे। त्यों भगवन्त गये शरणैं क्षमिहैं अपराध सबै प्रभु तोरे॥ धरि रामके पंकज पाँय हृदे निज लंक अशंक ह्वै राजकरै। शशि सो यश दिव्य पुलस्त्य जगै त्यहि वंश न होसि कलंक खरै॥ करिकान सिखावन रावण मों लै सादर सीतहि पायँ परै। जनि रामके रोष दवानलमें युत बंश पतंग सो धायमरै॥ राम सों बैर कियो हठिकै जिन देखु बिचारि न ते सुख लूटे। एकन बीर करोरनके रण रोरपरे गढ़ मानके टूटे॥ तो सम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बीर बली खरदूषण तेउ न भागिबचे शर छूटे । सूभिन तोहिं परो अबहीं दशकंधर तौ दृग बीसहु फूटे ॥ कबित्त ॥ रेपुरे न रारि को खरारि सों सुरारि मूढ़ धारु बैनकानमो निकारु बात मानकी । जासु भृत्य संतत अजादि देव सेव पायँ कीरति कलाप जस्य चारु वेद गानकी ॥ रक्षक त्रिलोक प्रतिपक्षक बिध्वंसकार हार भूवभार है न ऊपमा समानकी । भाग्यवन्त मानि सो बिहायकै कुबैर सर्व सौं- पुजाय रामको प्रणामकै श्रिजानकी ॥

दो० यद्यपिकह्यो कपिहितबचन बहुबिधिताहिबुझाय ।
सो किमि मानै काल बश बोला बचन रिसाय ॥

तोटकछंद ॥ कपि ढीठ महा यह काहबकै । गहि मारहु बेगि न जायसकै ॥ सुनि मारण निशिचर धाय सबै । युत मन्त्रि बिभीषण आय तबै ॥ कर जोरि कह्यो यह नीति कही । नहिं मारन दूतहि नाथ चही ॥ करियो कछु दंड जु और चहौं । दलि बुन्द समुद्र घटै न कहौं ॥ कह रावण तौ यहि पूँछ दही । पठवो ज्यहि जाय सु स्वामि कही ॥ सुनते तपसी द्वउ आवहिंगे । कपिसेनस तौ सब खावहिंगे ॥ तजि एक जु आनि मिलै बहुतै । तजि दीजिय एकहि तौ तुरतै ॥ सबहीने कह्यो भल मंत्र यही । हरष्यो कपिशार्द स- हाय सही ॥ नाराच छंद ॥ तबै सुरैनिचार वृन्द यत्र तत्र धायऊ । सघृत्त तेल तूल बस्त्र जाल ढोय लायऊ ॥ सु बोरि बोरि ताहि सो लपेटि लूमको लियो । ख्यलार पौनपूत त्यों बढ़ाय पूँछको दियो ॥ रहा न तेल घृत्त बस्त्र लंकलूम नाघटी । दियो बहोरि बाँधि खैंचि पुष्ट सूत सों बटी ॥ सवैया ॥ देखन काजय कौतुक त्योंतहँ आवत भे सगरे पुरबासी । दै दय गारिन तारिन बालक मारहिं लातकरैं बहु हाँसी ॥ बाजहिं ढोल कलोलभरे सब निशिचरवृन्द उपद्रवराशी ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चारिहु ओर फिराय पुरै पुनि आनिकै बालधि अग्नि प्रकाशी ॥

तोमरछंद ॥ जब बर्त पावक दीश । लघुरूप ह्वै तव कीश ॥ रिपु भौन ऊपर जाय । चहुँ ओर पुच्छ भँवाय ॥

गीतिकाछंद ॥ चहुँओर पुच्छ भँवाय गर्ज्जत बाढ़ि नभ सों लगिगयो । इत उत अटारिन कूदि ठौरहिं ठौरपर पावकदयो ॥ अवलोकि पावक प्रबल घर घर खलन परिगै खलभली । त्यहिसमय श्रीरघुबीर प्रेरित मरुत उंचासहु चली ॥

व्यान उद्यान समान अपाना । शरद तेज पाण्डव निरबाना ॥
सरष सरोप शोष फरमाना । मोषन जन माधव लौमाना ॥
क्षिति संताप कुबर्षण कर्मा । लम्पट लोभ तोष धुहधर्मा ॥
तामोत्कर्ष चैल शयचाना । सन्निपात अरु विग्रह दाना ॥
धातु धूरि धोपन अरुछोहा । दमनद रोचन तामसरोहा ॥
किंकर तिवन धनञ्जय लाना । अरु उद्वेग चिंचिसा पाना ॥
यइ उञ्चास पवन के नामा । मोहिं जो मिले धरे सो यामा ॥

दो० प्रबल पवन झक झोरते चहुँदिशि बाढ़ी आगि ।
ताजि तजि निज निज भवन सब चले निशाचर भागि ॥

कबित्त ॥ रावणके भौन उच्च कंचन कँगूर चढ़ि ठाढ़ो कपि कौतुकी कराल क्रुद्ध भाखऊ । भारी भयदायक लगाये लूम व्योम लागि वेष बिकराल देखि धीर्य्य को न डारखऊ ॥ भाग्यवंत बीर रणधीर त्यों समीरसुत गाज्यो करि कोप जबै हाहाकार पारखऊ । भागे भरे भीत कहैं निश्चरन कीश यह लीलिबे को लङ्ककाल रसना पसारखऊ ॥ पावक प्रचण्डज्वाल उठी ओर चारिहूते कञ्चन कँगूर भू गिरनलागे जरि जरि । पस्यो हाहाकारना सँभार कोऊ काहूकार जरे बाल बालकी अनेक रहे मरि मरि ॥ टेरैं एक एकन उठावै

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जनि सौजपरो भागो भागो प्रान लैलै यारौ धीर धरिधरि। देखि
यह हाल है बिहाल दशभाल कह्यो मेघन बोलाय बारि नावोजाय
भरि भरि ॥ पायकै निदेश दशभाल को सुवृन्द वृन्द प्रलय प-
योद चले बारि बहु भरते। चारोंओर घेरि लागे बरषे मुशलधार
प्रगटी कृशानु त्यों अधिक बारि परतै॥ लागे सब जरन पराने घन
हारि हीय आये लंकनाथ पै पुकार द्वार करतै। भाग्यवंत महाराज
बूझिबेको कौन कहै जीवन सों जागी आगि राखो हमें जरतै॥
सवैया॥ द्वादश भानु कला भगवन्त बिलोकि न तेज तहां अस
चीन्हे। कालप्रलय कि कृशानु लखे असि तीक्षण ताति नहे स्वउ
लीन्हे॥ दीख बिषाग्नि जु शेषमुखे घृत होत न पै कहुँ बारि के दी-
न्हे। काहकहैं हम वायुतनै अति अद्भुत मै यह कौतुक कीन्हे॥

दो० सुनि बोल्यो मंत्री चतुर अग्नि न असि बरियार।
ईश बामता केर प्रभु है यह सकल बिकार॥

छप्पै॥ पावक पानी पौन भानु हिमि भानु समेते। इन्द्र बरुण
यम काल धनद लोकन पति जेते॥ ममडर डामाडोल शम्भु अर-
चावन आवैं। सडर विष्णु बिधि बस्यलोक तीनिहु म्वहिं ध्यावैं॥
मम राज आज तिहुँलोक में करौं रुचै मन जौनहै। पर उजुर न
करता कोउ कहुँ ईश बाम वह कौनहै॥ पद्धरी छंद॥ वह ईशबाम
स्वइ राम होय। ज्यहिबाम धाम लायो सु गोय॥ ज्यहि क्रोध पावक
प्रबल जानि। बिरहाग्नि श्वास सि र बायु मानि॥ ह्वय बामता
कपिरूप तासु। निरशंक लंक जाख्यो सो आसु॥

दो० सुनि रावण करिकोप तब सबसन कह्यो बुझाय।
धाय धरो कपि कहँ सुभट भागि न पावै जाय॥

कबित्त॥ लै लै सेल शूल पाशु परिघ प्रचंड दंड धाये बहुबीर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धीर कैकै हाहाकारहै । देख्यो तिन्हें आवत सकोप कपि कूद्यो तत्र गाज्यो घनघोर ज्यों कठोरकै चिकारहै ॥ लाग्यो एकओर सों संहारन सुभट वृन्द भाग्यवंत कहै कौन गति सो अपारहै ॥ यातुधान धारि भूरि क्षणमें सँहारि धूरिदीन्ही मेलि केलिकपि केशरी कुमारहै॥

दो० सौज समिध मखकुंड पुर निशिचर यव तिल धान ।
श्रुव लँगूल स्वाहा शबद हुने हाँकि हनुमान ॥
यह दुर्दशा निहारिकै रावण रानी रोय ।
पटकि पटकिकरउर बचन कहतकीशदिशिजोय ॥

कवित्त ॥ केतहूउपाय करि हारीहौं सिखाय पर प्रविश्यो न ज्ञान नेकु याके मान बाढ़ा मैं । हारखऊ बिभीषण बुझायपै सुभाग्यवन्त कीन्हीं सो न कान मतिपागी गर्व गाढ़ा मैं ॥ पाइहै सो फल आपु कीन्हो अब भाँति भली बाचिहै न भागि लोक तिहूँ राम राढ़ामैं । बार बार रोइयों मदोवरी पुकारि कहै देत क्यों न लाय कपि लूम याके दाढ़ामैं ॥ सवैया ॥ मैं बहु भाँति बुझायथकी यक बात न पै मम कान कर्यो है । लीनदई हरि बुद्धि सबै प्रभु सों ज्यहि नाहक जाय अर्यो है ॥ काल कराल गह्यो पिय चाहत ताहिते योंहठआनि धर्योहै ।आपनेहाथ लगाइकै आगि कुभागि सबै अबजात जर्योहै॥

दो० कुम्भकरण की भामिनी बिनवत जोरेहाथ ॥
जरत बृहदते राखिये मेरोपति रघुनाथ ॥
भवन बिभीषणकेर अरु कुम्भकरणकर द्वार ।
बच्यो और गढ़लंक सब जार्यो पवनकुमार ॥

छप्पै ॥ जारि लंकगढ़ बंक सिंधुमें लूम बुतायो । धरिलघुरूप बहोरि जहाँ सीता तहँ आयो ॥ करिप्रणाम करजोरि कह्यो जननी करि नेहू । दीन्ह्यो प्रभु जिमि मोहिं चिह्न तैसो कछुदेहू ॥ हनुमान

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वचन सुनि जानकी चूड़ामणि दिय काढ़िकै। भगवन्त कहत पुनि मातुसिय कमलनैन जल बाढ़िकै॥ सवैया॥ करि तात प्रणाम कह्यो प्रभुसों सब भाँतिन पूरणकाम अहौ। हित दीनसँभारि सु बीरदको ममनाथ कुसंकट बेगिदहौ॥ सुतशक्र कथा सुसुनायकह्यो समुझा-यहु बाण प्रताप महौ। दिन मासमें नाथ न आवहिं जो पुनि पावहिंगे नहिं जीवत हौं॥ तात चहौ तुमहूं अब जान सुराखहुँ प्रान कहौ क्यहि भांती। नाथ बियोग भयो जबते तबते कलहै न सदा कल-पाती॥ त्यों भगवंत बिलोकि तुम्हें हनुमंत भई कछु शीतलछाती। सोउ न बात रही म्वहिंतात सु ह्वैहहि जात स्वई दिनराती॥

दो० मणिबिनुव्याकुल भुजग जिमि बन बिनुझखबेचैन।
तिमि देखे भगवंत बिनु तलफत हौं दिनरैन॥
सुनि सिय बचन समीर सुत बहु प्रकार समुझाय।
चल्यउ गर्जि श्रीरामपहँ चरण कमल शिरनाय॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेसुन्दर-काण्डेलंकादहनवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३॥

दो० शर जडकर रचि सदनवर जो कृत तामें बास।
भाग्यवंत प्रणमामि स्वइ करौ पूर मम आस॥
कूदि सिंधु आयो सपदि पवनतनय यहिपार।
मिल्यो कपिनसुनि हाल सब हरषे हृदय अपार॥

पुनिसब कपिन सहित हनुमंता। चल्यउ जहां राजत भगवंता॥
बरणत सीयचरित सचुपाये। आय सकल मधुबन फलखाये॥
सहित कीशपति पुनिसबकीशा। आये जहँ रघुपति जगदीशा॥
फटिक शिला सुंदर सुखदाई। अनुज सहित राजत रघुराई॥
जाय सबहि चरणन शिरनाये। पूछि कुशल प्रभु ढिग बैठाये॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जामवंत सब प्रभुहि सुनाये । सियसुधिपवनतनयजिमिलाये ॥
सुनि मन मुदित बहुरि भगवाना । हृदय लाय लीन्हें हनुमाना ॥
परम प्रीति समीप बैठाई । बोले मधुर बचन सुरसांई ॥
दो० कहहु तात क्यहि भांतितु । लायहु सियसुधिजाय ।
सुनिबोल्यो हनुमंत तब चरण कमल शिरनाय ॥
सुनहु नाथ भंजन भव त्रासन । तुम्हरी कृपा सुलभ सबदासन ॥
प्रभु आयसु कृत खोज सिधायन । चलतचलत सागर यकपायन ॥
शतयोजन ताकर बिस्तारा । प्रभु प्रतापसो ह्वैकरि पारा ॥
तहँ त्रिकूट गिरि ऊपर लंका । हरिमय बसत दुर्ग अतिबंका ॥
तहँ नृप रावण रहै अशंका । जासु कोप त्रिभुवन उरशंका ॥
त्यहि अशोक उपबन में सीता । रहति गहे प्रभु नाम पुनीता ॥
जाय चरण पंकज शिरनायों । दै मुँदरी कहि कुशल सुनायों ॥
मनभावत आशिष बर पाई । पैठेउँ बाग रजायसु पाई ॥
बन बिभंजि हति अक्षय कुमारा । तव प्रताप लंकापुर जारा ॥
बहुरि आइ सियपद शिरनायों । लै चूड़ामणि सपदि सिधायों ॥
सो प्रभु लेहु हरषि भगवंता । लीनलाय उर कृपा अनंता ॥
दो० कह हनुमंत कृपायतन सुनिये परम प्रवीन ।
युगुल नैन भरिवारि सिय वचनकहे कछुदीन ॥

सवैया ॥ सानुजपायँ गह्यो प्रभुके सुकह्यो यह मोर सँदेश सुभागी । हौ प्रभु दीनदयाल सदै प्रणतारति भंजन कीरति जागी ॥ त्यों भगवन्त सुकाय गिरामन राउरके पदहौं अनुरागी । कौनसो चूक परी म्वहिसों ज्यहिकारण नाथ इतै अबत्यागी ॥ अवगुण एकमया में जानत प्राणतजे न तजे हरिजावत । लागसो नैननको हठिहोत जे बाधक प्राणचलैचहैं तावत ॥ पौन उसास शरीर रुई विरहागिनि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तो क्षणमाहिं ज ावत । त्यों भगवन्त सुहित्तहितै जलनैन सवें न जरे तनुपावत ॥ जाभुजसों सहसेन सुबाहु निकन्दनकै शिवचाप चढ़ायो। जाभुजसों खर दूषण शीर्ष त्रिमारि अभय मुनिबृन्द ब-सायो ॥ जाभुजसों बधि बालिबली शुभकंठहि रंकते राउबनायो। वैभुज काहभये भगवन्तजु आजुलौं नाथ हमें बिसरायो ॥ कुण्ड-लिया ॥ सीताकै अति बिपति प्रभु क्यहिविधि कहौं बुझाय। पल पल बीतत कल्पसम तव बियोग रघुराय ॥ तव बियोग रघुराय साजिदल सपदि सिधावो । मारि असुरयुत बंश समर रजमाहिं मिलावो ॥ लावो विलँब न नेकु समुझि निज बिरदपुनीता । च-लिय बेगि रिपुजीति नाथलैआइय सीता ॥

दो० सुनि सियको दुखहरन दुख रामकृपा सुखऐन।
सजलनैन धरि धीर तब बोले गद्गद बैन॥

त्रोटक छन्द ॥ मनकायगिरा गति मोरिज्यही । सपन्यो दुखचाहि कि तातत्यही ॥ सुनियो प्रभुहै दुखभार त्यही । तजि आपुहुवैगति आनज्यही ॥ क्यहि लागिकरौ प्रभु शोचहिये । रिपुजीति लयाउब बेगिसिये ॥ भुजङ्गप्रयात छन्द ॥ कहौ लंकनाथै ससेना सँहारौं। कहौ लायकै ताहि तौ पायँडारौं ॥ कहौ लंकऊ-पारि सामुद्रबोरौं। कहौ कूटत्रै कुम्भ काचेसो फोरौं॥ कहौ अद्रिलै भूरि सामुद्रपाटौं। कहौपानकै वारि यों मार्गठाटौं॥ कहौ अंगको देउँ कै सेतुआपै । तरै सेनसारी पलैमाहिं जापै ॥ कहौ लै तुम्हैं जाय सीतै देखावौं। कहौ सीयकोलाय आपै मिलावौं ॥

दो० तव प्रताप रघुबंशमणि करौं जो आयसु होय।
तुच्छ शत्रु यहिलागि प्रभु करिय न संशयकोय॥
सुनिबोले रघुबंशमणि ऐसे बल सुत तोर।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

त्वहिं समान तिहुँलोकमें हितू न दूजो मोर॥
प्रति उपकार न योग तव देख्यों करि अनुमान।
ताते सन्ततहौं ऋणी मैं तेरो हनुमान॥
सुनि रघुवीर वचन अनमोला। सकुचि वायुसुत पुनिअसबोला॥
सवैया॥ सोइबड़ो सबभाँति प्रभो प्रभुता ज्यहि आपुदियो रघु-
नायक। नीच निषाद विषादभरो उरलायकियो प्रभुसो सुखदायक॥
ताहि अगम्य सुकाज कहा रघुराज अहो ज्यहि आपु सहायक।
त्यों भगवन्त प्रताप त्वया सब मैं मृगशाखकहौं क्यहि लायक॥
असकहि पर्‍यो चरण शिरनाई। प्रभु उठाय लीन्हे उरलाई॥
निकट राखि बहुबिधि सनमानी। कपिपति बोलि कह्योप्रभु बानी॥
लैकपि भालु कटक बिधिनाना। करहुबेगि गढ़लंक पयाना॥
सुनि कपीश साजी कटकाई। कहिनजाय यूथप बिपुलाई॥
असी शंख मुनि शत भटमाथा। वानर गव गवाक्षके साथा॥
सात पद्म अरु असीकरोरा। दुर्द्धर गजसँग कपि भटघोरा॥
साठि सहस शत तेइसलाखा। सँग बलवीरलिये मृगशाखा॥
छप्पनकोटि शिखरडी संगा। लै कपिचला युद्ध मनरंगा॥
पद्मचारि सत्तासी लच्छा। लै सँगकीश कुमुद भटगच्छा॥
षोड़श खर्ब प्लवँग बलशीला। चला संगलै गर्जत नीला॥
गेरह अर्ब कीश बलवाना। गन्धमदन लै कीनपयाना॥
कोटि सतासी नव्बेलाखा। ताराबखत लिये मृगशाखा॥
छबिससहस नवलख दशक्रोरी। लय केशरी चला रिपुओरी॥
द्वादशकोटि सहसशत बाँदर। बाणवसन्त लिये सँग सादर॥
पद्म आठ नौसै इक्यासी। रतिमुख लिये कीशबलरासी॥
पद्म एक शतलाख सुहाये। मुद मयन्दलै कीश सिधाये॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लाख पचीस कीश यक कोरी। लै सँगचला द्विविद सुखवोरी॥
सात पद्म बसु अर्ब प्रमाना। लै कपिकीन्ह्यो पनस पयाना॥

दो० जामवन्त के साथमें भालुनको दल जौन।
सो किमि बरणौं पार में जानहिं देखे तौन॥
यहिविधि यूथप बहुतहैं कहँलगि कहौं बखानि।
रामचन्द्रके काजहित बटुरे तहँ सब आनि॥

छप्पै॥ प्रभु आयसु तब पाय भालु कपिकटक सिधायो। गरजत घोर कठोर शब्द तिहुँपुरमें छायो॥ यूथयूथ बलवन्त अन्तकहि काहुन पायो। कम्पित अहि महि व्योम शेष दिग्गज सकुचायो॥ श्रीराम कटक को बिभव बड़ जानहिं जिन देखयलियो। यहिभाँति जाय बिसयेंदिवस समुदतीर डेराकियो॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तासिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेसुन्दरकाण्डेश्रीरामचन्द्रसेनासहितसमुद्रतीरप्राप्तवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

दो० स्वामी तुमसों नहिं छपी भीतर बाहर नेक।
यहय समुझि निरवाहिये प्रणतपाल तव टेक॥

सवैया॥ कोउ स्वरूपकरै अनरूप कऊ गुणगाय हिये सुखपावै। कोउरह्यो रटिनाम नितै अभिराम कऊ पद सेवन लावै॥ कोउकहै हरि व्यापक ब्रह्म अनादि कऊ हरि एक बतावै। त्यों भगवन्त प्रतीत जिन्हैं ज्यहिमाहिं तिन्हैं प्रभु हैं त्यहिठांवै॥ श्रीहनुमान महा बलवान सुकूदि जे बारिधि एक फलंका। बागउजारि निशाचरमारि कै आयउ जारि महा गढ़लङ्का॥ ता दिनते दिन राति हिये सब राकस वृन्द रहैं सहशङ्का। आजहु गर्भ स्रवैं तिय दुष्टन कै सुधि श्रीहनुमान कि हङ्का॥

दो० सडरसकल निज निज भवन मन असकरैं विचार।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नहिं निशिचर कुलकेर अब है क्यहुँ भांति उबार ॥
जाके चरबर केर अति बल नहिं बरणों जात।
त्यहि प्रभुके आये नगर कहौ कवन कुशलात ॥

हरिगीतिकाछंद ॥ कपि भालुदल लै राम लछिमन आय सागर तटपरे। यह पाय सुधि मंदोदरी उर कम्पअति शोचहिधरे ॥ करजोरि सादर बार बारहिं पाँय गहि कह रावणै। तजि कोहकरि अति छोह पिय उर धरहु माम सिखावनै ॥ सवैया ॥ नाथ बिरोध तजौ प्रभुसों हित आपन जानि मयासिखही तै। श्रीरघुवीर परात्पर ब्रह्मगनौ करि छोट तिन्हैं नहिं जीतै ॥ त्यों भगवन्त सुजानि भलो पिय देहुपठाय श्रिरामहिं सीतै। नाहिं तो जो खरदूषण बालि कि भैगति चाहत तौ शिर बीतै॥ तामरसछंद ॥ सुनि प्रियकै इति उत्तम शिक्षा। बिहँसि कह्यो कह बानर ऋक्षा ॥ त्रिभुवन बीरनहै मम आगे। डरपति है प्रिय तू क्यहि लागे ॥ नर कपि भालु अहार हमारे। हम मरि हैं तिनके किमिमारे ॥ तोमरछंद ॥ यहिभांति ताहि सिखाय। बैठ्यो सभामहँ जाय ॥ तबलौं कह्यो कउ बैन। कपि भालु लै प्रभुसैन ॥ तट सिंधु डेरहिं कीन। सुनि बोलि मंत्रिन्ह लीन॥ कहियो मतो चित कौन। सबही कह्यो रहौ मौन ॥ छंदत्रिभंगी ॥ घटश्रुति अभिमानी तब कहबानी भट हमसानी कौनजना। जो सौंह हमारी सकै निहारी नर बनचारी कौन गना ॥ छल निरत सदाया कह अतिकाया जो करिदाया हुक्मलहौं। अबहीं क्षिति सारी बिनु नरहारी करउँ पुकारी सत्यकहौं ॥ सुनिकै करिबादा बद घननादा ममयश जादा जगत जहां। बिधि हरि हर सोरे सुभट जुझारे बिबश हमारे नृकपि कहां॥ तब बोले कुंभा असुर निकुंभा रतछल दंभा कलुपलदे। बल बिदित हमारो सुरन पछारो शंकन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धारो मनुपबदे॥ यहिविधि बल आपन सबरत पापन करत प्रला-
पन बिपुल भये। तबकरि पुटहस्ता कह्यो प्रहस्ता सुखप्रद रस्ता
सुनहु चये॥ सिय देहुपठाई जो तियपाई सहित सहाई फिरिजाहीं।
तौ तौ भलिबाता नतु हठिघाता करिय प्रभाता रणमाहीं॥ सुनि
सिख सु बदाई निशिचरराई कह्यो रिसाई ब्रशमानै। कादर सी बातैं
करत कहातैं ममबल ब्रातैं नहिं जानै॥

दो॰ नीति कहत हम आपुपै ठहरे कादर माहँ।
तौ तुम जाना सोइहौ भली भांति सुखछाहँ॥
कह्यो बिभीषण जोरिकर नाथ सुनौ मतमोर।
रामहिं सौंपहु जानकी सबप्रकार भलतोर॥

सवैया॥ रामहिं मानुष तातगनौ जनि पूरणब्रह्म चराचरनायक।
गो द्विज देव सुसंत हितै अवतार धर्योमहिभार नशायक॥ दुर्लभ
जो मुनियोगिन को शिव मानसहंस सदा सुखदायक। सो भग-
वंत कृपाकर सो तजि बैर भजौ भजिबे प्रभुलायक॥ कवित्त॥
नाथ करि दूरि रघुनाथ सों बिरोधभूरि नाइयो सुमाथ जो कुशल
चाहौ प्रानकी। त्यागिहैं न पायकै शरण्य सो सुभायरीति प्रीतिकै
सुभायबात मानुमो प्रमानकी॥ जासुनाम ताप त्रै विनाशक प्र-
सिद्ध गाथ नाथसो प्रकट चारि वेद जाहि गानकी। भाग्यवंतनाथ
सो समुझि विश्वनाथ बेगिसौंपियो सुजाय रघुनाथै नाथजानकी॥
सवैया॥ हित कीनचहौ निज नाथ भजौ रघुनाथ तजौ दुचिता
चितकी। चितकी गति जानत मानत स्वै उर आनतहैं न उतै इत
की॥ इतकी न महासुखता सुखकै हरि आसु नवो बिमुखा नितकी।
नित कीन चहौ सुखनाथ भजौ भगवंत सुबात कहौं हितकी॥
बलफैं घननादसे बीर जिते रण सम्मुख एकन जूटहिंगे। रजनी-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चरबृन्द गुमानभरे हनुमान सबैगहिकूटहिंगे॥ बखशीश महेशके येदशशीश जुतो खग जम्बुक लूटहिंगे। धरिहै धृति कौन कराल जबै रघुवीरके शायक छूटहिंगे॥ चहुँ ओरते बानर भालुजबै प्रभु आयसु लंकमें घैपिलिहैं। भटमारत बैठिय गाल जिते न उलूक सो खोज किये मिलिहैं॥ भगवंत उदै रबिराम भये न दशास्य कुमोदिनि तौ खिलिहैं। धरि है धृतिको करिकोप जबै रघुनायक बाण निजै ढिलिहैं॥ नल नील न सेतु रचैं जबलौं जल राशि न राघव पारतरौ। सुत बालि न लंकदहै जबलौं न प्रभंजनजात सरोपभरौ॥ भगवंत अनंत सुक्रुद्धि हिये जबलौं न शरासन बाणधरौ। जगदीश न शीश हरें जबलौं तबलौं किनलै सिय पायँ परौ॥ प्रियछंद॥ ताते मतमेरो यह मानौ प्रियहीतै। दीजो रघुनाथै सुखसाथै लैसीतै॥ तोमरछन्द॥ कह कोपि तौ बिसअक्ष। रिपुकेर ठानतपक्ष॥ त्यहि ते उहैं किनजात। अस भाखि मास्यो लात॥ त्रोटकछंद॥ मोहिं मारेहु लात सो नीककियो। करिताड़नकै प्रभु सौंह दियो॥ प्रभु पै हम तौ अब जाहिंभजे। पररा उरको हित रामभजे॥ अस भाखि सुमंत्रिन संग लियो। रघुबीरके तीर पयान कियो॥ सवैया॥ जे पदकंजन सों प्रगटी शुभदेवसरी त्रयताप नशावन। जे पदकंजन पादुकनै मन भारत लायरहे करिचावन॥ जेपदकंज कुरंग छली सँग धायचले भवदापन दावन। देखिहौं जाइसु आजुभले भगवंत स्वई पदपंकज पावन॥ जे पदपंकज धूरिछुये ऋषिनारि तरी शिवमानस गोये। जे पदपद्म सप्रेम हिये सुविदेहनिलै लय सादर धोये॥ जे पदकंज परेभे हरे बनदंडक पाप सशापके खोये। पाइहौं आजु सबै सुखमें भगवंत सोई पदपंकज जोये॥ कवित्त॥ दानि सुखदान के प्रमान है निगम बीच राबरी सुरीति क्यों न देखतै

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सँभरि हैं । जानराय जानि जनजीकी रुचि लालसाहु भायके न भायसी सुभायहौं निदरि हैं ॥ भाग्यवन्त दीनबंधु जानिकै सुजन दीन कृपया कटाक्षकै बिषम पीर हरि हैं । करुणानिधान रघुबंश अवतंस आजु मेरे शीश कञ्जपाणि जानकीश धरि हैं ॥

यहिबिधि मनमहँ करत बिचारा । आवत भयो सिंधु यहिपारा ॥
कपिन बिभीषण देख्यो आवत । रिपुचरजानि राखित्यहितावत ॥
कपिपतिसन बरण्यो त्यहिबाता । सुनितिनजाय कह्योजगत्राता ॥
नाथ अनुज रावण रिपु केरा । आवा मिलन तुम्हें यहि बेरा ॥
कह प्रभु शरण जो आवा होई । मर्म्म बूझि लै आवहु सोई ॥
प्रणतपाल मेरो यह बाना । शरणागत म्वहिं प्राणसमाना ॥
सुनि कपि बृन्द हरषि उठि धाये । सादर त्यहि प्रभु पहँ लै आये ॥
अनुज समेत देखि प्रभु शोभा । बोल्यो बचन बिगत मनक्षोभा ॥

सवैया ॥ नाम बिभीषण रावणको लघुभ्रात निशाचर के कुल जायो । तामस देह परायण पाप सुधर्म अचार न भूलिहु भायो ॥ त्योंभगवन्त सु आपु यशै सुनि पावन मैं शरणैं तकि आयो । कीजिय त्रातु कृपालमया शरणागत पाल तुम्हें श्रुतिगायो ॥ दासन के हित राम सदासहि दुःख कियो निज दास सुखारे । सो बरबात प्रसिद्ध प्रभो यश पावन वेद पुराण पुकारे ॥ ज्यों प्रह्लाद गयंदहु की सुनि टेर न देर किये दुख टारे । त्योंभगवन्त अनाथके नाथधरो प्रभु हाथ सु माथ हमारे ॥ राम गरीब निवाज हस्यो तुम दीन अनेकन को दुख गाढ़ो । शीत सुकंठ कियो रह्योजात जु बालि के त्रास महानल डाढ़ो ॥ त्योंहिं बिभीषणहू कि सुनो भगवन्त सुदास बिनै करै ठाढ़ो । रावण के अघओघ समुद्र मैं बूड़त नाथ भुजागहि काढ़ो ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कुंडलिया॥कीन्ह्यो दंडप्रणाम प्रभु लीन्ह्यो हृदय लगाय। निकट राखि पूँछी कुशल सानुज श्रीरघुराय॥ सानुज श्रीरघुराय कुशल पद पंकज देखे। मिट्यो अमंगल मूल धन्य निज भागहि लेखे॥ भाग्यवन्त बड़ जानि राम जल सागर लीन्ह्यो। कहि लङ्केश्वर ताहि तिलक लङ्काकर कीन्ह्यो॥ सवैया॥ जो सुख संपति रावण को शशिभाल दिये दशभाल चढ़ावत। जाबल तीनिहुँ लोकनमें दशकन्धर राजकरै मनभावत॥ सोइ बिभूति बिभीषणको रघुनाथ दिये पद माथहि नावत। यों भगवन्त सु साहेबसे भजि केन कहौ मन भावत पावत॥

दो० राम सुभाव सुरीति लखि हरषे सब कपि भालु।
सखा निकट बैठाय तब बोले राम कृपालु॥

सवैया॥ हे कपिराज सुलंकपती कपि भालु जे औरहुहौ मति आगर। देखहु सिंधु न पारभरे झख ऊरग नक्र औ कच्छप मागर॥ थाहि लहै नहिं घाट कहूँ सु अगाध महा नहिं बाटकि रागर। त्यों भगवन्त बिचारि कहौ क्यहि भाँतितरी यह दुस्तर सागर॥ पद्धरी छंद॥ कह लङ्कनाथ सुनु दीनबन्धु। शोषै सुबाण तब कोटि सिन्धु॥ पर कहत नाथ अस नीति गाय। करिये समुद्रसन बिनय जाय॥ सुनि प्रभु मंत्र बिभीषण केरा। बोले उचित कह्यो यहि बेरा॥ रुच्यो लषण मन यह मत नाहीं। जोरि पाणि बोले प्रभु पाहीं॥ नाथ रोष करि शोषिय याही। बिनय किहे जड़ मानतनाही॥ कह्यो करब ऐसहि परिणामा। अस कहि गये सिंधु तटरामा॥ करि प्रणाम बैठे कुशडासी। कृपासिंधु सुंदर सुखरासी॥

दो० जबहिं बिभीषण राम पहँ आये शरण सिधाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तबहिं दशानन बोलिकै पठये दूत दुराय ॥
छल मैं प्लवँगरूप ते धारी। रहे रामकर चरित निहारी ॥
जानि सो मर्म कपिन जब पाये। तुरत बाँधि कपिपति पहँलाये ॥
कह कपीश नासा श्रुति काटी। पठवहु फेरि इनहिं बहुडाटी ॥
त्रासत दीन्हे राम दुहाई। सुनत सदयदिय लषण छुड़ाई ॥
दशमुख कर यह पत्र हमारा। दै सँदेश बरण्यो मुख द्वारा ॥
जो निजकुशलचहसि दशमाथा। सीतहि देइ मिलौ रघुनाथा ॥
नाहिं तो चलि अब कालतुम्हारा। आवा कठिन न होइ उबारा ॥
करि प्रणाम चर लंकहि आये। दै दशमुखहि पत्र सब गाये ॥
सुनि संदेश बँचायसि पाती। सभथबिहँसि बोला कुलघाती ॥
जान्यउँ मैं उनकै प्रभुताई। बृथा करहु तुम निकर बड़ाई ॥
सचिव बिभीषण सम जिनकेरे। कबहुँक पूर परै तिन तेरे ॥
यहि बिधि रह्यो गालसो मारी। सुनहु राम यश भव भयहारी ॥

दो॰ तीनि दिवस सागर निकट बिनये राजिव नैन।
जब नहिं मान्यो कोपि प्रभु साध्यो शायक पैन ॥

भुजंगप्रयात छंद ॥ जबै राम शारंग लैबाण तान्यो। भयोक्रुद्ध श्रीराम सामुद्र जान्यो ॥ सभै बिप्र ह्वै रत्नलै भेंट आयो। रचैं सेतु नलनील मंत्रै बतायो ॥
ये द्वउ कीश महाबल बीरा। रहत रहे ऋषि आश्रम तीरा ॥
जब कहुँ कुटी छाँड़ि ऋषिटरहीं। तब ये अमित उपद्रव करहीं ॥
शालिग्राम शिला गहि ल्याई। जलमें फेंकि देहिं अन्याई ॥
यहिते ऋषिन शाप इमि दीन्हा। इनकर पाहन परशन कीन्हा ॥
दो॰ जल में नहिं बुड़िहै कबहुँ यहै हेतु जियजानि।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सेतु रचन नल नीलही कह्यो बारिनिधि आनि॥
यह मतदै रघुबीरको प्रभु आयसु पुनि पाय।
गयो सिंधु अपने भवन चरण कमल शिरनाय॥
रामचरित, अद्भुत अमित पार न पावत वेद।
भाग्यवंत गावत सुनत नाशै कलिमल खेद॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे सुन्दरकाण्डसमाप्तवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५॥

इतिसुंदरकाण्ड समाप्तम्॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भक्तिशिरोमणि लङ्काकाण्ड ॥

छप्पै ॥ जै शिवसुखद सुजान सदय प्रणतारति मोचन । कृ-
पासिंधु सुखधाम अमल पंकज दल लोचन ॥ उमारमण दुखदमन
शमन त्रयताप सुरेशं । प्रणत कल्पतरुनाम नमत बाँछित प्रदवेशं ॥
जै जै महेश सेवत सुलभ शरणागत बत्सल प्रबल । नित भाग्यवंत
बन्दन करत शिव पदपंकज रज अमल ॥

दो॰ गुरुपद कमल प्रणामकरि सिय रघुबीर मनाय ।
भाग्यवन्त श्रीराम यश बरणौं सब सुखदाय ॥
तब नलनीलहि बोलिकै कह्यो भानुकुल केतु ।
जलनिधि पारहि जानहित रचहुबेगि दृढ़सेतु ॥
सुनि निदेश मर्कट बिपुल चहुँदिशि चले सुखेन ।
लागे गिरिगण आनि बहु नलनीलहिते देन ॥
प्रभुप्रताप अतिशय सुदृढ़ रचेन्हिते सेतु बनाय ।
हरषे लखि रचना ललित सानुज श्रीरघुराय ॥

सो॰ शिवस्वरूप सुखधाम थाप्यो तहँ रघुबंशमणि ।
रामेश्वर इति नाम कहि बरण्यो महिमा अमित ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इनकर दरशन लोग जेकरिहैं जगमहँ सुजन ।
ते तजिकै सब शोग बसिहैं ममपुर जायकै ॥
यहिबिधि अमित महातम गाई । कहेउ कृपानिधि सबहिं सुनाई ॥
पुनि रघुबीर रजायसु पाई । चलेउभालु कपि कटक बजाई ॥
कउ जलचरन्ह उपरचढ़ि जाहीं । कउ मगसेतु कऊ नभमाहीं ॥
कौतुक देखि मुदित रघुराई । सादर शिवपद शीशनवाई ॥
अनुज सहित प्रभुकीन्ह पयाना । भये सगुन सुन्दरशुभ नाना ॥
दो० सेनसहित रघुबंशमणि उतरि बारिनिधि पार ।
डेरा कीन्ह्यो जायकै हरण अखिल भवभार ॥
दशमुख सुन्यो पार तरि आये । सहित सेन कोशल नृपजाये ॥
ब्याकुल मनमहँ करत बिचारा । गयउ भवन कुल बिटप कुठारा ॥
तब मयसुता जाय पगलागी । बोली बचन परम अनुरागी ॥
परिहरि क्रोध नाथ ममबानी । करहुश्रवण हित आपन जानी ॥

हरिगीतिका छन्द ॥ नाथतजि रघुनाथ सों सब बैर नावहु माथही । लयदेहु सादर जाय सिय परिपायँ करिपुट हाथही ॥ श्रीराम करुणासिंधु आरतबन्धु जनरक्षक सदा । अवलोकि क्षमिहैं शरण निज अपराध पिय कीन्ह्यो यदा ॥

दो० मधु मुर कैटभ से सुभट जिनमारे रणजीति ।
तिनकहँ जनि मानुष गनहु मानहु बचन प्रतीति ॥

सवैया ॥ रमकि बाम जुआन्यों चोराइ बेसाहेहु सो पिय बैर महाहै । जालगि क्षीरसमुद्र मथ्यो यह तुच्छ त्वया गढ़लंक कहाहै ॥ सीयस्वयम्बर क्यों न बर्यो यह पौरुषका तब तौ न रहाहै । जानि परै युतबंश तुम्हैं अब चाहत काल कराल गहाहै ॥ तारक छन्द ॥ तेहिते तजिमान भजौ रघुबीरै । हित आरत भञ्जन भौभय भीरै ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ज्यहिते अहिवात रहै पिय मेरो। यश पावन पुञ्ज जगै जग तेरो॥ सुनि बाम कि बानि कह्यो अभिमानी। डर नाहकतैं मनमें प्रियमानी॥ सचराचर बश्य अहै जग मोरे। क्यहि लागि प्रिया उपजा भय तोरे॥किरीट छन्द॥मैं निज बाहुनके बलसों युग चौंसठि राज किह्यों मनभायन। देवसुता नर नागसुता मनरूचक जे बरिबर्बस लायन॥त्यों भगवन्त न आन गन्यों भट कन्दुक ज्यों शिव शैल उठायन। देखत सो भुज भामिनि क्यों कहुजाय परौं अब शत्रुके पायँन॥ यहिबिधि प्रियहि बहुत समुझाई। चढ़ि अट्टालक बैठ्यो जाई॥ तहां होइ अति रुचिर अखारा। देखनलाग जाइ मदभारा॥ परम प्रबल रिपु शिरपर आयो। तदपि न शोच तनकमनलायो॥ कोटि इन्द्र सम बिभव बिलासा। सन्तत करत न मनमें त्रासा॥

नाराचछन्द॥ इहां श्रिराम सैनसासुबेल आयकैरहे। बढ़्यो प्रमोदजाल तत्र मालशोक के दहे॥ बिलोकि रामचन्द्र चन्दओर पूर्व योंकही। कहौ निशेश माहिं श्यामताय कौनहै सही॥ कह्यो सुकण्ठ भूमि छाँह श्रूयभाख योंकई। हत्योजु राहु चन्दहीय श्यामतातिहै स्वई॥ रच्यो जबै बिरञ्चिहै रत्यास्य काढ़िताै लियो। निशेश सारभाग ब्रूहिकोइ छिद्र सोहियो॥ सुबाट तत्र व्योम छाँह पर्त जोहि जानियो। सुश्रूय रामचन्द्र आपु फेरियों सुभानियो॥

दो० गरल अनुज शशिकरप्रिया निजउर दीन्ह्यों बासु।
सबिष निकर कर काढ़िसे। जारत बिरहिन आसु॥

सो० सुनि प्रभु बचन बहोरि चरणकमल शिरनायकै।
पवनतनय करजोरि बोल्यो अति मंजुल बचन॥

सवैया॥ हे रघुबीर कृपाकर धीर सुसेवत पीर डरो तन खोई। अद्भुत आपु चरित्र सबै भगवन्त सुजानि न पावत कोई॥ हे प्रभु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पूरण दास त्वया शशि आस न आन लिये मनकोई। मूरति आपु बसै बिधुके उर श्यामलता रघुनायक सोई॥ दोधक छन्द॥ मारुतनन्दनकी सुनि बानी। भेति प्रसन्न श्रिराम सुजानी॥ दक्षिण ओर निहारि बहोरी। राजिवनैन कह्यो सुखबोरी॥

दो० हेलङ्केश्वर देखु यह हैका दक्षिणओर।
घनइव गरजत होतजनु उपलबृष्टि अतिघोर॥

तब लङ्केश कह्यो सब हाला। दशमुखकरअतिबिभवविशाला॥ सुनि प्रभु बिहसि नराच चलायो। छत्र मुकुट ताटङ्क गिरायो॥ रावण सभा चकित रहिगयऊ। होत महा यह असगुन भयऊ॥ बोला शीश गिरे भल जाको। खसे मुकुट कसअनभल ताको॥

दो० यहिबिधिकहि सबसन कहेउ करहुजाय गृह शैन।
समय पाय मन्दोदरी बोली भरि जल नैन॥

सवैया॥ पति मानहु बात कही हमरी रघुबीर सों दूरि बिरोध करौ। जनि मानुष जानि तिन्हैं मनमें वश मोह न यों हठ आनि धरौ। सचराचर व्यापक ब्रह्म उन्हैं भगवन्त बिचारि सुहित्त सरौ। प्रभु मोहिंसमेत सुलै सियको रघुबीरके पायँन जाय परौ॥ होरी॥ पिय मांनो कही मम बात सही रघुबीरसों रारि रचौना॥ आदिपुरुष अलखित गति जाकी बूझि प्रभाउ परौना। नेतिनेति ज्यहि वेद पुकारत पावत पार हरौना॥ सकलसुख मंगल भौना॥ शंकरचाप कठोर महा अति बिदित भुवन तिहुँ जौना। राजसभा रघुनन्दन तोरयो कमलनाल सम तौना॥ कहा तुम बाण रहौना॥ बालि महाबलशालि रह्योहै प्रतिभट जासु कतौंना। एकहि बाण प्राण तेहि लीन्हे छल बल एक चलौना॥ तुम्हैं किय कांखमें जौना॥ जाको दूत एक पुर आयो कीन्ह्यो सबहि खलौना। जारिकै लंक

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रच्यो होरी ज्यहि घरघर कीन सुगौना ॥ रह्यो तब ह्वै कत मौना ॥ यों भगवन्त कहत मंदोदरि सुनहुनाथ दै श्रौना। सीता देइ मिलौ रघुनाथै नाहिं तो मरन सचौना ॥ भागि तिहुँलोक बचौना ॥

दो० मंदोदरी वचन सुनि बिहसि कह्यो मतिमन्द।
अहो मोह ममता प्रबल को न पर्‌यो त्यहि फन्द ॥

सवैया ॥ औगुण आठ सदा निबसैं उर नारिन के कबि बृन्दन गाया। साहस भै अबिबेक अशौच अनृत्यअदै अरु चंचल माया ॥ तैं रिपुरूप कराल महाप्रिय गाय हमैं अति भै उपजाया। सो सहजै बश मोहिं प्रिया सब जानि प्रसाद त्वया अब पाया ॥

दो० यहिमिस प्रभुता अमित मम कीन्ह्यो प्रिया बखान।
तुम समान चातुरत्रिया जनम्यो जग नहिं आन ॥

अस कहि सो शठ सोवन लागा। मंदोदरी हृदय दुखजागा ॥ काल बिबश प्रिय मति बौरानी। सूझिपरै कछु लाभ न हानी ॥ प्रात प्रगट दशकन्धर जागा। गयउ सभा उठि अबुध अभागा ॥ लागे किन्नर गुण गण गावन। बैठ अशंक लंकपति रावन ॥

दो० मित्रभाव चाहै भजै चहै भजै अरिभाव।
राम मिलन संशय नहीं भाग्यवन्त श्रुतिगाव ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेलङ्काकांडे श्रीरामचन्द्रसुबेलशैलागमनवर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

सवैया ॥ करुणालय पालय दीनजनं अघदालय घालय शोक लदा। यशपावन चावन छावन त्यों रिपुरावन दावन बेदबदा ॥ खल खण्डन मण्डन भूमि अखण्ड प्रचण्ड प्रताप प्रगाट्ट यदा। पद बन्दन हौं भगवन्त करौं युत जानकि जानकिनाथ सदा ॥

दो० इहाँ प्रात रघुवंशमणि पूँछा सचिव बुलाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कहहुबेगि का करिय कह जामवन्त शिरनाय ॥

जामवन्त सवैया ॥ हे रघुबीर कृपा सुखसिंधु सुआरतबन्धु दया उरधारै । नीति निधान सुजान शिरोमणि कीरति पुञ्ज सुछन्द पुकारै ॥ जानत हौ सब पूंछत मोहिं सुमंत्र कहौं निज बुद्ध्यनुसारै । जो भगवन्त सुभाव मनै प्रभु दूत पठाइय बालिकुमारै ॥ रामसवैया ॥ बालितनय बलबुद्धि निलै ममकारज आजु सु लंकहि जावो । रावन देव सतावन सों कहि पावन धर्म हिये दरशावो ॥ हौ अतिचातुर ताततुम्हें बहुभांति कहा कहिकै समुझावो । काज हमार हुवै हित तासु सो दै उपदेशन आतुर आवो ॥ प्लवंगमछंद ॥ हे रघुबीर सुसिद्धि स्वयं तव काजहै। दीन्हयउ आदर जानि सुसेवक आजहै ॥ बंदि कृपानिधि पायँ शिरायसु राखिकै । अंगद कीन पयान सु जय जय भाखिकै ॥ त्रोटकछंद ॥ पुरपैठत रावण पुत्र मिल्यो । कपि कौन कहां इत जात चल्यो ॥ हम दूत अहैं रघुनायकके । त्रिशिरा खर दूषण हायकके ॥ पितु आन्यउ बाम जिन्हैं कि स्वई । तव फूफुहिं कीन्ह कुरूप ज्वई ॥ सुनि लात उठायउ अंगदको । पटक्यो गहि पांव तबै बदको ॥

यह कौतुक बिलोकि चुपसाधी । जहँ तहँ चले भागि अपराधी ॥
कोलाहल पुर भयउ अपारा । आवा कीश नगर ज्यहिंजारा ॥
परम त्रास उपजा सबकेहीं । बिनु पूंछे कहि मारग देहीं ॥
यहि बिधि जाय बालिसुतबंका । रावण द्वार अड्यो निरशंका ॥

दो० तुरत निशाचर एक तब पठयो रावण तीर ।
जाय कहौ तेरे निकट आयो कपि यक बीर ॥

दूततोमरछंद ॥ सुनियो सु निशिचर राज । यकदूत श्रीरघुराज ॥ कर आपुके दरबार । पर आइयो बलभार ॥ रावण ॥ कपि बेगि ला-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वहु जाय। तक्रिये कहांकर आय॥ सुनि बोलि निशिचर कीश। लैगे जहां दशशीश॥

रावण दोहा॥

रे वानर कहु कौनतैं कहा हवै तवनाम।
कौन पठायो है इहां कहु आये क्यहिकाम॥

अंगदसवैया॥ मैं रघुबीर को दूत दशानन अंगद नामहै बानर जाती। श्रीरघुबीर पठायो हमें इत रक्षण हेतु त्वया कुलघाती॥ सो तजि मान भजै भगवान अयान चहै निज जो कुशलाती। नाहिं तो चाहत होन दशा तव दूषण बालि कि भै ज्यहिभांती॥ रावण सवैया॥ कौनबिपत्ति परी कहु मोहिं जु आयसि त्रातु करै शठमोरी। मैं वहि मानुष काह भजौं सचराचर मोहिं रह्यो करजोरी॥ मोसम को भगवन्त बली प्रभुता ज्यहि जाहिर है नहिं थोरी। अंगद बात विचारि कहै नहिं जानि परै तव बुद्धि भै भोरी॥ अंगदसवैया॥ रेमातिमंद बकै कस व्यर्थ न सूझत नेकु तुझै बशमोहै। पूरणब्रह्म चराचर व्यापक हारकभार मही करजोहै॥ सेवत देव अजादि यदा भगवन्त जु प्राण सदाशिव कोहै। जारजफंद त्रिलोक बँध्यो दशकंधर अंधर क्यों नर सोहै॥

दो॰ तासु नारि हरि आनि शठ क्यों स्वैहै सुखशैन।
परि है यह फल जानि तब जब छुटि हैं शरपैन॥

रावण॥ कहु कौन को बालक अंगद तैं यहि भांतिन जो बढ़ि बोलतहै। भगवन्त अशङ्क न शङ्कधरै मनहींमन माहिं कलोलत है॥ हमसो भट निन्दि तपस्विन को कहि पुञ्ज प्रभावहि खोलत है। कतचाहत जान तुकाल मुखे शठ ह्यांसन क्यों नहिं डोलतहै॥

दो॰ म्वहिं समान योधाप्रबल जनम्यो जग नहिंआन।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

त्यहि आगे अङ्गद कहा नरकर करसि बखान ॥

अंगद कबित्त ॥ बालि बलशालि जो प्रसिद्ध है सुभटलोक जानतहौ ताहि तुम रह्यो जाकी कांखही॥ताहीकर बालकहौं अंगद श्रिराम दूत प्रभुको सुबल पाय बात बढ़ि भाखही॥ कीन्ह्योंहैविभीषण अनाथ लंकनाथ जौन सोई रघुनाथ चलि हेरै किन आंखही । भाग्यवन्त कहौं सत्य नातरु करालकाल आयो दशभाल तव ताते बढ़ि माखही ॥ रावण त्रोटकछन्द ॥ कहु अंगदहै वह बालिकहां॥ अंगद।दशग्रीस म देख्यउ जाय जहां॥ रघुबीर बिरोध किये गति ज्वै। बरणी त्वहि रावण सादरस्वै ॥ रावण सवैया ॥ अंगद बात सुसत्य बताउ तहीं त्यहि बालिको बालक जाये। चाहिय तासु कि ऐसि दशा भगवन्त तनै ज्यहि तो समपाये ॥ जन्मत क्यों न गये मरि अंगद बालिबलीकर नाम धराये। जे तव तात किये हठिघात तिन्हैं कर तैं शठदूत कहाये ॥

दो० ताते ममदल लै अबहिं चलि मारौ द्वउ भाय।
अंगद अपने बापको लीजे बैर चुकाय॥

अंगद गंगाधरछन्द ॥ नीचरे मीच के बश्य बोलै कहा बाढ़ि ऐसो तुझै लाजआवै नहीं। ठानतो भेदहै मूढ़ मेरे मनै जोरते पौन के शैलडोलै कहीं ॥ भृत्यहैं जासु ब्रह्मादि है तासु हौं दास बोरे कुलै काह व्यर्था रटै। लावतो ईशमें भेद जोरे कुबुद्धे तऊना ह्वदै मूढ़ तेरो फटै ॥ रावण गीतिका छन्द ॥ रे दुष्ट टेढ़े बैन तेरे आजु में जो साहतो। सो जानतो कछु धर्म नय गमखाय तासों राहतो॥ अंगद ॥ तव नीति धर्म सुशीलता शठ सुनी हौं हूं कान है। पर बामचोरी करत याही काम नाहिंन आनहै॥ सवैया॥ काननताक बिना अनुजा निज नैनन हेरि महादुख दागी। कीन क्षमा तुम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धर्म बिचारि न नेकहु लाज हियेतव लागी ॥ त्योंभगवन्त सुशीलत धर्म दशानन पुंज त्वया जग जागी। रामप्रताप प्रतापबली तव पायनदर्श हमौं बड़भागी ॥ रावण पद्धरी छंद ॥ शठ कीश काह जल्पै तुव्यर्थ। भट अहै कौन हमसों समर्थ ॥ ज्यहि सहित शम्भु कैलास शैल। लीन्ह्योउठाय मनपरम चैल॥ अंगद बंधुछंद॥ कौन बड़ी प्रभुता तुम कीन्हे। कीश फिरैं बहु शैलन लीन्हे॥

रावण दोहा॥

अंगद तेरे कटक में कौन अहै अस शूर।
जो मोसन करिकै समर पाय सकै कहु पूर॥

कबित्त॥हीनबल नाथतव नारि के बिरह आपु अनुजहु तासुदुख दुखित बनायकै। तुम शुभग्रीव दोऊ कूलके बिटपअहौ अनुज हमार हवै भीरु सो सुभायकै॥ शिल्पकर्मजानै नल नील भालु जामवन्त बूढ़ासो अत्यन्त भयो जर्जर सुखायकै। भाग्यवन्त आहै कपि एकही सुभट जौन आयकै प्रथमगयो लंकही जरायकै॥ अंगद कुण्डलिया॥ सुनु रावण साँचीकहै जार्यो पुर हनुमान। म्वहिं अचरज सुनि होतहै तेरो पुर बलवान॥ तेरो पुर बलवान दह्यो किमि कीश अकेला। बीर न सो बहुचलत कहौ ज्यहि भट अलबेला॥ अलबेला सुग्रीवकर सो धावन प्राचीअहै। खबरिलेन पठवा हमें सुनु रावण साँचीकहै॥ सही बचन तैं जो कही मोहिंन सुनि कछु क्षोभ। कोउन हमरे कटक अस तोसन लड़िलहै शोभ ॥ तोसन लड़िलहै शोभ बधै मेढुक मृगराई। कहैन कउ भलताहि हते तिमि त्वहिं रघुराई॥ रघुराइहिं लघुता परम समुझि न त्वहि मारनचही। तदपि रोष रावण कठिन क्षत्रिजाति कर है सही॥

दो० ताते मम सिख मानिकै छाँड़ि सकल फरफन्द।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सादर दै श्रीजानकी परुपायँन रघुचन्द ॥ रावण सवैया॥ हे कपिके गुण एकबड़ो बहु यत्नकरै प्रतिपालक काजै। धन्यसु साहबहेत जहाँ तहँ नाचत जो करि त्यागन लाजै॥ त्यों भगवन्त सुसाहब को नित नाचि सुकूदिकै कारजसाजै। अंगदजाति त्वया प्रभुभक्त कहै गुण स्वामि न क्यों इमिआजै॥ अंगद कवित्त॥ तेरी गुणगाहता समीरसुत सत्य मोहिं नीकेकै सुनायो जाय राघव समाजहै। कानन उजारि सुतमारि पुरजारे तव तदपि न तासु कछु कीन्हे तू अकाजहै॥ कह्यो हनूमानसो बिलोके हम आनि सब साँचेहू न माखमन तेरे रोषलाजहै। भाग्यवन्त सोई तव प्रकृति बिचारि भली कीन्हीं अति ढीठताय तोसों हम आजहै॥ रावण इन्द्रबज्रा छन्द ॥ जोपै कुबुद्धी असि तोहिं आई। तौ तौ सुतातैं लिय होतखाई॥ अंगद॥ खायों पिताको अब खाततोहीं। पै बूझिआयो कछु आजुमोहीं॥ सवैया॥ बालि महा बलशालि रह्यो यशपावनगुंज जगै जगजाका। जासम बीर त्रिलोकन में भगवन्त नहीं हम दूसर ताका॥ ता यश खोलन को दशकन्धर जीवत जौलगि है तु पताका। सोइ बिचारि सुनै शठ रावण आजु करौं नहिं तोहिं हलाका॥ रावण कवित्त॥ बोलु रे सँभारि क्यों न बानर लबार नीच मीचुको सुदानिहै बताउ कौन मोहिंरे। जासु त्रास कम्पित सकललोक लोकपाल कालहू कराल व्याल कीन वश्य वोहिंरे॥ होसि क्योंन आनिहौं शरणछाँड़ि वा शरण भाग्यवन्त बाहुये प्रबल बीस जोहिंरे। काल्हिही सँहारिकै सबन्धुसो नृपालपुत्र बालिपुत्र कारिहों सु बानरेश तोहिंरे॥ अंगद कवित्त॥ आयो दूत जाको एक बैरिन अनेक बीच नीचन सँहारि गढ़ लंक गयो जारिकै। थाक्यो करि बुद्धिबललाग्यो न उपाय एक

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कपिको चरितदेखि बैठ्यो सबै हारिकै ॥ सोई बल रावण बिचारि मनमाहिं तव आयों सिखदेन कहौं तोसन पुकारिकै। भाग्यवंत देहुलय जानकी शरणजाय पाइहौ न पार रघुबीर जूसों रारिकै॥ सवैया॥ सादरलै मिथिलेशलली किन आंधरहोसि न संगहमारे। मैं प्रभुसों क्षमवाइहौं भूरि जरूरे कूर कसूर तिहारे॥ त्यों भगवंत बिचारि लखै करि बैर उन्हैं क्यहुँ पार न पारे। ईशदई बखशीश दशानन खीसकरै जनि बातके मारे॥ तेरेइकर्म सुबाहुगये मिटि तेरेइ कर्म खरादिक नासे। तेरेइकर्म मर्‍यो सुतअक्ष सुतेरेइ कर्म जरेगृह खासे॥ तेरेइ कर्म प्रधान सबै शठ तेरेइकर्म य बैरप्रकासे। खानचहैं सुनु तोहिं दशानन तेरोइकर्म तुझे अब गांसे॥

दो० ताते रावण छांड़िकै उरसि द्वैत की बास।
कर्म बचन मन कपट तजि होसि रामको दास॥

रावण सवैया॥ जोतुमहीं तजि आसभयो हरिदास भलोफल कौन है पायो। दीहिनि काल कराल मुखे त्वहिं मेलिन नेकु दया उनलायो॥ क्यों बचिहो हमसों अब आजु सलोकहु तौ परलोक नशायो। ऐसेहि नाथ भजै हितअंगद मो कहँ देन भलीसिख आयो॥ अंगद सवैया॥ रे त्रियचोर कथंनरते जिन बालिबली शर एकहिमार्‍यो। बीरबड़े त्रिशिराखरदूषण भागि बचे न त्यऊ रणपार्‍यो॥ तोरि शरासन सीयबर्‍यो भृगुनंदनको जिन गर्व उतार्‍यो। क्यों लड़ि पावहुपार तिन्हैं दशकंधर बंदरसों ज्यहिहार्‍यो॥ रावण सवैया॥ देखि डरैं द्विजगायनजे रघुनाथ अनाथहि सेवतचीन्हे। छोड़तहैं परद्रव्यसदै परदार बिलोकत लाजहि लीन्हे॥ होत न है परद्रोह जिन्हैं भगवन्त रतीमन धर्महि दीन्हे। तेलड़िहैं कहु मोसन क्यों बन घूमत बेष यतीकर कीन्हे॥ अंगदहरिपदछंद॥ रे रावण

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बलवंत तोहिं मैं मनमें तनक न डर्ता हौं । रामकृपा बलपाय स्वामि को संतत अभै बिचर्ता हौं ॥ त्वहिं पितुको गुनि मित्र आपने हित उपदेश उचर्ता हौं । भाग्यवंत गहु शरण रामकी याही सिखवन कर्ताहौं ॥ रावण ॥ तीनिलोक ममशरण आजुहै हम क्यहिशरणहिं जावैंगे । का करि हैं तपसी वै मेरो साजि सेन जो आवैंगे ॥ ह्वैहै एक दिवस को चारा कुंभकरण छकि जावैंगे । उनकर ह्वैहै मृत्यु हमारो सुयश देव गण गावैंगे ॥ अंगदसवैया ॥ रावण रावण कै जगमें कहु मैं जे सुने सो सुनावत तोही । एक पताल गयो बलि जीतन बांध्यनि बालकहै गृहजोही ॥ खेलहिं बालकवृन्द तहांकरि कौतुक मारहिं ते बहुओही । त्योंभगवन्त सुदेखिसदै बलिजाय छँड़ाय दिये सुरद्रोही ॥ एक बिलोकि सहस्रभुजा जलजन्तु यथा धरि धायकै लीन्ह्यनि । कौतुकलागि गये लै मन्दिर जाय छँड़ाय पुलस्त्य सो दीन्ह्यनि ॥ एक सकोच बतावतहै म्वहिं बालि निजै ज्यहि कांखमें कीन्ह्यनि । त्यों भगवन्त अहै इनमें कहु रावणकौन नहीं हम चीन्ह्यनि ॥ रावण कबित्त ॥ रे रे शठ कीश सुनु सोईद-शशीश बीशबाहुकोप्रभाव जान शम्भु शैल जाको है । जानैं शिव शूरता सरोजसो उतारिशीश पूज्यो निजपाणि जायबार भूरि ताको है ॥ जानैं बलबाहु जाल जाको दश दिग्गपाल आजौ उर होतशाल जाके सुनि हाँको है । सोई दशशीश लोक लोकनको ईश जौन भाग्यवन्त धीर त्यों प्रसिद्ध बीर बाँको है ॥ सवैया ॥ जानत दिग्गजहैं दशहू सुनु अंगद हौंउरकी कठिनाई । है मद-मस्त जबै जबजाय बजायभिर्‌यो तिनसों बरिआई ॥ त्यों भगवन्त सुदन्तनसों जिन फोरि करालदिये बहुताई । लागत चोट अहै उरकी रद टूटिगये स्वइ मूलक नाई ॥ करि कोपजबै सुनु अंगदहौं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बलवन्त सुभाय चलौं धरणी। तब डोलतहै यहि भाँतिनसों चढ़ते गजमस्त यथा तरणी॥ भगवन्तसु गायकहौं कहँलौं निज पौरुष की बरमैं करणी। लघु बोलसि क्यों त्यहि रावण जासुन कीरति पुंजपरै बरणी॥ अंगद सवैया॥ दाहकबह्नि कुठार यदा भुजसाहसबाहु अरण्य भयोहै। सागरसों परसावर जामधि बूड़ि महीपति भूरिगयो है॥ भागिगयो ज्यहि देखत गर्ब सुकीरति पुंज त्रिलोक छयो है। सो भगवन्त अहै नर क्यों महिभारहरै अवतारलयो है॥

सुनु शठ राम मनुजहैं कैसे। सब धन्विनसम काम न जैसे॥
नहिं सुरसरि सबनदिन समाना। कामधेनु नहिं पशूप्रमाना॥
सुरतरु क्यों सब तरुसम होई। दान न अन्नसरिसहै कोई॥
नहिं पियूषसम रसहै आना। नहिं खगेश सबखगनसमाना॥
अहिन सरिस सबहैं न अनन्ता। नहिं सबउपल यथामणिचिन्ता॥
नहिं बैकुण्ठ सरिस सबलोका। लाभ न जसि हरिभक्ति अशोका॥
तिमिनमनुजसम राम बिचारयो। पूरणब्रह्म मनुजतनु धारयो॥
जासु भजनबिनु सुनु मतिमन्दा। छूट न बिषय मोह भ्रमफन्दा॥

दो० रामभजन बिन जो चहै भवनिधि पारहिजान।
सो मतिमंद कुभाग्य शठ पांवर परम अयान॥

रावण सवैया॥ बालिके बंश कुठार भयो तुम अंगद नाम धरायहु सोऊ। दीख नहीं अस जायपरै पितुघातक पायँन के तरकोऊ॥ ज्यों भगवंत अहै जनतै प्रभु आनिमिले त्यहि तैसहिओऊ। बोलसिरे बढ़िकाहवृथा करिदीन द्वऊ तुमहै कुलधोऊ॥अंगद सवैया॥ रावणदेखु बिचारि हिये सब नस्वररूप अहै जगजोऊ। या जगमें रहना न क्यहूँ उठिजैहहि एकदिना सबकोऊ॥ अन्तसमय कउ कामनआवत छूटत प्राणप्रिया तनु सोऊ। त्यों भगवन्त सुजानि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यही किन सेवक साहब रामको होऊ॥ रावण॥ राजदियो दशयान जिन्हैं सुनु अंगदतैं अतिबीर बतायो। छोरिलियो स्वइ भारतभाय सनारि तिन्हैं बन मारिख्यदायो॥ राखिरही नहिं राजदई पितुजानि पुभाव तबै हमपायो। ते जिति हैं कहु मोसन क्यों मम राजहि आजु जु छोरनआयो॥ अंगद भुजंगप्रयात छन्द॥ रहे क्या मृषा मूढ़तैं मारिगाला। किये रामसों बैर ह्वै है यहाला॥ त्वया शीश ये पुंज कीशोंके आगे। परैंगे मही राम नाराचलागे॥ स्वई शीश तौ गेंदसों भालुकीशा। ख्यलैंगे सुचौगान रेबाहुबीशा॥ सुक्रुद्धैंगे श्रीराम संग्रामज्योंहीं। छुटैंगे करालाति नाराचत्योंहीं॥ त्रलैगो नतौ गाल ऐसो तुम्हारा। भजै जानियों क्योंन रामैउदारा॥ रावण सवैया॥ कुंभकरन्नसों भाय अहै ज्यहि पुत्र प्रसिद्ध है शक्रजितैला। मोर पराक्रम तैं न सुने सचराचर जीति धरयों कर शैला॥ त्यों भगवन्त सुजाहिर है भट रावण देवनवृन्द सतैला। ताहिकहा सकिहैं करि रेनर बानर जन्मनके जोहरैला॥ कबित्त॥बानरबटोरि लघु वारिधि बँधायो सेतु प्रभुता सुकीन बड़ी याही तव ईशरे। नाघहिं अनेक खग वारिधि न होहिं शूर पूरणजो बलवारि मेरे बाहु बीसरे॥ बूड़े हैं अपार जामें सुर नर शूर बीर पाइहैकोपार भुजबीसहु नदीशरे। भाग्यवन्त ऐसो बलवन्त दशशीश ताहि नरको प्रभाव तैं सुनावै कहा कीशरे॥ तोटक छंद॥ दिगपाल भरैं ज्यहिके जलको। शठ थाह कहा त्यहिके बलको॥ बलवन्त जु होतै नाथत्वया। नबसीठ पठावत मोहिं स्त्रया॥ जरते निज दीख कपाल जबै। बिधि अंक लिखे निजभाल सबै॥ नरकेकर बाँचि सु मृत्यु तहां। बिहसेउँ बिधि बानि असत्य महां॥

दो० सोउनसमुझिम्वहिंत्रासबिधि लिख्योजरठमतिभोर।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आन बीर शठहै कहा मम आगे वर जोर ॥

अङ्गद सवैया ॥ कौन कियो करतूति बड़ी तुम बारहिं बार जु मोहिं सुनायो। शैल उठाय धर्यो करपै उन कीशन सों यह काज करायो॥सागर दूत तर्यो उनको धनुरेख न पै तुम नाँघन पायो। जानि पर्यो बलपुंज दशानन जाय जबै पर बाम चुरायो॥ कुंडलिया ॥ सुनु रावण काटे शिरहि होत नहीं कोउ शूर। इन्द्रजालि तनु काटि सब डारै स्वकर हजूर ॥ डारै स्वकर हजूर शलभ जरते बश मोहैं। बहत भार खरबृन्द कहत तिनको भटकोहै॥ कोहै अधम अबुद्धि सरिस तेरे शरमावन। बकसि बृथा कत मूढ़ बिवश सबके सुनु रावन ॥ सवैया ॥ जनि रावण बात बढ़ावसिरे सुनु मैं जु कहौं तजि मानसही। न पठायउ नाथ बसीठ हमें कह्यो बारहि बार पुकारि यही ॥ यश सिंहहि नाहिंन स्यारबधे सु बिचारि सह्यों कैंटु जौन कही। दशकंठ नतौ मुख भंजनकै तब जात्यउँ लै सिय राम जही॥ सुन्दर छंद ॥ प्रभु सेवक को लघु सेवक मैं रजनीचर ईशतु गर्व भरौरे। अपमानहिं रामहिं जो न डरौं त्वहिं देखत कौतुक यों सु करौंरे॥पटकौं महि सेनस तोहिं अबै करि चौपट तौसब गाँउँ डरौंरे। युवतीनस तौ सिय लैभगवन्त श्रिरामके पाँयन जाय परौंरे॥ तू मदअंध दशाननरे यहि भाँतिन बैठ जु मारत गालहि। सो त्वहिं देतबताय भले इन बातनको कुल घातक हालहि॥बीस भुजा दश शीश उपारिकै मेलत मारि अबै मुख कालहि। पै भगवन्त बिलम्ब यहीशठ आयसुहै नहिं राम कृपालहि॥

दो० सुनु रावण मैं आजु जो करौं दशा असि तोरि।
तदपि न होवै बीरता मुयहि बधे कछु मोरि॥

सवैया ॥ मारग बाम चलै नितही बश काम बिमूढ़ अहै रुज

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खानी। सूममहा अयशी अतिमूढ़ बिरोधक बेदन विष्णुहि जानी॥ क्रोधित निर्धन पोषक अंग अघी परनिंदक जो नितठानी । त्यों भगवन्त बिचारि लखै यइजीवत शवसम चौदह प्रानी॥ तोमरछंद॥ अस जानिरे त्वहिं आज। नहिं मार तो निरलाज॥ सवैया॥ तोसनरे समुझाय कहों दशकन्धर बात बिचारसिहीतें । राम बिरोध न पैहहि पार सु यद्यपिहै अनपार बलीतें ॥ देखु कहाँ खरदूषण बालि सु कारक औरहु जे अनरीतें । त्योंभगवन्त सबेर अबै किन रामहिं जाय मिलै दय सीतें॥रावण॥मारिकै बानरराजहिं जो त्वहिं अंगद बानरराज बनावें। फोरहिं सेतु जो सागर को म्वहिं बाँधि बिभीषण भीरु पठावें॥ पूँछ दहैं रिपु अक्ष कि जो शिर सादर आय सुरुद्रहि नावें। तौ भगवन्त उन्हैं सिय देउँ जो बारिधि पार द्वऊ तरि जावें॥

अङ्गद दोहा॥

लङ्कहि आजु उखारिकै देत्यों उलटि स तोहिं।
भये बिभीषण राज पर याही डर अति मोहिं॥

रावण॥

सुनु शठ जिनके बलहितै बोलत बात बढ़ाय।
ऐसे मनुज निकाय नित डारत निशिचर खाय॥

छप्पै॥ तब अंगद करि कोप अवनि दोऊकर मारयो। मुखभर गिरयो दशास्य मुकुट भूतल शिर पारयो॥ शिर धारयो त्यहि कछुक कछुक अङ्गदकर लीन्हे। प्रेरेउ प्रभु के पास धरयो पवनज प्रभु चीन्हे॥ दिनराज सरिस परकाश बर निरखि भालु कपि सुख भिये। पुनि राम बिभीषण के शिरहि स्वकर स्वई भूषित किये॥ भुजङ्गप्रयात छंद॥ उहाँ रैनिचारों से लंकेश बोला। करौ बद्धरे धारिकै कीश लोला॥ उठौ ओर चारो निशाचार धावो। करौहीन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मर्कट्ट भू मारि खावो॥ तपस्वीन दोऊ धरौ जाय जीतैं। लयावो विभीषन्न ह्यां बाँधिभीतैं॥ अंगद॥ बकै क्या वृथा मूढ़रे लाजछोरे। भयो है कहा सन्निपाताजु तोरे॥ कहै राम मानुष्य तैं ऐसिबानी। गिरैं क्योंन जिह्वा त्वयारेभिमानी॥ गिरैंगी तुजिह्वा सही शंक नाहीं। परंतू सशीशौं के संग्राम माहीं॥ त्वया रक्तके राम नाराच प्यासे। तजौं आशतेही तुझे मूढ़ खासे॥ हुवै क्रोध ऐसो दसौआस्य तोरौं। त्वयालंक ऊपारि सामुद्र बोरौं॥

दो० गूलरफल सम लंक तव बसहु जंतु तुमबीच।
मैं बानर फल खात सोइ बार न लावत नीच॥
पै प्रभु आयसुहै नहीं करौं स्वई गम आज।
याको फल अल्पहि दिनन पावहिगो निरलाज॥
रामप्रताप बिचारि तब बालि तनै अति कोपि।
सुमिरि राम प्रण कै कठिन दीन सभा पदरोपि॥
सुनु रावण मम चरण जो सकसि आजु तैं टारि।
फिरहिं राम श्री जानकी जाउँ तोहिं मैं हारि॥

रावण बसुमतीछन्द॥ गहि पद पटको। महि कपि भटको॥ संयुताछन्द॥ घननाद आदिक बीरजे। बहु माखिगे कपि तीरते॥ पद धाय अंगदको धरैं। बहुभांति पौरुषसो करैं॥ तोटकछन्द॥ टसकै पग बालिकुमारक ना। फिरि बैठहिं आसन मारि मना॥ नहिं डोलत अंगदको पगयों। नर कामिनबैन सती मनज्यों॥ कबित्त॥ हाल्यो गिरि मेरु और हाल्यो गिरिअस्तशृंग हाल्यो उदयाद्रिशैल मंदर बिहाल्यो है। हाल्यो शिवशैल और सातहू पताल हाल्यो हाल्यो सब लोक सप्त सागर उछाल्यो है॥ हाल्यो अहिकच्छप बराहहू बिशेषिहाल्यो हाल्यो दशौ दिग्गज बिहायधीर चा-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ल्यो है । भागयवंत हाल्यो अति लंक दशकंठ हाल्यो बालिसुत बीर को न पगनेकु हाल्यो है ॥ सवैया ॥ बीरबड़े घननादसो भूरि सुभट्टन में जिनलीक जहां है । हारि उपाय गयेकरि कै बलकाहुन आयउ काम तहां है ॥ डोलत यों न मनो बिधना प्रथमै रचिभू- तल संग रहा है । त्यों भगवन्त टरै पग क्यों कपि रामको आम प्रताप महाहै ॥ अंगद दोहा ॥

रे रावण जिन भुजनको बरणे बहुत प्रभाउ ।
सो भुज रहे लुकाय क्यों आय न टारत पांउ ॥

तोटकछन्द ॥ तब आपहि कोपि उठ्यो बदहै । झटजाय गह्यो कपिको पदहै ॥ गहतै पद बालिकुमार कही । पटुतायुत बात समै जुचही ॥ अंगद सवैया ॥ मतिमंद बुझाय कह्यों हितमें प्रथमेंनहिं कीन्ह्यसि कान स्वया । नहिं मानत बातनसों वहहै शठ लातनको नरनीच ज्वया ॥ अब आयसि आखिर कर्म्म वही खल डारसि तैं सबलाजध्वया । भगवंतपरै किनरामकै पाँवपरेपदहौं न उबारत्वया ॥

दो० सुनि अंगदके बचन इमि ह्वै लज्जित सुरआरि ।
बैठ सिंहासन घूमिकै जनु सब संपति हारि ॥
तृणहि करत जो बज्रसम बज्रहि करितृण देत ।
तासु दूत प्रण क्यों टरै समुझौ सुमति सचेत ॥
अंगद रावण मान मथि कहि प्रभु कीरति गाथ ।
भागयवन्त श्रीराम पद आय नवायो माथ ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे लङ्काकाण्डेऽङ्गदरावणसंवादवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

दो० बन्दौं श्रीशंकर चरण कमल अमल भवपोत ।
जिनकी कृपा कटाक्षते उदय ज्ञानरबि होत ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

साँझ जानि रावण बहां गयो भवन सकुचाय।
मयतनया पुनि आय त्यहि बहुबिधि कहाबुझाय॥
सो शठ कीन नेकु नहिं कानै। काल बिवश कैसे हित मानै॥
होत प्रात उठि सभा सिधावा। बैठ सिंहासन भय बिसरावा॥
इहाँ राम सब सचिव बुलाई। आयसु दीन चढ़हु गढ़ धाई॥
सुनि लंकेश ऋक्षेश कपीशा। चारि अनी कीन्हे दल कीशा॥
चहुँ दिशिते करिकै अति शोरा। लीन्हेनि घेरि लंक गढ़ घोरा॥
पूरुब दिशि नलनील सिधाये। दक्षिण द्वार बालि नृप जाये॥
मारुत सुत पश्चिम रणधीरा। सानुज उतर रहे रघुबीरा॥
बानर राज बिभीषण योधा। चहुँ दिशि रहे लेत पुर शोधा॥
यहि विधि भालु कीश भटबंका। लीन्हेनि घेरि लंक दै हंका॥
जैति राम जै लच्मण बोलहिं। चहुँदिशि लिये शैल द्रुमडोलहिं॥
दो० सुन्यो दशानन कपिन पुर घेर्‌यो चहूँ दुवार।
अतिरिसलीन्हेउ बोलि तब निशिचरचमू अपार॥
कहेउ जाय कपि भालु सब गहिगहि डारहु खाय।
यों नहिं मनिहैं पाय मुख चढ़े नीच शिर आय॥
आयसु पाय चले तमचारी। शूल कृपाण परिघ बरधारी॥
पूरुब द्वार प्रहस्त पठावा। दक्षिण सुभट महोदर धावा॥
मेघनाद पश्चिम दरवाजा। उत्तर रहेउ दशानन राजा॥
बिरूपाक्ष मधि देशहि राखा। लीन्हे शोध रहै मृगशाखा॥
नारान्तकहि कह्यो चहुँओरा। लीन्हे शोध रह्यो बरजोरा॥
यहि बिधि चहुँ दिशि सैन पठाई। दीन्हेसि युद्ध निशान बजाई॥
दो० इतते रजनीचर चमू उतते बानर रीछ।
चले धाय जय जय करत युगुल जैतिकी ईछ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सवैया ॥ इतते करि हूह निशाचर जूह समूह सुसंयुग पै बु-
टिगे । उतते कपि ऋक्ष चमूशर तीव्र सुबेल शरासनते छुटिगे ॥
तरु तोमर शैल त्रिशूल पवाँरत मारत घाय घने लुटिगे। भगवन्त
सुजयजय कै रण में दल रावण राम द्वऊ जुटिगे ॥ दुहुँओरते मारु
कराल परी करि अद्भुत बीर रहे करणी। ललकारि प्रचारि भिरैं भट
झुण्ड सुखंडित मुण्ड परैं धरणी ॥ कहैं भट घायल पुंजपरे बहिशो-
णित जाल चलींतरणी। भगवन्त महारण रोरमच्यो गति कौन कहै
कबि सो बरणी ॥ अतिक्रुद्ध सो बानर भालु बली रजनीचर सैनमें
धायरले । भटकोटिन कोटि चकोटि बकोटन डारिकै भू धरिपायँ-
मले ॥ भय ब्याकुल भूरि निशाचर नीच सुपायकै बीच परायचले।
भगवन्त श्रिरामप्रताप प्लवंगन आरिनवंगन मारिदले ॥ छन्द
भुजंगप्रयात ॥ चली यातुधानावली भागि कैसे। बली पौनके जो-
रते मेघ जैसे ॥ पर्यो लंक हाहा भयो शोरभारी । रुदैं बालभामा
सु हाहापुकारी ॥ दियैं रावणै गारि ते खोरिडारी। जुकर्ते निलै राज
मौतै हँकारी ॥ बिचल्ते सुन्यो रावणासैन ज्योंहीं । कह्यो टेरिकै
यातुधानों से त्योंहीं ॥ जुसंग्रामते पावँ पाछेक फेर्यो । सही बद्ध
ताको भयो पानि मेर्यो ॥ फिरे मानिकै ग्लानि तौ रैनिचारी । दुहूँ
ओरते मर्ण साँचो बिचारी ॥ सुलै अस्त्र शस्त्रादि नानाप्रकारे। महा
युद्धकै भालु कीशौंकोमारे ॥ त्रसे भालुकीशालि भागे पुकारी ।
सके एक एकैन संभारकारी ॥ रह्यो द्वारपच्छे हनूमानयोधा। करै
तत्र संग्राम शक्रारि क्रोधा ॥ टुटे द्वारना सो जुटे रैनिचारी। महा
युद्धक्रुद्धे द्वऊबीरभारी ॥ फिरी सैन्य कीशौं किसो श्रूयपायो। भयो
क्रोध अत्यन्तही वायुजायो ॥ प्रलयकालसों गर्जिदै हाँकधायो ।
फलंकामें एकै सुलंकापै आयो ॥ लियो शैल उत्पाटि तौ एकभारी।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हन्यो धायकै मेघनादै प्रचारी॥विभंज्यो रथै सारथी शत्रुपार्यो॥महा क्रुद्धकै तासुही लातमार्यो॥ दुजे सूत बेहालसो देखिधायो। द्वितीस्यन्दनै घालि लंकाहि लायो॥ हनूमान तौ क्रोध कैकै अपारा॥ पिल्यो फेरिकै बीर लंका मझारा॥ सवैया॥ अंगद बातसुन्यो गढ़पै चढ़ि बातकोजात अकेलगयो है। त्यों भगवन्त सुबीर बड़ो तहँ आवत एक फलंकभयो है॥ युद्धसों क्रुद्धभगे द्वउबीर सँभारि श्रिरामप्रताप लयो है। रावण भौनचढ़े द्वउ धाय कहाँ हय रावण हाँक दयो है॥ श्रीरघुबीर कि जयजय हाँकि लगे उतपात करै द्वउबंदर। दीनढहाय सकलसनिलै अवलोकि सभीतभयो दशकन्धर॥ हाय सुहायपर्यो गढ़लंक जुभागि दुरे बहुहैं गिरिकन्दर। त्यों भगवन्त कहै छबि क्यों जनु क्रुद्धित सिन्धुमथैं दुइमन्दर॥ हरिगीतिका छन्द॥ पुर नारिवृन्द पुकारि रोवहिं हाय अबहै है कहा। उतपातके यइरूप दोऊ कीशभट आये महा॥ बलबिपुल इनको बिदित घर घर सुभट नहिं इनसों जहाँ। अब कुशल नाहिंन अहय जीवन भागिकहु बचिये कहाँ॥

दो० कपिलीलाकरि तिनहिं बहु डरपावहिं द्वउघेरि।
रामनाम कहवाय मुख जानदेहिं तब फेरि॥

कवित्त॥ लीन्हे हेमखम्भन उखारि पुनि धारिकर दोऊ कपि बीरपरे कूदि रिपुदलमें। करि हरिनाद मनुजादन झपटिधारि पटकत भूमिते फुटत बेलफलमें॥ फेंकत लँगूरनै लपेटि भट कोटि कोटि फटकत ठौरठौर परे जलथलमें। भाग्यवन्त बीर रणधीर त्यों युगुल कीश दीन्हे बिचलाय रिपुदल एकपलमें॥

दो० रिपु दल मारि बिहाल करि अंगद अरु हनुमन्त।
साँझ जानि आये तड़कि राजत जहँ भगवन्त॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गये जानि अंगद हनू फिरे सकल कपि भालु ।
चितय कृपा दृग श्रम बिगत कीन्हे राम कृपालु ॥

छप्पै॥ फिरे भालु कपि जानि बहुरि निशिचर गण धाये। इतते कपिन बिलोकि पलटि रण सन्मुख आये ॥ द्वउदल प्रबल प्रचारि सुभट महि संयुग जूटे। राम कृपा बल पाय कपिन निशिचरदल कूटे॥ निज हारि हेरि कायादि भट रचेन्हि असुर माया बिकट । क्षण माहिं भयो अँधियार अति सूझन काहू कछु निकट ॥ पुनि बरषै बहु लागि दुष्ट रुधिरोपल छारा। देखि निबिड़तम पुंज भयो कपि दल खम्भारा ॥ जानि राम सब मर्म कह्यो अंगद हनुमाना। सुनत चले अति क्रुद्ध सुभट दोऊ बलवाना ॥ पुनि राम साजि शायक बृहद मार्‌यो रिपु दल दिशि तरल । मिटिगई तुरत माया न तम भवप्रकाश हरषे सकल ॥ कबित्त ॥ पायकै प्रकाश कपि ऋक्षन बिगत त्रास धाये धुकि हरषि सुगिरितरु तूरिकै । हाँक हनूमान युवराजकी सुनत घोर भागे भटकौणप समर मुहँ मूरिकै ॥ भाग्य-वन्त जैतिजै पुकारि कपि दौरि धारि पटकि पछारि महि डारे बहु धूरिकै । मारिकै हटाय रिपु दल बिचलाय कीश आये रघुनाथ पै सकल मोद पूरिकै ॥

दो० निशा जानि चारिउ अनी आये जहँ रघुबीर ।
रामचन्द्र मुखचन्द्र लखि भये बिगत श्रम पीर ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे लङ्काकाण्डेप्रथमयुद्धकपिदलजयप्राप्तवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

दो० भवनिधि पारहि जानको बोहित जाको नाम ।
भाग्यवन्त बन्दन करौं करि प्रणाम स्वइ राम ॥
वहाँ सचिव सब बोलिकै पूंछ्यो निशिचर नाह ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अर्द्धकटक मास्यो कपिन कहहु करी अब काह॥
माल्यवन्त तब बचन मृदु बोला परम सुजान।
तात कहौं मत मैं कछुक करहु जानि हितकान॥
जबते श्रीमत जानकी हरिआन्यो हठितात।
तबते तुम्हरी एक नहिं परी पूरि कहुँ बात॥
अबहीं भललै जानकिहि जाइ देहु रघुनाथ।
जो चाहौ आपन कुशल कहौं सत्य दशमाथ॥
सुनि रिसाय रावण कह्यो कहा कहसि रे नीच।
करिया मुखकरि जाहि उठि नतुआयो तव मीच॥
कालबिवश त्यहि जानिसो चला कहत दुरबाद।
सन्मुखआइ सदर्प तब बोला बच घननाद॥
प्रात पराक्रम तात मम देख्यो करिहौं जौन।
रिपु सन्मुख अबहीं कहा कहौं बरणि क्रमतौन॥
सो० सुनि सुत बचन भरोस पायो मन रावण परम।
होत प्रात करि रोस लागि गये कपि द्वार चहुँ॥

तोमर छन्द॥ करि कोप तौ कपि धाय। गढ़ घेरि लीन्ह्यनि आय॥ इतते तमीचर धारि। लिय दौरि क्रुद्धि प्रचारि॥ अति होन लाग्यउ मार। दुहुँ ओरते चहुँद्वार॥ बहुभाँति आयुध पानि। गहि सौंह मारत तानि॥ कपि ऋक्ष बीर प्रचण्ड। गहि बृक्ष शैल निखण्ड॥ रिपु सैन ऊपर डारि। रघुबीर जैति पुकारि॥ गयपेलि निशिचर सैन। कपि भालु धै बलऐन॥ गहि पाँव कोटिन कोटि। पटके महीखल खोंटि॥ भय यातुधान बिहाल। सुनि मेघनादय हाल॥ चढ़ियान लै सँग नीच। रण आइगो त्यहि बीच॥ दय हाँक गर्ज्यउ घोर। कहँ दोउ भूप किशोर॥ कहँ नील औ नलबीर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शुभग्रीव है कहँ भीर ॥ कहँ बालि पुत्र लवार। कहँ बीर पौन कुमार॥ कहँ है बिभीषण द्रोहि। हठि आजु मारउँ ओहि॥ असहाँकि सर्प समान। बहु लाग छाँड़न बान॥ लखि ठौर ठौरन ब्याल। चले भागि बानरभाल॥ तब देखि भाजत कीस। हनुमंतकै अति रीस॥ उतपाटि पर्वत एक। त्यहि धाय मार्यउ नेक॥ गिरि देखि आवत सोइ। रथ सारथी दिय खोइ॥ भजि आपु ब्योम लुकान। हनुमान मर्महिजान॥ इतते प्रचारत बीर। नहिं आवसो कपितीर॥ रघुबीरपै पुनि जाय। कटुबैन दुष्ट सुनाय॥ बहु अस्त्रशस्त्र प्रचारि। रह्यो ब्योमते शिरडारि॥ रघुबीर आयुध तासु। किय काटि तिलसों आसु॥ अवलोकि पुंजप्रताप। निरलज्ज लज्यउ आप॥

दो० ह्वै लज्जित घननाद तब मायहि कीन प्रकाश।
बर्षैलाग अँगार बहु शठ चढ़िजाय अकाश॥
जलधारा महिते विपुल भये प्रकट चहुँओर।
रटहिं पिशाच पिशाचिनी मारु काटु धुनिघोर॥
रक्त पीप विष्ठा उपल छार हाड़ कचधूरि।
बरषिकीन अँधियार अति सूझ न कछु ढिगदूरि॥

त्रोटक छन्द॥ अति ब्याकुल वानर भालुभये। तजि जीवन की सब आशदये॥ करुणाकर राम सुजानहिये। मुसकाय शरासन बाणलिये॥ शर एकहि मायहि कीनजुदै। तमपुंज यथा दिनराज उदै॥ कृपया दृग वानर भालुलखे। सब त्रास विनाशहिये हरखे॥ हरिगीतिका छन्द॥ तब राम आयसुपाय लक्ष्मण अंगदादिक कपिभले। लय साथ कटिकसि भाथ धनुशर हाथ रण सन्मुखचले॥ तन गौर बाहुविशाल लोचनलाल नखशिख शोभहीं। भगवन्त अंग अनन्त छबि लखि कामकोटिन लोभहीं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० उतते रावण सुभट बहु दीन्हे बोलि पठाय।
अस्त्रशस्त्रलै विविधते सन्मुख पहुँचे आय॥
भूधर नख बिटपायुधन धरि इत वानर भालु।
धाय लिये सन्मुख दुवन कहि जै रामकृपालु॥

नाराचछंद॥ भिरे प्रचारि बीरत्यों यथा सुयोग पायकै। अनेक अस्त्र शस्त्र डारि दीनमारि घायकै॥ सुमारि मुष्टिकानलात घात दांत काटहीं। प्रबल्ल भालु कीशधारि मारिफेरि डाटहीं॥ सुमारु मारु काटु काटु धारु धारुबोलहीं। महाबली सुराक्षसालि सौंहते न डोलहीं॥ परे अनेक भूमिरुंड हीनमुंड धावहीं। सुजैति जै पुकारि मुंड खान आस्य बावहीं॥ अनेक बीर घायले सुभांतियों बिराजते। मनो पलास बृक्ष फूलि जालशोभसाजते॥ रहेअनंत मेघनाद क्रुद्ध युद्ध कैद्दऊ। युगल्लबीर बांकुड़े न पावजैति त्यों कऊ॥ करैअनेकभांति छल्ल बल्ल रैनिचारका। भयो सुक्रोधवंततौ अनंत अंत कारका॥ दल्योरथै तुरंग सूत मारिपुंज बाणनै। कियो बिकल्लशेष भूरि यातुधान प्राणनै॥

दो० मेघनाद तौ बिकल है मनमहँ कीन बिचार।
परम सुभट यह लेन अब चाहत प्राण हमार॥
तब सकोप रावण सुवन बीरघातिनी सांगि।
हनि मारेसि लच्मण हृदय तेजपुंज सो लागि॥

लागत शक्ति परेउ महिबीरा। मुर्च्छितलखि आवा चलितीरा॥
हारे असुर उठाय अशेषा। जगदाधार उठै किमि शेषा॥
तब खिसियाय चल्यो बलवंता। त्यहि अवसर आयो हनुमंता॥
ताहि देखि उपजा अतिक्रोधा। मार्यो हनि मुष्टिक कपियोधा॥
परेउ भूमिकरि चरण प्रहारा। गहिपद बहुरि लंकपर डारा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सांझ जानि हनुमान अनंता। लाये जहँ राजत भगवंता॥
अनुज देखि प्रभु अति दुखमाना। तब करजोरि कह्यो हनुमाना॥
नाथ लषणहित शोच न कीजे। सोइविधिकरउँजोआयसुदीजे॥

कबित्त॥ कहियो निशेश गारि पट इव राघवेश अमृतचुवाय मुखज्यावों अहिनाथ ही। कहियो विबुध वैद्य आनौ गहि मारि मौत मेटों दुख सबके सकल एक साथही॥ कहियो पतालपेलि दलि नाग अमीकुण्ड आनौ यहि ठांवसो उपारि निजहाथही। कहियो सुतनु त्यागि उठौं जागि घट शेष आयसु जु होयकरौं कृपा पाथ नाथही॥

सुनि हनुमान वचन रघुवीरा। हरषे सहित भालु कपिभीरा॥
जामवन्त तब कह सुनु रामा। वैद्य सुखेन रहत अरिग्रामा॥
पठवहु कोउ तेहि लाव तुरन्ता। आयसुपाय चल्यो हनुमन्ता॥
भवनसमेत सुखेनहि लायो। प्रभुपद बंदि सो वचनसुनायो॥

दो॰ द्रोणाचल ऊपर ललित अहै सजीवनिमूरि।
जाहु पवनसुत आपही लावहु वेगिहि भूरि॥
रामचरण उर राखिकै प्रबल प्रभंजन जात।
चल्यो सजीवनि हेतु पुनि सुमिरि रामजगत्रात॥
हालपाय यह रावणा कालनेमि पहँ जाय।
पठयो बनि सो कपटमुनि बैठ पंथ त्यहि आय॥

छप्पै॥ मारुतसुत मग जात लख्यो आश्रम शुभ सोई। कीन्ह्यो मन अनुमान अहैमुनिवर इतकोई॥ याच्यो जल ढिगजाय दीन सरसुभग बताई। पैठत पकर्‌यो पांव धाय मकरी दुखदाई॥ हनुमान ताहि मार्‌योतुरत गई गगनकहि मुनिमरम। पुनि असुरलँगूर लपेटि महिपटकि चल्यो हर्षित परम॥ कबित्त॥ देखि शैल सूखमा बिला

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

समान भांति भांति औषधी सुचारु यत्र मोदको निधानहै। रंग रंग वृक्षनललित बर बेलि फैलि छबि को सकेलि मैनतानि ज्यों बितान है॥ डोलत समीरत्यों त्रिविध मंजु कोकिलालि बोलत भ्रमरमाल जालकर गानहै। भाग्यवंत हेरिबहु बुद्धिपैन मूरितव सहसा उपारि द्रोण लीन्ह्यो हनुमानहै॥

दो॰ गहि गिरि रातिहि गगनपथ चल्यो बेगि कपिधाय।
अवधपुरी ऊपर जबहिं पहुँच्यो आय हहाय॥

बसंततिलका छन्द॥ देख्यो सुव्योम पथ भारतदुष्ट जानी। मार्‍यो बिहीनफर शायक तीव्रतानी॥ लाग्यो नराच परिमुर्च्छित रामभाख्यो। द्रोणाद्रि व्योम पवमान सुसाधि राख्यो॥ इंद्रबज्राछंद॥ सुन्तै सुबानी उठिभर्त धाये। यत्रांजनीजा तुर तत्रआये॥ उपेन्द्र बज्राछन्द॥ बिलोकि कीशै अति भे दुखारी। सुबानिबोले ढरिनैन बारी॥ सवैया॥ कायगिरा मन छांड़िछलै म्वहिं रामकेपायँन जो रति होई। त्यों भगवंत सुएक हिये गति जानतजान शिरोमणि ओई॥ होहिं प्रसन्न जु मोपर आजु कृपाकर राम सुसाहेब सोई। तौ उठि बैठहु कीशअबै श्रम शायकशूल सबै तनखोई॥

सो॰ सुनत भरतके बैन श्रवण सुखद सांचे सरल।
कहि जै राजिव नैन उठि बैठ्यो मारुत सुवन॥

सवैया॥ लीन लगायहिये हनुमानहि भारतपुंज प्रमोदहिछाये। प्रीति पुनीत अपार हिये न समात उभै भरिलोचन आये॥ तात कहौ कुशलातभली सिय सानुजराम न हालहिपाये। त्यों भगवंत श्रिरामचरित्र समास सबै कपि गाय सुनाये॥ हरिगीतिकाछन्द॥ सुनिराम सिय सुधि भरत व्याकुल नयन युगजल छायऊ। हादैव मैं कतजयउँ जग प्रभु काज एकन आयऊ॥ पुनिजानि कुसमय

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धीरधरि बलबीरयों कपिसन भणी। चढ़ि मामशायक तात बेगिहि जाहु जहँ रघुकुल मणी॥ सुनि भरतके इमिबचन उपज्यो गर्वमन हनुमानहै। अस बीरको चलि सकिहि मोरे भार ज्यहिकर बानहै॥ प्रभु प्रभाव पुनिसमुझि कपीशा। बोला बचन चरणधरि शीशा॥ तव प्रताप उर राखि कृपाला। जैहौं जहँ रघुपति यहिकाला॥ अस कहि नाथ रजायसु पाई। लै गिरि चल्यो पवनसुत धाई॥ इहां देखि अनुजहि रघुबीरा। बोले नर इव बचन अधीरा॥

सवैया॥ तात स्वभाव त्वया मृदमोहिं सकौ न कबौ दुख दीन निहारी। मोंहित लागि तज्यो पितु मातु सह्यो बन आय सुसंकट भारी॥ त्योंभगवन्त कहां अब सो अनुराग ह्वै वह आनँदकारी। जो नहिं होत खड़े उठिकै लखि ब्याकुलता अति आजु हमारी॥ ज्यों खग पंखबिना अति दीन भुवंग बिनामणि ब्याकुल जैसे। जीवन बंधु मया बिनु तोहिं जियावहि जो जड़दैव है तैसे॥ जैहहुँ औधमुहैं क्यहि लै हित नारि गँवाइ सुभाइहि ऐसे। त्यों भगवन्त सँभारि सनेह उठौ किन तात पर्‍यो महि कैसे॥ प्राणप्रिया सुत अंबहि तात सु सौंप्यसि मोहिं तुम्हें गहि पानी। देहहुँ जाय कहा त्यहि उत्तर जीवन जासु तुम्हें सुखदानी॥ देखि महा यह संकट मोहिं सिखावत क्यों उठि बेगि न आनी। मैं बिनु तोहिं जियों पल ना यक तात पुकारि कहौं फुरि बानी॥

दो० सुतबित नारि सुधाम धन पुनिपुनि ह्वै जगजात।
पै भगवन्त न बिछुरि फिरि मिलत सहोदर भ्रात॥

सो० असबिचारि जियतात चतुरशिरोमणि मृदुसुचित।
उठहु बेगि सुखदात सुठि सनेह संभारि मम॥
नर इव राम कृपालु करत बिलाप अनेक बिधि।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुनतसकल कपिभालु भयेमगन करुणाजलधि ॥
त्यहि अवसर हनुमंत आइगयो शुभ मूरिलै।
हरषि मिले भगवन्त परम प्रीति उर लायकै ॥

छप्पै ॥ कीन्ह्यो बैद्य उपाय तुरत बैठे उठि शेषा। भेंट्यो अनुजहि राम मुदित कपिभालु अशेषा॥ पहुँचायो गिरि बैद्य हनू जहँते जिमि लायो। देखि सुभट बलवंत परम रघुपति मन भायो॥ श्री राम चरित अद्भुत परम को जानै कबका करत। नित गाय गाय भगवन्त स्वइ परमानँद उरमें भरत ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेलङ्काकाण्डेलदमणाहितरामबिरहहनुमान्सजीवनीगृहीतागमनवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

दो० परब्रह्म परमातमा पूरण बिश्वाबीश।
भाग्यवन्त श्री राम पद पद्म नवावों शीश॥

जेहि बिधि लषणहि रामजियाये। सो बृतान्त सुनि रावण पाये॥
है अति बिकल दशानन बीरा। आवा कुम्भकरण के तीरा॥
बहु उपाय करि ताहि जगावा। पूँछेसि सब बृत्तांत सुनावा॥
निशिचर सुभट जिते बल भारे। तात कपिन सो सब संहारे॥
कुम्भकरण बोला सुनि बानी। कीन्ह्यो तात परम निजहानी॥
जक्त मातु सीतहि हरि आन्यो। पूरण ब्रह्म न प्रभु पहिंचान्यो॥

दो० अब चाहत कैसे कुशल बेसह्यो काल कराल।
प्रथमैं तात न आय किन मोहिं जनायो हाल॥
ताते अब भरि अंक मोहिं लेहु भेंटि तुम तात।
जाय करौं लोचन सफल देखि श्याम मृदुगात॥

रोलाछन्द॥ तब रावण बहु ताहि महिष मदिरा मँगवाई। दीन्हेसि अशन कराइ भयो मदमस्त अघाई॥ गरज्यो घोर कठोर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चल्यो रिपु सन्मुख धाई। देखि बिभीषण भाय मिल्यो आगे तेहि आई॥ करि प्रणाम करजोरि सकल निज हाल सुनायो। मुनि बहु ताहि सराहि बहुरि प्रभु पास पठायो॥ कह्यो बिभीषण आय सपदि सुनियो रघुबीरा। कुम्भकरण रिपु भाय सुभट आवत रण-धीरा॥ सुनि सब बानर भालु चले गिरितरु धरिधाई। डारेन्हि एकहिबार तासु ऊपर लै आई॥ बरषत सुमन समान जानि धायो मुखबाई। धरिधरि भक्षण लाग भालु मर्कट समुदाई॥ श्रुति नासा मुख बाट निकरि भागहिं कपि कैसे। गिरिवर गुहा विहाय विपुल टीड़ीगण जैसे॥ कोटिन पटके भूमि पकरि कोटिन तन मर्दै। कोटिन लीन्हे खाय मेलि कोटिन दिय गर्दै॥

दो० कुम्भकरण मदमस्तयों मर्दत बानर भालु।
जाय दीख शोभासदन आगे राम कृपालु॥
करि प्रणाम मनहीं मनहिं भरि लोचन छबि हेरि।
बोला बचन सक्रोध तब कुम्भकरण अस टेरि॥

भुजङ्गप्रयात॥ न हौं ताड़ुका शुभ्रबाहू हौं मैना। न हौं शम्भु कोदण्ड मारीच पैना॥ न हौं खर्न दूषन्न त्रैशिर्न बाली। अहौं कुम्भकर्णाख्य मैं शत्रुशाली॥ करौ राम संग्रामको आय मोसो। पुजौ काम आयोहितै जासु सोसो॥ यसुन्तै हनूमन्त कै कोपधायो। हन्यो मुष्टिका ताहि भूभूमि आयो॥

पुनि सम्भारि उठा बलवन्ता। मारेसि घूर्मि परा हनुमन्ता॥
नलनीलहिगहिअवनिपछारेसि। कांखदाबिकपिराज सिधारेसि॥
डारेसि पटकि अनेकन बानर। चले भागि टेरत करुणाकर॥
मुरछा बिगत समीर कुमारा। जागि कीन सुग्रीव सँभारा॥
बीच पाय सोउ निकरत भयऊ। काटि श्रवण नासानभगयऊ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

काटे श्रवण नासिका जानी। फिरा मानि मन परम गलानी ॥
कीन्हेसिकपिदल मारि बिहाला। काहुन रहा धीर तेहि काला ॥
दो॰ सहज भयावन रूप तेहि पुनि श्रुति नासा हीन।
उपज्योकपिदल त्रास लखि चहतग्रासजनु कीन ॥
सजि शारंग कृपायतन तब छांड़े शर लक्ष।
चले शत्रु सन्मुख मनहुँ काल ब्याल युत पक्ष ॥
क्षण महँ सकल निशाचर सैना। डारेनि काटि राम शर पैना ॥
कुम्भकरण तब करि रिस भारी। प्रभुदिशिचल्यउशैल करधारी ॥
राम भुजासो खण्डन कीन्हा। तबत्यहि बामपाणि गिरिलीन्हा ॥
सोउभुजमहि प्रभु काटि गिरावा। तब पसारिमुख करि रिसधावा ॥
तब प्रभु बिलग कीन हतिशीशा। गिरा जाय आगे भुज बीशा ॥
बिनु शिर भुज धावा चिकारी। करि युग खण्ड राम महि पारी ॥
तासु मरण लखि सुर मुनि झारी। मुदित कहहिं जय राम खरारी ॥
को कृपालु त्रिभुवन सम रामा। दीन्ह्योअसअधमहिंनिजधामा ॥
दो॰ समरभूमि रघुवंशमणि राजत करुणा कन्द।
भाग्यवन्त शोभा निरखि मुदित भालु कपिवृन्द ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेलङ्का काण्डेकुम्भकरणबधवर्णनोनामपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

दो॰ श्रीरघुनन्दन जानकी बंदौं पद शिरनाय।
जासु कृपा वारिधि अगम बिनु प्रयास तरिजाय ॥
कुम्भकरण को शीश निहारी। दशमुख हृदय भयो दुखभारी ॥
मेघनाद तेहि अवसर आयो। कहिबहुभांतिपितहिंसमुझायो ॥
होत प्रात चढ़ि यान सिधावा। समरभूमि अतिआतुर आवा ॥
प्रलय पयोद सरिस घहराना। तजनलाग आयुधविधिनाना ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इतते बानर भालु समूहा। धरि गिरि तरु धाये करि हूहा॥
होन युद्ध लाग्यो अति भारी। निजनिज प्रभु जै जैति पुकारी॥
मेघनाद विरच्यो तब माया। रथ चढ़ि गयो गगन खलराया॥
अस्त्र शस्त्र बहु भांति चलायो। मारि दुष्ट बाणन झरि लायो॥

दो० गहि गिरि तरु बानरनिकर धावहिं तरकिअकास।
जब नहिं देखहिं ताहि फिरि आवहिं परमउदास॥

सवैया॥ रावणको सुत बीरबली कपि भालुन मारिकै ब्याकुल कीन्हें। छूटिगये धृत धीरनके हनु अङ्गद आदि जिते भट चीन्हें॥ मारिकै बाण त्रिशूल कृपाणन आयुध पाटि दशौदिशि दीन्हें। बोलतबैन कठोर महा पुनि आइ सु घेरि श्रिरामहिं लीन्हें॥

दो० नागफांस में बांधि पुनि लीन्हेंसि राम कृपालु।
प्रभु बंधन अवलोकि कै भये बिकल कपि भालु॥
जामवन्त लखि धाय तेहि हतिमहि दियोगिराय।
परम क्रोध पुनि गहिचरण दीन्ह्यों लङ्क बहाय॥
तब खगपति सब आइकै डारे पन्नग खाय।
बिगतत्रास कपि भालु लखि उठेसकल हरषाय॥
गहि गिरि नखबिटपायुधन लिये कपिन पुनिधाय।
देखत रजनीचर कटक ब्याकुल चले पराय॥
मेघनाद उत जागिकै तुरत गयो गिरि खोह।
करनअजय मख लागतहँ शठ निलज्ज रतद्रोह॥

हरिपद छंद॥ यह सुधि पाय बिभीषण प्रभु सों कह्यो जोरियुग पानी। मेघनाद मख करै अपावन सुरदावन अघखानी॥ जो प्रभु सिद्ध होन सो पाइहि वेगि जीति नहिं जैहै। पठवहु कीश जाय मखभंगें तब तजिकै चलि ऐहै॥ सुनि रघुबीर बोलि लिय तुरतै

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अङ्गद अरु हनुमाना। लच्मण संग जाहु सब भाई करहु भंग मख ठाना॥

दो॰ तुमलक्ष्मण रण मेघरव अवशिकिह्यो खलहंत।
प्रभु आयसु शिर राखिकै गवने तुरत अनंत॥
कीन्हे कपिन बिध्वंस मख अतिआतुर तहँ जाय।
लै धनु शर घननाद तब धावा कपिन रिसाय॥
मारि शरन ब्याकुल कियो कपिन कहत दुरबाद।
रामानुज सन आय पुनि भिस्यो प्रबल घननाद॥
अस्त्र शस्त्र छाँड़े बिपुल तिल सम काटे शेष।
निजबाणन पुनिमारितेहि ब्याकुल कियोविशेष॥
बिबिध रूप धरि धरि असुर करैं समर बलवन्त।
जानि प्रबल रिपु लषण उर उपज्यो क्रोधअनंत॥

तब लच्मण मारेउ शर एका। काटि तासु भुज लंकहिफेंका॥
पुनि धावा करि घोर चिकारा। तुरत लषण शर दूसर मारा॥
लागत बाण समेत सनेहा। राम लषण कहि छाँड़ेसि देहा॥
देखि देव नभ बरषहिं फूला। जयजय करहिंपरम अनुकूला॥
तब लच्मण रघुपति पहँ आये। सादर चरण कमल शिरनाये॥

दो॰ दशकंधर सुनि सुवनबध कीन्ह्यो बिपुल बिलाप।
नारि बृन्द रोवत निरखि समुझाई बहु आप॥

छप्पै॥ नाम सुलोचनि नारि तासु अतिशय छबिराशी। पति भुज देखि सशोक शोच निज हृदय प्रकाशी॥ कलम दई कर तासु लषण कीरति लिखि दीन्हीं। पावन परम अपार निरखि अति रोदन कीन्हीं॥ पुनि सखिन सहित रघुबीर पहँ जाय माँगि शिर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मै सती। श्री राम कृपा घननाद प्रिय लही परम उत्तम गती॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे
लङ्काकाण्डेमेघनादवधवर्णनोनामषष्ठमोऽध्यायः ६॥

दो० मेघनाद जूझेउ जबहिं तब रावण स बिषाद।
कीन्ह्यो हृदय बिचारि निज अहिरावण को याद॥
तुरतहि सो आयो तहां कह्यो दशानन हाल।
बोला लै देविहि इन्हें देहौं बलि पाताल॥

सवैया॥ वेष बिभीषण को धरिकै अहिरावण बंधु द्वऊ हरिलायो। जाय पताल सु देविहि को बलिदेन हितै द्वउ ठाढ़ करायो॥ श्री हनुमान सुजाय तबै हति दुष्ट ससेनहिं धूरि मिलायो। त्यों भगवन्त श्रिरामहिं सानुज आनि समाजको शोक नशायो॥

दो० अहि रावणको नाश सुनि है रावण अति क्रुद्ध।
साजि सेन चतुरंग तब चला आपुहित युद्ध॥

सवैया॥ साजि चमू चतुरङ्ग अपार चल्यो रण रावण बाजन बाजे। पूरि रही नभ मण्डल धूरि सुप्रावट मेघ मनो दल साजे॥ गर्व्व गुमान भरे रजनीचर नाद करैं जनु केहरि गाजे। त्यों भगवन्त दशानन लै दल आइगयो रण संयुग काजे॥ धाय लिये कपि भालु बिशाल कराल ज्योंकाल महाबल पूरे। मानहुँ शैल सपक्ष बिराजहिं बृन्दन बृन्द अनूपम रूरे॥ आयुध दन्त नखाचल धारि प्रचारि चले तरु तालन तूरे। त्यों भगवन्त दुहूँ दिशिते कहि जैति सुजय निज जोरिन जूरे॥ मारु कराल मची रण मैं भट एकन एक जहाँ तहँ जूटे। अस्त्र सुशस्त्र अनेकन भांति सुआयुध जाल दुहूँ दिशि छूटे॥ मारि पछारि उ-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खारि भुजा शिर फेंकि दिये नभ गृद्धन लूटे। कालकराल सो भालु बलीमुख पेलिकै सैन निशाचर कूटे ॥ शोणित पाणि भरे कपि भालु सक्रुद्ध महाबलवन्त बिराजैं। मर्द्दहिं सैन निशाचरकी करि केहरि नाद मनो घनगाजैं ॥ मारि चपेटन काटिकै दाँतन डाटि गिराइकै लातन गांजैं । देखत युद्ध प्लवंगनकी तजि धीरज धीर निशाचर भाजैं॥ धाय धरैं पटकैं भट भूतल तोरि भुजा शिरव्योम चलावैं । फारहिं गाल बिदारि उरै पुनि आँतन काढ़िकै माल बनावैं॥ रूपधरे नरसिंह मनो बहु आँगन युद्धमें खेल मचावैं। त्यों भगवन्त सुघोर गिरा रहिछाय तिहूँपुर ठाँवनठांवैं ॥ तोमरछन्द ॥ बिचलात सैन सुदेखि। दशकण्ठ क्रुद्धि बिशेखि ॥ भुजबीस तौ दश चाप । गहि बीर धायउ आप ॥ लखि आवतै दशशीश। उर माँझकै अति रीश ॥ उत पाटि पर्वत बृक्ष । लिय धाय बानर ऋक्ष ॥ यकबार ऊपर तासु। लयजाइ डारिन्हि आसु ॥ तिल सारिखे भय भंग। द्रुम शैल लागत अंग ॥ चहुँओर धै दशशीश। गहि लाग मर्दन कीश॥ अवलोकि सो जिमि कालु। चले भागि बानर भालु ॥ सब त्राहित्राहि पुकारि। रघुबीर राम खरारि ॥ कपि भालु भागत जानि। दशचाप शर संधानि॥ सवैया॥ तानिदशौ धनु शायक तीव्र दशानन कोपित पुंज पवाँर्यो। लागहिंते ह्वय पन्नग धाय रहे नभ छाय धरा दिशि चार्यो ॥ भागि चले कपि भालु भयातुर सेन समूह कलाहल पार्यो। आरत बैन पुकारत रामहिं रक्षहुनाथ दशानन मार्यो ॥ भुजङ्गप्रयातछन्द ॥ बिचल्ते चमू कीश देख्यो सु ज्योंहीं। चल्यो साजि शारंग सौमित्र त्योंहीं॥ रहे नीचका मारि तैं कीश भालू। बिलोकै इतै मोहिं मैं तोर कालू॥ तोटकछन्द ॥ सुनि रावण तौ अस कोपि कह्यो। सुतघातक सो-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जत तोहिं रह्यो ॥ अब आजु निपाति त्वही डरिहौं । रण माहिं सुशीतल ही करिहौं ॥

दो० अस कहि रावण कोप करि मारेउ बाण प्रचण्ड ।
तुरत लषण सो काटिकै करिडारे युग खण्ड ॥

कवित्त ॥ कोटिन कराल किये आयुध प्रहार खल तिल सों लषण काटि डारे एक हाथही । फेरि निज बाणन प्रहार करि शेष तासु स्यन्दन बिभंजि सूत मार्‌यो त्यहि साथही ॥ शत शत बाण पुनि बेधे दशौ शीश उर मारि शत बाण महिपार्‌यो दशमाथही ॥ कोप करि रावण बहोरि उठि ब्रह्मदत्त मार्‌यो सो प्रचण्ड शक्ति लागी अहिनाथही ॥ सवैया॥ लागत शक्ति पर्‌यो महि बीर अनंत उठाय दशानन हार्‌यो। भूरि रही महिमा न उठ्यो बल सागर नागर कोशलवार्‌यो ॥ चौदह भूवन जो शिरपै भगवन्त यथा रजको कण धार्‌यो। चाहत ताहि उठावन रावन मूढ़प्रभावन पुञ्ज बिचार्‌यो ॥ मोदक छन्द ॥ देखि दशा यह मारुतनंदन । आयउ धाय जहां जगबन्दन ॥ दौरि दशानन मुष्टिक मारयउ । भूमि रह्यो कपि भूमि न पारयउ ॥ मारयउ फेरि हनू दशकन्धर। भूमि पर्‌यो जनु घूर्मित मन्दर ॥ लै लषणै हनुमान सिधायउ। देखत राम महादुख पायउ ॥

दो० काल कठिन तुम कालके जग रक्षक बल ऐन।
उठि बैठे लच्मण तुरत सुनत राम मृदु बैन ॥

कवित्त ॥ साजि चाप शायक निषंग संग बानरालि क्रोधकै लषण शत्रु सौंह फेरि आयऊ। मारि पुञ्ज बाणन विभंजि यान सूत हति रावणै विहाल करि अवनि गिरायऊ॥ दूसरे सुसारथी बिलोकिकै विकल ताहि धाय घालि स्यंदनै सुलंक बेगि लायऊ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भाग्यवन्त राघवेश बंधु त्यों प्रताप पुञ्ज आयकै बहोरि स्वामि पायँ शीश नायऊ ॥

दशमुख उत मुरछा ते जागा। करनलाग कछु यज्ञअभागा ॥
सो सुधि कतहुं बिभीषण पायो। सपदिआय रघुपतिहिं जनायो ॥
तुरत कपिन पठये रघुराई। यज्ञ बिध्वंस किहिनि ते जाई ॥
तब सकोप रावण बल ऐना। रण सन्मुख आवा साजि सैना ॥

दो० यहां देवतन आइकै प्रभुसन बिनती कीन।
सुनि सुरदुख रघुबंशमणि धनुष बाण कर लीन ॥

सवैया ॥ लै धनु शायक श्रीरघुनायक बांधि जटा शिर जूट सँवारे। श्याम तमाल सों गात मनोहर लोचन शोक बिमोचन हारे ॥ आनन पूरणचंद उरायत बाहु बिशाल महाबल भारे। त्यों भगवन्त बिलोकि प्रभा झरि फूलन देवन जैति उचारे॥ त्यहि बीच निशाचर नीचचमू करिठूह सु सन्मुख आइगई। अवलोकत बानर भालु इतै करिक्रुद्ध बिरुद्धन धाइलई ॥ जुटिगे भट भूरि दुहूँ दिशि ते निज नाथनकी कहि जैति जई। भगवन्त उमंग भरे सब बीर प्रचारि पुकारिकै युद्धठई ॥ त्रिभंगी छंद ॥ रजनीचरधारी जनु घट कारी सघन डरारी घिरिआई। तरवारी चम्कैं चहुँदिशि झम्कैं दामिनि दम्कै जनुधाई ॥ गज बाजि चिकरहीं जनु खकरहीं जलद घुमरहीं नभ घेरे। लंगूर बिराजैं जनु नभसाजैं धनुसुरराजैं बहुतेरे॥ उड़ि धूरिअपारा जनु जलधारा बाण प्रहारा बुन्द घनो। दुहुँ दिशिन अपारे करत प्रहारे पर्वत पारैं बज्र मनो ॥ रघुबीर रिसाई शर झरिलाई रिपु समुदाई लागि मरैं। लागत तन तीरा चिकरहिं बीरा घुर्मि अधीरा अवनिपरैं ॥ शोणित सरिधारा चली अपारा सुभट पहारा फोरिमनो। द्वउ कूल सजेता दल रथ रेता चक्र परेता

भवँरघनो ॥ जलजंतु समाना करिहरिनाना विविध विधाना कौन गनै। करपद झखजारा केशसेवारा विपुल पसारा सुकबिभनै ॥ शर शक्ति भुअंगा चाप तरंगा मगर निषंगा पट फेनू । कच्छप जनु ढाला विविध विशाला कठिनकराला भयदेनू ॥

दो० भूत प्रेत बैतालबहु मज्जहिं योगिनिमाल ।
महायुद्ध रणमें मच्यो दोऊ दिशि विकराल ॥

कबित्त ॥ धाय धाय कालसो कराल कपि भालुजाल वेष विकराल गहि यातुधान मारहीं । तोरि शीश बाहुन उखारि महिपारि भूरि लूमन लपेटि बहु सागर में डारहीं ॥ काहँ अनेक परे घायल बिकल वीर लोथिन अनेक लिये स्यार पेट फारहीं । भाग्यवंत झुंडन के झुण्डबिनु मुंडरुंड धावहिं सुमुंड बहु जैजय पुकारहीं ॥ लीन्हे कंक काकबहु बाहुन उड़ात नभ एकन सों एक तहां छीनि छीनिखावहीं । एककहैं ऐस्यहू समूह में अघात हौ न दारिद तुम्हारे कहूं कबहूंनजावहीं ॥ तटनी समरतीर खैंचैं गहे आंत गीध मानहु ख्यलार भूरि बनशी बझावहीं । जात भटबहे भूरिचढ़े खग वृन्दजनु खेलत सुछैल लिये नावरि सुहावहीं ॥ योगिनी जमाति मिलि भांतिभांति मुंडनके खप्पर सुधारिचलीं गावतै सुजूटि जूटि। लोथिनसों जाल बही लोहुन प्रबाहहेरि आनँद उमँगि त्यों पियनलागी घूंटिघूंटि ॥ चारौ ओर धावत पिशाच प्रेत वृन्दवृन्द भावत सुमनमांस खावतहैं लूटि लूटि । भाग्यवंत पूरण प्रहर्ष त्यों करतशोर रही खछाय तिहुँलोकन में फूटि फूटि ॥ युद्ध तटनी के तट समिटे पिशाच प्रेत भूत बैताल जाल योगिनी जमातहैं । खप्पर कपालके कमंडल सो मूड़ लिये तीरतीर बैठत जे न्हायन्हाय जातहैं ॥ ओझरी कि झोरीसन काढ़ि काढ़ि रावजनु घोरिघोरि पियत प्रमोद सरसातहैं । कोऊ प्रेत भूत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भट मूड़नको फोरि फोरि सतुवा सो सानि सानि गूदा खून खातहैं ॥ सवैया॥ शोणित धार अपारचलीं बहि दुष्टनफोरि शरीरनकारे। सो हतसो भगवंत मनोगिरि कज्जल सों चले गेरु पनारे ॥ ढेरलगेबहु लोथिन के लखि कायर ही हैजात दरारे। छायरही रव घोर महा सुनि शूरन चित्त उछाहन भारे॥बानर भालु बली बिकराल निशाचर सेनसमूह सँहारे। कोटिन मारि चकोट चपेटन लूमलपेटिकै सागरडारे ॥ गर्जत तर्जत धावतहैं चहुँओर महाबल पुंजनभारे। त्यों भगवन्त प्लवंगन की रजनीचर युद्ध विलोकतहारे॥

तब रावण निज हृदय विचारा। निशिचर वंश भयउ संहारा॥
मैं अकेल कपि भालु अपारा। करौं कछुक माया विस्तारा॥
प्रभुहिं पयादे लखि सुरराई। दीन्ह्यो निज रथ तुरत पठाई॥
बरणि न जाइ मनोहरताई। हरषि चढ़े तापर रघुराई॥

हरिगीतिका छन्द ॥ आरूढ़ रथ रघुवंशमणि अवलोकि सुर जयजयकियो। कपि भालु हर्षित तोरि गिरितरु धाय अरि सैनहि लियो॥ नहिं जात कीशन मारु सहि दशशीश तब मायाठनी। बहुरूप कीन्हे प्रकट लच्मण बालिसुत मर्कटधनी॥ अवलोकि डरपे भालु कपि हँसि राम धनुशायकलियो। क्षणमाहिं कीन्ह्यो दूरि माया निरखि सब हरष्योहियो॥ तब राम सबसन चितय बोले श्रमित वीरबनायकै।अब माम रावण द्वन्दयुद्धविलोकियोचितलायकै॥

दो० असकहि श्रीरघुवंशमणि विप्रचरण शिरनाय।
सुमिरि शम्भु गिरिजा गणप दीन्ह्यो यानचलाय॥
प्रभुहिं देखि रावण सुभट चला क्रुद्धि बलऐन।
गर्जत तर्जत आइकै सन्मुख बोला बैन॥

सवैया॥ जीत्यहु जे भट संयुगमें सुनु तापसहौं तिनके सममैना।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रावणनाम सुजाहिर है यश लोकप जासुपरे बँदिऐना॥ दूषण बालि कवन्धबध्यो घटकर्ण समेघरवादिक सैना ॥ आजु निबाहि त्यहौं सब बैरजु त्यागि धरा रण भागहि तैंना॥ तोमर छन्द ॥ बश काल रावण जानि। रघुवीर बोल्यउ बानि ॥ सवैया ॥ जनि जल्पसि रे यश नाशत है सुनि नीति बिचारिकरै सुक्षमा। जग पूरुष तीनिप्रकारकहे कबि पाटल औ पनसाँब समा॥ प्रद एक प्रसून प्रसून फलौ यक केवल होत फलेकनमा। न करैं कहि एक करैं कहिकै भगवन्तकरैं न धरैं मुखमा॥ श्रीरघुवीर के नीतिमई करि मंजुल बैन दशानन कानै। नेकुधर्यो हियरे न विचारि सुमूढ़ कुजाति कुबुद्धि अयानै ॥ त्यों भगवन्त सगर्व कह्यो सुनु तापस मोहिं सिखावत ज्ञानै । बैरबढ़ावत तौ न डर्‍यो अब लागत ग्रीव बचावत प्रानै ॥ त्रिभंगी छन्द ॥ असकहि दशशीशा करि उर रीसा गहि भुज बीसा धनुतीरैं । शर कुलिश समाना मारन नाना लाग अयाना रघुवीरै ॥ दिशि विदिशिते पाटे महि नभठाटे लखि प्रभुकाटे शर घोरा। तबतौ खिसियाई शक्तिचलाई द्रुत अजधाई प्रभुओरा॥लखि आवत ताही शर सँगमाहीं प्रभुदिशि वाही फेरिदई । रावण बहु मारे आयुधसारे काटि निवारे कृपामई॥ शतबाण पवाँरेसि सारथिमारेसि राम पुकारेसि बिकल सुनी। तुरतै प्रभुधायो सूत उठायो अतिरिस पायो रामपुनी ॥ सजि चाप विशाला बिशिष कराला राम कृपाला बहु मार्‍यो। करि बाजि निकंदन सूत सस्यंदन हति रघुनंदन महि पार्‍यो ॥ दश बदन लजाना चढ़ि रथ आना आयुध नाना बिधि छोड़े। निःफल भयसारे शूल पवारे दश महिपारे चहुँ घोड़े ॥ प्रभु बाजि उठायो अतिरिस पायो बिशिख चलायो बहु आसू । दश दश शर साथा दशहुन माथा हति रघुनाथा दिय

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तासू ॥ लखि रुधिर प्रवाहा निशिचरनाहा करिकै हाहा धुकि धायो। छाँड़्यो शरतीशा तब जगदीशा रिपु भुजशीशा महि आयो॥ भय तुरत नवीने पुनि प्रभुछीने इमि हरिकीने बहुदाँवै। छाये नभमाहू बहु शिर बाहू केतु सराहू जनुधावैं॥ प्रभु बाण चलावैं गिरन न पावैं छिदि नभ जावैं शोभ लह्यो। मानहुँ दिनराई सुकर रिसाई राहुहिं धाई पोहि रह्यो॥ रघुबर शर चण्डैं जिमि जिमि खण्डैं रिपु शिर मण्डैं फेरि नये। लखि बाढ़त शीशा इमि खलईशा गहि भुजबीशा धनुष लये॥ शर मारि सकोपा प्रभु रथ तोपा भयउ सोलोपा तकि न पर्‍यो। लखि सुरन दुखारी कार्मुक धारी शरण निवारी शिरनि हर्‍यो॥ दिशि बिदिशि ते डोलैं जै जय बोलैं करत कलोलैं भय जावैं। कहँ राम अहीशा प्रबल कपीशा कहि कहि शीशा बहुधावैं॥ दश मुख रिसबोरा करि अति शोरा शक्तिकठोरा हनेसि छली। लंकेश्वर ओरा शक्ति सु घोरा तुरत सजोरा चमकि चली॥ लखि रघुकुल भूषण टारि बिभीषण शक्ति सुतीषण आपु सही। श्रम बश जग भूषण देखि बिभीषन देत सु सीखन जैसचही॥ गहि गदा सिधार्‍यो हनि उरमार्‍यो प्रभु बल पार्‍यो प्रबलअरी। पुनि उठा सँभारी भिरा प्रचारी द्वउ बलभारी समरकरी॥ देखत हनुमाना अति बलत्राना गहि पाषाना सपदि चल्यो। करि चरणप्रहारा दश मुखपारा सारथिमारा रथहि दल्यो॥ उठि बहुरि सुरारी कपिहि प्रचारी हन्यो करारी भट दोऊ। भै युद्ध अपारा गगन मँझारा पावनपारा कहि कोऊ॥ मारुत सुत व्यंकट लखि बश संकट धाये मर्कट समुदाई। लखि कीश निकाया निशिचरराया बिरच्यो माया दुखदाई॥ कपिभालु समेते कटक मजेते तहँ तहँ तेते दश शीशा। भय प्रगट निहारी डरि बनचारी भगे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुकारी जगदीशा ॥ जगदीश बिलोका कटक सशोका सुर मुनियोंका दुखभारी। हँसि चापसुधारी शर यकमारी सकल सुरारी भय टारी ॥ हरषे सब बन्दर यक दशकंधर लखि तरु मंदर धरि धाये। जै जै कृतलेखा गगन अशेषा दशमुख देखा रिसवाये ॥ रिसवाय सुरारी सुरन प्रचारी भगे पुकारी रघुबीरै। सुनि अङ्गद धायो मारि गिरायो पुनि चलिआयो प्रभुतीरै ॥ उठि बहुरि दशानन हति निज बानन कपि बलवानन बिचलाये। लखिराम प्रवीने शिर भुजछीने तुरत नवीने ह्वैआये ॥ लखि बाढ़त शीशन भुजरिपु कीशन भरिउर रीसन बहुरिधये। दशमुखहि प्रचारी बहुबिधि मारी गिरितरु भारी बिपुलहये ॥ नल नील जुझारे कूदि बिदारे नखन लिलारे रिपुकेरे। लखि रुधिरप्रवाहा निशिचरनाहा दुनहुनगाहाक रतेरे ॥ पटकत छुटिभाजे रिपुपर गाजे तबधनुसाजे लंकेशा। हति सबन गिराये कपि मुरछाये लैदल धाये ऋक्षेशा ॥ सवैया ॥ ऋक्षपते दलसाजि तबै रिपुरावणको बहुभांतिन मास्यो। कोपिदशानन बीरबली हति भालु अनेकन भूतल पास्यो ॥ देखि सुसेन सँहार ऋक्षेश प्रहारिपदै रिपु मूर्च्छित डास्यो। त्यों भगवंत सुजैजै कै सहसेन श्रिराघवपाहिं सिधास्यो ॥ संयुताछन्द ॥ तबसूत दूर रावनै। रथघालिगो लै भावनै ॥ मिलियातुधान सत्रासही। लिय घेरि रावण पासही ॥

दो० जामवन्त योधा प्रबल अति बल बरणि न जाय।
समरभूमि ते रावणै जो गृह दीन भगाय ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेलङ्काकाण्डे रामरावणसमरजाम्ववानपदप्रहाराद्रावणमूर्छावर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

दो० चरण कमल रघुबीर के बंदौं सुरतरु तोर।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जासु कृपा भगवन्त नित सिद्ध मनोरथ मोर ॥
तेहि निशि त्रिजटा जायकै जनकसुता के पास।
समाचार रिपु के सकल कहि सो कीन प्रकास ॥

कबित्त ॥ शीशबाहु बाढ़सुनि शत्रुकी सुसीय हीयऊपजी सुजाल त्रास नैनजल छाइयो। बारबार त्रिजटासों पूंछती सशोच सीय होइहै सुकाह कहि मोहिं समुझाइयो ॥ नाथ शरलाग्यहू न होत दशमाथ नाश मोरही अभाग भूरि मातुवाहि ज्याइयो। भाग्यवंत त्रिजटा सप्रेम सुनि कहीबात उर शरघात रिपु मरीधीर लाइयो ॥ याकेउर बास तव रावरे सु उरमाहिं प्रभुको निवासनित वेदन प्रकाशिहै। राम उर धाम सुखभुवन अनेक बास लागते सुबाणसब साथही बिनाशिहै ॥ भाग्यवंत जानिमन याही रघुबंश नाथ मारते न ताहि मन मेरे सत्यभासिहै। काटते शिरनि जब होइहै विकल आपु जाइहै सुछूटि ध्यान मारितब नाशिहैं ॥ सवैया ॥ यहबातसुनाय जबै सियको त्रिजटा उठि मंदिर आपुगई। रघुवीर बियोग किपीरगँभीर सुधीर सिया उर माहिं जई ॥ फरक्यो तब बाम भुजा दृग बाम सुमंजुल मंगल मोदमई। भगवंत बिचारि भले सगुनै मिलिहैं रघुनाथ प्रतीति भई ॥ प्रात दशानन जागिउतै चढ़ि स्यंदन संयुग कोपि सिधायो। गर्जत तर्जत घोर कठोर सुबीरबली रण सन्मुख आयो ॥ देखतबानर भालुइतै धरिभूधर वृक्ष प्रचारत धायो। त्योंभगवंत दशाननके दलपेलिकै दुष्टन मारिहटायो ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥

कियो मारि हैरान दुष्टेशकीशा। रच्यो कोपिमाया तबै बाहुबीशा ॥
भये भूत बैताल संभूत जाला। धरे चाप नाराच धाये कराला ॥
लिये योगिनी यूथ कर्बाल हाथै। गहे पाणि दूजे सुमर्त्यान माथै ॥
पिये शोणितै सद्य सो नाचि गावैं। रटैं मारु मारू मुखै बाय धावैं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भये भीतकीशालि भागे पुकारी। जहैं जायँ देखैं प्रवर्ताग्नि भारी॥ लग्यो फेरि बर्षे महातप्त बालू। भये भूरि व्याकुल्लकीशालि भालू॥ सुगर्ज्यो महा कोपकै शब्द घोरा। पर्‍यो लोक तीनों ह-हाकार शोरा॥ ससौमित्र सुग्रीव राघव समेता। किये रावणा वीर सारे अचेता॥ हरिगीतिकाछन्द॥ यहि भांति बीर अचेत करि सब प्रबल पुनि माया करी। हनुमान प्रगटेसि भूरि घेरेन्हि जाय रामहि गिरिधरी॥ चहुँओर धाय उठाय लूमन मारु मारु पुकारहीं। रघु-बीर भंजनभीर ताके बीच यों छबि धारहीं॥ तोमरछन्द॥ जनु इंद्र चाप अनेक। लय बारि बिरची नेक॥ त्यहि मध्य राम कृपाल। जनु सोह बृक्ष तमाल॥ चतुरंसाछन्द॥ तब रघुनाथा। धरि धनु हाथा॥ यक शर हाया। निशिचर माया॥ सकल बिनाशी। प्रभु अबिनाशी॥ पुनि बहुबारी। शिर भुज आरी॥ इति शर काटे। महि नभ पाटे॥ पुनि जमि आवैं। बिलँबन लावैं॥ मरतन आरी। श्रमित खरारी॥

दो॰ राम बिभीषण ओर तब चितयो आँखि उठाय।
कह्यो बिभीषण जोरिकर सुनियो श्रीरघुराय॥
प्रभु सर्वज्ञ कृपायतन जानत सब उर हाल।
निजजन गुरुता देन हित मोहिंपूंछेउ यहिकाल॥

हरिगीतिकाछन्द॥ हे दीनबंधु कृपाल याके नाभि अमृत कुं-डहै। बल तासु जीवत मरत नाहिंन प्रबल अरि दशमुण्डहै॥ सुनि राम जग अभिराम बाण कराल हर्षि सुधारेऊ। अति होन असगुन लागि हाहाकार त्रिभुवन पारेऊ॥ हरिपदछन्द॥ श्रुति प्रजंत प्रभु खैंचि शरासन मारे शर यकतीशा। शोष्यो बाण एक नाभी शर अपर हरे भुज शीशा॥ शिर भुज हीन रुण्ड महि नाच्यो धरणि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धसै धरधाई। तब युग खंड दिये करि ताको बिशिख मारि रघुराई॥ गरज्यो मरत घोर स्वभारी कहाँ राम रणमारों। अस कहिपस्यो धरणि दशकन्धर देवन जैति उचारो॥ सवैया॥ जय राम कृपा सुखकन्द स्वछन्द निकन्दन द्वन्द प्रताप महा। प्रति अंग अनंग अनेकप्रभा भगवन्त बिलोकत शोक दहा॥ मुकुटाद्भुत जूटजटानि बिचित्र प्रसूनन की अति शोभ जहा। छवि पावत शेष न पार कही लघु बुद्धि बखानि कहौं सुकहा॥ करि दृष्टि दया सुरवृन्द अभै रघुनाथ अनाथन नाथ किये। हरषे लखि बानर भालु सबै जय राम कृपा सुख पुंज हिये॥ बरषैं नभ देव प्रसूनन माल निहाल सुदुंदुभि जाल दिये। भगवन्त दशानन पाप समुद्र में बूड़त देवन राखि लिये॥

दो॰ जै जै करि बरषहिं सुमन सुर नभ चढ़े बिमान।
भाग्यवन्त रणभूमि में शोभित श्रीभगवान॥

सवैया॥ रावण रामको युद्ध महा यह को कहिकै कबि पारहिं पावै। शारद शेष गणेश बिरञ्चि महेश थके श्रुति नेति बतावै॥ जा दल युद्ध प्रचण्ड बलै कहिबोति कठोर बिचार न आवै। त्यों भगवन्त श्रिराम चरित्र यथा मति गाय हिये सुखछावै॥

दो॰ निज कर जाको मारिकै राम परमपद दीन।
तेहि रावणको कौन बिधि बरणै सुकबि प्रवीन॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेलङ्काकाण्डेरावणबधवर्णनोनामअष्टमोऽध्यायः ८॥

सवैया॥ दीनदयाल सुजान सुशील शिरोमणि वेद पुकारत गाथै। घोर भवार्णव बोहित नाम सुसेवक पद्म प्रदानँद पाथै॥ गोद्विज देव धरा दुखभञ्जन रञ्जन भक्त धरे धनुभाथै। बंदतहै भगवन्त सदा कर संपुट कै पद श्रीरघुनाथै॥ पद्धरी छंद॥ मयजादि नारिसुनि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मरणकंत। ह्वै बिकल रुदत धाईं तुरंत ॥ गति नाह देखि रोवैं पुकारि। उर ताड़ि ताड़ि तन सुरति डारि॥ गुण तेज रूप बल बुधि प्रताप। बहु बरणि बरणि करतीं बिलाप॥ बल बाहु जासु तिहुँ लोक राज। प्रिय कीन ताहि खग भखत आज॥ ज्यहि कमठ शेष सहि सक न भार। महि परेउ आजु तन भरि सो छार॥ भुज बलहि काल यम जित्यो नाथ। अब आजु पस्यो कस ज्यों अनाथ॥ कुंडलिया॥ नाथ बैर रघुनाथ सों करि फल पायो एहु। रहा न तुम्हरे कुल बिषे रोवनहारो केहु॥ रोवनहारो केहु कालबश कहा न मान्यो। त्रिभुवनपति श्रीराम तिनहिं करि मानुष जान्यो॥ जान्यो कछु न कुभाव मुनिन दुर्लभ रघुनाथा। दीन्ह्यों गति प्रिय तुमहिं राम सम और न नाथा॥

दो० तब रघुबीर बिभीषणहिं सादर आयसु दीन।
देश काल बिधिवत सरिस मृतक कर्म सब कीन॥

कह्यो अनुजसन तब भगवन्ता। कपिपति जामवन्त हनुमन्ता॥
अंगद अरु नल नील समेता। जाहु सकल मिलि लंकसचेता॥
राज तिलक सुन्दर सुखदाई। देहु बिभीषण शीश चढ़ाई॥
भलेहि नाथ कहि जाय सप्रीती। कीन्ह्यों तिलक यथा श्रुतिरीती॥
बाजे बाजन बिविध प्रकारा। लगे होन शुभ मंगल चारा॥
सहित बिभीषण बहुरि अहीशा। आइ रामपद नायउ शीशा॥
प्रभु हनुमानहिं कह्यो बहोरी। जाहु तात जहँ जनककिशोरी॥
समाचार कहि लै कुशलाता। आवहु बेगि घूमि बलत्राता॥

दो० पवनतनय तब जायकै सियपद नायो माथ।
पूंछि कुशल बरण्यो सकल चरित जोरि युग हाथ॥

सवैया॥ मातु दशानन संयुग में रघुनायक शायकसों निज

जीते । लंकहि राज विभीषणकोदय देवनबृन्द किये दुखरीते ॥ हैं कुशलात धरौ धृति मात कृपा सुखव्रात सबन्ध पिरीते । त्यों भगवन्त मिले अब चाहत नाथ तुम्हें फुर मानहुँ हीते ॥ तिलका छन्द ॥ सुनि वायुतने । बरवानि मनै ॥ सुखपुंज सिया । सति मानिकिया ॥

दो० सुनु सुत तोको देउँका कीन्ह्यो मन अनुमान ।
तीनिलोक नाहिंन कछू है यहि वचन समान ॥

सवैया ॥ मातु त्रिलोकन राजससाज लहे हम आज न संशय यामै । आनँदकन्द कृपा सुखवृन्द स्वछन्द सदा परिपूरणकामै ॥ रावण देव सतावनको रणजीति सुपाय विजय अभिरामै । हेरि अनन्त प्रभा भगवन्त उदार अपार सुसानुज रामै ॥ संयुता छन्द ॥ सुनु पुत्र सद्गुण जावतै । निवसैं त्वया उर तावतै ॥ करुणा सदा रघुनाथकी । रहिहै सु लच्छमण साथकी ॥

सुनि हनुमान हरषि शिरनाई । आइ प्रभुहिं सिय कुशलसुनाई ॥
सुनिसियकुशल सकलसुखऐना । भये प्रेम बश राजिवनैना ॥

हरिपद छन्द ॥ तब रघुवीर विभीषण अंगद हनुमत संग पठाये । सादर सियहि चढ़ाय पालकी प्रभुसमीप लैआये ॥ राख्यो प्रथम अनलमहँ सीतै करि उर अन्तर शाखी । सो प्रभु प्रकटकीन चहै ताते वचन कटुक कछु भाखी ॥ सुनि लच्छमणते तुरत जानकी पावक प्रबल मँगाई । चितारचाय कह्यो जो मोरे मनक्रम वचन सदाई ॥ तजि रघुवीर आनगति नाहिंन तौ कृशानु उरवासी । होहु हमैं श्रीखण्ड सारिखे यहि अवसर सुखरासी ॥ असकहि गई प्रविशि सिय तामें धरि पावक द्विजरूपा । सौंप्यो प्रभुहिं लाय श्री सादर पावन परमअनूपा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० राम वामदिशि जानकी राजत स्वइ सुखसार।
भाग्यवन्त शोभा अमित क्यों मुखवरणौं पार ॥
नभ निशान बाजहिं विपुल वरषहिं निर्जर फूल।
भाग्यवन्त सिय राम छवि हृदय बसहु सुखमूल ॥

दशरथसहित सकल सुरबृन्दा। आये जहँ प्रभु करुणाकन्दा ॥ सानुज उठि रघुपति शिरनाई। करि विनती कहि कथासुनाई॥ तव प्रसाद रण सन्मुख ताता। जीत्यों असुर अजयबलब्राता॥ सुनि दशरथ अति आनँदभारे। दै अशीश सुरलोक सिधारे॥ राम लषण सियरूप निहारी। विधिमनभयो प्रगट सुखभारी॥ नखशिख निरखि रूप अनुरागे। करन सप्रेम विनय विधिलागे॥

कबित्त ॥ जयति जै उदार भूमिभार हार कारुणीक रूप शील धाम त्यों न हेरि शोभ आनकी। धीर बीर साहसी समर्थ दानि अर्थ धर्म काम मोक्ष चारिहूके बेद कीर्त्ति गानकी॥ भानु बंशपद्म के प्रकाश कार भानुचंड पारब्रह्म टार जाल भीति देवतानकी। भाग्यवंत जानिदास देहु पाँय प्रेमचारु नौमि नौमि नौमि त्यों सबंधु राम जानकी॥ शिव अस्तुति कबित्त॥ मोह तम तरणि बिशुद्ध बोध कारुणीक दीनबन्धु साहेब सदैव दास हित्तही। पूरण प्रताप यश जाहिर अखिललोक सूखमा समृद्धि मन लेत बिनु बित्तही॥ धारि अवतार भवभारको बिध्वंसि भूरि तूरित्रास देवन प्रमोदपूरि चित्तही। भाग्यवन्त राम सीय सानुज कृपायतन कीजिये निवास त्यों सु दास हीय नित्तही॥ इन्द्र अस्तुति कबित्त॥ श्याम गौर गात मञ्जु बारिजात दिव्य नैन सूखमा समृद्धिवार मैन कोटि कीजिये। पाणिचाप बाण धृत्य कृत्यनाश राकसालि पालि निर्जरालि दालि शोक सुक्ख भीजिये॥ छाइयो प्रतापलोक लोकनै क-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लाप आप नामके प्रताप पापताप तीनि छीजिये। भाग्यवंत जानि दास जानकी सबन्धु रामकृपया कटाक्षकै स्वभक्ति चारु दीजिये॥

दो॰ करि बिनती करजोरि पुनि कह्यो हरषि सुरराज।
जोप्रभु आयसु होय मोहिं करौं बेगि स्वइकाज॥
तात भालु कपि बिपुलमम हने निशाचर जौन।
ममहित त्यागे प्राणनिज सकलजियावहु तौन॥

सुनि सुरपति अमृत बरषाई। दियेभालु कपिसकल जियाई॥
जै जै करि सुर सकल सिधाये। आय बिभीषण सब शिरनाये॥
करिप्रणाम बिनती करि सादर। बोले बचन सुनिय परभाधर॥
नाथ जानि जन कीन्ह्यो दाया। सब प्रकार मोकहँ अपनाया॥
कहँ लगि करौं प्रशंसा भूरी। त्रिभुवन रह्यो सुयश भरिपूरी॥
अब चलि जनगृह पावन कीजै। कह रघुबीर सखा सुनिलीजै॥
मोहिं तोहिं कछु अंतर नाहीं। परयह समुझि देखु मनमाहीं॥
मम मन भरत बिलोकौं जाई। गयेअवधि पुनिमिलबनभाई॥
करहु कल्प भरि राज सुहाई। अन्तधाम मम निवस्यो आई॥
सुनि पुनि भवन बिभीषण जाई। भूषणपट भरि पुष्पक लाई॥
प्रभु आयसु नभ चढ़ि बरषाये। मनभावत सबहिन सोपाये॥
पहिरि पहिरि कपिभालु अनूपा। आये जहँ रघुपति सुरभूपा॥
देखि राम हरषित करिदाया। बोले बचन प्रेम जनुजाया॥

सवैया॥ हे कपिभालु सुनौ सगरे तुम्हरे बल मैं रिपु रावण जीता। राज बिभीषणको सुदई करि आपनि पायगई हमसीता॥ जाहुघरै अपने अब मोहिं भज्यो भगवन्त कह्यो जनि भीता। आयसु पाय चले कपिभालु सुधारि हिये सिय राम पुनीता॥ हरिपद छंद॥ जामवंत कपिराज बिभीषण अङ्गदादि हनुमंता। नीलनला-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दि यूथपति औरौ सुभट जिते बलवन्ता ॥ सीता अनुज सहित रघुनन्दन चढ़ि बिमान सब साथा। उत्तर दिशा चलायो सादर नाय बिप्र पद माथा॥ जयजय करहिं देवनभ संकुल कोलाहल बहु होई। होहिं सगुन सुन्दर सुखदायक मुदित राम सिय जोई॥ सादर सियहि देखावत रघुबर जहँ जहँ असुर सँहारे। दरशे आइ सेतु सागरको शंकर अरचनकारे॥ दण्डक पंचवटी मिलि कुंभज अत्रि आदि ऋषिराजै। करि प्रणाम अनसूयहि आये चित्रकूट सुख साजै॥ करि मज्जन पय भेंटि मुनिन कहँ बहुरि बिमान चलाये। यमुनहिं पूजि बन्दि मुनि बृन्दन मुदित प्रयागहि आये॥ करि मज्जन सादर तिरबेणिहि द्विजन दान बहु दीन्हे। बारबार शिर नाय प्रयागहि चले अवध सुधि कीन्हे॥ हनुमानहि रघुबीर बोलि तब तुरतहि अवध पठायो। कहि भरतहि मम कुशलकुशल उन लै तुम आतुर आयो॥ गवन्यो हरषि प्रबल मारुत सुत प्रभु आये जहँ गंगा। उतरे देखि देवसरि पावनि करणि सकल अघभंगा॥ सिय सुरसरि हिं पूजि बहु भांतिन लहि अशीश मन भाई। सुनत निषाद नाथ अति आतुर पर्यो चरण तल आई॥

दो० देखि राम उठि सादर भेंट्यो हृदय लगाय।
परम प्रीति बैठाय ढिग पूंछी कुशल सुभाय॥

पद॥ नाथ कुशल पदपद्म निहारे। जे पद कमल पूज्य अज शङ्कर शरण सभीत हरण अघ भारे॥ दीनदयाल प्रणत आरत हर सुयश पुनीत पुराण पुकारे। पूरण काम धाम सुख सुन्दर राम कृपाल प्रेम रसभारे॥ सब बिधि अधम निषाद नीच मैं कुटिल कुजाति कुकर्म्म अगारे। सो उरलाय भरत जिमि भेंट्यो गहिगुण

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोपन एक बिचारे ॥ यह शोभा यह रूप माधुरी यहय सुभाव कृपाचित धारे। सीता राम लषण तीनों जन भाग्यवन्त उर बसहु हमारे ॥

दो० रावण राम सुयुद्ध यह जे गावहिं करि प्रीति।
बिनु श्रम भवनिधि पारते जाहिं मोह दल जीति ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणि ग्रन्थेलङ्काकाण्डेश्रीरामचन्द्रागमनश्रृङ्गवेरपुरप्राप्त वर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९ ॥

इतिलङ्काकाण्डसमाप्तम् ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भक्तिशिरोमणि उत्तरकाण्ड ॥

सवैया ॥

श्याम शरीर सुभाय सुहावन पावन पीत पटाद्भुत भ्राजै। पाणव कार्मुक बाण कसे कटि तूण बिभञ्जन दुष्ट समाजै॥ सीय सपुष्पक यान अरूढ़ सुसेवत बंधु महा सुखसाजैं। बंदतहैं कर सम्पुट कै भगवन्त सप्रेम सदा रघुराजै॥ छप्पै॥ रह्यो अवधि दिन एक अवध आये प्रभु नाहीं। कृश तनु राम बियोग सकल शोचहिं मन माहीं॥ सगुन होहिं शुभ देखि मुदित जहँ तहँ सब कहहीं। मन अनंद अस होत मनहुँ आवन प्रभु चहहीं॥ तब भरत नयन भुज दक्षिण उठ फरकि पुनि पुनि सुतन। शुभ सगुन जानि उर हरष अति लागे करन बिचार मन॥

सो० तेहि अवसर हनुमान विप्ररूप धरिकै सुभग।
आय गयो तेहि थान गत आसन श्रीभरत जहँ॥

सवैया॥ शीश जटा कृश गात किये मुनि वेष मनै प्रभु पांवरि दीन्हें। लागि रही रट राम सिया रसनासन चारु कुशासन कीन्हें॥ त्यागि दिये पट भूषण भूरि सु औधि अधार हिये दृढ़ लीन्हें। त्यों भगवन्त बिलोकत भारत बूझि मिले हनुमानहिं चीन्हें॥ शोचहु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जाहि सप्रेम सदा कुशलात महा मुद मंगल छावत। जीति रणै रिपु रावणको दय स्वस्थल बास सुदेवन यावत ॥ भूप बिभीषण को करि कीरति नारद शारद शंकर गावत। सानुज सीयस सो भगवन्त बिमान चढ़े प्रभु औधहिं आवत ॥

सुनत भरत अति आनंद छाये। परम प्रीति गहि हृदयलगाये ॥
बार बार अति आदर देई। बोले बचन प्रेम जनु भेई ॥
तात सँदेश कह्यो जस मोहीं। तस कछु है न देउँ जो तोहीं ॥
ताते तव ऋणियां मैं ताता। सुनिहरष्योकपि पुलकितगाता॥
बार बार पद शीशनवाई। चल्यो पवनसुत आयसु पाई ॥
भरत आय पुर गुरुहि सुनाये। कहिप्रभुकुशलजननिसमुभाये॥

दो० सदल जीति रावण असुर सानुज सीयसमेत।
गावत यश सुर नर मुदित आवत कृपानिकेत ॥

हरिपद छन्द ॥ प्रभुआगमन सुनत उठिधाये सकल अवधपुर बासी। मंगलसाज साजि बहुभाँतिन चले मिलन सुखरासी ॥ हरषित भरत बन्धु गुरु परिजन सहित प्रेमरसपागे। कृपानिधान राम कहँ सादर चले लेनहित आगे ॥ परमानन्द अवधपुर छायो चढ़ी अटारिन नारी। निरखहिं गगन बिमान मनोहर दरश आश उर भारी ॥ श्रीहनुमान जाय उत रामै भरत कुशल कहिगाये। चढ़ि बिमान रघुवंशविभूषण आतुर अवधसिधाये ॥ कृपासिन्धु सब कपिन देखावत अवधपुरीकै शोभा। महिमा अमितकही श्रीमुख जो कहै सुकवि असकोभा॥ आवत देखिलोग सब रघुपति पुरढिग यान उतारे। दीन्हे पठै धनदपहँ पुष्पक रामसुजान उदारे ॥

दो० भरतसंग पुरलोग सब आये जहँ रघुबीर।
देखि रामसुख चंद्र छबि भये बिगत तन पीर ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कुंडलिया ॥ कीन्हे राम प्रणाम तब सानुज गुरुपद धाय। भेंटि कुशल बूझी प्रभुहिं प्रीतिसहित मुनिराय ॥ प्रीतिसहित मुनिराय कुशल हमरे तवदाया। पुनि विप्रन्ह शिरनाय सबहिं भेंटेरघुराया॥ आय भरतपुनि शीश राम पायँन धरिदीन्हे। प्रेम मगन नहिंउठत राम बहुविधि बलकीन्हे ॥

दो० बलकरि कृपानिधान पुनि लीन्ह्यो हृदयलगाय।
भरत रामके प्रीति अति नहिं मुख बरणि सिराय ॥
कृपासिंधु बूझत कुशल कहत भरत शिरनाय।
सब विधि मंगलकुशल अब नाथदरश तवपाय ॥

पुनि रिपुहनहि मिले रघुनाथा। लषण भरत पद नायो माथा ॥
बहुरि लषण रिपुहन द्वउ भाई। मिले परस्पर प्रेम वढ़ाई ॥
सानुज भरत सीयपद बन्दे। अभिमत आशिषपाइ अनन्दे ॥
पुनि सानुज कृपाल सुखरासी। क्षण महँ मिले सबहि पुरवासी॥

दो० यहि विधि सबहिंन देतसुख चले राम सुखकंद।
कौशल्यादिक मातु सब लखि धाईं सानंद ॥

सवैया ॥ पूरणप्रेम प्रमोदभरी जननी सब देखत रामहि धांईं। ज्यों दिनअन्त सुबच्छन हेरि हुंकारि कै धावहिं धेनुलवाईं॥ सानुजराम मिले सब मातन जात न सो कहि प्रीतिसुहाई। त्यों भगवंत बिलोकतरामहिं दूरिभयो दुख आनँद छाई ॥

दो० तब सीता सासुन सकल जाइ नवायो शीश।
बूझि कुशल मनभावती दीन्ही सबन अशीश ॥

हरिगीतिका छन्द ॥ श्रीराम रूप अनूप नखशिख मातु सकल निहारहीं। लय हेमथार सँवारिआरति बारबार उतारहीं ॥ मणिबसन भूषण वारि सादर बायु अंचल ते करें। भगवंत सानुज रामसीतहि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

निरखि उर आनँदभरैं॥ हरिपदछन्द॥ जामवंत कपिराज विभीषण अंगदादि कपिबीरा। नील नलादि वायुसुत सुन्दर धारे मनुजशरीरा॥ भरतसनेह शीलव्रतनेमै सादर सकल सराहैं। पुरजनरीति प्रीति रघुबरकी निरखि निरखि सुखलाहैं॥

दो० प्रभु आयसु तिनपायकै गुरुपद नाये शीश।
जानि राम प्रियलाय उर दीन्ह्यो मुनि आशीश॥

सो० पुनि तिननायो शीश कौशल्याके चरण तल।
दीन्ही हरषि अशीश जानि राम प्रिय भावती॥
गगन सुमन सुर वृन्द बरषि हरषि जै जै करहिं।
गवने गृह रघुनन्द त्रिभुवनपति शोभा सदन॥

कवित्त॥ द्वारद्वारप्रति चारु कंचन कलशधारि बन्दन पताक केतु सबहिन साजे हैं। बीथिनै सिंचाय शुचि सुन्दर सुगन्ध जाल गजमणि चौकत्यों सुमणि दीपराजे हैं॥ साजे पुरलोगन सुभाँति भाँति मंगलांग बाजे बहु बाजन सुगजबाजि गाजे हैं। भाग्यवन्त सूखमा श्रिऔधकी बखान कौन देखतै सुछबि जासु सुरराजलाजेहैं॥ सवैया॥ कंचनथार सँवारि सुआरति अंगन अंग शृँगार शृँगारी। गावत मंगल राग मनोहर बृन्दन बृन्द चलीं मिलि नारी॥ आरति भंजन राघवकी शुभ आरतिकै धन भूषणवारी। त्यों भगवन्त विलोकत रूप अनूप लहैं सब आनँदभारी॥

दो० प्रथम केकयी के भवन गये राम सुखदैन।
बहुविधि ताहि प्रबोधिकै पुनि आये निज ऐन॥
महामोद छायो अवध आये रामसुजान।
भाग्यवन्त श्रीरामयश करैं मुदित सब गान॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेउत्तरकांडे श्रीरामचन्द्रअयोध्यागमननिजमन्दिरप्राप्तवर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दो० राम लषण श्रीजानकी भरत शत्रुहन साथ।
भाग्यवन्त बन्दनकरौं धरि पद पंकज माथ॥
प्रात वशिष्ठ बुलाइके गुरुजन विप्रसमाज।
कह्यो राज्यपद रामको देहु सुसाइति आज॥
मुनिबोले द्विजगण हरषि भली कह्यो मुनिराज।
अब बिलम्ब नहिं कीजिये वेगिकरौ यह काज॥

त्रोटक छन्द॥ तब बोलि वशिष्ठ सुमन्त लिये। सब साजहु साज निदेश दिये॥ पठये बहु धावन बोलि तबै। भय लावत मंगल द्रव्य सबै॥ चहुँओर सजावत भे नगरै। सिंचवाय सुगन्धदिये डगरै॥ रथ बाजि गयन्द सजे सगरे। मुद ठौरन ठौरन पै बगरे॥ बहु भाँतिन बाजि निशानरहे। छबिपावत पारन शेषकहे॥ नभ देवन दुन्दुभि जाल दिये। झरि फूलन कै जय जैति किये॥ हरिपदछन्द॥ प्रभु आयसु तब पाय सेवकन प्रथम सखन अन्हवाये। सुग्रीवादि साजि पटभूषण शुभ आसन बैठाये॥ तब रघुबीर भरतके सादर निजकर जटा छँड़ाये। तिहुँ भ्रातन अन्हवाय आपही पटभूषण पहिराये॥ बिवराये पुनि जटा आपने करि मज्जन तन साजे। भूषण बसन मनोहर मंजुल निरखि काम बहु लाजे॥ सासुन सकल जानकिहि सादर मज्जन तुरत कराई। दिव्य बसन भूषण बहु सुन्दर अँग अँग सजे बनाई॥ राजति राम बाम दिशि सीता छबि समुद्र सुखखानी। शोभा अमित देखि सब मातन जन्म सफल करि मानी॥

दो० ब्रह्मादिक सब देवता नारदादि मुनि बृन्द।
चढ़ि बिमान आये अवध देखन हित सुखकन्द॥
प्रभु शोभा अद्भुत अमित लखि हरषे मुनिनाह।
रतन सिंहासन दिव्य तब माँग्यो सहित उछाह॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कबित्त ॥ कोटि शशि सूर सों प्रकाशपुंज होत जासु जगमग ज्योति मन मीननको जारहै। हेमहीर आदि कल कलित ललित चारु चित्रित बिचित्र कामदायक बहार है ॥ जात चकचौंधि दृष्टि हेरिये सुबिधि कौन तेजि को समृद्धि मोहतम तोमहार है। भाग्य-वन्त शेष शम्भु शारदा चकित देखि रामके सिंहासन कि सूखमा अपारहै ॥ जटित बिचित्र मणि माणिक जवाहिरादि पन्नन प्रकाश पुंज होत तमनाशनै। मंजु मुक्त झालरैं बिराजमान ओरचारि कमलाष्ट दल चारु भ्राज मध्य आसनै ॥ अवनि अकाश लोकलोकन प्रकाश दिव्य प्रगटी सुद्युतिजाल प्रदभव्य दासनै। भाग्यवंत सूखमा समृद्धि सो बखान कौन भ्रमत बिरञ्चि बुद्धि राघव सिंहासनै॥

दो० तापर श्रीसीता सहित बिप्रन शीश नवाय।
रामचन्द्र बैठे हरषि मुनिवर आयसु पाय ॥
प्रभु शोभा अद्भुत अमित लखि हरषे सुरबृन्द।
बरषि सुमन दुंदभि दिये जय कृपाल सुखकन्द ॥
मुनि बशिष्ठ प्रथमैं तिलक कीन्ह्यो रघुबर माथ।
पुनि सब बिप्रन को दियो आयसु श्री मुनिनाथ ॥

राज तिलक सुन्दर शुभ देखी। हरषे सब नरनारि बिशेखी ॥
परमानन्द मगन सब माता। करहिं आरती पुलकित गाता ॥
दिये दान बहु द्विजन हँकारी। कहि न जाय उर आनँद भारी ॥
जयजय करहिं कोलाहल होई। मन भावत पाये सब कोई ॥
बाजहिं बिपुल निशान सुहाये। जहँ तहँ युवतिन मंगल गाये ॥
पढ़ैं बेद भूसुर समुदाई। मागध सूत बन्दि गुणगाई ॥

कबित्त ॥ बेद मंत्र ब्राह्मण उचार जयकार नभ देवन अपार वृष्टि सृक सुमनानकी। पावन प्रताप यश कीरति कलाप चारु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मागध सबन्दि सूत गायकनगानकी ॥ नाग नभ नगर निशान धुनि धूमधाम बिरची बिचारि बेद रचना बिधानकी । भाग्यवन्त बिस्तृत प्रताप पुंज ठामठाम हेममै सिंहासनै बिराजैं राम जानकी॥ सज्जितांग भूषण बिचित्र पट क्षौम धारि गामिनी द्विरद बाम दामिनी समानकी। दूब दधि रोचना कनकथार भार भरि आरती सँवारि चलीं भारतीसि गानकी ॥ आरती उतारि वारि तन धन प्राण हेरि सूखमा समृद्धि मार्ग दृग चारु पानकी । भाग्यवन्त राजनके राज रघुबंश राज हेममै सिंहासनाजु राजैं राम जानकी॥ सेवा साज साजि लिये सेवक सखादि बंधु आस पास राजत बिचित्र शोभ ठानकी। ब्यजनादि चामर सुछत्र चारु भरतादि धृत्य कृत्य गान नृत्यदार देवतानकी ॥ हेमहीर आदि बखशीश गथ होत पाय देतहैं अशीश आश पूर्ण याचकानकी। भाग्यवन्त राज बंश शीशताज महाराज हेममै सिंहासनाजु राजैं राम जानकी ॥ फर्श फेन क्षीर सों फटिक भीतिकान फोरि प्रगटी सुभास्य सम चन्द्र चन्द्रिकानकी। ज्योति दीप वृक्षनकि ऋक्षन बिमन्दकार हार कृतकेतु मन सूखमा बितानकी ॥ चौघड़े चगेरे चारु गेरेलय गंध पात्र पान पीकदान दिव्य द्युति माणिकानकी। सोह साज राजसी समाज पुंज भाग्यवन्त हेममै सिंहासनै बिराजैं राम जानकी ॥ चौघड़े मयन्द कर केशरी चगेर धारि आरसी पनस नील सज्ज सौज पानकी । द्विबिदेत्रदान दधिमुख खासदान साजि गवलै गिलौरिकाग्रनल पीकदानकी॥ अंगदासि चाप लंकनायक सुगर ढाल तूण जामवान शक्ति आगे हनुमानकी । भाग्यवन्त राजसी समाज साज पुंज भ्राज हेममै सिंहासनाजु राजैं राम जानकी ॥ धारि धर्म धूरिका निकारि भवभूरि व्याधि पूरि प्रणराज शत्रुतूरि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तारि भ्राजते। चैलदै त्रिलोक दलि मेदिनी कदम्बभार पारकैस दिव्यभीति आश्रपसमाजते॥ क्रूरकर्म खोजनासरोज धर्म रोजराज पायभे प्रकाश साधु सज्जनालि गाजते। भाग्यवंत राजनके राज राजा रामचन्द्र जानकीस आजु भद्रआसनै बिराजते॥ मंडितार्क जालसों प्रकाशपुंज हेम क्रीट क्षौम जरतार दिव्य अम्बरांगभ्राजते। मंजु मुक्तमाल कल कारमुक छत्य पाणि जग मगज्योति मणि भूषण सुसाजते॥ श्यामजलदाभ तन सूखमा समृद्धि चारु हारि हेरि ऊपमान रतिकाम लाजते। भाग्यवंत राजनके राजराजा रामचन्द्र जानकीस आजु भद्र आसनै बिराजते॥ भानुसों प्रताप जग जालभो उदित चारु जैतिजै निशान दिव्य लोक लोक बाजते। पापताप यामिनी विनाशपाय कामक्रोध चौर बृन्द ओर चारित्रास भूप भाजते॥ साजि भेंट राजसी नरेश देश देश आनि धारि अग्र अस्तुती समग्र भूप साजते। भाग्यवंत भूपवंश शीशताज रामचंद्र जानकीस आजु भद्रआसनै बिराजते॥ पंथ सतसाफभे अपन्थबन्द धाम धाम खुलिगे कपाट कुलिसज्जित सुसाजते। नीतिको प्रचार जग रीतिप्रीति सोहियत जोहियत जाहिमन मोद पुंज भ्राजते॥ पूर्ण सौजभावती समस्त नेकु इच्छयान दूरि दुष्कृताघहंत भीतिभक्त राजते। भाग्यवंत भानुसों उदितराजा रामचन्द्र जानकीस आजु भद्रआसनै बिराजते॥ ब्योमतन श्याम दिव्य भूषण नक्षत्र जाल चन्द्रमास्य मालशोभ दामिनीकि साजते। कौमुदी सुकीर्त्ति मंजु भ्राजतीभुवनभूरि स्रवतोसुधासो सुखसंकुल सुराजते॥आनँदाब्धि बाढ़िचल बिदिशि दिशान फैलि भव्य मूल सूखमा सरतिमार लाजते। भाग्यवन्त राजनके राज राजा रामचन्द्र जानकीस आजु भद्र आसनै बिराजते॥ स्वच्छसार शोभ मैं प्रकाशमान दीप दीप जा-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गती सुकीर्त्तिजाल बीच बेद गाथके। ज्योतिजग ज्योतिधौं ज्वलित आदिज्योति ज्योतिव्योंति पुंज ऊपमान सम एक साथकें॥ अक्षतादि चन्दन सरोचना कलित चारु सूखमा बलित पाणि कंजमुनि नाथके। भाग्यवन्त भाव मन मैनको हरनहार राजसी तिलक माथ सोहै रघुनाथके॥ भ्राजपुंज राजसी समाज साज भाग्यवंत सूखमा अदभ्रपार शेष सो न पावते। शोकते बिशोक लोक लोकनै प्रहर्ष दात्रि चात्रि कालिदास कीर्त्ति स्वाति स्वामि गावते॥ विप्र साधु सज्जनालि देवता मुनींद्र वेद आनँदाढ्य जालभावलोकि प्रेम भावते! कारुणीक रामचन्द्र जानकीस भद्रधाम धामदा समग्र अग्र अस्तुती सुनावते॥ बशिष्ठ स्तुति कबित्त॥ वेद तत्त्वसार मे समर्थ हंस बंशराज ऊपमान भ्राजसम ऊपमावगाहिये। बिप्रसाधु सज्जनार्थ आनि है नृपाल लाल भंजिभार भूवजाल यश क्यों सराहिये॥ नाम गुणधाम बल पार है न श्रुति गाथ हाथकै सु छाँह भक्ति भावना निबाहिये। भाग्यवन्त भानुबंश शीशताज रामचन्द्र सवरी सु राज्य यों अचल नित्त चाहिये॥ सवैया॥ साधु महीसुर सज्जन हेत कृपाकरि ह्वै अवधेशके बारे। पालन देवनके खल घालन धर्म प्रचारि यशै बिस्तारे॥ आगम बेद पुराण कहै सब अद्भुत कर्म हैं राम तुम्हारे। जैति सु जै भगवन्त सदा नृपनंदन दुःख निकंदन हारे॥ ब्रह्मा स्तुति कबित्त॥ पावतो न मर्म शेष शारदा निगम शम्भु अद्भुतावतार कर्म रावरे सकलहैं। भक्त भूमि भूसुरामरनकाज धारि तनु कृत्यकार भ्रातुपुंज लीलया अमल हैं॥ भाग्यवन्त पालिप्रद भव्यदास बृन्दनै सु घालि दुष्ट दुष्कृताघ दालि पुंज दलहैं। भानुबंश भूषणावतार पूर्णनाथ आपु भ्राजते पताक जग यशके अचलहैं॥ सवैया॥ राम चरित्र अपार सबै तव शंकर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शेष न जानन हारो। अद्भुत लै अवतार अनेक महीसुर सज्जन के दुख टारो॥ मोदमई कृत लीलन पुञ्ज जु गावत पावत हैं भव पारो। कोशलराज कुमार द्रवो भगवन्त सु साहेब दानि उदारो॥ शिवस्तुति सवैया॥ रामस्वरूप तुम्हार सदै मुदमंगलमय मृदु मूरति सोहै। ध्यावत कोटि कटैं भवसंकट दायकहू फल बांछित को है॥ आगम बेद पुराण प्रशंसत नेति निरन्तर गावत जो है। त्यों भगवन्त सु जैति सदा रघुराज हरौ भ्रमफन्दन मोहैं॥ रोला छंद॥ जै करुणा सुखधाम राम भवभार बिभञ्जन। शमन पाप संताप दुरित दुख दारिद गञ्जन॥ जै अवधेश सुरेश वेश यश विस्तृत पावन। नील कमल तन श्याम काम शत कोटि लजावन॥ जै धृत शर कोदण्ड कठिन खल दल बल खण्डन। प्रणत पाल सर्वज्ञ तज्ञ तारण महि मण्डन॥ जै रञ्जन सुर संत भक्त वत्सल बलधामं। गुणागार भवपार पोत पावन दृढ़नामं॥ जै अनाथहित नाथ पाहि प्रणतारति मोचन। रघुकुल कमल पतंग सुखद पंकज दल लोचन॥ जै पूरण अवतार देव त्रय सम्भव कारण। कृत अद्भुत शुभ चरित सुलभ जीवन उद्धारण॥ जै प्रद भुवन प्रमोद भूप मणि मौलि कृपालं। महाराज राजेन्द्र राम यश बिदित बिशालं॥ जै जै जै श्रीराम कृपा बारिधि गुणधामं। भाग्यवन्त निज भक्ति देहु संतत अभिरामं॥

दो० बार बार बर मांगौं धरौं चरण पर माथ।
निज पद पंकज भक्ति मोहिं देहु दया करिनाथ॥

इन्द्रस्तुति सवैया॥ हे रघुबंश बिभूषण राम गुणोत्तम धाम बिनय सुनि लीजै। प्रत्यवतार अपार कथा श्रुति गावत पै तव अंत न कीजै॥ त्यों भगवन्त तुम्हैं प्रिय सो निशिबासर प्रेम त्वया ज्वइ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भीजै । मैं बिषया बश नाथ सदा जन जानि स्वभक्ति कृपा करि दीजै ॥ सूर्य्यस्तुति हरिगीतिका छंद ॥ जै राम जब ते वंश हमरे जन्म करि करुणा लयो । बिस्तार पावन सुयश तिहुँपुर तोष बड़ तब ते भयो ॥ भगवन्त करि अब नाथ दाया भक्ति आपनि दीजिये। चिरजीव जोरी चारु संतन प्रेमरस हम भीजिये ॥ अग्निस्तुति सवैया ॥ भ्राजत राज तिहूँ पुरमें रघुराज समाज स आज तिहारो। संतत संतन देवन के हितकारक वेद पुराण पुकारो ॥ खण्डनकै खल वृन्दन भूमि बिमण्डनकै दुखद्वन्दन टारो । जै जय जै भगवन्त सदा रघुबंश बिभूषण राम उदारो ॥ मरुतस्तुति किरीट छंद ॥ भूप शिरोमणि चक्रवर्ती अवधेन्द्र कुमार प्रशंसन लायक । व्यापक ब्रह्म चराचर मै अवतार धर्‍यो महि भार नशायक ॥ गावतहै यश पावन वेद अदभ्र सदा सुर संत सहायक ॥ जै जय जै भगवन्त सदै प्रणतारति भंजन श्रीरघुनायक ॥ भूमिस्तुति सवैया ॥ खल कर्मन कुत्सित पातक भार जबै जब मोपर आनि पर्‍यो । अवतार अनूप अनेकन धारि तबै तब दुष्कृत नाथ हर्‍यो ॥ यश विस्तृत पावन लोक तिहूँ जन रञ्जन भञ्जन शोक कर्‍यो। भगवन्त प्रशंस करौं प्रभु क्यों तुम सों प्रभु और न जन्म धर्‍यो ॥ वेदस्तुति सवैया ॥ रघुनायक नायक देवनके नहिं पावत योगिन यत्नकरे। पचिहारि अनेक विरञ्चगये नित ध्यावत शंकर ध्यानधरे ॥ स्वइ राघव पाणिगहे कपि भालु स्वइच्छित बोलत भागभरे। भगवन्त सुजैजय नाथ त्वया चरिताद्भुत जाल जितेबगरे ॥ त्रोटक छन्द ॥ जय रामकृपा सुखधामहरे। सबरूप अनूप न भूपपरे ॥ भुजदण्ड प्रचण्ड प्रचारिहने। दशकन्धर आदि सदुष्टघने ॥ अवतार नृधारि भुभारहर्‍यो। यशपावन लोक तिहूँ बगर्‍यो ॥ प्रणतारतिभंजन रामनमो । सह शक्ति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुसेवक जानिक्षमो ॥ रज राउर दुस्तर कौनतरै । नरनाग सुरासुर जौनहरै ॥ करुणाकरि आपु लखे जिनहीं । भवसिन्धु अगाधतरे तिनहीं ॥ भव दुःखनिकन्दन नामजदा । कुरु त्रातुमया स्वइ राम सदा ॥ सुररञ्जन भंजन भारमही । रघुनाथ अनाथन नाथसही ॥

दो० चरणकमल अनपावनी भक्तिदेहु जगदीश ।
भाग्यवन्त करजोरिकै नाथ नवावों शीश ॥

नारदस्तुति नगस्स्वरूपिका छन्द ॥ नमामि राम नागरं। कृपा सुशील सागरं॥ भवाब्धि घोर तारणं।त्रिताप पापहारणं॥ समस्त विश्वपालनं। सुरारि बृन्द घालनं ॥ स्वभक्ति चारु दीजिये। कृपा कटाक्ष कीजिये ॥ शारदस्तुति छप्पै ॥ जैजै श्रीरघुवीरधीर त्रिभुवनहितकारी। राजबंश अवतंस चरित अद्भुत भयहारी ॥ सेवत सुलभ उदार भक्तवत्सल गुणरासी। पूरणब्रह्म समान सदा अग जगमें बासी ॥ निज भक्तहेत धरि बिविधतनु करत कठिन संकट शमन। यश गायगाय नर भवतरत जयजै श्रीसीतारमन ॥

दो० यहिविधि सुरनरमुनि सबन प्रभुसन अस्तुतिकीन।
भाग्यवन्त अनपावनी भक्तिमाँगि बरलीन ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेउत्तरकांडे श्रीसीतारामचन्द्रराज्याभिषेकसुरमुनिआदिस्तुतिवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

सवैया॥ सुन्दर श्यामशरीर सुहावन पावनपुंज लजावन मैना। चारु सुचीर विभूषण मंजुल अंगन अंग सजैं छबिऐना ॥ राजत राजसिंहासनपै रघुनायक दायक दासन चैना । बन्दतहै कर सम्पुटकै भगवन्त ससीय श्रिराजिवनैना ॥ राजत रामसिंहासनपै सुखमा भगवन्त न सो कहिजाती । आनँदमंगल छायरह्यो पुर बाजि निशान रहे बहुभाँती ॥ नाकनटी बहु नाचकरैं गुण किन्नर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गावतहैं दिनराती । याचकपाय सुदान अशीशत जातनहीं उर मोद समाती ॥

दो० यहि आनन्दसमेत सब गये मास षटवीति ।
तब रघुपति निज सखनसन बोले वचनसप्रीति ॥

सवैया ॥ हे नल नील सुऋक्षपते युवराज विभीषण वानरनाहू । काजकियो तुम मोरबड़ो क्यहिभाँति करौं भगवन्त सराहू ॥ भारत आदि सु भ्रातन ते बहु प्रीतम मोहिं सबै तुम आहू । संतत मोहिं सप्रेम भज्यो सह क्षेम सबै अब मंदिर जाहू ॥

दो० सुनि प्रभु बचन सनेह रस भये मगन कपिवृन्द ।
रहे निरखि यक्टक सकल रामचन्द मुखचन्द ॥

देखि प्रीति अति राम कृपाला । भूषण बसन बिचित्र बिशाला ॥ भांति भांति बहु मोल मँगाये । निजकर भरत सबन पहिराये ॥ भये मुदित मन सुख न समाई । तब रघुपति लिय सबनबुलाई ॥ अति सादर समीप बैठारी । मुनि प्रति राम बचन उचारी ॥

दिग्पाल छंद ॥ एताव शैलबासी नल नील बंधु दोऊ । बुधिवन्तबीर बांके सुनु काज कीन जोऊ ॥ इन सिंधु सेतु बांधे दशकंठ शीश फारे । संग्राम शत्रुभारी बहु खोजि खोजि मारे ॥ मुनि राज काज मेरे इन देह गेह त्यागे । भरतादि बंधुहूते बहु मोहिं प्रिय लागे ॥ ये बालिबंधु जानी सुग्रीव नाम याको । किष्किंधा राजधानी कपिराज बीर बांको ॥ बहु यंत्र मंत्र जानै सँग सेन भूरिबांकी । करवाय शोध सीतै रण युद्ध कीन हांकी ॥ मुनिराज काज मेरे इन देह गेह त्यागे । भरतादि बन्धुहू ते बहु मोहिं प्रियलागे ॥ ये बालि पुत्र ज्ञानी है अंगद नाम याको । यशवन्त बुद्धिराशी बलवन्तबीर बांको ॥ दशकण्ठ सभाजाई पगरोंपि मान भंज्यो । ढहि लंकभवन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दीन्हें रण शत्रु भूरि गंज्यो ॥ मुनि राज काज मेरे इन देह गेह त्यागे। भरतादि बन्धुहू ते बहु मोहिं प्रिय लागे॥ ये ऋक्षराज शूरो जामवन्त नाम जानी। दलपुंज संग याके बुधिवन्त बीर मानी॥ रिपु लात घात पाय्यो रणभूमि छोरि लीन्हें। घननाद मान तूय्यो बहु दुष्ट घात कीन्हें॥ मुनि राज काज मेरे इन देह गेह त्यागे। भरतादि बन्धुहू ते बहु मोहिं प्रिय लागे॥ ये राक्षस कुल माहीं दशकण्ठ बन्धु शूरो। है बिभीषण नाम याको यशवन्त भक्तरूरो॥ तजि बन्धु आनि मोहीं मिलिकाज भूरि कीन्हें। दर्शाय मीचु रिपु की कहि बैद्य नाम दीन्हें॥ मुनि राज काज मेरे इन देह गेह त्यागे। भरतादि बन्धुहू ते बहु मोहिं प्रिय लागे॥ ये पवनपुत्र नामी हनुमान नाम याको। मिलवाय मोहिं दीन्हें कपिराज बीरबांको॥ मुख मेलि मुद्रिका लै तरि सिंधुपार जाई। पुर जारि मारि अक्षै सुधि सीय बेगिलाई॥ सौमित्र दुःख मेट्यो गिरिद्रोण रैनि लायो। करि युद्ध क्रुद्ध भारी रिपु सैन मारि दाँयो॥ मुनिराज काज मेरे इन देह गेह त्यागे। भरतादि बन्धुहू ते बहु मोहिं प्रियलागे॥

दो॰ कपि समाजके गुण अमित बरणि पार नहिंहोहिं।
प्राण सरिस मुनिराज ये संततहैं प्रिय मोहिं॥

सुनि प्रभु बचन हरषि मुनि नाहू। पुनि उठि मिले मुदित सबकाहू॥
तब रघुपति सबहिन सनमानी। बिदाकीन कहिकहि मृदुबानी॥
उर धरि राम रूप प्रभुताई। चले सकल चरणन शिरनाई॥
तब अंगद प्रभु पद शिर नायो। जोरि पाणि मृदुबचन सुनायो॥

कुंडलिया॥ कहा हमारो काजहै प्रभु तजि कहियो गेह। तुम सर्वज्ञ कृपायतन जानहु शील सनेह॥ जानहु शीलसनेह मरण अवसर मोहिंबाली। करुणासिंधु कृपालु गयो कोंछे तबघाली॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

घालि सकल दुख दोष किह्यो प्रतिपाल महाहै। तुम तजि दीनद-याल काज ममगेह कहा है॥ राखिय शरण कृपायतन म्वहिंजनि त्यागौ नाथ। दीनबंधु दाया सदन बिनै करौं धरि माथ॥ बिनैकरौं धरि माथ टहल गृहकी लघु करिहौं। प्रभु पद पंकज देखि अगम बारिधि भव तरिहौं॥ हौं बालक अज्ञान बिनय कैसे प्रभु भाखिय। भाग्यवन्त जन जानि शरण पंकज पद राखिय॥ कीन्ह्यो अंगद बहुबिनै बार बार शिरनाय। देखि प्रीति रघुवंशमणि लीन्ह्यो हृदय लगाय॥ लीन्ह्यो हृदय लगाय माल निज उर पहिरायो। सजल नैन मृदुबैन राम बहुबिधि समुझायो॥ समुझायहु बहुभाँति चल्यो चरणन चितु दीन्ह्यो। बार बार उरलाय बिदा रघुपति कपिकीन्ह्यो॥

दो० भरत लषण रिपुहन अनुज सहित संग हनुमान।
सकलकपिन कहँपठय फिरि आये जहँभगवान॥
तब रघुबीर निषाद कहँ दीन्ह्यो बोलि निदेश।
जाहु सखागृह आपने आवत रह्यो हमेश॥
सुनि प्रभुबचन सप्रेम गुह बहुबिधि बिनयसुनाय।
चरण कमल उर राखिकै चल्यो भवन शिरनाय॥
प्रभु चरित्र सुंदर सुखद देखि देखि पुर लोग।
कहहिं धन्य हम भागबड़ जो यह भयो सँयोग॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहबिरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे उत्तरकाण्डेश्रीरामचन्द्रवशिष्ठप्रतिकपिसमाजप्रशंसासुग्रीवादि निजभवनगमनवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३॥

दो० बंदौं श्री सीता रमण शमन पाप संताप।
भाग्यवन्त तिहुँलोक में जाको बिदित प्रताप॥

यहिबिधि राम सकल सुखदाता। राजहिं सभासहित लघुभ्राता॥
श्यामलगात सुभग सब अङ्गा। लाजहिंछबिलखिकोटिअनङ्गा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पीतवसन द्युति तड़ित लजावन। भूषणबिबिध सुदेश सुहावन ॥
चरणकमल शुभ चिह्न सुहाये। मुनि मन भृंग रहत जहँ छाये ॥
कटिकिंकिणी मनोहर सोहै। सुनिरव मधुर मदन मन मोहै ॥
नाभी रुचिर उदर अतिभ्राजा। उर आयत मणिमाल बिराजा।
केहरि कंध दंड भुजभारी। अङ्गदादि भूषण बहुधारी।
कर धनुबाण सुभग दर ग्रीवाँ। आनन चन्द्र अमल छबिसीवाँ ॥

दो० वारिज लोचन गोल सुठि सोहत अमल कपोल।
चारु चिबुक रद अधर शुचि हरतहृदय मृदुबोल ॥

कानन कुंडल सोहहिं लोला। नाकबुलाक सुछबि अनमोला ॥
चितवनि चारु चितै मन हारी। भृकुटी बंक अलक छबिकारी ॥
मृग मद तिलक सोह बर भाला। हेमकीट शिर परम बिशाला ॥
नख शिख रूप अनूप बिराजै। देखत काम कोटि शतलाजै ॥
निरखहिं छबि सादर सब भाई। होहिं मुदित जीवन फलपाई ॥

दो० राम रूप शोभा अमित बरणि सकै नहिं शेख।
भाग्यवंत लघु बुद्धि मैं करौं कवनबिधि लेख ॥

सवैया॥ रामप्रताप उदै रबिसों अघओघ महातम पुंजनशाने। सज्जन संत सरोज खिले खल लम्पट कैरवसों मुरझाने ॥ धर्ममलिंद उड़े सब ठाँय अधर्म उलूक समाजलुकाने। भक्तनकोक अनंदलह्यो भगवंत विशोक बसे सुरथाने ॥ राम कि राज सुखी सब लोक मिटे दुखदारिद दोष त्रितापा। पूरिरह्यो जग धर्ममई बचमानसकर्म नहीं कहुँ पापा ॥ बैर बिहाय चरैं मृग कानन निर्भयसाधु करैं तपजापा। काहुहिं लेश कलेश नहीं भगवंत उदै रबि रामप्रतापा ॥ कामदरूप भई बसुधा सुखसंपति छायरह्यो सब ठांई। दारुण दम्भ दुकाल गयो तजि चाल कुचाल सुचाल चलाई ॥ धार

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अमी सरितान स्रवै मणि आकरहैं गिरि संकुल जाई । कोशलराज समाज विभौ भगवंत सकै न अहीशहु गाई ॥

दो० रामराज सुख सम्पदा रह्यो सकल जग छाय ।
चारिहुवर्ण सुधर्म रत रहे राम यश गाय ॥
आनँदमंगल अवधपुर दिनदिन प्रति अधिकाय ।
मुदित सकल निज निजभवन बहुबिधि रचेवनाय ॥

कुंडलिया ॥ धवलधाम अभिराम अति कंचनखंभ बिशाल । चामीकर मै कलशशुभ धरे दीपमणि जाल ॥ धरे दीपमणिजाल देहरी बिद्रुम सोहै । रचना अमित अनूप देखि मुनिजन मनमोहैं ॥ मोहैं बिधि चटपट कुलिश तोरणवर सुखमा लखति । सुरपति सदन न पटतरति धवलधाम अभिराम अति ॥ जातरूप मै रचित अति सोहत पुरबाजार । धनिक बणिक बैठे बिबिध लैलै वस्तु अपार ॥ लैलै बस्तु अपार पार गनिको त्यहि पावै । देखत विभुजिन केर धनदमनमाहिं लजावै ॥ जावै जो बिनुबसु तहां लहै वस्तुभावत सुमति । किमि बजार सुखमा कहै जातरूप मै रचित अति ॥ सोहत पुर चहुँ दिशि अमित सुभग बाटिकाबाग । सदासुमनफल सहित द्रुम गुंजत मधुप सराग ॥ गुंजत मधुप सराग उड़त लैलै मकरंदा । करत मुखर खगबृन्द जहां तहँ सहित अनंदा ॥ सहित अनंद बसंत नित रहत जहां निशिदिन रमित । कहि न सकै भगवन्त छबि सोहत पुर चहुँदिशि अमित ॥ पुर उत्तर सरयूसरित सोहत पावनधार । उठत तरंगैं बिबिधविधि भवँर अवर्त्त अपार ॥ भवँर अवर्त्तअपार घाट सुन्दर सबबाँधे । मणिमय शुभ सोपान पंक कहुँ लखियन राँधे ॥ राँधे पनिघट सुभग बहु करत जहाँ मज्जन बनित । देवालय रंजित तटनि पुर उत्तर सरयूसरित ॥ जाके

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दरशनके किहे पाप ताप मिटिजाय। तेहि सरयूबरसरित की को कहै महिमागाय ॥ को कहै महिमागाय प्रेम युत मज्जत प्रानी। रामधाम पथ पाव लहत जो कोउ मुनिज्ञानी॥ज्ञानी मुनिजन बृन्द बासकीन्हे ढिगताके। पियैं सदा शुचिनीर नमैं सन्तत शिरजाके॥

दो० जहँतहँ तुलसीबृन्द बहु लाये सकल मुनीश।
कहिनसकै भगवन्त सो सुखमा गणपअहीश॥

कवित्त ॥ ठौर ठौर सोहत तड़ाग दिव्य बारि मंजु पूरित विकाश पद्म रंगरंग ह्वैरहे। आसपास चंचरीक भीरभूरि बृन्दबृन्द घूमि घूमि बासनै सुगुंजिगुंजि लैरहे॥ धारि धारि मोदही मराल भाँति भाँतिनै सुकूजि कूजि पुञ्जपुञ्ज शोर घोरकैरहे। कोकिला चकोर कीर सारिका मयूर चक्र बाटिकान बागमैं कलोलनै मचैरहे॥

दो० पुरशोभा अद्भुत अमित क्यहि विधिकहौं बखानि।
परब्रह्म श्रीरामजी भये भूप जहँ आनि॥
पुर नर नारि सप्रेम सब करहिं रामगुण गान।
लहहिं परम आनँद निरखि रघुकुल पंकजभान॥

छप्पै ॥ सेवहिं सादर बन्धु सकल रामहिं दिनराती। राखे रुख नितरहहिं यथा चातक दिशि स्वाती॥ रामचन्द्र बहुभाँति करहिं भ्रातनपर प्रीती। सिखवहिं तिनहिं सप्रेम सदा सुन्दरविधि नीती॥ प्रभु कहहिं कथा इतिहास बहु सुनहिं सकल मनुलायकै। ब्रह्मादि देव सन्तत सकल नावहिं पद शिरआयकै॥ विश्वामित्र वशिष्ठ आदि यावत मुनि गुरुजन। जुरहिं सभासद आइ सहित सबमंत्री पुरजन॥ रामरूप छविदेखि सकल जीवन फलपावें। शासनलै सब लोगसहित मुद भवन सिधावें॥ नित नारदादि मुनिवरनिकर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आय आय पार्थँन नमत। लखि भाग्यवन्त नखशिख सुछवि बहु प्रकार अस्तुतिकरत॥

दो० बहुप्रकार अस्तुति करहिं नावहिं पदरज माथ।
कमलनैन श्रीराम छवि लखि सबहोहिं सनाथ॥
सानुकूल सबपर सदा करहिं कृपा श्रीराम।
सेवहिं पद भगवन्त सब सहित प्रेम बसुयाम॥
रामराज वैभव अमित को कहि पावै पार।
निजसुखहित भगवन्त कछु कह्यों सुमति अनुसार।

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेउत्तरकांडे श्रीरामराज्योत्सववर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

दो० बन्दौं श्रीरघुबर चरण भवनिधि तारक पोत।
भाग्यवंत सुमिरत जिन्हैं उदय ज्ञानरवि होत॥
द्वैसुत सुन्दर जानकी जाये सब गुण धाम।
सूरवीर विजयी समर लवकुश पावन नाम॥
पुष्कल तक्षक भरतके भये पुत्र युग आनि।
चित्रकेतु अङ्गद उभय लक्ष्मण के सुत जानि॥
सुभुज शत्रुघाती उभै रिपुसूदन सुत पाय।
सब गुणधाम अनूपछवि कहौं कवन विधिगाय॥
आदि अंत जाके नहीं पावत बेद न पार।
नरतनु धरि भगवन्त सो कृत शुभचरित अपार॥

यक दिन एक श्वान मगमाहीं। बैठो रहै मुदित डर नाहीं॥
बिन अपराध विप्र यक आई। मार्यो चरण श्वान दुख पाई॥
फिरियादी प्रभु पहँ स्वइ आयो। तुरत राम द्विज बोलि पठायो॥
कह्यो श्वान ते तब सुरनाहा। याको दंड देउँ कहु काहा॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कह्यो श्वान याको रघुराई। यती बनाइ गयंद चढ़ाई॥
पुर फिराय चहुँ दिशि ते लीजै। शिव मंदिर अधिकारी कीजै॥
सुनि ऐसे कीन्ह्यो जग त्राता। कह्यो श्वान ते पुनि प्रभुबाता॥
यामें कौन दंड यहि भयऊ। तब शिरनाय कहत सो भयऊ॥
पूरुब बिप्र जन्म मैं धारा। धान्य गोसाईं कै यकबारा॥
खायउँ भयउँ श्वान सो आई। जन्म प्रयंत स्वई यह खाई॥
ह्वै है कौन दशा यहि केरी। सुनि सब मुदित भये तेहि बेरी॥

दो० यक उलूक कर गृद्ध यक लीन्ह्यो भवन छड़ाय।
झगरत दोऊ रामपहँ फिरियादी भे आय॥

पूछ्यो प्रभु काको यह गेहा। कह्यो गृद्ध गृह मेरो येहा॥
कह उलूक प्रभु भवन हमारा। झूठ कहत यह गृद्ध लबारा॥
तब प्रभु पूछ्यो सचिवन पाहीं। कहौ भवन काको यह आही॥
सबहिन भवन उलूक बतायो। तब प्रभु ताको तुरत देवायो॥
पुनि गृद्धहि पूछ्यो जगत्राता। कोतैं अहसि सत्य कहु बाता॥
जो मम राज्य माहिं निरबाधा। कीन्हेसि दंडयोग अपराधा॥
बोला गृद्ध सुनहु जगदीशा। पूर्व जन्मकर मैं अवनीशा॥
ऋषयशाप यह तनु मैं धारा। अब तव दरश भयउ उद्धारा॥

दो० एक विप्रकर सुत मर्‍यो बिनु अवसर दुख दीन।
आय कह्यो सो रामसों आरत बचन अधीन॥

हे प्रभु राज्य आपुके माहीं। होनअनीति चहियआसिनाहीं॥
बिनु अवसर अकालमृतु घेरो। मर्‍यो कवन कारण सुतमेरो॥
सुनि पूंछेउ प्रभु मुनिनबिचारी। कह मुनि नारद सुनहु खरारी॥
शूद्र एक तप करै अपारा। तेहि अघ मर्‍यो सु बिप्रकुमारा॥
सुनि बिमान चढ़िकै रघुराई। तुरतहि जात भये तेहि ठाईं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देखि ताहि पूंछेउ प्रभुहाला। बोला सो मैं शूद्र कृपाला॥
तब प्रभु तेहि शिरकाटि गिरावा। तुरत विप्र बालक जी आवा॥
यहि बिधिराज्य बैठि रघुनायक। करत चरित त्रिभुवन सुखदायक॥
जो सुनि सादर नर अरुनारी। होहिं परम गति के अधिकारी॥
राम कथा सादर जे गावहिं। तिनके सब दुखदोष नशावहिं॥
हरियश परम मनोहर जानी। कीन्ह्योगाइ सफल निजबानी॥

हरिगीतिका छंद॥ श्रीराम पावन चरित सादर सुनहिं जे नर गावहीं। संसार सिंधु अपार बिनुश्रम पारते नरपावहीं॥ जपिनाम भे बहु पतित पावन पारगनिको सबलहै। यमनादि कोल किरात गणिका गीध यश बिस्तृत अहै॥ प्रभु दीनबन्धु दयाल राघव जानि जन करुणाकरौ। करजोरि बारहिबार अस्तुति भाषि शिर पायँन धरौं॥ कलिकाल कठिन कराल निशि दिन ग्रसित नाना दुखमई। सहिजात नाहिंन बिपति संकुल बिकल मति भोरीभई॥ अब नाथ और उपाय नाहिंन सूझि यक याही परै। बिनु आपुकरुणासिंधु करुणा बिपति नहिं दारुणहरै॥ सो समुझि निजदिशि हेरि रघुपति भक्ति म्वहिं निज दीजिये। भगवंत नाथ बिमुक्त भव के प्रबल फंदन कीजिये॥

दो० राम तुम्हारो शुभ चरित गावत सब पुरलोग।
जो सुनि विनहिं प्रयासही नाशत भवभयरोग॥
अति उदार अवतार नर धरिकृत चरित अनूप।
जो सुनि सादर नारि नर फिरि न परैं भवकूप॥

पद॥ हति ताडकभस्म सुबाहुहिकै मखराखि सुखी मुनिवृन्द किये। अघमै ऋषिनारि उधारणकै मिथिलापुरको पुनि पावँदिये॥ दलि शंभु शरासन राजसभा मुख कारिखदै सिय ब्याहि लिये।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भृगुनायक गर्व उतारि चले पुर औध महा सुख पूरि हिये ॥ पितु आयसुके मुनिवेष चले वनभक्तन त्रास निकंदनको । दृगएक सुकै सुरराज तनै त्रिशिरादि बधे खरवृन्दनको ॥ मृग तारि क्रियाखग कै शवरी मिलि नाश किये दुख द्वंदनको । बधि बालि सुकंठहि कै कपिराज बिमुक्त किये भवफंदनको ॥ सजि वानरभालु चमूचढ़िकै पुर घेरि लियो रिपु रावणको । परिवार सनाश दशाननकै दिय राज बिभीषण भावनको ॥ सहसीय बिमान सवारसुहै किय गौन सुदेश सुहावनको । सुरसानँद ब्योम बिमान चढ़े भगवंतबदैं यशपावनको ॥ मिलि भारतभाय सुखी सबकै भय राजतराज सिंहासनपै । सबलोक बिशोक रहैं नितही मन तत्परनाथ सुशासनपै ॥ प्रसर्‍यो छबिपुंज प्रभाउमहा कहि सो न परै जलजासन पै । दुख द्वंद निकंद किये सगरे भगवंत कृपाकरि दासनपै ॥ बलतेज प्रताप गुणोत्तमधाम प्रभाद्भुत अंग अपार भरौ । करुणाकर दीनदयाल प्रभो शरणागतपाल सुभायढरौ ॥ विरदावलि वेदपुराणकहै पद ध्यावत दासन त्रासहरौ । भगवंत कृपाकरिकै सियराम सदै सु हृदैमम बासकरौ ॥

दो० श्रीगुरु करुणापाय बल भक्तिशिरोमणि ग्रन्थ ।
भाग्यवंत पूरण कियो सुखद भक्तिको पन्थ ॥

हरिपदछन्द ॥ वनइससै चौवन शुभ सम्बत भाद्रकृष्ण पदरूरो । गुरुवासर तिथि शुभ्र चतुर्दशि भयो ग्रंथ यहपूरो ॥ श्रीरघुनंदनकृपावरी रच्यों ग्रन्थ यह जोई । अर्पतहौं अब नाथ आपुको करौ गृहण प्रभु सोई ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहाविरचितेभक्तिशिरोमणि ग्रन्थे समाप्तिमगात् ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor